केन्द्रीय विद्यालय संगठन चेन्नई सम्भाग

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN CHENNAI REGION

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

अध्ययन सामग्री 2022 – 23

कक्षा - XII

STUDY MATERIAL 2022 – 23

CLASS - XII

हिन्दी/ HINDI

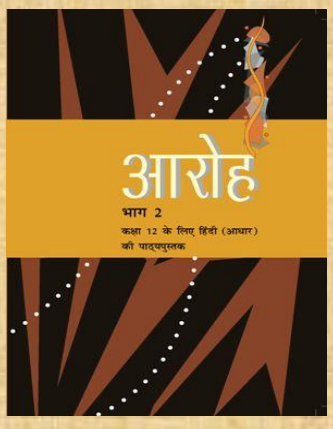

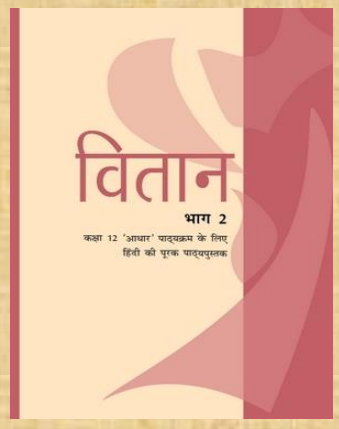

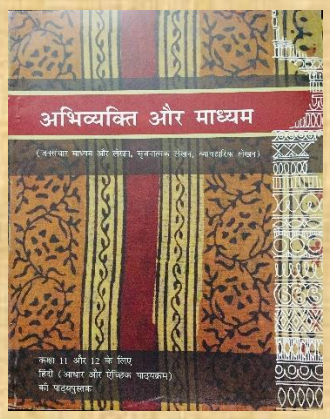

मुख्य संरक्षक

सुश्री टी. रुक्मणि, प्रभारी उपायुक्त के.वि.सं.चेन्नई संभाग

संरक्षक

श्री पी.आई.टी.राजा, सहायक उपायुक्त के.वि.सं.चेन्नई संभाग

अध्ययन-सामग्री-निदेशक

श्री विजय कुमार, प्राचार्य के.वि.क्र.-02, पोर्ट ब्लेयर

संपादक एवं संकलनकर्त्ता – श्री केशरी नंदन त्रिपाठी

(स्नातकोत्तर शिक्षक-हिन्दी, के.वि.क्र.-02, पोर्ट ब्लेयर)

प्राचार्य संदेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुभवी शिक्षकों के साथ बारहवीं कक्षा के छात्रों हेतु हिन्दी विषय की यह अध्ययन सामग्री तैयार कर मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अध्ययन सामग्री हमारे सम्भाग के प्रत्येक छात्र की आवश्यकता को पूर्ण करेगी और वे CBSE बोर्ड परीक्षा की तैयारी सहजता से करेंगे। हमारे शिक्षक दल ने न केवल बारहवीं कक्षा के छात्रों की सहायता के लिए, बल्कि हिन्दी भाषा के अध्यापकों की सुगमता के लिए भी अध्ययन सामग्री निर्माण में विशेष ध्यान रखने का प्रयास किया है।

यह अध्ययन सामग्री CBSE के नवीनतम प्रश्नपत्र प्रारूप के अनुसार तैयार की गई है। इस पुस्तक के अन्त में सभी छात्रों के स्तरानुकूल आदर्श प्रश्नपत्र भी दिया गया है। यह अध्ययन सामग्री तैयार करने के लिए मुझे अवसर, मार्गदर्शन व प्रेरणा प्रदात्री सम्माननीया उपायुक्त महोदया सुश्री टी रुक्मिणि जी एवं माननीय सहायक आयुक्त महोदय श्री पी आई टी राजा जी को मैं कोटिशः धन्यवाद देता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि यह अध्ययन सामग्री छात्रों को अधिकाधिक अंक प्राप्त करने के लिए व अध्यापकों को अध्यापन कार्य की सुगमता के लिए अत्यन्त उपयोगी साबित होगी। इस उत्तम प्रयत्न के सफल सम्पादन में सम्पादक एवं सहायक-अध्ययन-सामग्री-निर्माण-समिति के सदस्यों का मैं हृदय की गहराई से धन्यवाद देता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ.....

विजय कुमार

प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक – 02

पोर्ट ब्लेयर

केन्द्रीय विद्यालय संगठन – चेन्नई संभाग			
संस्थापक सदस्य			
सहायक अध्ययन सामग्री निर्माण समिति			
क्र॰ स॰	शिक्षक का नाम	केन्द्रीय विद्यालय का नाम	सदस्य
1	सुश्री हाइन्स नीलम	अरक्कोणम	सदस्य
2	श्रीमती कुमारी	अरक्कोनम क्र॰ 2	सदस्य
3	श्रीमती शामा डाबरे	अरुवनकाडु	सदस्य
4	श्रीमान पी जयराजन	चेन्नई एएफएस आवड़ी	सदस्य
5	श्रीमती प्रतिमा गुप्ता	चेन्नई सीएलआरआई	सदस्य
6	श्रीमती रीना शर्मा	चेन्नई सीआरपीएफ आवड़ी	सदस्य
7	डॉ बी उमापति जैन	चेन्नई डीजीक्यूए	सदस्य
8	श्रीमती आर कविता	चेन्नई गिल नगर	सदस्य
9	श्रीमती ममता सिंह	चेन्नई एचवीएफ आवड़ी	सदस्य
10	श्रीमती राजिया सुल्ताना	चेन्नई आईआईटी	सदस्य
11	डॉ विनोद कुमार	चेन्नई आईलैण्ड ग्राउण्ड्स	सदस्य
12	श्रीमती विद्या	चेन्नई मिनंबक्कम	सदस्य
13	श्रीमती सुधा शर्मा	चेन्नई ओसीएफ आवड़ी	सदस्य
14	सुजाता सरावनन	चेन्नई तांबरम क्र॰ 1	सदस्य
15	श्रीमती एस पद्मश्री	चेन्नई तांबरम क्र॰ 2	सदस्य
16	श्रीमती लीला बैरवा	कोयंबटूर	सदस्य
17	श्रीमती विशाखा	डिंडीगुल	सदस्य
18	श्रीमती अल्का महावर	कलपक्कम क्र॰ 1	सदस्य
19	श्रीमती सुवेगा	कराइकुडी	सदस्य
20	महेश्वरी	मदुरै क्र॰ 2	सदस्य
21	श्री प्रदीप कुमार केशरवानी	मंडपम	सदस्य
22	श्रीमती अल्फोंसा के	नागरकोइल	सदस्य
23	डॉ गोविंद प्रसाद शर्मा	पेरम्बलूर	सदस्य
24	श्रीमती सुनीता कुशवाहा	सुलुरु	सदस्य
25	श्रीमती वंदना पांडे	तंजावुर	सदस्य
26	श्रीमती रोजरमणि	थिरुवन्नमलाई	सदस्य
27	श्रीमती डी भुवनेश्वरी	तिरुवरुर	सदस्य
28	डॉ इ॰ औराधा	त्रिची क्र॰ 2	सदस्य
29	श्री जीतेंद्र कुमार वर्मा	विजयनारायणम	सदस्य
30	ज्योति	विरुधुनगर	सदस्य
31	श्रीमती प्रीति त्रिपाठी	वेलिंग्टन	सदस्य
32	श्री हरे कृष्णा यादव	कराईक्कल	सदस्य
33	सुनीता चौहान	पांडिचेरी क्र॰ 1	सदस्य
34	ए राधिका	पांडिचेरी क्र॰ 2	सदस्य
35	श्री अशोक कुमावत	पोर्ट ब्लेयर क्र॰ 1	सदस्य

अनुक्रमणिका

क्र॰ स॰	विषय/बिन्दु/प्रकरण		पृष्ठ संख्या
1	अपठित अवबोध		
	1. अपठित गद्यांश		7-25
	2. अपठित पद्यांश		27-44
2	**आरोह (पद्य-भाग)**		
	पाठ-1	आत्मपरिचय, एक गीत	42-51
	पाठ-2	पतंग	52-57
	पाठ-3	कविता के बहाने, बात सीधी थी पर	58-64
	पाठ-4	कैमरे में बंद अपाहिज	5-70
	पाठ-6	उषा	70-74
	पाठ-7	बादल राग	74-84
	पाठ-8	कवितावली, लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप	85-100
	पाठ-9	रुबाइयाँ	100-107
	पाठ-10	छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख	108-119
3	**आरोह (गद्य-भाग)**		
	पाठ-1	भक्तिन	121-146
	पाठ-2	बाज़ार दर्शन	146-154
	पाठ-3	काले मेघा पानी दे	154-164
	पाठ-4	पहलवान की ढोलक	165-173
	पाठ-7	शिरीष के फूल	174-180
	पाठ-8	मेरी कल्पना का आदर्श समाज, श्रम विभाजन एवं जातिप्रथा	182-187
4	**वितान**		
	पाठ-1	सिल्वर वैडिंग	189-199
	पाठ-2	जूझ	200-210
	पाठ-3	अतीत में दबे पांव	211-220
5	**अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक**		
	पाठ-3	विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन	222-234
	पाठ-4	पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया	234-252
	पाठ-5	विशेष लेखन- स्वरुप और प्रकार	253-258
	पाठ-11	कैसे करें कहानी का नाट्यरूपांतरण	258-260
	पाठ-12	कैसे बनता है रेडियो नाटक	260-266
	पाठ-13	नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन	266-275
6	**आदर्श प्रश्न पत्र एवं अंक-प्रारुप**		277-296

अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश-01

"सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है। मनुष्य किसी भी कारणवश जब किसी के कष्ट को दूर करने का संकल्प करता है तब जिस सुख को वह अनुभव करता है, वह सुख विशेष रूप से प्रेरणा देने वाला होता है। जिस भी कार्य को करने के लिए मनुष्य में कष्ट या दुःख को सहन करने की ताकत आती है, उन सबसे उत्पन्न ही उत्साह कहलाता है। उदाहरण के लिए दान देने वाला व्यक्ति निश्चय ही अपने भीतर एक विशेष साहस रखता है और वह है धन त्याग का साहस। यही त्याग यदि मनुष्य प्रसन्नता के साथ करता है तो उसे उत्साह से किया गया दान कहा जाएगा। उत्साह आनंद और साहस का मिला-जुला रूप है। उत्साह में किसी ना किसी वस्तु पर ध्यान अवश्य केन्द्रित होता है। वह चाहे कर्म पर,चाहे कर्म के फल पर और चाहे व्यक्ति या वस्तु पर हो। इन्हीं के आधार पर कर्म करने में आनंद मिलता है। कर्म भावना से उत्पन्न आनंद का अनुभव केवल सच्चे वीर ही कर सकते हैं क्योंकि उनमें साहस की अधिकता होती है। सामान्य व्यक्ति कार्य पूरा हो जाने पर जिस आनंद को अनुभव करता है, सच्चा वीर कार्य प्रारम्भ होने पर ही उसका अनुभव कर लेता है। आलस्य उत्साह का सबसे बड़ा शत्रु है। जो व्यक्ति आलस्य से भरा होगा, उसमें काम करने के प्रति उत्साह कभी उत्पन्न नहीं हो सकता। उत्साही व्यक्ति असफल होने पर भी कार्य करता है। उत्साही व्यक्ति सदा दृढ़निश्चयी होता है।

(क) उत्साह का प्रमुख लक्षण है –

(i) जोश (ii) साहस

(iii) आनंद (iv) आनंद और उत्साह

(ख) सच्चे वीर वो होते हैं –

(i) जो फल पाने के लिए उत्साह दिखाते हैं (ii) जो कर्म भावना से उत्साह दिखाते हैं

(iii) जो निष्काम भाव से उत्साह दिखाते हैं (iv) जो आनंद-विनोद के लिए उत्साह दिखाते हैं

(ग) उत्साह के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट है –

(i) दुःख (ii) निराशा

(iii) वैराग्य (iv) आलस्य

(घ)'सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है- रेखांकित उपवाक्य का प्रकार है–

(i) प्रधान उपवाक्य (ii) विशेषण उपवाक्य

(iii) क्रिया-विशेषण उपवाक्य (iv) संज्ञा उपवाक्य

(ङ) 'केंद्रित' और 'अधिकता' में क्रमशः प्रत्यय इस प्रकार हैं –

(i) द्रित, ता (ii) ईत, आ

(iii) इत, ता (iv) ईत, ता

(च) कर्म भावना से उत्पन्न आनंद का अनुभव केवल कौन कर सकता है -

(i) सच्चे वीर (II) कायर पुरुष

(iii) सेनानी (iv) उपरोक्त सभी

(छ) कौन सा सुख प्रेरणा देने का कार्य करता है –

(i) दुःख में डूबे रहना (ii) सिर्फ बातें करते रहना

(iii) कष्ट को दूर करने का संकल्प (iv) इनमें से कोई नहीं

(ज) आलसी व्यक्ति की प्रवृति कैसी होती है –

(i) कामचोरी की (ii) काम करते रहने की

(iii) संघर्ष करने की (iv) दुःख सहन करने की

(झ) उत्साही व्यक्ति की निम्न में से कौन सी विशेषता नहीं है –

(i) साहसी (ii) परिश्रमी

(iii) आलसी (iv) कर्मशील

(ञ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा –

(i) भावुक व्यक्ति (ii) आलसी व्यक्ति

(iii) प्रसन्नचित्त व्यक्ति (iv) उत्साही व्यक्ति

अपठित गद्यांश-02

परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा भी गया है - उद्योगी को सब कुछ मिलता है और भाग्यवादी को कुछ भी नहीं मिलता, अवसर उनके हाथ से निकल जाता है। कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम भाग्य है। प्रकृति को ही देखिए; सारे जड़ चेतन अपने काम में लगे रहते हैं, चींटी को पलभर चैन नहीं, मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूँद- बूँद मधु जुटाती है। मुर्गे को सुबह बांग लगानी होती है ,फिर मनुष्य को बुद्धि और विवेक मिला है वह सिर्फ सफलता की कामना करता क्यों बैठा रहे ? विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है। जापान को दूसरे विश्वयुद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था। उसकी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी लेकिन दिन-रात परिश्रम करके आज वह विश्व का प्रमुख औद्योगिक और विकसित देश बन गया है। चीन भी अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ा है। जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिका झेली पर परिश्रम के बल पर ही संभल गया। परिश्रम का महत्व वे जानते हैं जो स्वयं अपने बल पर आगे बढ़े हैं। संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे केवल परिश्रम के ही प्रमाण हैं। हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम परिश्रम और मनोबल से ही देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए उनका कहना था- "भाग्य के भरोसे बैठने वाले को उतना ही मिलता है जितना मेहनत करने वाले छोड़ देते हैं"। हमारे बड़े-बड़े धनकुबेर व्यापारी टाटा ,बिरला, अंबानी यह सब परिश्रम के ही उदाहरण है निरंतर परिश्रम और दृढ़ संकल्प हमारे लक्ष्य को हमारे करीब लाता है। गरीब परिश्रम करके अमीर हो जाता है और अमीर शिथिल बनकर असफल हो जाता है। भारतीय कृषक के परिश्रम का ही फल है कि देश में हरित क्रांति हुई। अमेरिका के सड़े गेहूँ से पेट भरने वाला भारत आज मजबूरी नहीं, बल्कि मजबूती से खड़ा है तो इसके पीछे कठोर परिश्रम और धैर्य ही है। हमारे कारखाने दिन रात उत्पादन कर रहे हैं, विकासशील देशों में पिछड़े माने जाने वाले हम भारतवासी आज विकसित देशों से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। अगर हम कहीं पिछड़े हैं तो उसका कारण परिश्रम का अभाव ही होगा। परिश्रम के बिना जीवन में कुछ नहीं मिलता | किसी ने सही कहा है- "सकल पदारथ है जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं"| यदि विद्यार्थी जीवन से ही परिश्रम की आदत पड़ जाएगी तो हम जीवन में कभी असफल नहीं हो सकते। विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है तो न सिर्फ हमारी शिक्षा बल्कि हमारा भविष्य भी सुरक्षित और मजबूत हो जाता है।

(I) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक होगा –

(क) भाग्य बलवान होता है (ख) आलसी जीवन

(ग) परिश्रम का महत्व (घ) इनमें से कोई नहीं

(II) जीवन में सफलता पाने का सबसे बड़ा माध्यम क्या है?

(क) पैसा (ख) विद्वत्ता

(ग) चालाकी (घ) पुरुषार्थ

(III) जापान, जर्मनी,चीन जैसे देश विपरीत परिस्थितियों से बाहर कैसे निकले?

(क) युद्ध से (ख) व्यापार से

(ग) विदेश नीति से (घ) परिश्रम से

(IV) हमारे लक्ष्य को हमारे करीब कौन लाता है?

(क) परिश्रम और दृढसंकल्प (ख) पैसा और शिक्षा

(ग) सिर्फ पैसा (घ) राजनीति

(V) आज हमारा देश बड़े-बड़े देशों के सामने किस रूप में खड़ा है?

(क) याचक के रूप में (ख) प्रतिस्पर्धी के रूप में

(ग) शत्रु के रूप में (घ) इनमें से कोई नहीं

(VI) परिश्रम की पहली पाठशाला कहाँ मिलती है?

(क) जन्म से (ख) घर में

(ग) विद्यार्थी जीवन में (घ) नौकरी करने पर

(VII) हमारे किसानों के परिश्रम से देश में कौन सी क्रांति आयी?

(क) हरित क्रांति (ख) श्वेत क्रांति

(ग) लाल क्रांति (घ) सभी सही हैं

(VIII) निम्नलिखित में से कौन सी पंक्ति पुरुषार्थ या परिश्रम के महत्त्व पर सटीक बैठती है?

(क) करमगति टारे नाहीं टरे

(ख) पुरुष बली नहीं होता है समय होत बलवान

(ग) सबके दाता राम

(घ) सकल पदारथ है जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं

(IX) इनमें से कौन सा शब्द 'विभीषिका' का समानार्थी होगा-

(क) दुष्प्रभाव (ख) त्रासदी

(ग) हानि (घ) कोई नहीं

(X) 'परिश्रम' शब्द में उपसर्ग है-

(क) पर (ख) परा

(ग) परि (घ) परी

अपठित गद्यांश-03

दबाव में काम करना व्यक्ति के लिए अच्छा है या नहीं इस बात पर प्रायः बहस होती है| कहा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक दबाव में नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी कर लेता है, जिससे उसे अक्सर कार्य में असफलता प्राप्त होती है| वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो बैठता है| दबाव को यदि ताकत बना लिया जाए तो न सिर्फ सफलता प्राप्त होती है, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है| ऐसे बहुत सारे उदाहरण है जब लोगों ने अपने काम के दबाव को अवरुद्ध नहीं, बल्कि ताकत बना लिया| सुख-दुख, सफलता-असफलता शांति-क्रोध और क्रिया-कर्म हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है| जोस सिल्वा इस बात से सहमत होते हुए अपनी पुस्तक 'यू द हीलर' में लिखते हैं कि मन मस्तिष्क को चलाता है और मस्तिष्क शरीर को| इस तरह शरीर मन के आदेश का पालन करता हुआ काम करता है| दबाव में व्यक्ति यदि सकारात्मक होकर काम करें तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है |दबाव के समय मौजूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचा जाए कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली है जो एक कठिन चुनौती को पूरा करने के लिए तत्पर है तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठती है| हमारा दिमाग जिस चीज पर भी अपना ध्यान केंद्रित करने लगता है वह हमें बढ़ती प्रतीत होती है| यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे तो वह भी बड़ी महसूस होगी |इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि "जीतना एक आदत है, पर अफसोस ! हारना भी आदत ही है"|

क) दबाव में काम करने से व्यक्ति:-

1) को कार्य में सफलता नहीं मिलती
2) अपना मानसिक स्वास्थ्य खो देता है
3) अपना शारीरिक स्वास्थ्य खो देता है
4) उपर्युक्त सभी

ख) दबाव हमारी सफलता का कारण बनता है, जब व्यक्ति-

1) दबाव को ताकत बना लेता है
2) दबाव में नकारात्मक रूप से काम करता है
3) घबरा जाता है
4) उसी भाषा में जवाब देता है

ग) दबाव में सकारात्मक सोच है :-

1) समस्या पर ध्यान केंद्रित करना
2) कार्य को बोझ न समझना
3) कठिन से कठिन चुनौती के लिए तत्पर रहना
4) उपरोक्त सभी

घ) सफलता सुख-दुख शांति क्रोध सब किस पर निर्भर करता है?

1) मनुष्य के व्यक्तित्व पर
2) मनुष्य के दृष्टिकोण पर
3) मनुष्य की कार्यशैली पर
4) उपरोक्त सभी पर

ड.) कार्य में असफलता प्राप्त होती है जब व्यक्ति :-

1) नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी होने देता है
2) कार्य के प्रति जागरूक होता है
3) संघर्ष के साथ आगे बढ़ता है
4) साहस के साथ काम करते हैं

च) 'यू द हीलर' है :-

1) एक व्यक्ति 2) एक पुस्तक

3) एक भवन 4) एक संस्थान

छ) गद्यांश के अनुसार मस्तिष्क को कौन चलाता है?

1) व्यक्ति 2) मन

3) तन 4) दृष्टिकोण

ज) व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कब करता है?

1) सकारात्मक हो कर 2) दबाव में सकारात्मक होकर

3) अत्यधिक पूंजी लगाकर 4) तनाव में आकार

झ) अपनी क्षमताओं को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका किसकी होती है?

1) पूंजी की 2) अभिव्यक्ति की

3) सोच की 4) मार्गदर्शन की

ञ) 'शारीरिक स्वास्थ्य' शब्द में ' शारीरिक' है :-

1) संज्ञा 2) सर्वनाम

3 विशेषण 4) क्रिया

अपठित गद्यांश-04

विज्ञान आज के मानव जीवन का अविभाज्य एवं घनिष्ठ अंग बन गया है मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र विज्ञान के अभूतपूर्व आविष्कारों से अछूता नहीं रहा । इसी कारण से आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है। आज विज्ञान ने पुरुष और नारी,साहित्यकार और राजनीतिज्ञ ,उद्योगपति और कृषक ,चिकित्सक और सैनिक, पूँजीपति और श्रमिक,अभियंता,शिक्षक और धर्मज्ञ सभी को और सभी क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में अपने अप्रतिम प्रदेय से अनुग्रहीत किया है आज समूचा परिवेश विज्ञानमय हो गया है। विज्ञान के प्रभाव किसी गृहिणी के रसोईघर से लेकर बडी बडी प्राचीरों वाले भवनों और अट्टालिकाओं में ही दृष्तिगत नहीं होते ,अपितु वे जल थल की सीमाओं को लांघकर अंतरिक्ष में भी विद्यमान हैं। वस्तुत: विज्ञान अद्यतन मानव की सबसे बडी शक्ति बन गया है। इसके बल से मनुष्य प्रकृति और प्राणि जगत का शिरोमणि बन सका है। विज्ञान के अनुग्रह से वह सभी प्रकार की सुविधाओं एवं संपदाओं का स्वामित्व प्राप्त कर चुका है। अब वह मौसम और ऋतुओं के प्रकोप से भयाक्रांत एवं संत्रस्त नहीं है। विद्युत ने उसे आलोकित किया है, उष्णता एवं शीतलता दी है , बटन दबाकर किसी भी कार्य को संपन्न करने की ताकत भी दी है। मनोरंजन के विविध साधन उसे सुलभ हैं। यातायात एवं संचार के साधनों के विकसित एवं उन्नत होने से समय और दूरियां बहुत कम हो गयी है और समूचा विश्व एक कुटुंब सा लगने लगा है । कृषि एवं उद्योग के क्षेत्र में उत्पादकता बढने के कारण आज दुनिया पहले से अधिक धन धान्य संपन्न है। शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की देन अभिनंदनीय है। विज्ञान के सहयोग से मनुष्य धरती और समुद्र के अनेक रहस्य हस्तामलक करके अब अंतरिक्ष लोक में प्रवेश कर चुका है। सर्वोपरि विज्ञान ने मनुष्य को बौद्धिक विकास प्रदान किया है और वैज्ञानिक चिंतन पद्धति दी है। वैज्ञानिक चिंतन पद्धति से मनुष्य अंधविश्वासों ,रूढिवादी परम्पराओं से मुक्त होकर स्वस्थ एवं संतुलित ढंग से सोच विचार कर सकता है और यथार्थ एवं सम्यक जीवन जी सकता है। इससे मनुष्य के मन को युगों के अंधविश्वासों, भ्रमपूर्ण और दकियानूसी विचारों, भय और अज्ञानता से मुक्ति मिली है। विज्ञान की यह देन स्तुत्य है। मानव को चाहिए कि वह विज्ञान की इस समग्र देन को रचनात्मक कार्यों में सुनियोजित करे।

1. आज विज्ञान को मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग क्यों माना जाता है?

अ) विज्ञान के आविष्कार अभूतपूर्व हैं ।

आ) विज्ञान ने सभी क्षेत्रों में मानव को प्रभावित किया है।

इ) विज्ञान ने आर्थिक उन्नति प्रदान की है।

ई) आधुनिक युग विज्ञान का युगा है।

2. किसके बल पर मनुष्य प्रकृति और प्राणिजगत का शिरोमणि बन सका है?

अ) स्वयं के

आ) साधनों के

इ) विज्ञान के

ई) सत्ता के

3. वैज्ञानिक चिंतन पद्धति ने मनुष्य को सबसे पहले किससे मुक्ति दिलाई –

अ) संतुलित अनुचिंतन

आ) प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं

इ)औपचारिकताओं

ई) भ्रमपूर्ण रूढिवादी विचार

4. विज्ञान के चरण गतिशील क्यों कहे जा सकते हैं –

अ) विज्ञान की तीव्र गति के कारण

आ) यातायात के साधन आविष्कृत करने के कारण

इ) विज्ञान के उत्तरोत्तर विभिन्न दिशाओं में उन्मुख होने के कारण

ई) प्रगतिशील होने के कारण

5. समूचा विश्व एक परिवार के समान लगने का क्या कारण है –

अ) विज्ञान की गतिशील शक्ति

आ) विज्ञान और जीवन में घनिष्ठता

इ) यातायात और संचार के साधनों का विकास

ई) विश्वबंधुत्व की भावना का विकास

6. विज्ञान के सहयोग से मनुष्य ने कहाँ प्रवेश कर लिया है –

अ) मनुष्य के हृदय में

आ) अंतरिक्ष में

इ) विदेशों में

ई) समुद्र में

7. वैज्ञानिक चिंतन पद्धति के प्रभाव से मनुष्य कैसा जीवन जी सकता है –

अ) यथार्थ

आ) सम्यक

इ) उपरोक्त दोनों

ई) बनावटी

8. मानव से विज्ञान की देन को किन कार्यों में नियोजित करने की अपेक्षा है –

अ) लाभप्रद

आ) सहयोगप्रद

इ) रचनात्मक

ई) विध्वंसात्मक

9. लेखक की दृष्टि में विज्ञान की सबसे बडी देन क्या है –

अ) संचार सुविधाएँ

आ) विद्युत का आविष्कार

इ) वैज्ञानिक चिंतन पद्धति

ई) चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाएँ

10. प्रस्तुत गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है –

अ) विज्ञान का मानव जीवन पर प्रभाव

आ) वैज्ञानिक चिंतन और मानव

इ) विज्ञान के गतिशील चरण

ई) विज्ञान के आविष्कार

अपठित गद्यांश-05

हिंदी अपना भविष्य किसी से दान में नहीं चाहती। वह तो उसकी गति का स्वाभाविक परिणाम होना चाहिए। जिस नियम से नदी–नदी की गति रोकने के लिए शिला नहीं बन सकती, उसी नियम से हिंदी भी किसी सहयोगिनी का पथ अवरुध्द नहीं कर सकती। यह आकस्मिक सहयोग न होकर भारतीय आत्मा की सहज चेतना ही है, जिसके कारण हिंदी के भावी कर्त्तव्य को जिन्होंने पहले पहचाना, वे हिंदी भाषी नहीं थे। राजा राम मोहन राय से महात्मा गाँधी तक प्रत्येक सुधारक, साहित्यकार, धर्म संस्थापक,साधक और चिंतक हिंदी के जिस उत्तरदायित्व की ओर संकेत करता आ रहा है, उसे नतशिर स्वीकार कर लेने पर ही हिंदी लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाएगी, क्योंकि स्वीकृतिमात्र न गति है, न गंतव्य। वस्तुत: संपूर्ण भारत संघ को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए उसे दोहरे संबल की आवश्यकता है। एक तो आंतरिक, जो मन के द्वारों को उन्मुक्त कर सके और दूसरा बाह्य, जो आकार को सबल और परिचित बना सके। अन्य प्रदेशों के लोकहृदय के लिए तो वह अपरिचित नहीं है, क्योंकि दीर्घ काल से संत साधकों की मर्मबानी बनकर ही नहीं, हाट बाजार की व्यवहार बोली के रूप में भी देश का कोना-कोना घूम चुकी है।

यदि आज उसे अन्य प्रदेशों से अविश्वास मिले,तो उसका वर्तमान खंडित और अतीत मिथ्या हो जाएगा। उसकी लिपि का स्वरूप भी मतभेदों का केंद्र बना हुआ है। सुदूर अतीत की ब्राह्मी से नागरी लिपि तक आते आते उसके बाह्य रूप को समय के प्रवाह ने इतना माँजा और खरादा है कि उसे किसी बड़ी शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है। नाममात्र के परिवर्तन से ही वह आधुनिक युग के मुद्रण लेखन यंत्रों के साथ अपनी संगति बैठा लेगी, परंतु तत्संबंधी विवादों से उसका पथ प्रशस्त न करके उसके नैसर्गिक सौष्ठव को भी कुंठित कर दिया है। यदि चीनी जैसी चित्रमयी दुरूह लिपि अपने राष्ट्र जीवन का संदेश वहन करने में समर्थ है, तो हमारी लिपि के मार्ग की बाधाएँ दुर्लंघ्य कैसे मानी जा सकती है।

स्वतंत्रता ने हमें राजनीतिक मुक्ति देकर भी न मानसिक मुक्ति दी है और न हमारी दृष्टि को नया क्षितिज। नया शासन तंत्र और उसके संचालक भी उसके अपवाद नहीं हो सकते, परंतु हमारे पथ की सबसे बडी बाधा यह हमारी स्वतंत्र कार्य क्षमता राज्यमुखापेक्षी होती जा रही है। पर अंधकार आलोक का त्योहार भी तो होता है। दीपक की लौ के हृदय में बैठ सके ऐसा कोई बाण अँधेरे के तूणीर में नहीं होता है। यदि हमारी आत्मा में विश्वास की लौ है, तो मार्ग उज्ज्वल रहेगा ही।

भाषा सीखना उसके साहित्य को जानना है, और साहित्य को जानना मानव एकता की स्वानुभूति है। हम जब साहित्य के स्वर में बोलते हैं तब वे स्वर दुस्तर समुद्रों पर सेतु बाँधकर,दुर्लंघ्य पर्वतों को राजपथ बनाकर मनुष्य की सुख-दु:ख की कथा मनुष्य तक अनायास पहुँचा देते हैं।

अस्त्रों की छाया में चलने वाले अभियान निष्फल हुए हैं, चक्रवर्तियों के स्वप्न टूटे हैं, पर मानव एकता के पथ पर खडा कोई चरण चिह्न अब तक नहीं मिटा है। मनुष्य को मनुष्य के निकट लाने का कोई स्वप्न अब तक भंग नहीं हुआ है।

भारत के लोक हृदय और चेतना ने अनंत युगों में जो मातृभूमि गढी है, वह अथर्व के पृथ्वी सूक्त के वंदे मातरम् तक एक,अखंड और अक्षत रही है। उस पर कोई खरोंच हमारे अपने अस्तित्व पर चोट है।

1.हिंदी का भविष्य कैसा होना चाहिए?

(अ) हिंदी का भविष्य उसकी गति का स्वाभाविक परिणाम होना चाहिए

(आ) हिंदी का भविष्य उसकी गति का अस्वाभाविक परिणाम होना चाहिए

(इ) उपरोक्त दोनों

(ई) इनमें से कोई नहीं

2. हिंदी की भारतीय आत्मा को किसने पहचाना था?

अ) हिंदी भाषी महापुरुषों ने　　आ)अहिंदी भाषी महापुरुषों ने

इ) संतों ने　　ई)अंग्रेजों ने

3. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हमें क्या प्राप्त नहीं हुआ?

अ) हमें अपनी भाषा पूरी तरह से प्राप्त नहीं हुई　　आ) मानसिक मुक्ति प्राप्त नहीं हुई

इ) हमारी दृष्टि को नया क्षितिज नहीं मिला　　ई) ये सभी सही है

4. अब तक पूरी तरह से क्या नहीं मिटा है?

अ) मानव एकता के पथ पर पडा कोई चरण चिह्न नहीं मिटा है।

आ) एकता और अखंडता

इ) संस्कृति और सभ्यता

ई) मानवीय मूल्य और ज्ञान

5.चीन की लिपि क्या है?

अ) चित्रमयी　　आ) देवनागरी

इ) ब्राह्मी　　ई) इनमें से कोई नहीं

6. मानव एकता की स्वानुभूति क्या है?

अ) संस्कृति को जानना　　आ) सभ्यता को जानना

इ) साहित्य को जानना　　ई) इनमें से कोई नहीं

7. पृथ्वी सूक्त किसमें मिलता है?

अ) ऋग्वेद में　　आ) यजुर्वेद में

इ) सामवेद में　　ई) अथर्ववेद में

8. हिंदी अपनी सहयोगिनियों के साथ क्या नहीं कर सकती है?

अ) हिंदी अपनी सहयोगिनी भाषाओं का मार्ग अवरुद्ध नहीं कर सकती

आ) हिंदी अपनी सहयोगिनी भाषाओं का मार्ग प्रशस्त नहीं कर सकती

इ) हिंदी अपनी सहयोगिनी भाषा का सहयोग नहीं कर सकती

ई) उपरोक्त में से कोई नहीं

9. हिंदी का कौन सा स्वरूप मतभेदों का केंद्र बना हुआ है?

अ) हिंदी की लिपि का स्वरूप　　आ) हिंदी का मानक स्वरूप

इ) हिंदी का प्राचीन स्वरूप　　ई) ये सभी

10. 'अविश्वास' में प्रयुक्त उपसर्ग लिखए –

अ) 'अवि' उपसर्ग　　आ) 'अ' उपसर्ग

इ) 'अविश्' उपसर्ग　　ई) 'अस्' उपसर्ग

उत्तरमाला

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

उत्तर 1 (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iv) (घ) (ii) (ङ) (iii) (च) (i) (छ) (iii) (ज) (i) (झ) (iii) (ञ) (iv)

उत्तर 2 :- I. ग II.घ III.घ IV.क V.ख VI.ग VII.क VIII.घ IX. ख X.ग

उत्तर 3 :- .क. (4) ख.(1) ग. (4) घ. (2) ङ. (1) च (2) छ (2) ज. (2) झ. (3) ञ. (3)

उत्तर 4 :- 1.(आ) 2.(इ) 3.(ई) 4.(इ) 5.(इ) 6.(आ) 7.(इ) 8.(इ) 9.(ई) 10.(आ)

उत्तर –5 1.(अ) 2.(आ) 3. (ई) 4. (अ) 5. (अ) 6. (इ) 7. (ई) 8. (अ) 9. (अ) 10. (आ)

अपठित गद्यांश-06

बड़ी चीजें संकटों में विकास पाती है ,बड़ी हस्तियों बड़ी ,मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती है | अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था ,जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय ,जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी | महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे ,मगर फिर भी जीत पांडवों कि हुई ,क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी ,क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था | विस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिन्दगी कि सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है | आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से पैदा होते है | जिन्दगी की दो ही सूरते है | एक तो आदमी की रोशनी के साथ बड़े -से बड़े मकसद के लिए कोशिश करे,जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश अंधियाली या जाल बुन रही हो,तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए -दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए ,जो न तो बहुत अधिक सुख पाती है और न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का ही संयोग है,क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती है,जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज सुनाई देती है | इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बंधे हुए घाट का पानी पीते है वे जिंदगी के साथ जुआ नही खेल सकते और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है ? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो,तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है | साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है | ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल बैखौफ होती है |साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नही करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है | जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है | अडोस-पडोस को देखकर चलना ,यह साधारण जीव का काम है | क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते है और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते है |

1.बड़ी चीजें कैसे विकसित होती हैं?

(क) सुख में (ख) संकटों में

(ग) मजे में (घ) दुःख में

उत्तर: (ख) संकटों में

2. अकबर ने किस उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया?

(क) तेरह (ख) चार

(ग) बीस (घ) तीन

उत्तर: (क) तेरह

3. अकबर का जन्म कहाँ हुआ था?

(क) जंगल में हुआ था (ख) घर में हुआ था

(ग) रेगिस्तान में हुआ था (घ) अस्पताल में हुआ था

उत्तर: (ग) रेगिस्तान में हुआ था

4. कैसी जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है?

(क) कमजोर की जिंदगी होती है। (ख) साहस की जिंदगी होती है।

(ग) निडर की जिंदगी होती है। (घ) चिंता की जिंदगी होती है।

उत्तर: (ख) साहस की जिंदगी होती है।

5. किसको देखकर चलना,यह साधारण जीव का काम है?

(क) अडोस-पडोस को देखकर (ख) अच्छे-बुरे को देखकर

(ग) ऊँच-नीच को देखकर (घ) अमीर-गरीब को देखकर

उत्तर: (क) अडोस-पडोस को देखकर

6. इन्सान किन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए-

(क) न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का ही संयोग है

(ख) जो न तो बहुत अधिक सुख पाती है

(ग) जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का ही संयोग है

(घ) उपयुक्त (क) और (ख) सही

उत्तर: (घ) उपयुक्त (क) और (ख) सही

7. साहसी मनुष्य की पहली पहचान क्या है?

(क) कि वह इस बात की चिंता नही करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है।

(ख) कि वह इस बात की चिंता करता है कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है।

(ग) कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है।

(घ) उपयुक्त कोई नही

उत्तर: (क) कि वह इस बात की चिंता नही करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है।

8. जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि –

(क) कि वह बिलकुल निडर होती है। (ख) कि वह बिलकुल चिंताजनक होती है।

(ग) कि वह बिलकुल कायर होती है। (घ) कि वह बिलकुल बैखौफ होती है।

उत्तर: (घ) कि वह बिलकुल बैखौफ होती है।

9. गद्यांश में लेखक ने किसका उदहारण दिया है?

(क) बीरबल का (ख) हुमायूँ का

(ग) अकबर का (घ) शाहजहाँ का

उत्तर: (ग) अकबर का

10. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए -

(क) साहस और जिंदगी (ख) कायर और कमजोर

(ग) निडर और जिंदगी (घ) मौत और जिंदगी

उत्तर: (क) साहस और जिंदगी

अपठित गद्यांश-07

किसी देश,राष्ट्र अथवा जाति को देश के भौतिक संसधान तब तक समृद्धि नही बना सकते जब तक कि वहाँ के निवासी संसाधनों का दोहन करने के लिए अथक परिश्रम नहीं करते | किसी भूभाग की मिट्टी कितनी भी उपजाऊ क्यों न हो , गुडाई –निराई ,सिंचाई ,बुआई जब तक विधिवत परिश्रम पूर्वक उसमे जुताई नहीं होगी | अच्छी फसल प्राप्त नही हो सकती | किसी किसान को कृषि संबंधी अत्याधुनिक कितनी ही सुविधाएँ उपलब्ध करा दीजिए | यदि उसके उपयोग में लाने के लिए समुचित श्रम नहीं होगा | उत्पादन क्षमता में वृद्दि संभव नहीं है |

परिश्रम से रेगिस्तान में भी अन्न उगलने लगते है हमारे देश की स्वतन्त्रता के पश्चात हमारी प्रगति की द्रुतगति भी हमारे श्रम का ही फल है | भाखड़ा नांगल का विशाल बाँध हो या युबा श्री हरिकोटा केरोकेट प्रक्षेपण केंद्र की रोकथाम के लिए 19 हरित क्रांति की सफलता हो या कोविड टीका तैयार करना प्रत्येक सफलता हमारे श्रम का परिणाम है तथा प्रमाण भी है |जीवन में सुख की अभिलाषा सभी को रहती है | बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में है |उसे वास्तविक और स्थायी शांति नहीं मिलती | गांधीजी तो कहते थे कि जो बिना श्रम किए भोजन ग्रहण करता है वह चोरी का अन्न खता है |ऐसी सफलता मन को शांति देने के बजाए उसे व्यथित करेगी | परिश्रम से दूर रहकर और सुखमय जीवन व्यतीत करने वाले विद्यार्थी को ज्ञान से प्राप्त होगा ? हवाई किले तो सहज ही बन जाते है , लेकिन वे हवा के हल्के झोंके से ढह जाते है | मन में मधुर कल्पनाओं के संजोने मात्र से किसी कार्य की सिद्धि के लिए उद्यम और सतत उद्यम आवश्यक है | तुलसीदास ने सत्य ही कहा है –सकल पदार्थ है जग माही करमहीन पावत नाही | अर्थात इस दुनिया में सारी चीजें हासिल की जा सकती है लेकिन वे कर्महीन व्यक्ति को कभी नहीं मिलती है | अगर आप भविष्य की सफलता की फसल काटना चाहते है तो आपको उसके लिए बीज आज ही बोने होंगे ,आज बीज नहीं बोयेंगे तो भविष्य में फसल काटने की उम्मीद कैसे कर सकते है ? पूरा संसार कर्म और फल के सिद्धांत पर चलता है इसलिए कर्म की तरफ आगे बढना होगा | यही सही मायनों में सफल होना चाहते है तो कर्म में जुट जाए और तब तक जुटे रहे जब तक की सफल न हो जाएँ | अपना एक-एक मिनट अपने लक्ष्य को समर्पित कर दें | काम में जुटने से आपको हर वस्तु मिलेगी जो आप पाना चाहते है – सफलता, सम्मान, धन, सुख या जो भी आप चाहते हो |

1. गद्यांश में परिश्रम को कल्पवृक्ष के समान बताया गया है क्योंकि इससे –

(क) भौतिक संसाधन जुटाए जात

(ख) परिश्रमी व्यक्ति वृक्ष के समान परोपकारी होता है

(ग) इच्छा दमन करने का बल प्राप्त होता है

(घ) व्यक्ति की इच्छाओ की पूर्ण पूर्ति संभव है

उत्तर: (घ) व्यक्ति की इच्छाओ की पूर्ण पूर्ति संभव है

2. गद्यांश में अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए कहे गए कथन से स्पष्ट होता है कि –

(क) भौतिक संसाधनो का दोहन करना आवश्यक है

(ख) संसाधनो की तुलना में परिश्रम की भूमिका अधिक है

(ग) ज्ञान प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है

(घ) कष्ट करने से ही कृष्ण मिलते है

उत्तर: (ख) संसाधनो की तुलना में परिश्रम की भूमिका अधिक है

3.भारत के परिश्रम के प्रमाण क्या-क्या बताए गए हैं?

(क) बाँध, कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

(ख) कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र, रेगिस्तान

(ग) बाँध, कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र, हवाई पट्टियों का निर्माण

(घ) वृक्षारोपण, कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

उत्तर: (क) बाँध , कोविड 19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र

4. कैसे व्यक्ति को अंधकार में बताया है?

(क) श्रमहीन व्यक्ति (ख) विश्रामहीन व्यक्ति

(ग) नेत्रहीन व्यक्ति (घ) प्रकाशहीन व्यक्ति

उत्तर: (क) श्रमहीन व्यक्ति

5. हवाई किसे तो सहज ही बन जाते है, लेकिन ये हवा के हल्के झोंके से दह जाते हैं | इस कथन के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि-

(क) तेज चक्रवती हवाओं से आवासीय परिसर नष्ट हो जाते है

(ख) हवा का रुख अपने पक्ष में परिश्रम से किया जा सकता है

(ग) वाई कल्पनाओं को सह दैव संजोकर रखना असंभव है

(घ) परिश्रमहीनता से वैयक्तिक उपलब्धि नितांत असंभव

उत्तर: (घ)परिश्रमहीनता से वैयक्तिक उपलब्धि नितांत असंभव

6. सतत उद्यम से क्या तात्पर्य है –

(क) निरंतर तपता हुआ उद्यम (ख) निरंतर परिश्रम करना

(ग) सतत उठते जाना (घ) ज्ञान का सतत उद्यम

उत्तर: (ख) निरंतर परिश्रम करना

7. किस अवस्था में प्राप्त सफलता मन को व्यथित करेगी?

(क) सकल पदार्थ द्वारा प्राप्त करने पर (ख) भौतिक संसाधनों द्वारा प्राप्त करने पर

(ग) दूसरों द्वारा किए गए अथक प्रयासों स (घ) आसान व श्रमहीन तरीके से प्राप्त करने पर

उत्तर: (घ) आसान व श्रमहीन तरीके से प्राप्त करने पर

8. स्वतन्त्रता शब्द में उपसर्ग प्रत्यय अलग करने पर होगा –

(क) स्व+तंत्र+ता (ख) सु+तंत्र+ता

(ग) स+वतंत्र+ता (घ) स+वत+ता

उत्तर:(क) स्व+तंत्र+ता

9. समुचित शब्द का अर्थ है –

(क) उपयुर्क्त (ख) उपयुक्त

(ग) उपभोक्ता (घ) उपक्रम

उत्तर: (ख) उपयुक्त

10. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है –

(क) परिश्रम और स्वतन्त्रता (ख) परिश्रम और सफल जीवन का आधार

(ग) परिश्रम और कल्पना (घ) परिश्रम कल्पना की उड़ान

उत्तर : (ख) परिश्रम और सफल जीवन का आधार

अपठित गद्यांश-08

विज्ञान प्रकृति को जानने का महत्वपूर्ण साधन है। भौतिकता आज आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का स्तर निर्धारित करती है। विज्ञान केवल सत्य, अर्थ और प्रकृति के बारे में उपयोग ही नहीं बल्कि प्रकृति की खोज का एक क्रम है। विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह प्रकृति को जानने के विषय में हमें महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान देता है। व्यक्ति जिस बात पर विश्वास करता है वही उसका ज्ञान बन जाता है। कुछ लोगों के पास अनुचित ज्ञान होता है और वह उसी ज्ञान को सत्य मानकर उसके अनुसार काम करते हैं। वैज्ञानिकता और आलोचनात्मक विचार उस समय जरूरी होते हैं जब वह विश्वसनीय ज्ञान पर आधारित हों। वैज्ञानिक और आलोचक अक्सर तर्कसंगत विचारों का प्रयोग करते हैं। तर्क हमें उचित सोचने पर प्रेरित करते हैं। कुछ लोग तर्क संगत विचारधारा नहीं रखते क्योंकि उन्होंने कभी तर्क करना जीवन में सीखा ही नहीं होता। प्रकृति वैज्ञानिक और कवि दोनों की उपास्या है | दोनों ही उससे निकटतम संबंध स्थापित करने की चेष्टा करते है ,किन्तु दोनों के द्रष्टिकोणमें अंतर है | वैज्ञानिक प्रकृति के बाल्य रूप का अवलोकन करता है और सत्य की खोज करता है परन्तु कवि बाह्य रु पर मुग्ध होकर उससे भावों का तादात्म्य स्थापित करता है | वैज्ञानिक प्रकृति की जिस वस्तु का अवलोकन करता है ,उसका सूक्ष्म निरीक्षण भी करता है | चंद्र को देखकर उसके मस्तिक में अनेक विचार उठते है उसका तापक्रम क्या है – ज्वार कितने वर्षो में वह पूर्णत:शीतल हो जाएगा , भाटे पर उसका क्या प्रभाव होता है | किस प्रकार और किस गति से वह सौर मंडल में परिक्रमा करता है और किन तत्वों से उसका निर्माण हुआ है |वह अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से उसको एक लोक ठहरता हैं और उस लोक में स्थित ज्वालामुखी पर्वतों तथा जीवन धारियों की खोज करता है | इसी प्रकार वह एक प्रफुल्लित पुष्प को देखकर उसके प्रत्येक अंग का विश्लेषण करने को तैयार हो जाता है | उसका प्रकृति विषयक अध्ययन वस्तुगत होता है | उसकी द्रष्टि में विश्लेषण और वर्ग विभाजन की प्रधानता रहती है | वह सत्य और वास्तविकता का पुजारी होता है | कवि की कविता भी प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है वह प्रकृति के साथ अपने भावों का संबंध स्थापित करता है | वह उसमें मानव चेतना का अनुभव करके उसके साथ अपनी आंतरिक भावनाओं का समन्वय करता है | वह तथ्य और भावना के संबंध पर बल देता है | उसका वस्तु वर्णन ह्रदय की प्रेरणा का परिणाम होता है | वैज्ञानिक की भाँती मस्तिक की यांत्रिक प्रकिया नहीं | कवियों द्वारा प्रकृतिचित्रण का एक प्रकार ऐसा भी है जिसमें

प्रकृति का मानवीकरण कर लिया जाता है – अर्थात प्रकृति के तत्वों को मानव ही मान लिया जाता है | प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का आरोपण किया जाता है | हिंदी में इस प्रकार का प्रकृति चित्रण छायावादी कवियों में पाया जाता है | इस प्रकार प्रकृति चित्रण में प्रकृति सर्वथा गौण हो जाती है | इसमे प्राकृतिक –वस्तुओं के नाम तो रहते हैं परन्तु झंकृत चित्रण मानवीय भावनाओ का ही होता है |कवि लहलहाते पौधें का चित्रण न कर ख़ुशी से झूमते हुए बच्चे का चित्रण करने लगता है |

1. विज्ञानं प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि यह –

(क) समय ज्ञान के साथ तादात्म्प स्थापित करता है

(ख) प्रकृति आधुनिक विज्ञान की उपास्या है

(ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है

(घ) आधुनिक वैज्ञानिक का स्तर निर्धारित करता है

उत्तर: (ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है

2. वैज्ञानिक प्रकृति के बाह्य रूप का अवलोकन करते हैं यह कथन दर्शाता हैं कि वे-

(क) कवियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं

(ख) ज्वार भाटे के परिणाम से बचना चाहते है

(ग) वर्ग विभाजन के पक्षधर बने रहना चाहते हैं

(घ) प्रकृति से अविदूर रहने का प्रयास करते है

उत्तर: (घ) प्रकृति से अविदूर रहने का प्रयास करते है

3. सूक्ष्म निरिक्षण और अनवरत चिंतन से तात्पर्य है –

(क) सौर मंडल को एक लोक और परलोक ठहरना

(ख) छोटी-छोटी सी बातों पर चिंता करना

(ग) बारीकी से सोचना व निरंतर देखना

(घ) बारीकी से देखना व निरंतर सोचना

उत्तर: (घ) बारीकी से देखना व निरंतर सोचना

4. कौन अनवरत चिंतन करता है?

(क) सूक्ष्मचारी (ख) विज्ञानोंपासक

(ग) ध्यानविलीन योगी (घ) अवसादग्रस्त व्यक्ति

उत्तर : ख) विज्ञानोंपासक

5. कौन वास्तविकता का पुजारी होता है?

(क) यर्थाथवादी (ख) काव्यवादी

(ग) प्रकृतिवादी (घ) विज्ञानवादी

उत्तर: (घ) विज्ञानवादी

6.कवि की कविता किससे प्रस्फुटित होती हैं?

(क) विचारों के मंथन से (ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से

(ग) भावनाओं की उहापोह से (घ) प्रेम की तीव्र इच्छा से

उत्तर: (ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से

7. कवि के संबंध में इनमे से सही तथ्य हैं –

(क) ज्वालामुखी के रहस्य जानता है (ख) जीव धारियों की खोज करता है

(ग) सत्य का उपासक नहीं होता (घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययन कर्ता

उत्तर: (घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययनकर्ता

8. 'इत'प्रत्यय युक्त शब्द कौन-सा है?

(क) झंकृत (ख) नित

(ग) ललित (घ) उचित

उत्तर: (ख) नित

9. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हैं –

(क) कवि का सोच और वैज्ञानिकता (ख) प्रकृति की उपासक –कवि और वैज्ञानिक

(ग) वैज्ञानिक उन्नति और काव्य जगत (घ) वैज्ञानिक द्रष्टिकोण –अतुलनीय

उत्तर: (क) कवि का सोच और वैज्ञानिकता

10. प्रकृति का मानवीकरण दर्शाता है कि –

(क) कल्पना प्रधान व भावोन्मेशयुक्त कविता रची जा रही है

(ख) मानवी करण अलंकार का दुरुपयोग हो रहा है

(ग) प्रकृति व मानव के सामंजस्य से उदित दीप्ति फ़ैल रही है

(घ) मानव द्वारा प्रकृति का संरक्षण हो रहा है

उत्तर: (ख) मानवी करण अलंकार का दुरुपयोग हो रहा है

अपठित गद्यांश-09

मित्रता को निभाना भी मुश्किल कार्य हैं | इसे ईष्या द्वेष,अपमान ,तिरस्कार,उपहास मानसिक व हार्दिक संकीर्णता तथा संदेह से बचाना जरूरी हैं | दोस्ती की सौंधी-सी सुगंध से जीवन सराबोर रखना हैं ,तो कुछ बातों को ध्यान में रखना होगा | मित्र ऐसा हो जो सही मार्गदर्शन कर सके ,आपके लिए सही अर्थों में हमदर्द बन सके जो आपको नेक सलाह दे और आपके दुख दर्द में सम्मिलित हो सकें| जो आपको निराशा और हताशा का शिकार ना बनने दें, बल्कि आशावाद और उर्जावान बनाने में सहायता करें| सच्चाई,ईमानदारी परस्पर साझीदारी प्रेम,विश्वास,निस्वार्थ भावना एक दूसरे के लिए हर पल सर्वस्व त्याग की भावना मित्रता को सफलता के उच्चतम पायदान पर पहुँचा देते है | अत: इनको ध्यान में रखें मित्रता में धन को कभी ना आने दें,ऐसा वक्त आने पर सभी संबंधों को तोड़ने में अहम भूमिका अदा करता हैं |दोस्ती में कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए ,दोस्ती जहाँ तक संभव हो अपनी बराबरी वालों से ही करनी चाहिए | अन्यथा कभी-कभी बातों में किसी प्रकार अहम को जार-जार कर सकता है | सच्ची मित्रता में एहसान और मेहरबानी का कोई स्थान नही होता,सिर्फ मित्रता होती है | ऐसी-वैसी कोई बात घटित हो जाए तो उसका जिक्र तीसरे के सामने नहीं करें संदेह व अविश्वास को कभी पनपने ही ना दें | मित्रता कितनी भी अटूट वह घनिष्ठ क्यों ना हो कभी भी मित्र को किसी गलत कार्य के लिए प्रेरित या उत्साहित

ना करें | यदि किसी परिस्थितिवश या अन्य कारण विशेष से वह कोई अनैतिक किया गलत राह पर जा रहा हो तो तत्काल मार्ग प्रशस्त करें व नेक सलाह व उचित मार्गदर्शन दें |सच्चा मित्र वही होता है जो जीवन के हर मोड़ पर आपके साथ खड़ा मिलें | जीवन के हर सुख-दुःख में आपके साथ हो और अपने मित्र की हर परेशानी में उसका साथ दें वही सच्चा मित्र होता है | दोस्ती खून का नहीं बल्कि दिल से बनाया हुआ रिश्ता होता है | आजकल लोगों सच्चा मित्र पाने के लिए तरस जाते है |समाज में जीने के लिए मनुष्य को आस-पास के लोगो से भी मित्रता रखनी पडती है | चाहे व्यक्ति दूसरे धर्म या जाति का हो ,दोस्ती हर चीज से ऊपर होती है | सच्चे दोस्तों को इन सब से कोई फर्क नहीं पड़ता की दोस्त की जाति व धर्म क्या है | जिनके पास सच्चे मित्र होते है उनकी जिंदगी सरलता से कट जाती हैं | जिनके पास सच्चे मित्र होते है वे व्यक्ति कभी भी उदास नहीं रहते हैं | मनुष्य को कोशिश करनी चाहिए कि वह ज्यादा –से –ज्यादा अपने मित्र की सहायता कर सके | एक झूठा मित्र हमेशा अपने स्वार्थ के लिए मित्रता करता है |लेकिन ऐसी मित्रता ज्यादा दिनों तक नहीं टिकती | ऐसे झूठे मित्रों से हमें सावधान रहना चाहिए |

1. मुश्किल कार्य क्या है?

(क) मित्रता को निभाना (ख) मित्रता करना

(ग) उपरोक्त दोनों (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (क) मित्रता को निभाना

2. मित्रता को किससे बचाना आवश्यक है?

(क) ईर्ष्या द्वेष से (ख) अपमान तिरस्कार

(ग) मानसिक उपहास संकीर्णता (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर : (घ) उपरोक्त सभी

3. मित्र कैसा होना चाहिए?

(क) जो सही मार्गदर्शन कर सके (ख) हमदर्द हो नेक सलाह दे

(ग) हताशा व निराशा से बचाए (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर : (घ) उपरोक्त सभी

4. मित्रता के मध्य किसे नहीं आने देना चाहिए?

(क) धन (ख) विश्वास

(ग) त्याग की भावना (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. सच्चा मित्र कौन है?

(क) जो सही गलत हर कार्य में साथ दें (ख) जो अपने मित्र को सही कार्य करने की प्रेरणा दें

(ग) जो मित्र को उसकी कमियाँ बताएँ (घ) 'ख' और 'ग' दोनों

उत्तर : (घ) 'ख' और 'ग' दोनों

6. मित्रता को सफल बनाने वाले गुण कौन से हैं?

(क) प्रतिस्पर्धा की भावना (ख) सच्चाई, ईमानदारी, त्याग की भावना

(ग) संदेह की भावना (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ख) सच्चाई ,ईमानदारी ,त्याग की भावना

7. परिस्थिति शब्द में उपसर्ग है?

(क) पर (ख) परि

(ग) प्र (घ) प्र

उत्तर : (ख) परि

8. निम्नलिखित विलोम शब्द के युग्म में गलत युग्म का चयन कीजिए?

(क) सुगंध –खुशबू (ख) नैतिक – अनैतिक

(ग) अविश्वास – विश्वास (घ) मित्रता – शत्रुता

उत्तर : (क) सुगंध –खुशबू

9. मित्रता शब्द है?

(क) विशेषण (ख) भाववाचक संज्ञा

(ग) क्रिया (घ) क्रिया विशेषण

उत्तर : (ख) भाववाचक संज्ञा

10. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक का चयन कीजिए?

(क) मित्र (ख) मित्र का त्याग

(ग) मित्रता (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (ग) मित्रता

अपठित गद्यांश-10

अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में सोचने की शक्ति अधिक होती है | वह अपने ही नहीं दूसरों के सुख-दुःख का भी ख्याल रखता है और दूसरों के लिए कुछ करने में समर्थ होता हैं | जानवर जब चरागाह में जाते हैं तो केवल अपने लिए चर कर आते हैं,परन्तु मनुष्य ऐसा नहीं हैं | वह जो कुछ भी कमाता हैं जो कुछ भी बनता है , वह दूसरों के लिए भी करता है और दूसरों की सहायता से भी करता है |लोग अपनों के सुख-दुःख की चिंता करने वालों को मनुष्य तो मानता है परन्तु यह मानने को तैयार नहीं है कि उन मनुष्यों में मनुष्यता के सारे गुण होते हैं | लोग उन मनुष्यों में ऐसे गुण चाहता है जिसके कारण कोई भी मनुष्य इस मृत्युलोक से चले जाने के बाद भी सदियों तक दूसरों की यादों में रहता है | अर्थात वह मृत्यु के बाद भी अमर रहता है | आखिर क्या है वे गुण ? कुछ लोग मनुष्यता का सही अर्थ समझने का प्रयास कर रहा है | कभी भी हम मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोग मृत्यु के बाद भी याद रखे | असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले | हमारे अंदर उदार का गुण होना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है | मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे | कितने कवियों ने कहा है कि पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं जिन्हें उनकी त्याग भाव के लिए आज भी याद किया जाता हैं | सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले |मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए ,मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए मरता और जीता है | इस दुनिया में हम कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं | हमें भेदभाव

से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए | हमें दयालु बनना चाहिए क्योंकि दयालु और परोपकारी मनुष्यों का देवता भी स्वागत करता है | अत: हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए | मनुष्यों की बाहरी कर्म अलग-अलग हो परन्तु हमारे वेद साक्षी है की सभी की आत्मा एक हैं,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अत:सभी मनुष्य भाई-बन्धु है और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये | विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर ख़ुशी से चलना चाहिए ,आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है |

1. मनुष्य को अपने चुने हुए मार्ग पर किस तरह चलना चाहिए?

(क) मजबूती से (ख) दुखी हृदय से

(ग) मन से (घ) ख़ुशी से

उत्तर : (घ) ख़ुशी से

2.असली मनुष्य किसे कहा जाता है?

(क) जो संसार को भाईचारे के भाव में बांधता है

(ख) जो दूसरों की चिंता है

(ग) जो दया और परोपकारी भाव रखता है

(घ) उपयुक्त सभी

उत्तर : (घ) उपयुक्त सभी

3. "मनुष्य मात्र बंधू है" से कौन –सा भाव प्रकट होता है?

(क) हम सब एक ईश्वर की संतान भाई बंधू है

(ख) हम सब एक है

(ग) ईश्वर एक है

(घ) उपयुक्त सभी

उत्तर : (क) हम सब एक ईश्वर की संतान भाई बंधू है

4.उदार व्यक्ति को कौन पूजता है?

(क) उदार व्यक्ति को घरवाले पूजते है (ख) उदार व्यक्ति को भगवान पूजते है

(ग) उदार व्यक्ति को सृष्टि पूजती है (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (ग) उदार व्यक्ति को सृष्टि पूजती है

5. कैसे मनुष्यों का देवता भी स्वागत करता है?

(क) अवगुण और उदार (ख) दयालु और परोपकारी

(ग) कपटी और परोपकारी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (ख) दयालु और परोपकारी

6. इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है यह कैसे कह सकते हो?

(क) सभी का जन्म माता-पिता से होता है (ख) सभी लोग वैभव से पूर्ण है

(ग) क्योंकि परमपिता परमात्मा सबका पिता है (घ) क्योंकि सभी सनाथ होते है

उत्तर : (ग) क्योंकि परमपिता परमात्मा सबका पिता है

7. कैसा व्यक्ति कभी नहीं मरता?

(क) जो महान होता है (ख) जो धनवान होता है

(ग) जो शिक्षित समाज से जुड़ा है (घ) जो दूसरों के लिए जीता है

उत्तर : (घ) जो दूसरों के लिए जीता है

8. 'मनुष्य' शब्द है-

(क) विशेषण (ख) जाति वाचक संज्ञा

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा (घ) भाववाचक संज्ञा

उत्तर : (ख) जाति वाचक संज्ञा

9. गद्यांश में से विलोम शब्द का चयन कीजिए -

(क) मनुष्य- मनुष्यता (ख) विपत्ति –संकट

(ग) गुण –अवगुण (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (ग) गुण –अवगुण

10. 'मनुष्यता' का प्रत्यय अलग करने पर होगा -

(क) मनु (ख) यता

(ग) त (घ) ता

उत्तर : (घ) ता

अपठित पद्यांश

(अपठित काव्यांश-01)

फिर से नहीं आता समय, जो एक बार चला गया।
जग में कहो बाधा रहित कब कौन काम हुआ भला।
बहती नदी सूखे अगर उस पार मैं इसके चलूं।
इस सोच में बैठा पुलिन पर, पार जा सकता भला?
किस रीति से काम, कब करना बनाकर योजना,
मन में लिए आशा प्रबल दृढ़ जो वही बढ़ जाएगा।
उसको मिलेगा तेज बल अनुकूलता सब और से
कब कर्मयोगी, वीर, अनुपम साहसी सुख पायेगा।
यह वीर भोग्या, जो हृदय तल में बनी वसुधा सदा,
करती रही आह्वान है, युग वीर का पुरुषत्व का।
कठिनाइयों में खोज का पथ, ज्योति पूरित जो करें,
विजय वही होता धरणि-सुत वरण अमरत्व का।

(i) एक बार जाने के बाद क्या वापस लौटकर नहीं आता है?

क) धन　　ख) राज्य
ग) समय　　घ) स्वास्थ्य

(ii) बहती नदी के माध्यम से कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

क) जल का महत्व　　ख) नदी का महत्व
ग) बाधाओं से युक्त जीवन　　घ) समय का अभाव

(iii) जीवन में कैसे व्यक्ति प्रगति करते हैं?

क) जो योजना बनाकर कार्य करते हैं　　ख) जिसके मन में आशा का प्रबल भाव होता है
ग) उपर्युक्त दोनों　　घ) दोनों में से कोई नहीं

(iv) वसुंधरा किसका आह्वान करती है?

क) कर्मयोगी और वीर पुरुषों का　　ख) भयभीत और का पुरुषों का
ग) भाग्यवादी व्यक्ति का　　घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(v) 'वसुधा' शब्द का समानार्थक शब्द –

क) सुत　　ख) राधिका
ग) वीरता　　घ) पृथ्वी

(अपठित काव्यांश-02)

नवीन कंठ दो कि मैं नवीन गा सकूं,
स्वतंत्र देश की नवीन आरती सजा सकूं।
नवीन दृष्टि का नया विधान आज हो रहा,
नवीन आसमान में विहान आज हो रहा,

खुली दसों दिशाएं खुले कपाट ज्योति द्वार के-
विमुक्त राष्ट्र सूर्य भासमान आज हो रहा ।
युगांत की व्यथा लिए अतीत आज रो रहा।
दिगंत में वसंत का भविष्य बीज बो रहा,
कुलीन जो उसे नहीं गुमान या गुरूर है,
समर्थ शक्ति पूर्ण जो किसान या मजूर है।
भविष्य द्वार मुक्त से स्वतंत्र भाव से चलो,
मनुष्य बन मनुष्य से गले मिले चले चलो,
समान भाव के प्रकाशवान सूर्य के तले
समान रूप गंध फूल फूल से खिले चलो।
सुदीर्घ क्रांति झेल खेल की ज्वलंत आग से
स्वदेश बल संजो रहा कड़ी थकान खो रहा।
प्रबुद्ध राष्ट्र की नवीन वंदना सुना सकूं
नवीन बीन दो कि मैं अगीत गान गा सकूं
नए समाज के लिए नवीन नींव पड़ चुकी
नए मकान के लिए नवीन ईंट गढ़ चुकी
सभी कुटुंब एक कौन पास कौन दूर है
नए समाज का हर एक व्यक्ति एक नूर है।

(i) कवि नई आवाज की आवश्यकता क्यों महसूस कर रहा है?

(क) ताकि वह स्वतंत्र देश के लिए नए गीत गा सके

(ख) ताकि वह नवीन आरती सजा सके

(ग) ताकि वह लोगों के अंदर नवीन जागरूकता ला सके

(घ) उपर्युक्त सभी

(ii) नए समाज का हर एक व्यक्ति एक नूर है – पंक्ति में नूर का अर्थ बताइए |

(क) नूर महल है (ख) प्रकाश के गुणों से युक्त है

(ग) चंद्रमा है (घ) नवीन है

(iii) कवि मनुष्य को क्या परामर्श देता है?

(क) आजादी के बाद हमें मिलकर आगे बढ़ना है

(ख) सूर्य व फूलों के समान समानता का भाव अपनाना है

(ग) एक नए समाज की रचना करनी है

(घ) उपयुक्त सभी

(iv) कवि के अनुसार कुलीन की क्या विशेषता है?

(क) जो घमंड नहीं दिखाता है (ख) जो धनी हो

(ग) जो देश की आजादी में योगदान दें (ग) इनमें से कोई नहीं

(v) मनुष्य बन मनुष्य से गले मिलो चले चलो- पंक्ति का अर्थ है-

(क) आगे बढ़ना (ख) गले मिलना

(ग) मिलकर देश की उन्नति के विषय में सोचना (घ) समाज को आगे बढ़ाना

(अपठित काव्यांश-03)

कोई खंडित, कोई कुंठित,
कृष बाहु, पसलियां रेखांकित,
टहनी से टांगे, बढ़ा पेट,
टेढ़े मेढ़े, विकलांग घृणित!
विज्ञान चिकित्सा से वंचित,
ये नहीं धात्रियों से रक्षित,
ज्यों स्वास्थ्य सेज हो, ये सुख से,
लौटते धूल में चिर परिचित!
पशुओं सी भीत मुक्त चितवन,
प्राकृतिक स्फूर्ति से प्रेरित मन,
तृण तरुओं से उग-बढ़, झर-गिर,
ये ढोते जीवन क्रम के क्षण!
कुल मान ना करना इन्हें वहन,
चेतना ज्ञान से नहीं गहन,
जगजीवन धारा में बहते ये मूर्ख पंगु बालू के कण!

(i) काव्यांश आपके अनुसार किस विषय पर लिखा गया है?

(क) गांव के बच्चों में कुपोषण की समस्या

(ख) गांव के बच्चों में चेतना ज्ञान का अभाव

(ग) गांवों में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव

(घ) गांव के बच्चों की दयनीय दशा का वर्णन

(ii) दूसरे पद में कवि कह रहा है कि-

(क) गांव में विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जा रही है

(ख) गांव में शिशु जन्म हेतु पर्याप्त दाइयां नहीं है

(ग) गांव में बच्चे स्वास्थ्य के प्रति सजग रहकर शारीरिक व्यायाम कर रहे हैं

(घ) गांव में बच्चे अपने मित्रों के साथ धूल में कुश्ती जैसे खेल खेल रहे हैं

(iii) गाँव के बच्चों की स्थिति कैसी है-

(क) कुपोषित, खिन्न तथा अशिक्षित हैं।

(ख) क्षीणकाय, किंतु कुल कुल के मान का ध्यान करने वाले हैं।

(ग) पशुओं की तरह प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए पूर्ति से भरे हुए हैं।

(घ) पशुओं की तरह बलिष्ठ परंतु असहाय व मूर्ख है।

(iv) काव्यांश में कवि का रवैया कैसा प्रतीत होता है?

(क) वे बच्चों की दशा के विषय में व्यंग्य कर मनोरंजन करना चाह रहे हैं।

(ख) वह बच्चों की दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

(ग) वह तटस्थ रहकर बच्चों की शारीरिक व मानसिक दशा का वर्णन कर रहे हैं।

(घ) वे बच्चों की शारीरिक व मानसिक दशा से संतुष्ट प्रतीत होते हैं।

(v) "तृण तरुओं से उग-बढ़" इस पंक्ति का अर्थ है?

(क) घास फूस की तरह हल्के हैं इसलिए तिनकों की तरह उड़ रहे हैं।

(ख) पौधों तथा घास की तरह बिना कुछ खाए पिए बढ़ रहे हैं ।

(ग) घास तथा पौधों की तरह पैदा हो रहे हैं तथा मर रहे हैं।

(घ) प्राकृतिक वातावरण में घास व पौधों की तरह फल फूल रहे हैं।

(अपठित काव्यांश-04)

सच है विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते
विघ्नों को गले लगाते हैं
कांटों में राह बनाते हैं
मुंह से ना कभी उफ कहते हैं
संकट का चरम ना गहते हैं
जो आ पड़ता सब सहते हैं
शूलों का मूल नसाते हैं
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं
है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के पग में
ललकार जब ठोक ठेलता है जब नर
पर्वतों केजाते पांव उखड़
मानव जब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है
गुण बड़े एक से एक प्रखर है
छिपे मानवों के भीतर
मेहंदी में जैसे लाली हो
बत्ती वर्तिका बीच उजियारी हो
बत्ती जो नहीं जलाता है
रोशनी नहीं वह पाता है

(i) उपर्युक्त काव्यांश की मूल रचना किस भाव पर की गई है?

(क) मानव की वीरता पर (ख) मानव की धार्मिक भावना पर

(ग) मानव की सहनशील भावना पर (घ) मानवीय संचेतनता के भाव पर

(ii) विपत्ति आने पर वीर पुरुष विचलित क्यों नहीं होते?

(क) दूर दृष्टिगामी होते हैं (ख) वे अपना धैर्य नहीं खोते

(ग) वीर पुरुष सदा संघर्ष करते हैं (घ) उन्हें अपनी वीरता पर विश्वास होता है

(iii) शूलों का मूल नसाते हैं – पंक्ति का तात्पर्य है –

(क) काँटों की जड़ को उखाड़ देते हैं (ख) काँटों से नही घबराते हैं

(ग) मुसीबतों के मूल कारण को नष्ट कर देते हैं (घ) सदा निर्विघ्न रहते हैं

(iv) 'पत्थर पानी बन जाता है'काव्य पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या सन्देश दिया है?

(क) रगडने से पत्थर भी घिस जाता है

(ख) परिश्रम से असंभव काम भी संभव हो जाता है

(ग) पत्थर पानी में बह जाता है

(घ) निरंतर अभ्यास करने से सफलता मिलती है

(v) मानव ह्रदय में छुपे प्रखर गुणों की तुलना किससे की गई है?

(क) दीपक और बाती से (ख) अँधेरे और रोशनी से

(ग) मेहंदी में छुपी लाली से (घ) बादल और पानी से

(अपठित काव्यांश-05)

ओ महमूदा मेरी दिल जिगरी
तेरे साथ मैं भी छत पर खड़ी हूँ
तुम्हारी रसोई तुम्हारी बैठक और गाय
घर में पानी घुस आया
उसमें तैर रहा है घर का सामान
तेरे बाहर के बाग का सेब का दरख्त
टूट कर पानी के साथ बह रहा है।
अगले साल इसमें पहली बार सेब लगने थे
तेरी बल खाकर जाती कश्मीरी कढ़ाई वाली चप्पल
हुसैन की पेशावरी जूती
बह रहे हैं गंदले पानी के साथ
तेरी ढलवाँ छत पर बैठा है।
घर के पिंजरे का तोता
वह फिर पिंजरे में आना चाहता है।
महमूदा मेरी बहन
इसी पानी में बह रही है तेरी लाडली गऊ
इसका बछड़ा पता नहीं कहाँ है।
तेरी गऊ के दूध भरे थन ।
अकड़ कर लोहा हो गए हैं।
जम गया है दूध
सब तरफ पानी ही पानी

पूरा शहर डल झील हो गया है।
महमूदा, मेरी महमूदा
मैं तेरे साथ खड़ी हूँ।
मुझे यकीन है छत पर जरूर
कोई पानी की बोतल गिरेगी
कोई खाने का सामान या दूध की थैली
मैं कुरबान उन बच्चों की माँओं पर
जो बाढ़ में से निकलकर ।
बच्चों की तरह पीड़ितों को
सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रही हैं।
महमूदा हम दोनों फिर खड़े होंगे
मैं तुम्हारी कमलिनी अपनी धरती पर...
उसे चूम लेंगे अपने सूखे होठों से
पानी की इसे तबाही से फिर निकल आएगा
मेरा चाँद जैसा जम्मू
मेरा फूल जैसा कश्मीर।

(i) घर में पानी घुसने का कारण है-

(क) नल और नाली की खराबी

(ख) बाँध का टूटना

(ग) प्राकृतिक आपदा

(घ) नदी में रुकावट

(ii) महमूदा की बहन को विश्वास नहीं है-

(क) छत पर पानी की बोतल गिरेगी

(ख) कुछ खाने-पीने की सहायता पहुँचेगी

(ग) कोई हैलीकॉप्टर उन्हें बचाने छत पर आएगा

(घ) इस मुसीबत से निकल जाएँगे

(iii) "मेरा चाँद जैसा जम्मू,मेरा फूल जैसा कश्मीर' का भावार्थ है-

(क) जम्मू और कश्मीर में फिर से चाँद दिखने लगेगा

(ख) जम्मू और कश्मीर का सौंदर्य वापिस लौटेगा

(ग) जम्मू और कश्मीर स्वर्ग है

(घ) जम्मू और कश्मीर चाँद और फूल जैसा सुंदर है

(iv) कवयित्री माताओं पर क्यों न्यौछावर होना चाहती है?

(क) बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रही हैं

(ख) दूसरों को बचाने के कार्य में जुटी हैं

(ग) स्वयं भूखी रहकर बच्चों की देखभाल करती हैं

(घ) रसद पहुँचाने का कार्य कर रही हैं

(v) पूरा शहर डल झील जैसा लग रहा है, क्योंकि-

(क) डल झील का फैलाव बढ़ गया है।

(ख) पूरे शहर में शिकारे चलने लगे हैं।

(ग) पूरे शहर में पानी भर गया है।

(घ) झील में नगर का प्रतिबिंब झलक रहा है।

उत्तरमाला-

1. (i) ग) समय
(ii) ग) बाधाओं से युक्त जीवन
(iii) ग) उपर्युक्त दोनों
(iv) क) कर्मयोगी और वीर पुरुषों का
(v) घ) पृथ्वी

2. (i) (घ) उपर्युक्त सभी
(ii) (ख) प्रकाश के गुणों से युक्त है
(iii) (घ) उपयुक्त सभी
(iv) (क) जो घमंड नहीं दिखाता है
(v) (ग) मिलकर देश की उन्नति के विषय में सोचना

3. (i) (घ) गांव के बच्चों की दयनीय दशा का वर्णन
(ii) (ख) गांव में शिशु जन्म हेतु पर्याप्त दाइयां नहीं है
(iii) (क) कुपोषित, खिन्न तथा अशिक्षित हैं।
(iv) (ख) वह बच्चों की दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।
(v) (ग) घास तथा पौधों की तरह पैदा हो रहे हैं तथा मर रहे हैं।

4. (i) क) मानव की वीरता पर
(ii) ख) वे अपना धैर्य नहीं खोते
(iii) ग) मुसीबतों के मूल कारण को नष्ट कर देते हैं
(iv) ख) परिश्रम से असंभव काम भी संभव हो जाता है
(v) ग) मेहंदी में छुपी लाली से

5. (i) (ग) प्राकृतिक आपदा

(ii) (घ) इस मुसीबत से निकल जाएँगे

(iii) (ख) जम्मू और कश्मीर का सौंदर्य वापिस लौटेगा

(iv) (क) बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रही हैं

(v) (ग) पूरे शहर में पानी भर गया है

(अपठित काव्यांश-06)

कातरता, चुप्पी या चीखें,
या हारे हुओं की खीज
जहाँ भी मिलेगी
उन्हें प्यार से सितार पर बजाऊँगा
जीवन ने कई बार उकसाकर
मुझे अनुल्लंघ्य सागरों में फेंका है
अगन-भट्ठियों में झोंका है,
मैंने वहाँ भी
ज्योति की मशाल प्राप्त करने के यत्न किए
बचने के नहीं,
तो क्या इन टटकी बन्दूकों से डर जाऊँगा ?
तुम मुझको दोषी ठहराओ
मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोंटा है
पर मैं गाऊँगा
चाहे इस प्रार्थना सभा में
तुम सब मुझ पर गोलियाँ चलाओ
मैं मर जाऊँगा
लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा
कल फिर आऊँगा।

(i) कवि ने किस महापुरुषों के भावों का उल्लेख किया है?

(क) महात्मा बुद्ध

(ख) महावीर स्वामी

(ग) महात्मा गाँधी

(घ) दयानन्द सरस्वती।।

(ii) मैं मर जाऊँगा, लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा, कल फिर आऊँगा। पद्यांश की उक्त अन्तिम तीन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है?

(क) मैं मरने के बाद कल फिर जन्म लूँगा

(ख) कवि बार-बार मरना और जन्म लेना चाहता है

(ग) देश-सेवा करने वाले बार-बार जन्म लेते हैं और मरते हैं।

(घ) मानवता के रक्षक हर जन्म में मानवता की सेवा की चाह रखते हैं।

(iii) 'सुनसान का गला घोंटा है' का तात्पर्य बताइए-

(क) सुनसान रूपी व्यक्ति की गर्दन दबा दी

(ख) सुनसान में ले जाकर व्यक्ति का गला घोंट दिया

(ग) सूने मानव-मन में आशा की उमंगें भर दी

(घ) सुनसान-स्थल पर सुन्दर गीत गाया।

(iv) किसी रचना को लिखने की कई शैलियाँ होती हैं। शैली भेद के अनुसार उपर्युक्त पद्यांश की लेखन शैली है-

(क) आत्मकथा शैली (ख) वर्णनात्मक शैली

(ग) संवाद शैली (घ) प्रश्न शैली।

(v) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक नीचे लिखे विकल्पों में से छाँटिए-

(क) ज्योति की मशाल (ख) अग्रदूत

(ग) मानवता के मसीहा महात्मा गाँधी (घ) महावीर स्वामी।

****

(i) उत्तर: (ग) महात्मा गाँधी

(ii) उत्तर: (घ) मानवता के रक्षक हर जन्म में मानवता की सेवा की चाह रखते हैं।

(iii) उत्तर: (ग) सूने मानव-मन में आशा की उमंगें भर दी

(iv) उत्तर: (क) आत्मकथा शैली

(v) उत्तर: (ग) मानवता के मसीहा महात्मा गाँधी

(अपठित काव्यांश-07)

मन-दीपक निष्कंप जलो रे!
सागर की उत्ताल तरंगें,
आसमान को छू-छू जाएँ
डोल उठे डगमग भूमण्डल
अग्निमुखी ज्वाला बरसाए
धूमकेतु बिजली की द्युति से,
धरती का अन्तर हिल जाए।
फिर भी तुम जहरीले फन को
कालजयी बन उसे दलो रे!
कदम-कदम पर पत्थर, काँटे
पैरों को छलनी कर जाएँ
श्रांत-क्लांत करने को आतुर
क्षण-क्षण में जग की बाधाएँ
मरण-गीत आकर गा जाएँ
दिवस-रात आपद-विपदाएँ।

फिर भी तुम हिमपात-तपन में
बिना आह चुपचाप चलो रे।
कालकूट जितना हो पी लो
दर्द, दंश दाहों को जी लो
जीवन की जर्जर चादर को
अटल नेह साहस से सी लो
आज रात है तो कल निश्चय
अरुण हँसेगा, खुशियाँ ले लो
आकुल पाषाणी अन्तर से
निर्झर-सा अविराम ढलो रे!
जन-हिताय दिन-रात गलो रे!

(i) 'निर्झर-सा अविराम ढलो रे' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) झरना निरन्तर बहता रहता है

(ख) अविराम ढलना ही झरने की आदत है

(ग) झरने के समान निरन्तर जनहित के लिए प्रयत्नशील रहो

(घ) झरने के समान हमें भी अविराम बहना चाहिए।

(ii) निरन्तर चलने की प्रेरणा कवि किस उद्देश्य से दे रहा है?

(क) संघर्ष करने के लिए (ख) आत्मसन्तोष के लिए

(ग) समाज के हित के लिए (घ) बाधाओं को हटाने के लिए।

(iii) अमृत का विपरीतार्थक पद्यांश में आया है-

(क) कालकूट (ख) विष

(ग) अमी (घ) हलाहल

(iv) 'जीवन की जर्जर चादर को पंक्ति में निहित अलंकार है-

(क) उत्प्रेक्षा (ख) यमक

(ग) श्लेष (घ) रूपक।

(v) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-

(क) निर्झर (ख) भूमण्डल

(ग) अविराम बहना (घ) जग-हित को समर्पित जीवन।

****

(i) उत्तर: (ख) अविराम ढलना ही झरने की आदत है

(ii) उत्तर: (ग) समाज के हित के लिए

(iii) उत्तर: (क) कालकूट

(iv) उत्तर: (घ) रूपक।

(v) उत्तर: (घ) जग-हित को समर्पित जीवन।

(अपठित काव्यांश-08)

जो बीत गई सो बात गई
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गये फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है।
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुवन की छाती को देखो,
सूखीं कितनी इसकी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ जो
मुरझाईं फिर कहाँ खिली
पर बोलो सूखे फूलों पर,
कब मधुवन शोर मचाता है?
जो बीत गई सो बात गई।

(i) 'जो बीत गई सो बात गई' कवि का उक्त कथन से क्या आशय है?

(क) जो बीत चुका उसे बीत जाने दो

(ख) जो बात बीत गई, वह चली गई

(ग) बीती बातों को ध्यान में रखो

(घ) बीती बातों पर चिन्तित व दुःखी न होकर भविष्य का विचार करना।

(ii) आकाश से टूटते तारों को देखकर क्या प्रेरणा मिलती है?

(क) रात में टूटते सितारे बहुत सुन्दर लगते हैं।

(ख) आकाश से टूटते सितारे हमें दुःखी और निराश करते हैं

(ग) तारे टूटने का आकाश शोक नहीं करता है, उसी प्रकार प्रियजन के विछोह का हमें शोक नहीं करना चाहिए।

(घ) आकाश में बहुत से तारे हैं, एक-दो तारे टूटने से वह शोक नहीं मनाता।

(iii) 'जीवन में वह था एक कुसुम' यहाँ 'कुसुम' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

(क) फूल के लिए (ख) प्रियजन के लिए

(ग) मधुवन के लिए (घ) वल्लरियों के लिए।

(iv) 'कुसुम' शब्द का पर्यायवाचक निम्न विकल्पों में से चुनिए-

(क) कानन (ख) सुमन

(ग) पराग (घ) कलियाँ।

(v) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) जो बीत गई सो बात गई (ख) अंबर का आनन

(ग) मधुवन (घ) सन्तोष।

****

(i) उत्तर: (घ) बीती बातों पर चिन्तित व दुःखी न होकर भविष्य का विचार करना।

(ii) उत्तर: (ग) तारे टूटने का आकाश शोक नहीं करता है, उसी प्रकार प्रियजन के विछोह का हमें शोक नहीं करना चाहिए।

(iii) उत्तर: (ख) प्रियजन के लिए

(iv) उत्तर: (ख) सुमन

(v) उत्तर: (घ) सन्तोष।

(अपठित काव्यांश-09)

हँस लो दो क्षण खुशी मिली पर
आसमान को छूने वाली,
वरना जीवन-भर क्रंदन है।
बे ऊंची-ऊंची मीनारें। किसका
जीवन हैंसी-खुशी में
मिट्टी में मिल जाती हैं ये
इस दुनिया में रहकर बीता?
छिन जाते हैं, सभी सहारे।
सदा-सर्वदा संघर्षों को
दूर तलक धरती की गाथा
दुनिया में किसने जीता?
मौन मुखर कहता कण-कण है।
खिलता फूल म्लान हो जाता
यदि तुमको मुसकान मिली तो
हँसता-रोता चमन-चमन है।
मुसकाओ सबके संग जाकर।
कितने रोज़ चमकते तारे
यदि तुमको सामर्थ्य मिला तो
कितने रह-रह गिर जाते हैं

धामो सबको हाथ बढ़ाकर
झोको अपने मन-दर्पण में
जब सावन घन घिर आते हैं।
प्रतिबिंबित सबका आनन है।
उगता-ढलता रहता सूरज
हैस तो दो क्षण खुशी मिली पर
जिसका साक्षी नील गगन है।
वरना जीवन-भर कंदन है।

(i) कवि के अनुसार जीवन में किसकी अधिकता है?

(क) आनन्द की (ख) सुख-सुविधाओं की
(ग) दु:ख व कष्टों को (घ) शान्ति की।

(ii) ऊँची-ऊंची इमारतें मिट्टी में मिलकर संकेत करती है-

(क) उन्नति पर घमण्ड करना व्यर्थ है (ख) सुख-दुख आते-जाते हैं
(ग) नष्ट होना सत्य है (घ) निर्माण में विनाश छिपा है।

(iii) सामर्थ्य की सार्थकता सिद्ध होती है-

(क) अभिमान करने में। (ख) जीवन-जीने में
(ग) सबको सहारा देने में (घ) स्वयं का उद्धार करने में।

(iv) 'प्रतिबिंबित' शब्द,मूल शब्द और प्रत्यय के योग से बना है, दोनों का सही क्रम है-

(क) प्रतिबिंब + इत (ख) प्रति + बिंबित
(ग) प्रतिबिम् + क्ति (घ) इनमें से कोई नहीं।

(v) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए-

(क) खिलता फूल (ख) रोता चमन
(ग) व्यर्थ न गवार खुशियों के क्षण (घ) पुसकान।

****

(i) उत्तर: (ग) दु:ख व कष्टों को
(ii) उत्तर: (घ) निर्माण में विनाश छिपा है।
(iii) उत्तर: (ग) सबको सहारा देने में
(iv) उत्तर: (क) पतिबिंब + इत
(v) उत्तर: (ग) व्यर्थ न गवार खुशियों के क्षण

(अपठित काव्यांश-10)

आओ मिलें सब देश बांधव हार बनकर देश के
साधक बनें सब प्रेम से सुख शांतिमय उद्देश्य के।
क्या साम्प्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो?
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो।

रक्खो परस्पर मेल, मन से छोड़कर अविवेकता,
मन का मिलन ही मिलन है, होती उसी से एकता।
सब बैर और विरोध का बल-बोध से वारण करो।
है भिन्नता में खिन्नता ही, एकता धारण करो।
है कार्य ऐसा कौन-सा साधे न जिसको एकता,
देती नहीं अद्‌भुत अलौकिक शक्ति किसको एकता।
दो एक एकादश हुए किसने नहीं देखे सुने,
हाँ, शून्य के भी योग से हैं अंक होते दश गुने।

(i) कवि किस प्रकार देशवासियों से मिलने की बात कह रहा है?

(क) विविध पुष्पों के हार के रूप में
(ख) सुख-शान्ति प्राप्त करने के लिए
(ग) संगठित हो जाने के लिए
(घ) फूलों का हार भेंट करके।

(ii) देशवासियों के लिए एकता ही वरेण्य है, क्योंकि-

(क) एकता से अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है
(ख) एकता से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं
(ग) देश में एकता स्थायी नहीं रह सकती
(घ) (क) व (ख) दोनों ही।

(iii) साम्प्रदायिक विविधता की तुलना की है-

(क) देश में अनेक सम्प्रदाय फैले हैं।
(ख) अनेक प्रकार के फूलों से बनी माला से
(ग) धर्म-सम्प्रदाय सुन्दर फूलों जैसे हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं।

(iv) 'दो एक एकादश हुए' पंक्ति मुहावरे का काव्यात्मक प्रयोग है, वह मुहावरा है-

(क) दो और दो चार होते हैं
(ख) एक और एक ग्यारह होते है,
(ग) दो और एक एकादश होते हैं
(घ) संगठन से ताकत आती है।

(v) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक नीचे लिखे विकल्पों से छाँटिए-

(क) फूलों का हार
(ख) अनेकता में एकता
(ग) देश-बांधव
(घ) साम्प्रदायिक सदभाव।

****

(i) उत्तर: क) विविध पुष्पों के हार के रूप में
(ii) उत्तर: (घ) (क) व (ख) दोनों ही।
(iii) उत्तर: (ख) अनेक प्रकार के फूलों से बनी माला से
(iv) उत्तर: (ख) एक और एक ग्यारह होते है,
(v) उत्तर: (ख) अनेकता में एकता

****

आरोह भाग-02

पद्य -भाग

पाठ सं- 1

आत्मपरिचय (कविता)

कविः हरिवंशराय बच्चन

कविता का सार- 'आत्मपरिचय कविता प्रसिद्ध हालावादी कवि हरिवंश राय बच्चन के द्वारा लिखी गई है। इस कविता में कवि ने अपने और समाज-दुनिया के द्वंद्वात्मक संबंध का चित्रण किया है। कवि ने कहा है कि स्वयं को जानना इस दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। मनुष्य समाज में रहते हुए विभिन्न खट्टे-मीठे अनुभवों से गुज़रता अपने परिवेश से पूरी तरह निरपेक्ष नहीं रह सकता। वह समाज से कटकर नहीं रह सकता। दुनिया अपने व्यंग्य बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दें, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता, क्योंकि उसका अपना अस्तित्व है, पहचान है और उसका अपना परिवेश है। कवि पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीति कलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है । कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक समान रहता है। कवि मानता है कि यह संसार मिथ्या है। यह संसार उन्हीं को महत्त्व देता है जो इसे महत्त्व देते हैं। इन सबसे परे कवि दुनिया से प्राप्त दुख और पीड़ा को दरकिनार कर सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करता है।

'आत्मपरिचय' कविता के मुख्य बिंदु :

- कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं है।
- यह दुनिया अपनी मौज में रहने वाले और सदैव प्रेम लुटाने वाले दीवानों का महत्त्व नहीं समझ पाती ।
- कवि किसी प्रिय की मधुर यादों से झंकृत हृदय में प्रेम लेकर घूमते हैं।
- संसार प्रेम के अभाव के कारण अपूर्ण है और स्वार्थ से भरा है। संसार का स्वार्थपूर्ण रवैया कवि को अच्छा नहीं लगता
- सांसारिक जीवन की कड़वाहट, विषमता आदि समस्याओं के बावजूद भी कवि के हृदय में सबके लिए प्रेम है ।
- कवि संसार के आकर्षण से दूर है। वह अपनी ही दुनिया में मस्त रहते हैं ।
- कवि आज भी यौवन के उत्साह से भरपूर है।
- कवि संसारिक ज्ञान को भूलना चाहता है। भौतिक वैभव तुच्छ है। कवि जीवन में आने वाले सुख-दुख दोनों को ही समान भाव से सहते हैं और मग्न रहते हैं।

'आत्मपरिचय' का शिल्प सौंदर्य

- भाषा सरल, सरस प्रवाह से युक्त साहित्यिक खड़ी बोली है।
- मुक्त छंद गीत, शृंगार रस का प्रयोग हुआ है।
- कविता आत्मकथात्मक एवं गेयात्मक शैली में लिखित है।
- 'जग-जीवन' और 'स्नेह-सुरा' क्यों, कवि कहकर और जग झूम झुके' में अनुप्रास अलंकार है ।
- 'भव-सागर' एवं 'भव मौजों में रूपक अलंकार है ।
- मैं और, और जग और में यमक अलंकार तथा बना-बना में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है ।
- 'उन्मादों में अवसाद और बाहर हँसा, रुलाती भीतर रोदन में राग और 'शीतल वाणी में आग पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार का प्रयोग हुआ है।
- कवि के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति हुई है।
- कवि के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का उद्घाटन हुआ है।
- सूफियाना भाव-भूमि है और इस कविता में संसार की अपूर्णता का वर्णन किया गया है।
- कवि को मन के फक्कड़पन के दर्शन हुए हैं।

पठित काव्यांश-01

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता है;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको
छूकर मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा है उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।
मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता है,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

1. 'आत्मपरिचय' कविता के रचनाकार हैं -

(क) जयशंकर प्रसाद (ख) हरिवंशराय बच्चन
(ग) रामधारी सिंह दिनकर (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

2. कवि किस का भार लिए फिरता है?

(क) घर-बार का (ख) कार्यालय का
(ग) जग-जीवन का (घ) आस-पास का

3.कवि जीवन में क्या लिए फिरता है?

(क) प्यास (ख) आस
(ग) उल्लास (घ) प्यार

4. कवि किस सुरा का पान करता है?

(क) स्नेह-सुरा (ख) उमंग
(ग) उत्साह (घ) द्वेष

5. कवि कैसा संसार लिए फिरता है?

(क) यथार्थ (ख) आदर्श
(ग) स्वप्रिल (घ)सुखी

6. कवि संसार को अपूर्ण क्यों मानता है?

(क) उसमें प्रेम नहीं है (ख) वह बनावटी व झूठा है
(ग) यह स्वार्थ से परिपूर्ण है (घ) उपर्युक्त सभी कारणों से

7. मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ, प्रस्तुत पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(क) यमक (ख) उपमा

(ग) श्लेष (घ) रूपक

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -01

1. ख 2. ग 3. घ 4. क 5. ग 6. घ 7. घ

पठित काव्यांश-02

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ।
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।
मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ.
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!
कर यत्न मिटे सब सत्य किसी ने जाना?
नादान वहाँ हैं, हाय, जहाँ पर दाना।
फिर मूढ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे ?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना ।

1. कवि यौवन के उन्माद में क्या लिए फिरता है?

(क) अवसाद (ख) अहसास
(ग) अहसान (घ) अवसर

2. कवि हृदय में क्या जला कर दहा करता है?

(क) स्मृतियों (ख) प्रेमाग्नि
(ग) कल्पनाएँ (घ) ईर्ष्या

3. कवि किस अवस्था का उन्माद लिए फिरता है?

(क) वृद्धावस्था का (ख) प्रौढावस्था का
(ग) युवावस्था का (घ) किशोरावस्था का

4. कवि किसकी याद लिए फिरता है?

(क) अपनी माँ की (ख) अपनी प्रियतमा की
(ग) अपनी बहन की (घ) उपर्युक्त में से किसी की नहीं

5. संसार के बारे में कवि क्या कह रहा है?

(क) यहाँ लोग जीवन-सत्य जानने के लिए प्रयास करते हैं.
(ख) यहाँ लोग जीवन-सत्य जानने में कभी सफल नहीं हुए,
(ग) यहाँ लोग सांसारिक मायाजाल में उलझे हुए हैं
(घ) उपर्युक्त सभी सही हैं

6. कवि सीखे ज्ञान को क्यों भुलाना चाहता है?

(क) क्योंकि उससे जीवन-सत्य की प्राप्ति नहीं होती

(ख) ताकि वह अपने मन के कहे अनुसार चल सके,

(ग) वह सांसारिकता से मुक्त होना चाहता है,

(घ) उपर्युक्त सभी कारणों से

7. उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ, प्रस्तुत पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(क) यमक (ख) उपमा

(ग) विरोधाभास (घ) रूपक

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -02

1. क 2. ख 3. ग 4. ख 5. घ 6. घ 7. ग

पठित काव्यांश-03

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।
मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना,
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना|
मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ।

1.कवि कैसे संसार को ठुकराता है?

(क) ईमानदार (ख) सत्यनिष्ठ

(ग) कर्मशील (घ) वैभवशाली

2. कवि के फूट पड़ने को समाज ने क्या कहा?

(क) छंद बनाना (ख) बहाने बनाना

(ग) अभिनय करना (घ) आँसू बहाना

3. कवि की वाणी कैसी है?

(क) मृदुल (ख) कठोर

(ग) उग्र (घ) शीतल

4.कवि कैसा संदेश लिए फिरता है?

(क) सांत्वना का (ख) बलिदान का

(ग) मस्ती का (घ) समर्पण का

5. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता, प्रस्तुत पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक (ख) उपमा

(ग) विरोधाभास (घ) रूपक

6.कवि के पास ऐसा क्या हैं जिस पर बड़े-बड़े राजाओं के महल न्योछावर हो जाते हैं?

(क) प्रेमरूपी महल के खंडहर या अवशेष (ख) दीवानापन

(ग) अतीत की स्मृतियाँ (घ) साहित्यिक कौशल

7. कवि की मनोदशा कैसी हैं?

(क) दीवानों जैसी (ख) मस्ती में चूर

(ग) प्रेम के नशे में डूबे हुए (घ) उपर्युक्त सभी सही हैं

8. कवि स्वयं को दुनिया का एक नया क्या मानता है?

(क) प्रेमी (ख) दीवाना

(ग) परवाना (घ) रक्षक

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -03

1. घ 2. क 3. घ 4. ग 5. क 6. क 7. घ 8. ख

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

कविता का सार

कविता में कवि जीवन की व्याख्या करते हुए कहता है कि जीवन गतिशील है। समय किसी के लिए नहीं रुकता। शाम होते देख यात्री तेजी से चलता है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए। उसकी मंजिल समीप ही होती है, इस कारण वह थकान होने के बावजूद भी जल्दी-जल्दी चलता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए उसे दिन जल्दी ढलता प्रतीत होता है। थके शरीर के बावजूद भी उसका उल्लास, आशा और तरंग भाव से युक्त मन उसके पैरों की गति कम नहीं होने देता है। कवि प्रकृति के माध्यम से उदाहरण देता है कि चिड़िया भी दिन ढलने पर चंचल हो उठती है। वह जल्दी से जल्दी अपने घोसले में पहुंचना चाहती है। उसे ध्यान आता है कि उसके बच्चे दाने/ भोजन की आशा में घोंसलों से बाहर झांक रहे होंगे। यह ध्यान आते ही उनके पंखों में व्यग्रता/ तेजी आ जाती है। कवि एकाकी है। उसे लगता है कि उससे मिलने को कोई व्याकुल नहीं होगा, इसलिए भला वह किसके लिए जल्दी घर जाए। कवि के मन में यह प्रश्न आते ही पैर शिथिल होने लगते हैं, लेकिन हृदय में यह व्याकुलता भर जाती है कि दिन ढल रहा है। रात होने वाली है। इससे कवि का हृदय पीड़ा से बेचैन हो उठता है और वह जल्दी-जल्दी चलने लगता है।

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के मुख्य बिंदु :

- दिन जल्दी जल्दी **ढलता** है कविता जीवन की निरंतरता को परिभाषित करती है।

- समय सतत प्रवाहमान है, वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता ।
- पथिक को थकान होने के बावजूद भी निरंतर अपनी मंजिल की ओर अग्रसर रहना चाहिए।
- समय की गतिशीलता को दर्शाने के लिए कवि ने चिड़िया और पथिक का उदाहरण लिया है।
- मंजिल दूर न होने पर भी पथिक यह सोचकर जल्दी-जल्दी चलता है कि कहीं रात न हो जाए।
- चिड़िया दिन ढलते देख और अपने बच्चों की भूख-प्यास तथा आशा को ध्यान कर जल्दी-जल्दी अपने घोंसले में पहुंचने के लिए व्याकुल हो उठती है।
- मंजिल / घर की ओर बढ़ते आदि के पाँव यह सोचकर शिथिल पड़ जाते हैं कि उसकी प्रतीक्षा के लिए कोई नहीं है,लेकिन मंजिल पर पहुँचने की आतुरता उसे व्याकुल करती है।

" दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' का शिल्प सौंदर्य:

- भाषा सरल भावानुकूल साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
- गेयात्मक शैली है। संगीतात्मकता है।
- जल्दी-जल्दी में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार, मुझसे मिलने में अनुप्रास अलंकार तथा मैं होऊँ किसके हित चंचल?" में प्रश्नालंकार का प्रयोग हुआ है।
- नीड़ों से झाँक रहे होंगे पंक्ति में दृश्य बिंब दर्शनीय है।
- कविता में वियोग शृंगार रस की अनुभूति होती है।
- जीवन की क्षणभंगुरता व प्रेम की व्यग्रता को व्यक्त किया है।
- एकाकी जीवन की मनोदशा का यथार्थ चित्रण हुआ है।

पठित काव्यांश- 04

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
हो जाए न पथ में रात कहीं.
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

1. 'एक गीत' कविता में कवि ने समय को कैसा माना है?

(क) स्थिर (ख) परिवर्तनशील
(ग) तीव्र (घ) चंचल

2. पथिक के तेज चलने का क्या कारण हैं?

(क) शाम होने वाली है। (ख) लक्ष्य समीप है
(ग) रात न हो जाए (घ) उपर्युक्त सभी

3.दिन ढलने के साथ ही बच्चे कहाँ से झाँकने लगे होंगे?

(क) खिड़की से (ख) छत से

(ग) दरवाज़े से (घ) नीड़ों से

4. कवि के हृदय में कैसे भाव भरे हुए हैं?

(क) प्रसन्नता के (ख) जोश एवं उत्साह

(ग) विह्वलता के (घ) ईर्ष्या एवं घृणा के

5. नीड़ों से झाँक रहे बच्चों का ध्यान चिड़ियों के परों में क्या भरता है?

(क) शिथिलता (ख) विकलता

(ग) चंचलता (घ) बिह्वलता

6. घर जाते हुए कवि के पग शिथिल क्यों हो जाते हैं?

(क) घर पर उसका कोई इंतजार नहीं कर रहा

(ख) घर जाकर वह क्या करेगा?

(ग) उसे अपने घर जाने की जल्दी नहीं है।

(घ) उसे अपना घर अच्छा नहीं लगता

7. `दिन जल्दी जल्दी ढलता है' कविता में कवि की हताशा और निराशा का कारण है-

(क) बच्चे की मृत्यु (ख) पत्नी से तलाक

(ग) परिवार से बिछड़ना (घ) भाई की मृत्यु

8. पथ में होने वाली रात की आशंका से कौन भयभीत रहता है?

(क) कारीगर (ख) प्रेमी

(ग) तपस्वी (घ) थका पंथी

9. बच्चों की याद आते ही चिड़िया क्या करती है?

(क) चीं-चीं करती है (ख) तेज़ी से उड़ती है

(ग) दाना चुगती है (घ) पंख फैलाती है

10. 'मुझसे मिलने को कौन विकल'- 'दिन जल्दी-जल्दी डलता है।' गीत का यह प्रश्न कवि के हृदय में क्या भरता है?

(क) शिथिलता (ख) चंचलता

(ग) विह्वलता (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला पठित काव्यांश -04

उत्तर 1. ख 2.घ 3. घ. 4.ग 5.ग 6.क 7. ग 8. घ 9.ख 10. ग

परीक्षा में पूछे जाने वाले संभावित प्रश्न (2 अंक वाले)

1. यौवन में उन्माद लिए घूमने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- यहाँ उन्माद शब्द का अर्थ उत्साह और प्रेम की तीव्रता है। कवि प्रेम के प्रति पूरी तरह समर्पित व्यक्ति है। वह संसार में प्रेम का फैलाव / प्रसार करना चाहता है। इस कार्य के लिए जवानी की मस्ती और जोश उत्साह की आवश्यकता है । इसलिए वह अपने हृदय में उत्साह संजोकर जी रहा है।

2. कवि हरिवंश राय बच्चन का संसार के प्रति दृष्टिकोण कैसा है?

उत्तर- कवि संसार को स्वार्थ से युक्त और अपूर्ण मानता है। कवि के अनुसार यह संसार उन्हीं का गुणगान करता है जो इसके झूठ का समर्थन करते हैं। कवि ऐसे संसार की परवाह नहीं करता। वह इसी संसार में रहते हुए, इसका भार ढोते हुए अपने सपनों का संसार बनाकर जीवन यापन करता है।

3. कवि संसार से किस मायने में अलग है?

अथवा

कवि ने स्वयं को संसार से अलग क्यों माना है?

अथवा

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि कहता है कि यह संसार धन और वैभव के पीछे दौड़ता है। जबकि कवि इन्हें व्यर्थ मानता है। यह सिर्फ उन्हीं लोगों को महत्त्व देता है जो इसकी हाँ में हाँ मिलाते हैं। इसलिए कवि अपनी अलग दुनिया बनाकर जीता है, जिसमें सिर्फ प्रेम ही प्रेम है।

4. शीतल वाणी में आग लिए घूमने से क्या आशय है?

उत्तर- शीतल वाणी में आग लिए घूमना एक विरोधाभासी स्थिति है। लेकिन कवि सामाजिक परिवर्तन के लिए इसे महत्त्वपूर्ण मानता है। समाज में परिवर्तन क्रांति और शोर से ही नहीं, शांत भाव से युक्त मीठी वाणी से भी संभव है। शीतल वाणी का प्रहार व्यंग्यात्मक होता है और सबसे अधिक कारगर भी कवि मानता है कि शीतल वाणी आग के समान है। वह परिवर्तन में सक्षम है।

5. जहाँ पर दाना रहते हैं, वहाँ नादान भी होते हैं कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर - दाना शब्द का अर्थ है- बुद्धिमान, ज्ञानी। संसार में ज्ञानी और अज्ञानी / नादान दोनों तरह के लोग रहते हैं। इनकी अपनी-अपनी विचारधारा होती है। दाना लोग सीखे हुए ज्ञान को निरंतर परिमार्जित करते रहते हैं जबकि नादान लोगएक बार सीखे ज्ञान को ही अंतिम मान लेते हैं। ऐसे लोग संसार को कुछ नया देने में असमर्थ होते हैं।

6. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में चिड़िया अपने घरोंदों की ओर लौटने को विकल क्यों हैं?

अथवा

चिड़िया के परों में चंचलता आने का क्या कारण है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- चिड़िया दिन को जल्दी-जल्दी डलते देखती है तो उसे अपने बच्चों का स्मरण हो आता है। उसे ध्यान आता है कि उसके बच्चे दाने और माँ के लौटने की प्रतीक्षा में होंगे और विकल होकर बार-बार घोसले से झाँक रहे होंगे। इसी कारण चिडिया के परों में चंचलता आ जाती है और वह अपने घोंसले की ओर लौटने को विकल हो उठती है।

7. कवि अपने घर जाने के लिए व्याकुल और उत्साहित क्यों नहीं है?

उत्तर - कवि एकाकी है। दिन अपनी गति से ढल रहा है किन्तु कवि का इंतजार करने वाला और कवि से मिलने के लिए व्याकुल कोई नहीं है। कवि को लगता है कि वह किसके लिए शीघ्रता करे ? यह भाव उसके पैरों को शिथिल/ धीमा कर देता है। इसी कारण उसके मन में घर जाने का न उत्साह है और न ही उत्कंठा। लेकिन दिन जल्दी-जल्दी ढलता देख कवि में हृदय लक्ष्य तक पहुँचने की व्याकुलता भर जाती है।

8. चिड़िया के बच्चे किस आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर - चिड़िया के बच्चे समय पर दाना पाने और अपनी माँ के शीघ्र लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसी आशा में वे नीड़ों/घोंसलों से बार-बार झाँक रहे होंगे।

परीक्षा में पूछे जाने वाले संभावित प्रश्न (3 अंक वाले)

1. 'आत्मपरिचय' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- 'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने और समाज-दुनिया के द्वंद्वात्मक संबंध का चित्रण किया है। मनुष्य समाज में रहते हुए विभिन्न खट्टे-मीठे अनुभवों से गुज़रता अपने परिवेश से पूरी तरह निरपेक्ष नहीं रह सकता। वह समाज से कटकर नहीं रह सकता। दुनिया अपने व्यंग्य बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता, क्योंकि उसका अपना अस्तित्व है, पहचान है और उसका अपना परिवेश है। कवि पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीति कलह का है. मेरा जीवन विरूद्धों का सामंजस्य है। कवि सुख-दुख, यश अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक समान रहता है।

2. 'आत्मपरिचय' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कविता में कवि ने स्वयं के अस्तित्व को मुखरित करने का प्रयास किया है। वह कहता है कि उसके हृदय में दूसरों के लिए प्रेम रखता है और वही बांटता है। वह संसार के स्वार्थपूर्ण रवैये के बावजूद भी इस संसार में रहकर अपनी मादकता लिए फिर रहा है। उसकी वाणी शीतल है किन्तु उसमें संसार को बदलने की ताकत रूपी आग है। कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक समान रहता है। इस प्रकार यह कविता कवि के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का परिचय देती है और शीर्षक को सार्थक बनाती है।

3. 'आत्मपरिचय' कविता में कवि ने अपने जीवन में किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है?

उत्तर- इस कविता में कवि ने अपने जीवन की अनेक विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है। कवि संसार को अपूर्ण और स्वार्थ से युक्त मानता है लेकिन इसी संसार में रहते हुए जीवन जीना पड़ रहा है। वह दुख, अवसाद, पीडा, सांसारिक कठिनाइयों से निरंतर जुझ रहा है, फिर भी जीवन से प्यार करता है और दूसरों के लिए प्यार लिए फिरता है। वह संसार के स्वार्थपूर्ण व्यवहार की तनिक भी परवाह नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि संसार उन्हीं का गुणगान करता है जो उसका गुणगान करते हैं। उसे यह संसार अपूर्ण लगता है। वह इस संसार में रहते हुए अपने एक प्रेम और उल्लास से भरा सपनों का संसार लिए फिरता है। वह यौवन का उन्माद और अवसाद दोनों साथ लिए फिरता है। वह शीतल वाणी में आग लिए फिरता है। ये सभी बातें कवि के जीवन में परस्पर विरोधी स्थितियों तथा बातों में सामंजस्य को उजागर करती हैं।

4.'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - यह कविता समय की गतिशीलता के सत्य के साथ-साथ प्रेम की व्याकुलता को भी अभिव्यक्ति देती है। पथिक अपने घर जल्दी पहुंचने की चाहत में समय के साथ चलने का प्रयास करता है। कवि हृदय की व्यग्रता को समझाने के लिए चिड़िया का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जल्दी-जल्दी बीतता समय चिड़िया को व्यग्र कर देता है। उसे याद आता है कि घोंसले में उसके बच्चे उसका और दाने का इंतजार करते हुए झाँक रहे होंगे। इसके कारण उसके परों में चंचलता आ जाती हैं। कवि घर जल्दी पहुँचना चाहता है लेकिन यह सोचकर उसके पैर शिथिल पड़ जाते हैं कि उसका कोई इंतजार करने बाला नहीं है। फिर भी वह मंजिल तक पहुंचने की चाह में व्याकुल होता है और इस व्याकुलता के पीछे प्रेम का अहसास ही है।

5.'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता हमें क्या प्रेरणा देती है?

उत्तर- दिन ढलना एक प्रेरणादायी प्राकृतिक प्रक्रिया है। समय गतिमान है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अपनी गति से हलता दिन मनुष्य को गतिशीलता की सीख देता है। व्यक्ति सजगता और स्फूर्ति के साथ अपनी मंजिल की ओर निरंतर अग्रसर रहता है। इससे कार्य में बिलम्ब होने की गुंजाइश नहीं रहती है। सफ़र कितना भी थकान भरा हो लेकिन मंजिल तक पहुँचने की चाह प्रत्येक व्यक्ति के मन में होती है। यह कविता बताती है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने कार्य को समय और उसकी पूर्णता की आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए। कार्य में तीव्रता लानी चाहिए। समय का ध्यान रखते हुए तो पक्षी भी अपनी गति बढ़ा देते हैं। मन में कितना भी एकाकीपन हो, चाहे कोई हमारी प्रतीक्षा कर रहा हो या नहीं.

हमें निरंतर मंजिल की ओर अग्रसर रहना चाहिए।

6 'आत्मपरिचय' कविता के आधार पर कवि हरिवंश राय बच्चन के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पक्षों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन के व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं पक्षों को उभारा गया है

1. कवि संसार में रहते हुए संसार का भार लेकर फिरता है। उसका जीवन प्रेम से परिपूर्ण है।
2. कवि अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है। इससे उसका फड़पन मुखरित होता है।
3. कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक समान रहता है।
4. कवि संसार को स्वार्थी और अपूर्ण मानता है।
5. कवि संतोष रखता है। वह अपना आक्रोश भी मीठी वाणी में व्यक्त करता है। इससे स्पष्ट होता है कि कवि का मकसद हंगामा खड़ा करने का नहीं बल्कि काम करने का है।
6. कवि एक ऐसा दीवाना है जिसका हृदय मस्ती से सरोबार है और नव सृजन के लिए उत्साहित है।

7. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में कवि अपने घर की और लौटने में शिथिल तथा अनुत्साहित क्यों है?

अथवा

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि की गति में शिथिलता और हृदय में विह्वलता का क्या कारण है?

उत्तर- कवि जानता है कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह गतिशील है और उसकी अपनी गति है। कवि को यह जानकारी है कि घर पर उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं होगा। उससे मिलने के लिए कोई व्याकुल नहीं होगा । इसलिए वह किसके लिए शीघ्रता करे। यह बात कवि के पैरों को शिथिल कर देती है लेकिन मंजिल पर पहुँचने की जलक उसके हृदय में बेचनी भर देती है। उसे लगता है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए। किसी अनजानी जगह पर प्रिय की यादों के साथ रात बिताना अत्यंत कष्टकर होगा। उसे फिर नए सिरे से सफर करना होगा। जल्दी-जल्दी ढलते दिन का ध्यान आते ही उसके पैरों में चंचलता आ जाती है। इस तरह कवि अपने घर की ओर लौटने में शिथिल तथा अनुत्साहित भी है।

पाठ सं-02

पतंग

कवि :आलोक धन्वा

श्री आलोक धन्वा दवारा रचित 'पतंग' कविता उनके काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' में संकलित है। इस कविता में कवि ने बाल-सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर एवं मनोहारी चित्रण किया है। कवि ने बाल क्रियाकलापों तथा प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक सुंदर बिंबों का समायोजन किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है, जिसमें वे खो जाना चाहते हैं। आकाश में उड़ती हुई पतंग ऊँचाइयों की वे हदें हैं, जिन्हें बाल-मन छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

कविता का सार

*कविता एक ऐसी नई दुनिया की सैर कराती है, जहाँ शरद ऋतु का चमकीला सौंदर्य है; तितलियों की रंगीन दुनिया है; दिशाओं के नगाड़े – बजते हैं, छतों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर इसी भय पर विजय का ध्वज लहराते बच्चे हैं।

* ये बच्चे गिर-गिरकर संभलते हैं तथा पृथ्वी का हर कोना इनके पास आ जाता है।

*वे हर बार नई पतंग को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए भादो के बाद शरद की प्रतीक्षा कर रहे हैं|

* कवि के अनुसार सबसे तेज़ बौछारों के समय का अंधेरा व्यतीत हो गया है और खरगोश की आँख के समान लालिमा – से युक्त सौंदर्यमयी प्रकाशयुक्त सवेरा हो गया है। शरद अनेक झाड़ियों को पार करते हुए तथा नई चमकदार साइकिल तेज गति से चलाते हुए जोरों से घंटी बजाते आ गया है। वह अपने सौंदर्य से युक्त चमकीले इशारों से पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूह को बुलाता है।वह आकाश को इतना सुंदर तथा मुलायम बना देता है कि पतंग ऊपर उठ सके|

* पतंग जिसे दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन वस्तु माना जाता है, वह इस असीम आकाश में उड़ सके। इस हसीन दुनिया का सबसे पहला कागज़ और बाँस की पतली कमानी आकाश में उड़ सके और इनके उड़ने : के साथ ही चारों ओर का वातावरण बच्चों की सीटियों, किलकारियों और तितलियों की मधुर ध्वनि से गूंज उठे।

* कोमल बच्चे अपने जन्म से ही कपास के समान कोमलता लेकर आते हैं। ये पृथ्वी भी उनके बेचैन पाँवों के साथ घूमने लगती है। जब ये बच्चे मकानों की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं तो छतों को नरम बना देते हैं। जब ये बच्चे झूला-झूलते हुए आते हैं तो दिशाओं के नगाड़े बजने लगते हैं। प्राय: बच्चे छतों पर तेज गति से बेसुध होकर दौड़ते हैं तो उस समय उनके रोमांचित शरीर का संगीत ही उन्हें गिरने से बचाता है। उस समय मात्र धागे के सहारे उडती पतंगों की ऊँचाइयाँ उन्हें सहारा देकर थाम लेती हैं।

कवि का मानना है कि अगर बच्चे छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बच जाते हैं तो उसके बाद वे पहले से ज्यादा निडर होकर स्वर्णिम सूर्य के सामने आते हैं। तब उनके इस साहस, धैर्य और निडरता को देखकर यह पृथ्वी भी उनके पैरों के पास अधिक तेजी से घूमती है।

'पतंग' कविता के मुख्य बिंदु-

इस कविता के माध्यम से कवि आलोक धन्वा ने बाल सुलभ इच्छाओं, क्रीडाओं तथा उमंगों के कोमल संसार का सुन्दर चित्रण किया है।कवि ने शरद का मानवीकरण किया है।

- भादो की अँधेरी रात का समय बीत चुका है और शरद आ गया है।
- शरद अँधेरी रातों वाले भादो माह के पुलों को पार करता हुआ आ गया है।
- शरद अपनी चमकीली साइकिल अर्थात चमकीली किरणों रूपी साइकिल को तेज़ चलाते हुए, घंटी बजाकर बच्चों के झुंड को बुलाता है।
- शरद ऋतु का सवेरा खरगोश की लाल आँखों जैसा प्रतीत होता है।
- आसमान साफ़-मुलायम दिखाई देने लगा है। पतंग उड़ाने के लिए उपयुक्त है।
- पतले कागज़ और बाँस की पतली कमानी से बनी पतंग बालकों की बालसुलभ इच्छाओं का प्रतीक है।
- बच्चे जन्म से कपास के समान कोमल भावनाएँ एवं लचीला शरीर लेकर आते हैं ।
- पतंगों के लिए दौड़ते बच्चे सभी दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए प्रतीत होते हैं ।
- बच्चे अपनी धुन में पतंग उड़ाते समय छतों के खतरनाक कोनों तक आ जाते हैं तो उन्हें उनके शरीर का रोमांच गिरने से बचाता है। उड़ती पतंगें मानो उन्हें थामे हुए रहती हैं।

शिल्प सौंदर्य-

- भाषा सरल, भावानुकूल साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
- मुक्त छंद है विभिन्न प्रतीकों और बिंबों का सुंदर प्रयोग हुआ है ।
- प्राकृतिक ऋतु परिवर्तन का सजीव चित्रण, जिसके कारण मानवीकरण अलंकार की उपस्थिति है ।
- नरम, बेचैन, महज, खतरनाक आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- 'मृदंग की तरह दिशाओं को बजाना' में श्रव्य बिंब, 'बेचैन पैरों में गति बिंब और पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' में दृश्य बिंब का उत्कृष्ट प्रयोग हुआ है।
- 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा में उपमा अलंकार, ज़ोर-ज़ोर में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार, गिरते हैं-बच जाते हैं' में विरोधाभास अलंकार, सुनहले सूरज' में अनुप्रास अलंकार तथा पृथ्वी और तेज़ चूमती हुई आती है में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग दर्शनीय है।
- छोटे-छोटे बच्चों की उमंग, आशा और बाल सुलभ चेष्टाओं का मनोहारी चित्रण हुआ है। साथ ही बालकों के साहसिक कार्यों का वर्णन भी मिलता है।

पठित काव्यांश-01

सबसे तेज बौछारें गयीं भादो गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जोर जोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके
दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ उड़ सके दुनिया का सबसे हल्का कागज़ उड़ सके
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

1. 'पतंग' कविता के कवि हैं-

(क) कुंवर नारायण (ख) उमाशंकर जोशी
(ग) आलोक धन्वा (घ) रघुवीर सहाय

2. कवि ने तेज बौछारों के जाने के साथ ही किस महीने के भी चले जाने की बात कही है?

(क) सावन (ख) आषाढ
(ग) अश्विन (घ) भादो

3. कविता में खरगोश की आँखों जैसा बताया गया है?

(क) सवेरे को (ख) साईकिल को
(ग) पतंग को (घ) आसमान को

4. पुलों को पार करते हुए कौन-सी ऋतु आई?

(क) शरद (ख) वसंत
(ग) पावस (घ) ग्रीष्म

5. शरद आया पुलों को पार करते हुए में अलंकार है-

(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) अतिशयोक्ति (घ) मानवीकरण।

6. कवि के अनुसार दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन उड़ने वाली चीज़ है-

(क) तितली (ख) फूल
(ग) पतंग (घ) कपास

7. शरद बच्चों के झुंड को कैसे इशारों से बुलाता है?

(क) तिरछे (ख) सीधे

(ग) तीखे (घ) चमकीले

8.कौन-सी ऋतु आकाश को मुलायम बना देती है?

(क) शरद (ख) वसंत

(ग) पावस (घ) ग्रीष्म

उत्तरमाला पठित काव्यांश - 01

1. ग 2. घ 3. क 4. क 5. घ 6. ग 7. घ 8. क

पठित काव्यांश-02

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बैचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं।
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती है महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ साथ वे भी उड़ रहे हैं।
अपने रन्ध्रों के सहारे
अगर वे गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है।
उनके बैचैन पैरों के पास ।

1. 'कपास' प्रतीक है-

(क) प्रकाश का (ख) अंधकार का

(ग) कोमलता का (घ) शांति का

2. पतंग के साथ बच्चे कैसे दौड़ते हैं?

(क) डरकर (ख) संभलकर

(ग) रुक-रुक कर (घ) बेसुध होकर

3. दौड़ते भागते बच्चे दिशाओं को बजाते हैं-

(क) सारंगी की तरह (ख) सितार की तरह

(ग) मृदंग की तरह (घ) हारमोनियम की तरह

4. छत से गिरने और बच जाने के बाद बच्चे क्या बन जाते हैं?

(क) डरपोक (ख) ईर्ष्यालु

(ग) निडर (घ) सहनशील।

5.पतंग उड़ाते समय बच्चों के रोमांचित शरीर का संगीत क्या करता है?

(क) उन्हें गिरने से बचाता है। (ख) उन्हें नचाता है

(ग) सब बच्चों को बुलाता है (घ) उन्हें डराता है

6.'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे है' से आशय है-

(क) उड़ान भरना (ख) स्वप्न देखना

(ग) आकाश छू लेने का अहसास होना (घ) पतंग उड़ने पर प्रसन्न होना

7. बच्चे किन के साथ-साथ उड़ रहे हैं?

(क) पक्षियों के (ख) पतंगों के

(ग) बादलों के (घ) चिड़ियों के

8. बचे पतंगों के साथ-साथ और किनके के सहारे उड़ रहे हैं?

(क) रंध्रों के (ख) तंतुओं के

(ग) धागे के (घ) कल्पना के

9.पृथ्वी किनके बेचैन पैरों के पास घूमती हुई आती है?

(क) तितलियों के (ख) खरगोश के

(ग) बच्चों के (घ) पतंगों के

10. पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ क्या करती है?

(क) बच्चों को डराती है (ख) बच्चों को थाम लेती हैं

(ग) बच्चों को आकाश छू लेने का अहसास कराती हैं (घ) बच्चों को बुलाती है

उत्तरमाला पठित काव्यांश -02

उत्तर 1. गं 2. घ 3. ग 4. ग 5. क 6. ग 7.ख 8. क 9.ग 10.ख

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर –इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं व उमंगों का सुंदर वर्णन किया है। पतंग बच्चों की उमंग व उल्लास का रंगबिरंगा सपना है। शरद ऋतु में मौसम साफ़ हो जाता है। चमकीली धूप बच्चों को आकर्षित करती है। वे इस अच्छे मौसम में पतंगें उड़ाते हैं। आसमान में उड़ती हुई पतंगों को उनका बालमन छूना चाहता है। वे भय पर विजय पाकर गिर-गिर कर भी सँभलते रहते हैं। उनकी कल्पनाएँ पतंगों के सहारे आसमान को पार करना चाहती हैं। प्रकृति भी उनका सहयोग करती है, तितलियाँ उनके सपनों की रंगीनी को बढ़ाती हैं।

प्रश्न 2: शरद ऋतु और भादों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –भादों के महीने में काले-काले बादल घुमड़ते हैं और तेज बारिश होती है। बादलों के कारण अँधेरा-सा छाया रहता है। इस मौसम में जीवन रुक-सा जाता है। इसके विपरीत, शरद ऋतु में रोशनी बढ़ जाती है। मौसम साफ़ होता है, धूप चमकीली होती है और चारों तरफ उमंग का माहौल होता है।

प्रश्न 3: शरद का आगमन किस लिए होता है?

उत्तर –शरद का आगमन बच्चों की खुशियों के लिए होता है। वे पतंग उड़ाते हैं। वे दुनिया की सबसे पतली कमानी के साथ सबसे हलकी वस्तु को उड़ाना शुरू करते हैं।

प्रश्न 4: बच्चों के बारे में कवि ने क्या-क्या बताया है?

उत्तर –बच्चों के बारे में कवि बताता है कि वे कपास की तरह नरम व लचीले होते हैं। वे पतंग उड़ाते हैं तथा झुंड में रहकर सीटियाँ बजाते हैं। वे छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं तथा गिरने पर भयभीत नहीं होते। वे पतंग के साथ मानो स्वयं भी उड़ने लगते हैं।

प्रश्न 5: प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने 'सबसे' शब्द का प्रयोग कइ बार किया हैं, क्या यह सार्थक हैं?

उत्तर –कवि ने हलकी, रंगीन चीज, कागज, पतली कमानी के लिए 'सबसे' शब्द का प्रयोग सार्थक ढंग से किया है। कवि ने यह बताने की कोशिश की है कि पतंग के निर्माण में हर चीज हलकी होती है क्योंकि वह तभी उड़ सकती है। इसके अतिरिक्त वह पतंग को विशिष्ट दर्जा भी देना चाहता है।

प्रश्न 6: किन-किन शब्दों का प्रयोग करके कवि ने इस कविता को जीवत बना दिया हैं?

उत्तर –

– तेज बौछारें गई – भादों गया

– नयी चमकीली तेज साइकिल – चमकीले इशारे

– अपने साथ लाते हैं कपास – छतों को भी नरम बनाते हुए

प्रश्न 7: 'किशोर और युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं।' –'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –कवि ने 'पतंग' कविता में बच्चों के उल्लास व निभीकता को प्रकट किया है। यह बात सही है कि किशोर और युवा वर्ग उत्साह से परिपूर्ण होते हैं। किसी कार्य को वे एक धुन से करते हैं। उनके मन में अनेक कल्पनाएँ होती हैं। वे इन कल्पनाओं को साकार करने के लिए मेहनत करते हैं। समाज में विकास के लिए भी इसी एकाग्रता की जरूरत है। अत: किशोर व युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं।

स्वयं करें

1. उन परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए जो भादों बीतने के बाद प्रकृति में दृष्टिगोचर होते हैं।
2. शरद ऋतु के आगमन के प्रति कवि की कल्पना अनूठी है, स्पष्ट कीजिए।
3. शरद ऋतु का आकाश पर क्या प्रभाव पड़ता है, और कैसे?
4. पृथ्वी का प्रत्येक कोना बच्चों के पास अपने-आप कैसे आ जाता है?
5. भागते बच्चों के पदचाप दिशाओं को किस तरह सजीव बना देते हैं?
6. हल्की, रंगीन पतंगों और बालमन की समानताएँ स्पष्ट कीजिए।

पाठ सं-03

(क) कविता के बहाने

कुँवर नारायण

प्रतिपादय-'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता-कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है।

सार-यह कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

शिल्प सौंदर्य-

1 सहज सरल खड़ी बोली का इस्तेमाल हुआ है।

2 कविता का मानवीकरण किया गया है।

3 रचनात्मक ऊर्जा पर सीमा के बंधन न होने की वकालत की गई है।

4 इस घर उस पर में अनुप्रास अलंकार है।

5 चिड़िया क्या जाने? में प्रश्न अलंकार है।

6 बिना मुरझाए महकने के माने में अनुप्रास अलंकार है ।

7 मुक्तक छंद है।

8 कविता के रसास्वादन का आनंद अनंतकाल तक शाश्वत होने की वकालत की गई है। बच्चों के बहाने में उपमा अलंकार है। बाल मन की सरलता की अभिव्यक्ति हुई है।

पठित काव्यांश-01

कविता एक उड़ान हैं चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर उस पर कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिडिया क्या जाने?
कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर
इस घर उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने?
कविता एक खेल है बच्चों के बहाने

बाहर भीतर

यह घर, वह घर

सब घर एक कर देने के माने

बच्चा ही जाने।

1. 'कविता के बहाने' कविता के कवि हैं-

(क) कुंवर नारायण (ख) उमाशंकर जोशी

(ग) आलोक धन्वा (घ) रघुवीर सहाय

2. "कविता के बहाने "कविता में किसके अस्तित्व पर विचार किया गया है?

(क) चिड़ियाँ के (ख) कविता के

(ग) फूल के (घ) इन सभी के

3. कविता और बच्चों में समानता रखने का क्या कारण है?

(क) दोनों ही किसी सीमा को नहीं मानते (ख) दोनों ही अपने-पराये का भेद नहीं करते

(ग) दोनों में ही सृजनात्मक शक्ति होती है। (घ) उपर्युक्त तीनों ही कारण सही हैं।

4.कविता के पंख लगा उड़ने से क्या तात्पर्य है?

(क) उड़ना (ख) कल्पना करना

(ग) चलना (घ) इनमें से कोई नहीं

5. कवि के अनुसार कविता की उड़ान को कौन नहीं जान सकता?

(क) चिड़िया (ख) फूल

(ग) बच्चा (घ) कवि

6. किसकी उड़ान देश, काल और परिस्थिति से बाहर संभव है?

(क) चिड़िया की (ख) बच्चे की

(ग) फूल की (घ) कविता की

7. फूल की अंतिम परिणति क्या होगी?

(क) मुरझाना (ख) ताजगी भरना

(ग) खिलना (घ) महकना

8. चिड़िया अपने पंखों के सहारे उड़ती है और कविता किसके सहारे उड़ती है?

(क) हवा के (ख) पंख के

(ग) शब्द के (घ) कल्पना के

9.कविता बिना मुरझाए सदियों तक महकती रहती है इसका क्या आशय है?

(क) कविता कालजयी होती है (ख) कविता का प्रभाव सदियों तक बना रहता है।

(ग) कविता का सौन्दर्य कभी समाप्त नहीं होता (घ) उपर्युक्त सभी

10.कविता पढ़ते और लिखते समय काल के बंधन टूट जाते हैं और बच्चों के खेलते समय-

(क) धर्म के बंधन टूट जाते हैं। (ख) भेदभाव के बंधन टूट जाते हैं

(ग) संकीर्णता के बंधन टूट जाते हैं (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला : पठित काव्यांश - 01

उत्तर 1. क 2. ख 3. घ 4. ख 5. क 6. घ 7. क 8. घ 9. घ 10. घ

लघूत्तरात्मक प्रश्न

(क) कविता के बहाने

प्रश्न 1:'कविता के बहाने' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर –कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाएँगे। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

प्रश्न 2:"कविता के बहाने' कविता में कवि की क्या आशंका है और क्यों?

उत्तर –इस कविता में कवि को कविता के अस्तित्व के बारे में संदेह है। उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाएँ व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। प्रगति की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं। अत: कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 3:फूल और चिड़िया को कविता की क्या-क्या जानकारियाँ नहीं हैं? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर –फूल और चिड़िया को कविता की निम्नलिखित जानकारियाँ नहीं हैं-

1.फूल को कविता के खिलने का पता नहीं है। फूल एक समयावधि में मुरझा जाते हैं, परंतु कविता के भाव सदा खुशबू बिखेरते रहते हैं।

2.चिड़िया को कविता के उड़ान की सीमा का पता नहीं अर्थात कविता के विकास की यात्रा असीमित है ।

प्रश्न 4:'कविता के बहाने' के आधार पर कविता के असीमित अस्तित्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –'कविता के बहाने' में कविता का असीमित अस्तित्व प्रकट करने के लिए कवि ने चिड़िया की उड़ान का उदाहरण दिया है। वह कहता है कि चिड़िया की उड़ान सीमित होती है किंतु कविता की कल्पना का दायरा असीमित होता है। चिड़िया घर के अंदर-बाहर या एक घर से दूसरे घर तक उड़ती है, परंतु कविता की उड़ान व्यापक होती है। कवि के भावों की कोई सीमा नहीं है। कविता घर-घर की कहानी कहती है। वह पंख लगाकर हर जगह उड़ सकती है। उसकी उड़ान चिड़िया की उड़ान से कहीं आगे है।

(ख) बात सीधी थी पर

प्रतिपादय-यह कविता 'कोई दूसरा नहीं' कविता-संग्रह से संकलित है। इसमें कथ्य के द्वंद्व उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है। अब तक जिन शब्दों को हम एक-दूसरे के पर्याय के रूप में जानते रहे हैं, उन सबके भी अपने अर्थ होते हैं। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की जरूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है। सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।

सार-कवि का मानना है कि बात और भाषा स्वाभाविक रूप से जुड़े होते हैं। किंतु कभी-कभी भाषा के मोह में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। मनुष्य अपनी भाषा को टेढ़ी तब बना देता है जब वह आडंबरपूर्ण तथा चमत्कारपूर्ण शब्दों के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अंतत: शब्दों के चक्कर में पड़कर वे कथ्य अपना अर्थ खो बैठते हैं। अत: अपनी बात सहज एवं व्यावहारिक भाषा में कहना चाहिए ताकि आम लोग कथ्य को भलीभाँति समझ सकें।

शिल्प सौन्दर्य-

1. भाषा की जटिलता पर कटाक्ष किया गया है।
2. खड़ी बोली हिन्दी का इस्तेमाल हुआ है।
3. मुक्तक छंद का प्रयोग हुआ ह।
4. जरा टेड़ी फंस गई, बात और भी पेंचीदा होती चली गई में मुहावरों का इस्तेमाल हुआ है।
5. साथ-साथ में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। वाह-वाह में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
6. पेंच कसने में चाक्षुष बिंब प्रभावी है।
7. बेहतर है जैसे सटीक विशेषण का इस्तेमाल हुआ है।
8. करतब शब्द में व्यंजना है।
9. उर्दू शब्दावली का सटीक इस्तेमाल हुआ है। जैसे बेहतर, करतब, तमाशबीन, साफ।
10. आडंबरपूर्ण भाषा शैली पर कटाक्ष किया गया है।
11. बात का मानवीकरण किया गया है।
12. कील की तरह, बच्चे की तरह मैं उपमा अलंकार हैं।
13. बात की चूड़ी मर गई में रूपक अलंकार है।
14. मुक्तक छंद है एवं खड़ी बोली का इस्तेमाल हुआ है।

पठित काव्यांश-01

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढी फँस गई।
उसे पाने की कोशिश में भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए
लेकिन इससे भाषा के साथ साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्यों कि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह!

1. 'बात सीधी थी पर कविता के कवि का नाम है-

(क) कुँवर नारायण (ख) उमाशंकर जोशी
(ग) आलोक धन्वा (घ) रघुवीर सहाय

2. सीधी बात किस के चक्कर में टेढी फँस गई?

(क) तर्कशास्त्र के (ख) विज्ञान के

(ग) भाषा के (घ) उपर्युक्त सभी के

3. भाषा के क्या करने से बात और अधिक पेचीदा हो गई?

(क) उलटने पलटने (ख) तोड़ने-मरोड़ने

(ग) घुमाने फिराने से (घ) उपर्युक्त सभी कारणों से

4.भाषा को उलटने पलटने तोड़ने-मरोड़ने और घुमाने फिराने से बात कैसी हो जाती है?

(क) सरल (ख) स्पष्ट

(ग) पेचीदा (घ) प्रभावकारी

5. कवि क्या करतब कर रहा था?

(क) दीवार में कील ठोक रहा था (ख) दीवार में पेंच कस रहा था

(ग) बात सुलझाने की कोशिश कर रहा था (घ) काव्य रचना कर रहा था

6. कवि के करतबों (कविता में बनावटी भाषा का प्रयोग) को देख कर तमाशबीनों ने क्या किया?

(क) उसकी झूठी तारीफ (ख) शाबाशी दी

(ग) वाह वाही की (घ) उपर्युक्त सभी सही हैं

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -01

1.क 2. ग 3. घ 4. ग 5. ग 6. घ

पठित काव्यांश-02

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।
ऊपर से ठीक ठाक
पर अंदर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत!
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा-
"क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?"

1. बात कवि के साथ किसके समान खेल रही थी?

(क) पेंच के समान (ख) कील के समान

(ग) बच्चे के समान (घ) खिलोने के समान

2. 'बात की चूड़ी मर जाना' से कवि का तात्पर्य है-

(क) बात का प्रभावहीन हो जाना (ख) बात का सहज और स्पष्ट हो जाना

(ग) बात में कसावट आ जाना (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. कविता में किसकी सहजता की बात कही गई है?

(क) अलंकार की (ख) छंद की

(ग) व्याकरण की (घ) भाषा की

4. बनावटी एवं आडंबरयुक्त भाषा के प्रयोग से बात कैसी हो गई?

(क) प्रभावहीन (ख) उद्देश्यहीन

(ग) अर्थहीन (घ) उपर्युक्त सभी

5. भाषा को सहूलियत से बरतने से क्या तात्पर्य है?

(क) भाव के अनुरूप सहज एवं सरल शब्दों का प्रयोग करना

(ख) भावाभिव्यक्ति के लिए अनावश्यक आडंबरयुक्त शब्दों के प्रयोग से बचना

(ग) अनावश्यक पांडित्य प्रदर्शन से बचना

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -02

1. ग 2. क 3. घ 4. घ 5. घ

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1:'बात सीधी थी पर '..... कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बात सीधी थी पर '..... कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –इस कविता में कवि ने कथ्य और माध्यम के द्वंद्व को उकेरा है तथा भाषा की सहजता की बात कही है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है। अब तक हम जिन शब्दों को एक-दूसरे के पर्याय के रूप में जानते रहे हैं, उन सबके भी अपने विशेष अर्थ होते हैं। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या मेहनत की जरूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है।

प्रश्न 2: कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती हैं?

उत्तर –कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नहीं पाता। वह मनोरंजन तो पा सकता है, परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। इस तरीके से बात पेचीदा हो जाती है।

प्रश्न 3:प्रशंसा का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता हैं? 'बात सीधी थी पर' 'कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर –प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को सही व उच्च कोटि का मानने लगता है। वह गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाता। उसका विवेक कुंठित हो जाता है। कविता में प्रशंसा मिलने के कारण कवि अपनी सहज बात को शब्दों के जाल में उलझा देता है। फलत: उसके भाव जनता तक नहीं पहुँच पाते।

प्रश्न 4:कवि को पसीना आने का क्या कारण था?

उत्तर –कवि अपनी बात को प्रभावशाली भाषा में कहना चाहता था। इस चक्कर में वह अपने लक्ष्य से भटककर शब्दों के आडंबर में उलझ गया। भाषा के चक्कर से वह अपनी बात को निकालने की कोशिश करता है, परंतु वह नाकाम रहता है। बार-बार कोशिश करने के कारण उसे पसीना आ जाता है।

प्रश्न 5:कवि ने कथ्य को महत्व दिया है अथवा भाषा को-'बात सीधी थी पर ' ' के आधार पर तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए।

उत्तर -'बात सीधी थी पर '' कविता में कवि ने कथ्य को महत्व दिया है। इसका कारण यह है कि सीधी और सरल बात को कहने के लिए जब कवि ने चमत्कारिक भाषा में कहना चाहा तो भाषा के चक्कर में भावों की सुंदरता नष्ट हो गई। भाषा के उलट-फेर में पड़ने के कारण उसका कथ्य भी जटिल होता गया।

प्रश्न 6:'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

उत्तर –'बात सीधी थी पर '' कविता में कवि ने भाषा के विषय में व्यंग्य करके यह सिद्ध करना चाहा है कि लोग किसी बात को कहने के क्रम में भाषा को सीधे, सरल और सहज शब्दों में न कहकर तोड़-मरोड़कर, उलटपलटकर, शब्दों को घुमा-फिराकर कहते हैं, जिससे भाषा क्लिष्ट होती जाती है और बात बनने की बजाय बिगड़ती और उलझली चली जाती है। इससे हमारा कथ्य और भी जटिल होता जाता है क्योंकि बात सरल बनने की जगह पेचीदी बन जाती है।

स्वयं करें

1. आप 'चिड़िया की उड़ान' और 'कविता की उड़ान' में क्या अंतर देखते हैं?'कविता के बहाने' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. फूलों के खिलने और कविता पढ़ने दोनों से ही मन प्रसन्न हो उठता है। कविता के आधार पर दोनों की साम्यता स्पष्ट कीजिए।
3. कवि जो कुछ कहना चाहता था, वह कहाँ उलझकर रह गया? क्या उसे अपने प्रयास में सफलता मिली ?
4. कवि ने बात की तुलना किससे की है और क्यों? -'बात सीधी थी पर '' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

पाठ सं-04

कैमरे में बंद अपाहिज

रघुवीर सहाय

कविता का प्रतिपादय एवं सार

प्रतिपादय-कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से लिया गया है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है। किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए। आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहीन हो जाता है। यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है। साथ ही उन सभी व्यक्तियों की तरफ इशारा करती है जो दुख-दर्द, यातना-वेदना आदि को बेचना चाहते हैं।

सार-इस कविता में दूरदर्शन के संचालक स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरे को कमजोर मानते हैं। वे विकलांग से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं? आप अपाहिज क्यों हैं? आपको इससे क्या दुख होता है? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है। प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है। इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है। प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जाग सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है, परंतु 'परदे पर वक्त की कीमत है' वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है।

पठित काव्यांश-01

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज है ?
तो आप क्यों अपाहिज है ?
आपका अपाहिजपन आपको दुःख देता है ?
हाँ तो बताइए आपका दुःख क्या है
जल्दी बताइए वह दुःख बताइए
बता नहीं पाएगा |

प्रश्न 1-हम दूरदर्शन पर क्या बोलेंगे?

(क) समर्थ है (ख) असमर्थ है
(ग) कायर (घ) सभी

प्रश्न 2-काव्यांश में कौन सी बोली का प्रयोग किया है?

(क) ब्रज (ख) खड़ीबोली
(ग) अवधी (घ) सभी

प्रश्न 3- आपका अपाहिजपन आपको में कौन सा अलंकार है?

(क) यमक
(ख) अनुप्रास
(ग) उत्प्रेक्षा
(घ) उपमा

प्रश्न 4-हम अपाहिज से क्या पूछेंगे?

(क) क्यों अपाहिज है?
(ख) अपाहिज है
(ग) आपको अच्छा लगता है
(घ) कब लगता है

प्रश्न 5- अपाहिजपन का क्या अर्थ है?

(क) मजबूत
(ख) शारीरिक रूप से कमजोर
(ग) अच्छा व्यक्ति
(घ) सभी

पठित काव्यांश-02

सोचिये
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारों से बताएँगे की क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे ?)
आप जानते है कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतजार करते है आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं ?

प्रश्न 1-हम अपाहिज व्यक्ति को क्यों रुला देते है ?

(क) कार्यक्रम रोचक बने
(ख) कार्यक्रम रोचक नहीं बने
(ग) बोर लगे
(घ) सभी

प्रश्न 2 -इस काव्यांश के कवि का नाम बताइए -

(क) माखनलाल चतुर्वेदी
(ख) रघुवीर सहाय
(ग) सुमित्रानंदन पन्त
(घ) सभी

प्रश्न 3 -इस काव्यांश का नाम बताइए -

(क) आत्मपरिचय
(ख) पतंग
(ग) कैमरे में बंद अपाहिज
(घ)उषा

प्रश्न 4 -हम कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए क्या करते है?

(क) अपाहिज को रुलाते है
(ख) अपाहिज को हसाते हैं
(ग) गुस्सा करते है
(घ) खिलाते है

प्रश्न 5 -रोते हुए अपाहिज क्या नहीं बता पायेगा?

(क) अपने सुख को
(ख) अपने दुःख को
(ग) गुस्से को
(घ) गर्व को

पठित काव्यांश-03

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर
बहुत बड़ी तस्वीर
और उनकी होंठो पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेगे)

प्रश्न 1 -कैमरे में क्या दिखायेंगे?

(क) सोई आँखों
(ख) फूली हुई आँखे
(ग) गुस्से वाले आँखे
(घ) सभी

प्रश्न 2 - कैमरे वाले दर्शको से क्या अपेक्षा करते है?

(क) अपाहिज के दर्द को नहीं समझेंगे
(ख) अपाहिज के दर्द को समझेंगे
(ग)भाषा को समझेंगे
(घ) सभी

प्रश्न 3 - कसमसाहट का क्या अर्थ है?

(क) ख़ुशी
(ख) बेचैनी
(ग)गुस्से को
(घ) दुःख

प्रश्न 4 –" फूली हुई आँख " क्या है?

(क) मुहावरा
(ख) पर्यायवाची
(ग) अर्थ
(घ) विलोम

प्रश्न 5 -इस काव्यांश की भाषा कैसी है?

(क) सरल
(ख) कठिन
(ग) जटिल
(घ) सभी

पठित काव्यांश-04

एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं
आप और वह दोनों
(कैमरा बस करो
नहीं हुआ
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुस्कुराएंगे हम
अब आप देख रहे है सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)

धन्यवाद |

प्रश्न 1 -कैमरे वाला एक और कोशिश क्यों करना चाहता है?

(क) कार्यक्रम सवेदनशील हो (ख) कार्यक्रम सवेदनशील नहीं हो

(ग) जटिल हो (घ) सभी

प्रश्न 2 -कैमरा एक साथ क्या करना चाहता है?

(क) दर्शको को रुलाना (ख) दर्शको को हसाना

(ग) बोर करना (घ) दुखी करना

प्रश्न 3 -परदे पर किसकी कीमत है?

(क) वक्त की कीमत (ख) दर्शको की कीमत

(ग) मेहमानों की कीमत (घ) सभी

प्रश्न 4 – धीरज का क्या अर्थ है?

(क) दुःख (ख) धैर्य

(ग) बुरा (घ) कोमल

प्रश्न 5 -काव्यांश में कौन सी शब्दावली का प्रयोग किया गया है -

(क) देशी (ख) विदेशी

(ग) अरबी (घ) फ़ारसी

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के व्यंग्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर –इस कविता में कवि ने मीडिया की ताकत के बारे में बताया है। मीडिया अपने कार्यक्रम के प्रचार व धन कमाने के लिए किसी की करुणा को भी बेच सकता है। वह ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण समाज-सेवा के नाम पर करता है परंतु उसे इस कार्यव्यापार में न तो अपाहिजों से सहानुभूति होती है और न ही उनके मान-सम्मान की चिंता। वह सिर्फ़ अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना जानता है। रोचक बनाने के लिए वह ऊट-पटांग प्रश्न पूछता है और पीड़ित की पीड़ा को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है।

प्रश्न 2:'कैमरे में बद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

उत्तर -इस कविता को हम क्रूरता की कविता मानते हैं। यह कविता मीडिया के व्यापार व कार्यशैली पर व्यंग्य करती है। दूरदर्शन कमजोर व अशक्त वर्ग के दुख को बढ़ा-चढ़ाकर समाज के सामने प्रस्तुत करता है। वह कमजोर वर्ग की सहायता नहीं करता, अपितु अपने कार्यक्रम के जरिये वह स्वयं को समाज-हितैषी सिद्ध करना चाहता है। अत: यह कविता पूर्णत: मीडिया की क्रूर मानसिकता को दर्शाती है।

प्रश्न 3:कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता की मानसिकता कैसी होती हैं?

उत्तर –कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता की मानसिकता अपाहिज को रुलाने की होती है। वह सोचता है कि अपंग के साथ-साथ यदि दर्शक भी रोने लगेंगे तो उनकी सहानुभूति चैनल को मिल जाएगी। इससे उसे धन व प्रसिद्धि का लाभ मिलेगा।

प्रश्न 4:'यह अवसर खो देंगे?' पंक्ति का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर -प्रश्नकर्ता विकलांग से तरह-तरह के प्रश्न करता है। वह उससे पूछता है कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है? ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्रश्नकर्ता को तुरंत चाहिए। यह दिव्यांग के लिए सुनहरा अवसर है कि वह अपनी पीड़ा को समाज के

समक्ष व्यक्त करे। ऐसा करने से उसे लोगों की सहानुभूति व सहायता मिल सकती है। यह पंक्ति मीडिया की कार्य-शैली व व्यापारिक मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।

प्रश्न 5:दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमजोर को ही क्यों लाते हैं?

उत्तर –दूरदर्शन वाले जानते हैं कि समाज में कमजोर व अशक्त लोगों के प्रति करुणा का भाव होता है। लोग दूसरे के दुख के बारे में जानना चाहते हैं। दूरदर्शन वाले इसी भावना का फ़ायदा उठाना चाहते हैं तथा अपने लाभ के लिए ऐसे कार्यक्रम बनाते हैं।

प्रश्न 6:अपाहिज अपने दुख के बारे में क्यों नहीं बता पाता?

उत्तर –प्रश्नकर्ता अपाहिज से उसके विकलांगपन व उससे संबंधित कष्टों के बारे में बार-बार पूछता है, परंतु अपाहिज उनके उत्तर नहीं दे पाता। वास्तविकता यह है कि उसे अपाहिजपन से उतना कष्ट नहीं है जितना उसके कष्ट को बढ़ाचढ़ाकर बताया जाता है। प्रश्नकर्ता के प्रश्न भी अस्पष्ट होते हैं तथा जितनी शीघ्रता से प्रश्नकर्ता जवाब चाहता है, उतनी तीव्र मानसिकता अपाहिज की नहीं है। उसने इस कमी को स्वीकार कर लिया है लेकिन वह अपना प्रदर्शन नहीं करना चाहता।

प्रश्न 7:'कैमरे में बंद अपाहिज ' शीर्षक की उपयुक्तता सिद्ध कीजिए।

उत्तर –यह शीर्षक कैमरे में बंद यानी कैमरे के सामने लाचार व बेबस अपाहिज की मनोदशा का सार्थक प्रतिनिधित्व करता है। वस्तुत: यह दूरदर्शन के कार्यक्रम-संचालकों की मानसिकता पर व्यंग्य है। कार्यक्रम बनाने वाले अपने लाभ के लिए अपाहिज को भी प्रदर्शन की वस्तु बना देते हैं। वे दूसरे की पीड़ा बेचकर धन कमाते हैं। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

प्रश्न 8:'कैमरे में बद अपाहिज' कविता के प्रतिपाद्य के विषय में अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर –'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में शारीरिक अक्षमता की पीड़ा झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा को जिस अमानवीय ढंग से दर्शकों तक पहुँचाया जाता है वह कार्यक्रम के निर्माता और प्रस्तोता की संवदेनहीनता की पराकाष्ठा है। वे पीड़ित व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हुए उसे बेचने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ भी उनकी पैसा कमाने की सोच दिखती है, जो उनकी मानवता के ऊपर हावी हो चुकी है।

प्रश्न 9:प्रश्नकर्ता अपाहिज की कूली हुई आँखों की तसवीर बड़ी क्यों दिखाना चाहता हैं?

उत्तर –प्रश्नकर्ता अपाहिज की फूली हुई आँखों की तस्वीर इसलिए दिखाना चाहता है ताकि दर्शक उसके दुख से दुखी हों। दर्शकों के मन में उसके प्रति सहानुभूति उत्पन्न हो सके। ऐसे में शायद दर्शकों की आँखों में आँसू भी आ जाएँ जिससे उसका कार्यक्रम लोकप्रिय हो जाए। अत: वह दिव्यांग के दुख को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना चाहता है।

प्रश्न 10:'कैमरे में बद अपाहिज' कविता कुछ लोगों की सवेदनहीनता प्रकट करती हैं, कैसे?

उत्तर –'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता इसलिए प्रकट करती है क्योंकि ऐसे लोग धन कमाने एवं अपने कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हैं और किसी की करुणा बेचकर अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं। ऐसे लोग अपाहिजों से सहानुभूति नहीं रखते बल्कि वे अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उलटे-सीधे प्रश्न पूछते हैं।

स्वयं करें

1. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में संचार माध्यमों की संवेदनहीनता को उजागर किया गया है। कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. दूरदर्शन के कार्यक्रम-निर्माताओं और संचालकों के व्यवहार में उनकी व्यावसायिक प्रवृत्ति के दर्शन कैसे होते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।
3. अपाहिज व्यक्ति कार्यक्रम-प्रस्तोता को अपना दुख क्यों नहीं बता पाता?
4. अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कार्यक्रम निर्माता किस सीमा तक गिर जाते हैं?'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

5. कार्यक्रम-प्रस्तोता द्वारा अपाहिज के साथ जिस तरह का व्यवहार किया गया उसे आप कितना उचित मानते हैं?

6. कार्यक्रम-संचालक अपाहिज की आँखें परदे पर दिखाना चाहता है। इसके क्या कारण हो सकते हैं? कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

7. अपाहिज व्यक्ति का दूरदर्शन पर साक्षात्कार प्रस्तुत करने का क्या उद्देश्य है? आप संचालक को इस उद्देश्य की प्राप्ति में कितना सफल पाते हैं?

पाठ सं-06

'उषा'

शमशेर बहादुर सिंह

कविता का प्रतिपादय एवं सार

प्रतिपाद्य- प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द-चित्र उकेरा है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है। कवि भोर की आसमानी गति की धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है। इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है जो गाँव की सुबह से जुड़ता है-वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ हैं। कवि ने नए बिंब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है।

सार- कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंख-सा दिखाई देता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल को किसी ने धो दिया हो या उस पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा है। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

मुख्य बिंदु :

- 'उषा' शीर्षक कविता शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित प्रकृति- सौंदर्य को दर्शाने वाली कविता है।
- प्रस्तुत कविता में कवि ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित प्रकृति का शब्द चित्र उकेरा है।
- कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है।
- कवि ने नए बिम्ब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है।
- ग्रामीण परिवेश का सहज शब्दों में चित्रण किया गया है।

काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लिपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)

भाव सौंदर्य-:

- इस कविता में भोर कालीन सौंदर्य के रंग रूप और वातावरण का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।
- भोर के समय वातावरण न तो काला होता है न उजला। उसका रंग कभी नीले शंख जैसा कभी राख से लीपे चौके जैसा तथा कभी लाल केसर से धुली सिल जैसा बताकर कवि ने उषा के पल प्रति-पल बदलते सौंदर्य का वर्णन किया है।

शिल्प-सौंदर्य-:

- सवेरे के समय वातावरण में गहरे नीले रंग की उपमा शंख से की है।
- 'भाषा हिन्दी बड़ी बोली, सहज, सरल व प्रभावशाली है।

- "राख से लिखा हुआ गीला चौका" यह चाक्षुप व स्पर्श बिम्ब भोर कालीन गहरे रंग और नमी को व प्रातःकालीन पवित्रता को साकार करता है
- शंख जैसे, राख पड़ा है में उपमा अलंकार है।
- कवि की कल्पना मौलिक है और नवीन उपमानों का प्रयोग किया गया है।
- वर्णन में चित्रात्मकता है।
- अत्यंत सरल और लघु शब्दों का प्रयोग किया गया है।

बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने ।

भाव सौंदर्य-:

- प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने उषाकाल के दृश्य का गतिशील सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है।
- प्रयोग धर्मी कवि ने नए-नए उप मानव के माध्यम से अंधेरे को हटाकर लालिमा के फैलने के अद्भुत दृश्य को उकेरा है।

शिल्प सौंदर्य-:

- इस काव्यांश में रात की कालिमा, ओस का गीलापन और सूरज की लालिमा के चित्रण से बहुत ही सुंदर चित्र दर्शाए गए हैं।
- कवि ने कल्पना की है कि मानो रसोई में माँ ने सिलबट्टे को केसर से धो दिया हो या बच्चों ने अपने स्लेट पर लाल रंग की खड़िया चाक मल दी हो।
- "बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो" तथा "स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने" आदि में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
- अनुप्रास अलंकार का सुंदर उदाहरण है।
- भाषा हिन्दी खड़ी बोली अत्यंत सरल, प्रवाहपूर्ण और बिंबात्मक है।

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो।
और...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

भाव सौंदर्य-:

- कवि ने सूर्योदय की बेला में उभरने वाले प्राकृतिक शोभा को बहुत सूक्ष्मता से अनुभव किया है। उसके रंगों को दर्शाने में और सुंदरता को कह पाने में कवि पूर्णतः सफल रहा है।

शिल्प सौंदर्य-

- "नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह के उपमान से हमारी आंखों के सामने प्रातः कालीन सौंदर्य साकार हो उठता है। यह कल्पना नवीन और ताजा है।
- उषा का जादू टूटना भी पाठक की आँखों के सामने अनेकानेक काल्पनिक चित्रण को साकार करता है। नील जल .... हिल रही हो मैं उत्प्रेक्षा अलंकार है।
- नील जल, नीले आकाश का सूचक है तथा गौर झिलमिल देह, उगते हुए सूरज के प्रकाश का सूचक है। 'नील जल' 'हो रहा है' में अनुप्रास अलंकार है।

- भाषा चित्रात्मक है।
- पाठकों की आंखों के सामने चित्र उभर आता है।
- अत्यंत सरल और लघु शब्दों का प्रयोग किया गया है।

पठित काव्यांश-01

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गिला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और.....
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

1. 'उषा' कविता के रचनाकार का नाम है -

(क) कुंवर नारायण (ख) उमाशंकर जोशी
(ग) शमशेर बहादुर सिंह (घ) रघुवीर सहाय

2. उषा का जादू कब टूट जाता है?

(क) सूर्योदय होने पर (ख) दोपहर होने पर
(ग) अंधेरा होने पर (घ) चिड़ियों के कलरव करने पर

3. 'उषा' कविता में प्रातः काल को बताया गया है -

(क) लाल कमल के समान (ख) नीले शंख के समान
(ग) नीली चादर के समान (घ) नीले सागर के समान

4.भोर के नभ और राख से लीपे चौके में समानता है -

(क) दोनों ही गहरी स्लेटी रंग के हैं (ख) दोनों ही पवित्र हैं
(ग) दोनों ही नमी से युक्त हैं (घ) उपर्युक्त सभी

5.प्रस्तुत कविता में किस रचना शैली का प्रयोग किया गया है?

(क) मनोवैज्ञानिक (ख) वर्णनात्मक
(ग) चित्रात्मक (घ) संबोधन

6. उषा कविता में वर्णन किया गया है-

(क) शहर की सुबह का (ख) महानगर की सुबह का
(ग) गाँव की सुबह का (घ) वन की सुबह का

7. राख से लीपा हुआ चौका किस भाव को व्यक्त कर रहा है?

(क) पवित्रता (ख) ताजगी
(ग) विशालता (घ) गंभीरता

8."नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो" में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) मानवीकरण
(ग) अनुप्रास (घ) यमक

9. "नील जल में या किसी की, गौर झिलमिल देह, जैसे हिल रही हो" इस पंक्ति में 'सूरज की किरणों की तुलना किससे की है?

(क) गौरवर्णा युवती से (ख) प्रातः कालीन आसमान से
(ग) लाल खड़िया चाक से (घ) उपर्युक्त में से किसी से नहीं

10. भोर के नम की तुलना की गई है-

(क) नीले शंख से (ख) राख से लीपे चौके से
(ग) लाल केसर से धुली काली सिल से (घ) उपर्युक्त सभी से

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 01

1. ग 2. क 3. ख 4 घ 5. ग 6. ग 7 क 8. ख 9.क 10.घ

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1.सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं? 'उषा' कविता के आधार पर बताइए।

अथवा

'उषा' कविता के आधार पर सूर्योदय से ठीक पहले के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।

उत्तर- सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा मानो काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

2.'उषा' कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

उत्तर-सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य की किरणें जादू के समान लगती हैं। इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो ज़ाते हैं।

3.'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने। ' -इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि कहता है कि सुबह के समय अँधेरा होने के कारण आकाश स्लेट के समान लगता है। उस समय सूर्य की लालिमा-युक्त किरणों से ऐसा लगता है जैसे किसी ने काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। कवि आकाश में उभरे लाल-लाल धब्बों के बारे में बताना चाहता है।

4.भोर के नभ को ' राख से लीपा, गीला चौका ' की संज्ञा दी गई है। क्यों ?

उत्तर-कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमीयुक्त व धुंधला होता है। राख से लिपा हुआ चौका भी मटमैले रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका' की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

5.'उषा' कविता में प्रातःकालीन आकाश की पवित्रता, निर्मलता व उज्ज्वलता से संबंधित पंक्तियों को बताइए।

उत्तर-पवित्रता- राख से लीपा हुआ चौका।
निर्मलता- बहुत काली सिल जरा से केसर से/कि जैसे धुल गई हो।
उज्ज्वलता-नीले जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।

6.सिल और स्लेट का उदाहारण देकर कवि ने आकाश के रंग के बारे में क्या कहा है ?

उत्तर- कवि ने सिल और स्लेट के रंग की समानता आकाश के रंग से की है। भोर के समय आकाश का रंग गहरा नीला-काला होता है और उसमें थोड़ी-थोड़ी सूर्योदय की लालिमा मिली हुई होती है।

7.'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई हैं और क्यों?

उत्तर-'उषा' कविता में प्रात:कालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गई है। इस समय आकाश नम एवं धुंधला होता है। इसका रंग राख से लिपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूखकर साफ़ हो जाता है उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

स्वयं करें

1. 'उषा' कविता में कवि ने आसमान के लिए सर्वथा नवीन उपमानों का प्रयोग किया है। कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. कवि ने प्रात:कालीन प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है। पाठ के आधार पर उदाहरण सहित लिखिए।
3. 'उषा के टूटते जादू' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

अथवा

'जादू टूटता है इस उषा का अब।' उषा का जादू क्या है? वह कैसे टूटता है?

पाठ सं-07

बादल राग

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कविता का प्रतिपादय एवं सार

प्रतिपादय- 'बादल राग' कविता 'अनामिका' काव्य से ली गई है। निराला को वर्षा ऋतु अधिक आकृष्ट करती है, क्योंकि बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत एक साथ समाहित है। बादल किसान के लिए उल्लास और निर्माण का अग्रदूत है तो मजदूर के संदर्भ में क्रांति और बदलाव। 'बादल राग' निराला जी की प्रसिद्ध कविता है। वे बादलों को क्रांतिदूत मानते हैं। बादल शोषित वर्ग के हितैषी हैं, जिन्हें देखकर पूँजीपति वर्ग भयभीत होता है। बादलों की क्रांति का लाभ दबे-कुचले लोगों को मिलता है, इसलिए किसान और उसके खेतों में बड़े-छोटे पौधे बादलों को हाथ हिला-हिलाकर बुलाते हैं। वास्तव में समाज में क्रांति की आवश्यकता है, जिससे आर्थिक विषमता मिटे। कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक माना है।

सार- कवि बादलों को देखकर कल्पना करता है कि बादल हवारूपी समुद्र में तैरते हुए क्षणिक सुखों पर दुख की छाया हैं जो संसार या धरती की जलती हुई छाती पर मानी छाया करके उसे शांति प्रदान करने के लिए आए हैं। बाढ़ की विनाश-लीला रूपी युद्ध-भूमि में वे नौका के समान लगते हैं। बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज या अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर देखने लगते हैं। उनमें भी धरती से बाहर आने की आशा जागती है। बादलों की भयंकर गर्जना से संसार हृदय थाम लेता है। आकाश में तैरते बादल ऐसे लगते हैं मानो वज्रपात से सैकड़ों वीर धराशायी हो गए हों और उनके शरीर क्षत-विक्षत हैं।

कवि कहता है कि छोटे व हलके पौधे हिल-डुलकर हाथ हिलाते हुए बादलों को बुलाते प्रतीत होते हैं। कवि बादलों को क्रांति-दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा आम आदमी को ही फ़ायदा होता है। बादल आतंक के भवन जैसे हैं जो कीचड़ पर कहर बरसाते हैं। बुराईरूपी कीचड़ के सफ़ाए के लिए

बादल प्रलयकारी होते हैं। छोटे-से तालाब में उगने वाले कमल सदैव उसके पानी को स्वच्छ व निर्मल बनाते हैं। आम व्यक्ति हर स्थिति में प्रसन्न व सुखी रहते हैं। अमीर अत्यधिक संपत्ति इकट्ठी करके भी असंतुष्ट रहते हैं और अपनी प्रियतमाओं से लिपटने के बावजूद क्रांति की आशंका से काँपते हैं। कवि कहता है कि कमजोर शरीर वाले कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग ने उनका अत्यधिक शोषण किया है। वे सिर्फ़ जिदा हैं। बादल ही क्रांति करके शोषण को समाप्त कर सकता है।

मुख्य बिंदु:

- बादलों को क्रांतिदूत के रूप में चित्रित किया गया है।
- प्रस्तुत कविता में निराला की प्रगतिवादी चेतना देखने को मिलती है।
- प्रस्तुत कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
- कवि ने पूँजीपतियों के विलासी जीवन पर कटाक्ष किया है।
- तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

पठित काव्यांश-01

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी,
भरी आकांक्षाओं से,
घन,भेरी-गर्जन से सजग, सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से,
नवजीवन की,ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!
फिर फिर!
बार-बार गर्जन,
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर बज्र-हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत-वीर,
क्षत-विक्षत-हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्धा धीर।

1. प्रस्तुत कविता 'बादल राग' के रचनाकार का नाम है-

(क) रामधारी सिंह दिनकर'　　(ख) उमाशंकर जोशी

(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (घ) रघुवीर सहाय

2. प्रस्तुत कविता में 'बादल' किस का प्रतीक है?

(क) शोषक का (ख) शांति का

(ग) क्रांति का (घ) शोषित का

3. कविता में 'रण तरी किस से भरी होने की बात कही है?

(क) आकांक्षाओं से (ख) गर्जना से

(ग) धन-दौलत से (घ) अस्त्र-शस्त्र से

4. "यह तेरी रण तरी" यहाँ 'रण- तरी' शब्द का अर्थ है-

(क) धन से भरी नौका (ख) सुंदर नौका

(ग) युद्ध की नौका (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

5. "बादल राग' कविता में सुख को कैसा बताया गया है?

(क) स्थिर (ख) चंचल

(ग) अस्थिर (घ) अदृश्य

6.`निर्दय विप्लव की प्लावित माया' यहाँ 'विप्लव' शब्द का अर्थ है-

(क) बादल (ख) नौका

(ग) शोषण (घ) क्रांति

7.संसार भयभीत क्यों हो जाता है?

(क) घनघोर बारिश को देखकर (ख) क्रांति रूपी बादलों की वज्ररूपी हुँकार को सुनकर

(ग) विप्लव के बादलों को देखकर (घ) रण-तरी को देखकर

उत्तरमाला:- पठित पद्यांश- 01

उत्तर 1. ग 2 ग 3. क 4 ग 5. ग 6.घ 7. ख

पठित काव्यांश-02

हँसते हैं छोटे पौधे लघु भार-

शस्य अपार,

हिल-हिल,

खिल-खिल

हाथ हिलाते,

तुझे बुलाते,

विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

अट्टालिका का **नहीं है रे**

आतंक-भवन

सदा पंक पर ही होता जल- विप्लव-प्लावन,

क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष,
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक-अंक पर काँप रहे हैं।
धनी,वज्र-गर्जन से बादल।
त्रस्त नयन मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

1. 'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।' यहाँ 'छोटे' शब्द प्रयुक्त हुआ है-

(क) शोषित वर्ग के लिए (ख) शोषक वर्ग के लिए
(ग) माध्यम वर्ग के लिए (घ) उच्च वर्ग के लिए

2. 'जल - विप्लव प्लावन' किस पर होता है?

(क) जलज पर (ख) नौका पर
(ग) कीचड़ पर (घ) नभ पर

3. कवि ने अट्टालिकाओं को क्या कहा है?

(क) राजमहल
(ख) सभा भवन शैशव का सुकुमार शरीर किसमें हँसता रहता है?
(ग) व्यायामशाला
(घ) आतंक भवन

4.शैशव का सुकुमार शरीर किसमे हँसता रहता है?

(क) रोग-शोक में (ख) आनंद में
(ग) दुःख में (घ) उपर्युक्त सभी में

5. धनी वर्ग के लोग क्यों काँप रहे हैं?

(क) सत्ता के डर से (ख) शोषण के डर से
(ग) घनघोर बारिश के डर से (घ) क्रांति एवं विद्रोह के डर से

6. विप्लव का वीर कौन है और उसे कौन बुलाता है?

(क) बादल, और उसे व्याकुल मजदूर बुलाता है (ख) क्रांतिकारी, और उसे व्याकुल कृषक बुलाता है

(ग) बादल, और उसे व्याकुल कृषक बुलाता है (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

7. धनी वर्ग क्रांति के डरकर क्या कर रहे हैं?

(क) प्रेमिकाओं के अंगों से लिपटे रहते हैं (ख) अपने आँख और मुँह को ढक लेते हैं

(ग) भयभीत हो रहे हैं (घ) उपर्युक्त सभी

8. किसकी भुजाएँ पूँजीपति वर्ग के शोषण के कारण जर्जर हो चुकी हैं-

(क) मजदूर की (ख) किसान की

(ग) नौकरीपेशा लोगों की (घ) उपर्युक्त सभी की

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 02

1. क 2. ग 3. घ 4. क 5. घ 6. ग 7 घ 8. ख

पठित काव्यांश-03

हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार-
शस्य अपार,
हिल-हिल
खिल-खिल,
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।
अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।

1.काव्यांश में छोटे पौधे किन्हें कहा गया है?

a) छोटे बच्चों को
b) निम्न वर्ग को
c) उच्च वर्ग को
d) मध्य वर्ग को

2.विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते पंक्ति का क्या अभिप्राय है?

a) बादलों से हुई वर्षा से छोटे पौधों को अधिक जल मिलता है
b) सामाजिक क्रांति सभी वर्गों के लिए हितकर होती है
c) सामाजिक क्रांति का निम्न वर्ग को ही लाभ मिलता है
d) निम्न वर्ग क्रांति के प्रभाव से वंचित रहता है

3.जल-विप्लव-प्लावन हमेशा किस पर होता है?

a) वायु पर
b) धरती पर
c) कीचड़ पर
d) आकाश पर

4.कवि के अनुसार आतंक भवन कौन है?

a) मध्य वर्ग के निवास स्थान
b) सभी विकल्प सही हैं
c) शोषित वर्ग के निवास स्थान
d) शोषक वर्ग के निवास स्थान

5.काव्यांश में पंक किसका प्रतीक है?

a) पवित्रता का
b) गंदगी का
c) उच्च वर्ग का
d) शोषक वर्ग का

6.'हृदय थाम लेता संसार' पंक्ति के आधार पर संसार अपना हृदय क्यों थाम लेता है?

a) बादलों की घोर गर्जना से
b) समुद्र में आयी हिलोरो से
c) पृथ्वी पर आयी बाढ़ से
d) इनमे से कोई नहीं

7.बादल राग कविता में कवि बादल का आह्वान किस रूप में करता है?

a) क्रांति
b) वर्षा
c) मजबूरी
d) शांति

8.सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के निम्नलिखित में से कौन सा कविता संग्रह नहीं है?

a) नीरजा

b) अनामिका

c) नए पत्ते

d) परिमल

9.बादल राग कविता के आधार पर निराला ने अट्टालिकाओं को क्या कहा है?

a) योग भवन

b) व्यायामशाला

c) अजायबघर

d) आतंक भवन

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 03

1.(b) निम्न वर्ग को

2. (c) सामाजिक क्रांति का निम्न वर्ग को ही लाभ मिलता है

3. (c) कीचड़ पर

4. (c) शोषित वर्ग के निवास स्थान

5. (d) शोषक वर्ग का

6. (a) बादलों की घोर गर्जना से

व्याख्या: बादल राग कविता में कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने हृदय थाम लेता संसार का अर्थ बादलों की गर्जना को सुनकर संसार अपना हृदय को थाम लेता है क्योंकि उन्हें पता चल जाता है कि अब तो बारिश आने वाली है।

7.(a) क्रांति

व्याख्या:कवि ने बादल को विप्लव व क्रांति का प्रतीक मानकर उसका आह्वान किया है।

8.(a) नीरजा

व्याख्या:सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के परिमल, नए पत्ते, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, गीतिका, बेला, अनामिका, अणिमा, कविता संग्रह है ।

9.(d) आतंक भवन

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'बादल राग' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए –

विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते |

अथवा

'बादल राग' कविता में कवि ने बादलों के बहाने क्रांति का आह्वान किया है | इस कथन की समीक्षा कीजिए |

उत्तर- 'विप्लव-रव' से तात्पर्य है – क्रांति का स्वर | क्रांति का सर्वाधिक लाभ शोषित वर्ग को ही मिलता है क्योंकि उसी के अधिकार छिने गए हैं | शोषक वर्ग के विशेषाधिकार खत्म होते हैं | आम व्यक्ति को जीने के अधिकार मिलते हैं | उनकी दरिद्रता दूर होती है | अतः क्रांति की गर्जना से शोषित वर्ग प्रसन्न होता है |

2. क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है? उनका मुख ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है? 'बादल राग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए |

उत्तर- शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परन्तु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है | वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है | उसकी शांति समाप्त हो जाती है | शोषक वर्ग का मुख ढाँपना उनकी कमज़ोर स्थिति को दर्शाता है | क्रांति के परिणामों से वे भयभीत हैं |

3. 'बादल राग जीवन-निर्माण के नए राग का सूचक है |' स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- इस कविता में कवि ने लघु-मानव की खुशहाली का राग गाया है | वह आम व्यक्ति के लिए बादल का आह्वान क्रांति के रूप में करता है | किसान मज़दूर की आकांक्षाएँ बादल को नवनिर्माण के राग के रूप में पुकार रही हैं | क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है | बादलों के अंग-अंग में बिजलियाँ सोई हैं, वज्रपात से शरीर आहत होने पर भी वे हिम्मत नहीं हारते | गरमी से हर तरफ सब कुछ रुखा-सुखा और मुरझाया-सा है | धरती के भीतर सोए अंकुर नवजीवन की आशा में सिर ऊँचा करके बादल की उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं | क्रांति जो हरियाली लाएगी, उससे सबसे उत्फुल्ल नए पौधे, छोटे बच्चे ही होंगे |

4. 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- इस कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' बादल को कहा गया है | बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है | इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है | बादल क्रांति का प्रतीक है | क्रान्ति आने से बुराई रूपी कीचड़ समाप्त हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती है |

5. 'बादल राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए |

उत्तर-'बादल राग' क्रांति की आवाज़ का परिचायक है | यह कविता जनक्रांति की प्रेरणा देती है | कविता में बादलों के आने से नए पौधे हर्षित होते हैं,उसी प्रकार क्रांति होने से आम आदमी को विकास के नए अवसर मिलते हैं | कवि बादलों को बारिश करने या क्रांति करने के लिए आह्वान करता है | यह शीर्षक उद्देश्य के अनुरूप है | अतः यह शीर्षक सर्वथा उचित है|

6. विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की कौन-कौन-सी विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर- कवि ने विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

(i) यह समीर-सागर में तैरती है |

(ii) यह भेरी-गर्जन से सजग है |

(iii) इसमें ऊँची आकांक्षाएँ भरी हुई हैं |

7. 'बादल राग' कविता में कवि निराला की किस क्रांतिकारी विचारधारा का पता चलता है?

उत्तर- बादल राग कविता में कवि की क्रांतिकारी विचाराधार का ज्ञान होता है | वह समाज में व्याप्त पूँजीवाद का घोर विरोध करता हुआ दलित-शोषित वर्ग के कल्याण की कामना करता हुआ, उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाना चाहता है | कवि ने बादलों की गर्जना, बिजली की कड़क को जनक्रांति का रूप बताया है | इस जनक्रांति में धनीवर्ग का पतन होता हो और छोटे वर्ग-मजदूर गरीब, शोषित आदि उन्नति करते हैं |

8. 'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है?

उत्तर- 'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक भवन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं | ये ऊँचे-ऊँचे भवन शोषण से लुटी गई संपत्ति के केंद्र होते हैं |

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. पूंजीपतियों की अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है?

उत्तर- बादलों की गर्जना और मूसलाधार वर्षा में बड़े बड़े-पर्वत वृक्ष घबरा जाते हैं। उनको उखड़कर गिर जाने का भय होता है| उसी प्रकार क्राति की हुंकार से पूँजीपति घबरा उठते हैं, वे दिल थाम कर रह जाते हैं। उन्हें अपनी संपत्ति एवं सत्ता के छिन जाने का भय होता है। उनकी अट्टालिकाएँ मजबूती का भ्रम उत्पन्न करती हैं पर वास्तव में वे अपने भवनों में आतंकित होकर रहते हैं।

2. कवि ने किसान का जो शब्द-चित्र दिया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- किसान के जीवन का रस शोषकों ने चूस लिया है, आशा और उत्साह की संजीवनी समाप्त हो चुकी है। शरीर से भी वह दुर्बल एवं खोखला हो चुका है। क्रांति का बिगुल उसके हृदय में आशा का संचार करता है वह खिलखिला कर बादल रूपी क्रांति का स्वागत करता है|

3. अशनि पात क्या है?

उत्तर- बादल की गर्जना के साथ बिजली गिरने से बड़े-बड़े वृक्ष जल कर राख हो जाते हैं। उसी प्रकार क्रांति की आंधी आने से शोषक, धनी वर्ग की सत्ता समाप्त हो जाती है और वे खत्म हो जाते हैं।

4. पृथ्वी में सोये अंकुर किस आशा से ताक रहे हैं?

उत्तर- बादल के बरसने से बीज अंकुरित हो लहलहने लगते हैं। अतः बादल की गर्जन उनमें आशाएँ उत्पन्न करती है। वे सिर ऊँचा कर बादल के आने की राह निहारते हैं। ठीक उसी प्रकार निर्धन व्यक्ति शोषक के अत्याचार से मुति पाने और अपने जीवन की खुशहाली की आशा में क्रांति रूपी बादल की प्रतीक्षा करते हैं।

5. रुद्ध कोष है, क्षुब्द्ध तोष किसके लिए कहा गया है और क्यों?

उत्तर- क्रांति होने पर पूजीपति वर्ग का धन छिन जाता है, कोष रिक्त हो जाता है| उसके धन की आमद समाप्त हो जाती है| उसका संतोष भी अब 'बीते दिनों की बात' हो जाता है|

6. अस्थिर सुख पर दुख की छाया का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मानव-जीवन में सुख सदा बना नहीं रहता है, उस पर दुख की छाया सदा मंडराती रहती है।

7. बादल किस का प्रतीक है?

उत्तर- बादल इस कविता में क्रांति का प्रतीक है। जिस प्रकार बादल प्रकृति किसान और आम आदमी के जीवन में आनंद का उपहार ले कर आता है उसी प्रकार क्रांति निर्धन शोषित वर्ग के जीवन में समानता का अधिकार व संपन्नता लेकर आता है।

8. बादल को जीवन का पारावार क्यों कहा गया है?

उत्तर- क्रांति रूपी बादल का आगमन जीवनदायी, सुखद होता है -पारावार अर्थात सागर। वह जीवन में खुशियों का खजाना लेकर आता है। निर्धन वर्ग को समानता का अधिकार देता है सुख समृद्धि का कारक बनकर अत्याचार की अग्नि से मुक्त करता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'बादल राग' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए-

विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

अथवा

'बादल राग' कविता में कवि ने बादलों के बहाने क्रांत का आहवान किया है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर-'विप्लव-रव' से तात्पर्य है-क्रांति का स्वर। क्रांति का सर्वाधिक लाभ शोषित वर्ग को ही मिलता है क्योंकि उसी के अधिकार छीने गए होते हैं। क्रांति शोषक वर्ग के विशेषाधिकार खत्म होते हैं। आम व्यक्ति को जीने के अधिकार मिलते हैं। उनकी दरिद्रता दूर होती है। अत: क्रांति की गर्जना से शोषित वर्ग प्रसन्न होता है।

2. क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है ? उनका मुख ढँकना किस मानसिकता का द्योतक है? 'बादल राग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर-शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परंतु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है। वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है। उसकी शांति समाप्त हो जाती है। शोषक वर्ग का मुख ढाँकना उसकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है। क्रांति के परिणामों से शोषक वर्ग भयभीत है।

3. 'बादल राग ' जीवन-निर्माण के नए राग का सूचक है। " स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'बादल राग' कविता में कवि ने लघु-मानव की खुशहाली का राग गाया है। वह आम व्यक्ति के लिए बादल का आहवान क्रांति के रूप में करता है। किसानों तथा मजदूरों की आकांक्षाएँ बादल को नवनिर्माण के राग के रूप में पुकार रही हैं। क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है। बादलों के अंग-अंग में बिजलियाँ सोई हैं, वज्रपात से शरीर आहत होने पर भी वे हिम्मत नहीं हारते। गरमी से हर तरफ सब कुछ रूखा-सूखा और मुरझाया-सा है। धरती के भीतर सोए अंकुर नवजीवन की आशा में सिर ऊँचा करके बादल की ओर देख रहे हैं। क्रांति जो हरियाली लाएगी, उससे सबसे अधिक उत्फुल्ल नए पौधे, छोटे बच्चे ही होंगे।

4. 'बादल राग ' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!'किसे कहा गया हैं और क्यों?

उत्तर-'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' बादल को कहा गया है। बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है। इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। बादल क्रांति का प्रतीक है। क्रांति आने से बुराई रूपी कीचड़ समाप्त हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती है।

5. 'बादल राग' शीर्षिक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर-'बादल राग' क्रांति की आवाज का परिचायक है। यह कविता जनक्रांति की प्रेरणा देती है। कविता में बादलों के आने से नए पौधे हर्षित होते हैं, उसी प्रकार क्रांति होने से आम आदमी को विकास के नए अवसर मिलते हैं। कवि बादलों का बारिश करने या क्रांति करने के लिए करता है। यह शीर्षक उद्देश्य के अनुरूप है। अत: यह शीर्षक सर्वथा उचित है।

6. विप्लवी बादल कीयुद्ध-नौका कीकौन-कौन-सी विशेषताएँ बताई गाए है?

उत्तर-कवि ने विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

(i) यह समीर-सागर में तैरती है।

(ii) यह भेरी-गर्जन से सजग है।

(iii) इसमें ऊँची आकांक्षाएँ भरी हुई हैं।

7.'बादल राग ' कविता में कवि निराला की किस क्रांतिकारी विचारधारा का पता चलता हैं?

उत्तर-'बादल राग' कविता में कवि की क्रांतिकारी विचारधारा का ज्ञान होता है। वह समाज में व्याप्त पूँजीवाद का घोर विरोध करता हुआ दलित-शोषित वर्ग के कल्याण की कामना करता हुआ, उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाना चाहता है। कवि ने बादलों की गर्जना, बिजली की कड़क को जनक्रांति का रूप बताया है। इस जनक्रांति में धनी वर्ग का पतन होता है और छोटे वर्ग-मजदूर, गरीब, शोषित आदि-उन्नति करते हैं।

8. 'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक-भवन क्यों कहा गया है?

उत्तर-'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक-भवन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं। ये ऊँचे-ऊँचे भवन शोषण से लूटी गई संपत्ति के केंद्र होते हैं।

स्वयं करें

1.बादलों का गर्जन सुनकर पृथ्वी के उर में सुप्त अंकुर में किस तरह आशा का संचरण हो उठता है?'बादल राग' कविता के आधार पर लिखिए।

2. 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

3.विप्लव के बादल किनके-किनके मीत हैं और क्यों?

4. 'बादल राग' कविता में किनका कोष रुद्ध होने की बात कही गई है? इससे कौन आक्रोशित है और क्यों?

5. 'विप्लव के वीर' को अधीर कृषक आशाभरी निगाहों से क्यों देखता है?

6.विप्लव के बादल देखकर समाज का संपन्न वर्ग अपनी प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करता है? 'बादल राग' कविता के आधार पर लिखिए।

7.स्पष्ट कीजिए कि कवि निराला शोषित वर्ग एवं किसानों के सच्चे हितैषी थे।

8.सिद्ध कीजिए कि 'बादल राग' कविता का प्रमुख स्वर नवनिर्माण है।

पाठ सं-08

'कवितावली', 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप'

कवि- तुलसीदास

पाठ का सारांश

कवितावली

1. प्रथम कवित्त-यहाँ कविवर तुलसीदास राम-नाम की महिमा का गान करते हुए कहते हैं कि मजदूर, किसान, व्यापारी, भिखारी, चाकर, नौकर, नट, चोर, दूत और वाजीगर सभी अपना पेट भरने के लिए ही ऊँचे-नीचे कर्म करते हैं, गुण गढ़ते हैं, पहाड़ों पर चढ़ते हैं और घने जंगलों में शिकार करते हुए भटकते रहते हैं। यही नहीं, वे अच्छे-बुरे कर्म करके धर्म अथवा अधर्म का पालन करते हुए अपना पेट भरने के लिए बेटे-बेटियों को भी बेच देते हैं। यह पेट की आग वड़वानल से भी अधिक भयंकर है। इसे तो केवल राम-नाम के कृपा रूपी बादल ही बुझा सकते हैं।

2. द्वितीय कवित्त-इस कवित्त में कवि अपने युग की गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी का वर्णन करते हुए लिखता है कि किसान के लिए खेती नहीं है और भिखारी को भीख नहीं मिलती। व्यापारी के लिए व्यापार नहीं है और नौकर को नौकरी नहीं मिलती। आजीविका-विहीन लोग दुखी होकर आपस में कहते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। वेदों और पुराणों में यही बात कही गई है और संसार में भी देखा जा सकता है कि संकट के समय राम जी आप ही कृपा करते हैं। हे दीनबंधु राम! इस समय दरिद्रता रूपी रावण ने संसार को कुचला हुआ है। अतः पापों का नाश करने के लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

3. सवैया-यहाँ तुलसीदास लोगों के द्वारा की जा रही निंदा और आलोचना की परवाह न करते हुए कहते हैं कि चाहे मुझे कोई धूर्त कहे, योगी कहे, राजपूत या जुलाहा कहे, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना, जिससे किसी की जाति में बिगाड़ हो जाए। मैं तुलसीदास तो राम का दास हूँ। इसीलिए मेरे बारे में जिसको जो अच्छा लगता है, वह कहो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं माँगकर खाता हूँ। मस्जिद में जाकर सो जाता हूँ। मुझे दुनिया से न कुछ लेना है और न देना है अर्थात् मुझे किसी की परवाह नहीं है।

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

यह प्रसंग उस समय का है जब राम-रावण युद्ध के समय लक्ष्मण मेघनाद की शक्ति लगने से बेहोश हो गए और हनुमान जड़ी-बूटी लेने के लिए गए। परंतु हनुमान द्वारा की गई देरी के कारण राम अपने भाई लक्ष्मण के लिए चिंता करने लगे। जब हनुमान संजीवनी बूटी को न पहचानने के कारण पर्वत को उठाकर ले जा रहे थे तो भरत के मन में अनर्थ की आशंका हुई। इसलिए भरत ने हनुमान को नीचे उतार लिया। परंतु जब उसे वास्तविकता का पता चला तो उसने हनुमान को अपने बाण पर बिठाकर शीघ्र भेज दिया। इधर राम आधी रात बीत जाने पर चिंता करने लगे। वे लक्ष्मण को बेहोश देखकर एक मानव के समान कहने लगे कि आधी रात बीत गई है, लेकिन हनुमान नहीं आया।

यह कहकर राम ने अनुज लक्ष्मण को उठाकर अपनी छाती से लगा लिया और विलाप करते हुए कहने लगे कि लक्ष्मण तुम्हारा ऐसा स्वभाव है कि तुम मुझे कभी दुखी नहीं देख सकते थे। मेरे लिए तुमने माता-पिता को त्याग दिया और वन में सर्दी-गर्मी को सहन किया। हे भाई! तुम्हारा वह प्रेम कहाँ चला गया। मेरे व्याकुल वचनों को सुनकर तुम क्यों नहीं उठते। यदि मुझे पता होता कि वन में भाई से वियोग होगा तो मैं अपने पिता के वचनों को कभी नहीं मानता। पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार, ये सब संसार में बार-बार प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन सगा भाई संसार में फिर नहीं मिलता। यह विचार करके तुम जाग जाओ। जिस प्रकार पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप और सूंड के बिना हाथी दीन-हीन हो जाते हैं, उसी प्रकार तुम्हारे बिना मेरा जीवन अधूरा है। मैं क्या मुँह लेकर अयोध्या जाऊँगा। लोग मेरे बारे में कहेंगे कि मैंने पत्नी के

लिए प्रिय भाई को खो दिया। भले ही मुझे संसार में अपयश सहन करना पड़ता। पत्नी की हानि भी कोई विशेष हानि नहीं है। परंतु हे लक्ष्मण! अब तो मुझे अपयश और भाई दोनों शोक सहन करने पड़ेगे।

हे भ्राता! तुम अपनी माता के एक ही पुत्र हो और उसके प्राणों के आधार हो। तुम्हारी माँ ने मुझे हर प्रकार से हितैषी समझकर तुम्हारा हाथ मुझे सौंपा था। अब मैं जाकर उसे क्या उत्तर दूंगा। इस प्रकार संसार को चिंतामुक्त करने वाले भगवान राम स्वयं अनेक प्रकार की चिंताओं में डूब गए और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। तव शिवजी ने पार्वती से कहा कि देखो! वे राम स्वयं अखंड और अनंत हैं, परंतु अपने भक्तों पर कृपा करके नव लीला दिखा रहे हैं। प्रभु के विलाप को सुनकर समूची वानर सेना व्याकुल हो गई। परंतु उस समय वहाँ हनुमान इस प्रकार प्रकट हो गए जैसे करुण रस में वीर रस प्रकट हो जाता है। श्रीराम ने प्रसन्न होकर हनुमान से भेंट की और वे हनुमान के प्रति कृतज्ञ हो गए। उसके बाद वैद्य ने तत्काल उपाय किया और लक्ष्मण प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए। राम ने प्रसन्न होकर भाई को गले लगाया और सभी वानर और भालू प्रसन्न हो गए। इसके बाद हनुमान ने वैद्य को लंका वापस पहुँचा दिया।

जब रावण ने यह सारा प्रस्ताव सुना तो वह दुखी होकर पछताने लगा और व्याकुल होकर कुंभकरण के पास गया। उसने अनेक प्रयत्न करके कुंभकरण को जगाया। जागने पर कुंभकरण ऐसा लग रहा था कि मानों काल स्वयं शरीर धारण करके बैठा हो। कुंभकरण ने रावण से पूछा कि तुम्हारा मुख घबराया हुआ क्यों है, तब अभिमानी रावण ने सारी कथा सुनाई कि किस प्रकार वह सीता को उठाकर लाया था। वह अपने भाई से कहने लगा कि हे भ्राता! राम की वानर सेना ने राक्षसी सेना के बड़े-बड़े योद्धाओं का संहार कर दिया है। रावण के वचनों को सुनकर कुंभकरण ने दुखी होकर कहा, तुमने जगत-जननी सीता का हरण किया है, अब तू अपना कल्याण चाहता है। यह तो किसी प्रकार से संभव नहीं है।

पद्यांशों की व्याख्या

कवितावली

किसबी, किसान-कुल, वनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी ॥
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी॥

शब्दार्थ:-

किसबी = धंधा करने वाले। बनिक = व्यापारी। भाट = चारण। चाकर = नौकर । चपल नट = उछलने-कूदने वाले कलाकार। चार = दूत। चेटकी = बाजीगर । गुन गढ़त = कलाओं और विद्याओं को सीखते हैं। गिरि = पर्वत। अटत = घूमना । गहन-गन = बना जंगल । अहन = भिन्न । अखेटकी = शिकारी । अधरम = पाप। घनस्याम = काला बादल । बड़वागी = जंगल की आग।

व्याख्या:-

मेहनत करने वाले मजदूर, किसान, व्यापारी, भिखारी, चारण, नौकर, कुशल, नट, चोर, दूत तथा बाज़ीगर आदि पेट भरने के लिए तरह-तरह के गुण गढ़ते हैं, ऊँचे पर्वतों पर चढ़ते हैं और दिन भर घने जंगलों में शिकार करते हुए घूमते रहते हैं। भाव यह है कि अपना पेट भरने के लिए लोग कलाएँ और विद्याएँ सीख रहे हैं। पहाड़ों पर चढ़कर आजीविका खोज रहे हैं

अथवा जंगलों में शिकार करके अपना पेट भरना चाहते हैं। कवि पुनः कहता है कि लोग अपना पेट भरने के लिए ऊँचे-नीचे कर्म करते हैं और धर्म-अधर्म की परवाह न करके अच्छे-बुरे काम करते हैं। यहाँ तक कि लोग अपने पेट के लिए बेटा-बेटी को बेचने के लिए मजबूर हो गए हैं। यह कटु सत्य है कि पेट की आग समुद्र की आग से भी अधिक शक्तिशाली होती है। तुलसीदास कहते हैं कि यह भूख राम रूपी घनश्याम की कृपा से ही दूर हो सकती है। भाव यह है कि उसने अपने दयालु राम की कृपा से ही भूख को मिटा दिया है, परंतु देश के अन्य लोग भूख और बेरोजगारी के कारण बड़े ही व्याकुल हैं।

विशेष:-

(1) यहाँ कवि ने अपने युग की यथार्थता का प्रभावशाली वर्णन किया है।

(2) कवि का कथन है कि पेट की आग सर्वाधिक प्रबल आग है जो मनुष्य को बेटा-बेटी तक बेचने को मजबूर कर देती है।

(3) संपूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

(4) राम घनस्याम' में रूपक अलंकार का प्रयोग है। 'आगी-बड़वागिते बड़ी है आगि पेटकी' में गतिरेक अलंकार का प्रयोग है।

(5) यहाँ सहज एवं सरल साहित्यिक ब्रजावधि भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(6) शब्द-चयन उचित और भावाभिव्यक्ति में सहायक है।

(7) कवित्त छंद का प्रयोग है।

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु ।
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ॥

शब्दार्थ:-

बनिज = व्यापार। सीद्यमान = परेशान, दुखी । बेदहूँ = वेद में भी। लोकहूँ = लोक में भी। साँकरे = संकट । रावरें = आपने। दारिद = दरिद्रता । दबाई = दबाया। दुरित = पाप। हहा करी = दुखी होना।

व्याख्या:-

कवि का कथन है कि ऐसा बुरा समय आ गया है कि देश में किसान के पास खेती करने के साधन नहीं हैं और भिखारी को भीख नहीं मिलती। व्यापारी को व्यापार नहीं मिलता और नौकर को नौकरी नहीं मिलती। भाव यह है कि न किसान के पास खेती है, न व्यापारी को व्यापार मिल रहा है और न ही नौकर को कोई अच्छी नौकरी मिल रही है। सभी लोग आजीविका न होने के कारण दुखी होकर एक-दूसरे से कहते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। कोई रास्ता दिखाई नहीं देता अर्थात् काम-धंधा न होने के कारण लोग व्याकुल और परेशान हैं। कवि प्रभु राम में अपनी आस्था प्रकट करता हुआ कहता है हे राम! वेदों और पुराणों में यह बात लिखी हुई है और संसार में भी अकसर ऐसा ही देखा जाता है कि संकट के समय में आपकी कृपा से ही संकट दूर होता है। हे दीनबंधु राम! दरिद्रता रूपी रावण ने सारी दुनिया को दबा रखा है अर्थात् सभी लोग गरीबी के शिकार बने हुए हैं। चारों ओर पाप का जाल बिछा हुआ है। सभी लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। हे प्रभु! इस संकट के समय आप ही सहायता कर सकते हैं।

विशेष:-

(1) इस कवित्त में कवि ने अपने समय की बेरोज़गारी की समस्या का यथार्थ वर्णन किया है।

(2) कवि ने श्रीराम को दीनबंधु और कृपालु कहकर अपनी दास्य भावना की अभिव्यक्ति को व्यक्त किया है।

(3) संपूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

(4) 'दारिद-दसानन' तथा 'दुरित-दहन' में रूपक अलंकार का सफल प्रयोग हुआ है।

(5) सहज एवं सरल साहित्यिक तथा ब्रजावधि भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(6) शब्द-चयन उचित और भावाभिव्यक्ति में सहायक है।

(7) कवित्त छंद का सफल प्रयोग हुआ है।

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ॥
माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबको एकु न दैबको दोऊ।

शब्दार्थ:-

कोऊ = कोई। काहू = किसी की। धूत = धूर्त। अवधूत = वीतरागी (संन्यासी)। रजपूतु = क्षत्रिय। ब्याहब = विवाह करना। बिगार = बिगाड़ना। सरनाम = प्रसिद्ध । गुलामु = दास। रुचै = अच्छा लगे। ओऊ = और। खैबो = खाना। मसीत = मस्जिद। लैबको = लेना। दैबको = देना।

व्याख्या:-

यहाँ गोस्वामी तुलसीदास दुनिया के लोगों को स्पष्ट कहते हैं कि यदि आप मुझे धूर्त और मक्कार कहें या संन्यासी कहें तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। चाहे मुझे राजपूत अर्थात् क्षत्रिय कहें या जुलाहा कहें, इन नामों की भी मुझे कोई परवाह नहीं है। मुझे किसी की बेटी के साथ अपने बेटे का विवाह नहीं करना जिससे किसी की जाति बिगड़ जाए। मैं तुलसीदास तो संसार में राम के दास के रूप में प्रसिद्ध हूँ, अतः मुझे किसी की कोई चिंता नहीं है। जिसको भी मेरे बारे में जो अच्छा लगता है वह बड़े शौक से कह सकता है। मुझे लोगों के द्वारा की गई प्रशंसा या निंदा से कुछ लेना-देना नहीं। मैं माँगकर रोटी खाता हूँ और मस्जिद में जाकर सो जाता हूँ। न मैं किसी से एक लेता हूँ और न किसी को दो देता हूँ। मैं हमेशा अपनी धुन में मस्त रहता हूँ।

विशेष:-

(1) इस पद से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने जीवन में अनेक अपवादों और विरोधों का सामना करना पड़ा था। परंतु कवि ने अपने विरोधियों की परवाह न करके राम-भक्ति में मस्त होकर अपना जीवन गुजार दिया।

(2) संपूर्ण पद में दास्य भक्तिभाव की अभिव्यक्ति हुई है।

(3) संपूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार का सफल प्रयोग देखा जा सकता है।

(4) लेना एक न देना दो' मुहावरे का प्रभावशाली प्रयोग देखा जा सकता है।

(5) सहज एवं सरल साहित्यिक तथा ब्रजावधि भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(6) सवैया छंद का सफल प्रयोग हुआ है।

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत॥
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार।

शब्दार्थ:-

तव = तुम्हारा। प्रताप = यश। उर = हृदय। राखि = रखकर । जहऊ = जाऊँगा। अस = इस प्रकार। आयसु = आज्ञा। पद = चरण । बंदि = वंदना करके। बाहु = भुजा। सील = सद्व्यवहार। प्रीति = प्रेम । महुँ = में। अपार = अत्यधिक। सराहत = प्रशंसा करना। पुनि पुनि = बार-बार । पवनकुमार = हनुमान।

व्याख्या:-

हनुमान ने भरत से कहा हे प्रभु! आप बड़े प्रतापी और यशस्वी हैं। इस बात को मन में धारण करके मैं आपके बाण पर बैठकर तत्काल चला जाऊँगा। यह कहकर हनुमान ने भरत के चरणों की वंदना की और उनकी आज्ञा पाकर लंका के लिए प्रस्थान कर दिया। हनुमान भरत के बाहु-बल (वीरता), उनके सद्व्यवहार, विविध गुणों तथा राम के चरणों से अपार प्रेम देखकर मन-ही-मन उनकी बार-बार सराहना करते हुए चले जा रहे थे।

विशेष:-

(1) इन दोहों में कवि ने भरत की वीरता, प्रताप तथा उनके शील का सुंदर वर्णन किया है।

(2) अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का सफल प्रयोग किया गया है।

(3) सहज एवं सरल साहित्यिक अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।

(4) शब्द-चयन उचित और भावाभिव्यक्ति में सहायक है।

(5) यहाँ कवि ने संवादात्मक और कथात्मक शैलियों का प्रयोग किया है तथा दोहा छंद है।

उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।

शब्दार्थ:-

उहाँ = वहाँ। निहारी = देखकर। मनुज = मानव। अर्ध = आधी। कपि = वानर/हनुमान। आयउ = आया। अनुज = छोटा भाई। उर = हृदय। सकहु = सकते। तव = तुम्हारा। मृदुल = कोमल। मम हित = मेरे लिए। विपिन = जंगल। हिम = ठंड। आतप = गर्मी। बाता = वायु/आंकी। अनुराग = प्रेम। मम = मेरे। वच = वचन। बिकलाई = व्याकुल। जनतेउँ = जानता। बिछोहू = वियोग। मनतेउँ = मानता। ओहू = उसे।

व्याख्या:-

वहाँ जब राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को मूर्च्छित देखा तो वे एक सामान्य मानव के समान विलाप करने लगे। भाव यह है कि लक्ष्मण की मूर्छा के कारण राम अत्यधिक व्याकुल हो चुके थे। इसलिए वे एक साधारण मानव के समान रोने लगे। विलाप करते हुए वे कहते हैं कि आधी रात व्यतीत हो चुकी है, परंतु हनुमान अभी तक नहीं आया। राम ने अपने छोटे भाई

लक्ष्मण को अपनी छाती से लगा लिया और विलाप करते हुए कहने लगे कि तुम्हारा स्वभाव तो इतना कोमल था कि तुम मेरे दुख को देख नहीं सकते थे, तुमने हमेशा दुख में मेरा साथ दिया। मेरे लिए ने अपने माता-पिता का त्याग किया और वन में रहते हुए सर्दी, गर्मी और तूफान को सहन किया। भाव यह है कि लक्ष्मण ने अयोध्या नगरी का सुविधापूर्ण जीवन त्यागकर वनवास में राम का साथ दिया। श्रीराम कहते हैं हे भाई! मेरे प्रति तुम्हारा वह स्नेह कहाँ चला गया। तुम मेरे व्याकुल वचनों को सुनकर क्यों नहीं उठ खड़े होते। यदि मुझे पता होता कि मेरा अपने भाई से वियोग होगा तो मैं पिता की आज्ञा कभी नहीं मानता। भाव यह है कि राम लक्ष्मण का वियोग एक क्षण के लिए भी सहन नहीं कर सकते।

विशेष:-

(1) यहाँ राम के द्वारा बोले गए करुण वचन एक सामान्य मानव के समान हैं। राम के यह वचन भाव पूर्ण होने के साथ-साथ लक्ष्मण के आदर्श आदर्श चरित्र पर भी प्रकाश डालते हैं।

(2) अनुप्रास, पद-मैत्री तथा स्वर-मैत्री अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

(3) तत्सम् प्रधान साहित्यिक अवधी भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(4) शब्द-चयन सर्वथा उचित और सटीक है।

(5) प्रस्तुत पद में चौपाई छंद का कुशल निर्वाह हुआ है तथा बिंब-योजना भी सुंदर बन पड़ी है।

सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग वारहिं बारा॥
अस विचारि जियें जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि विनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु विनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

शब्दार्थ:-

सुत = पुत्र। वित = धन। होहिं जाहिं = हो जाते हैं। वारहिं बारा - बार-बार। विचारि = विचार करके। जियँ = मन में। जागहु = जागो । ताता = प्रिय भाई। सहोदर = सगा भाई। जथा = जिस प्रकार। दीना = दुखी। फनि == साँप करिबर = हाथी। हीना = से रहित। तोही = तेरे। जौं = यदि। जड़ = कठोर। देव = भाग्य। जिआवे = जीवित रखे। जैहउँ = जाऊँगा। मुहुँ लाई = मुँह लेकर। अपजस = कलंक। सहतेउँ = सहता रहूँगा। माहीं = में। छति = नुकसान, हानि।

व्याख्या:-

इस संसार में पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार बार बार प्राप्त होते रहते हैं और नष्ट होते रहते हैं अर्थात ये जीवन में आते हैं और चले भी जाते हैं, परंतु हे भाई! तुम अपने मन में यह विचार कर जाग जाओ कि सगा भाई पुनः प्राप्त नहीं होता। हे भाई लक्ष्मण! जिस प्रकार पखों के बिना पक्षी दीन हो जाता है और मणि के बिना साँप तथा सूंड के बिना हाथी दीन-हीन हो जाता है। यदि विधाता मुझे तुम्हारे बिना जीवित रखता है तो तुम्हारे बिना मेरी भी हालत ऐसी ही होगी।

हे प्रिय भाई! मैं अयोध्या में क्या मुँह लेकर जाऊंगा। मेरे बारे में लोग कहेंगे कि मैंने अपनी नारी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। मैं नारी को खोने का अपयश तो सहन कर लूंगा क्योंकि लोग मुझे कायर कहेंगे, लेकिन मैं भाई को खोने का दुख बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा। मेरे लिए पत्नी की हानि कोई बहुत बड़ी बात नहीं है, परंतु भाई की हानि बहुत बड़ी बात है।

विशेष:-

(1) यहाँ कवि ने राम को मानव के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनकी कथा और पीड़ा का मार्मिक वर्णन किया है।

(2) राम का भ्रातृ-प्रेम अधिक प्रशंसनीय है। ये पत्नी, पुत्र, धन, भवन आदि की तुलना में अपने भाई लक्ष्मण को अधिक महत्त्व देते हैं।

(3) राम ने अनेक दृष्टांत देकर अपने भ्रातृ-भाव पर प्रकाश डाला है।

(4) 'जो पंख बिनु' में उदाहरण अलंकार है।

(5) संपूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

(6) सहज एवं सरल साहित्यिक अवधी भाषा का सफल प्रयोग है। शब्द-चयन सर्वथा सटीक और उचित है।

(7) चौपाई छंद तथा करुण रस का सुंदर परिपाक है।

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी।
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥
बहु विधि सोचत सोच विमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन॥
उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपाल देखाई॥

सोरठा

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए वानर निकर
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना मँह वीर रस॥

शब्दार्थ:-

अपलोकु = अपयश । सोकु = दुख। तोरा = तेरा। उर = हृदय । मोरा = मेरा। कुमारा = पुत्र । तासु = उसके लिए। प्रान अधारा = प्राणों के आधार। सौपेसि = सौंपा था। गहि = पकड़कर। पानी = हाथ। सब बिधि = हर तरह से। परम हित = सच्चा हितैषी। उतरु = उत्तर। तेहि = वहाँ। किन = क्यों नहीं। बहु विधि = अनेक प्रकार से।विमोचन = शोक से मुक्ति देने वाले राम। स्रवत = बहता। राजिव दल लोचन = कमल के समान खिले हुए नेत्र। उमा = पार्वती। रघुराई = रघुकुल के राजा राम। कृपाल = कृपालु । प्रलाप = विलाप । विकल = व्याकुल । बानर निकर = वानरों का समूह। जिमि = जैसे। मैंह = में।

व्याख्या:-

यहाँ विलाप करते हुए राम अपने मूर्छित भाई लक्ष्मण को संबोधित करते हुए पुनः कहते हैं-हे पुत्र लक्ष्मण! अब तो मेरे कठोर हृदय को पत्नी खोने का अपयश और तुम्हारा शोक ये दोनों दुख सहन करने पड़ेगे। भाव यह है कि तुम्हारे बिना मैं अपनी पत्नी सीता को भी नहीं पा सकता। हे भाई! तुम अपनी माता के एक ही पुत्र हो और उसके प्राणों के आधार हो। तुम्हारी माता सुमित्रा ने सब प्रकार से तुम्हारा सुख और कल्याण समझकर तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में सौंपा था। अब तुम ही बताओ मैं लौटकर उन्हें क्या उत्तर दूंगा। हे भाई! तुम उठकर मुझे समझाते क्यों नहीं। इस प्रकार सांसारिक प्राणियों की चिंताओं को दूर करने वाले राम स्वयं अनेक चिंताओं में डूब गए। कमल के समान उनके विशाल नेत्रों से आँसू टपकने लगे। इस प्रकार कथावाचक शिवजी ने पार्वती से कहा जो राम स्वयं परिपूर्ण और अनंत हैं, वे ही अपने भक्तों को कृपा करके नर लीला दिखा रहे हैं। भले ही वे विष्णु के अवतार हैं, लेकिन इस समय वे सामान्य मानव के समान आचरण कर रहे हैं। प्रभु श्रीराम के विलाप को सुनकर वानरों का समूह दुख से अत्यधिक व्याकुल हो गया। उसी समय हनुमान जी अचानक ऐसे प्रकट हो गए जैसे करुण रस में वीर रस प्रकट हो जाता है। भाव यह है कि हनुमान के आते ही शोक का वातावरण वीरता में बदल गया।

विशेष:-

(1) यहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम राम एक सामान्य मानव के रूप में करुणापूर्ण विलाप करते हुए भावपूर्ण वचन कह रहे हैं।

(2) यहाँ कवि ने राम के लिए तीन विशेषणों का प्रयोग किया है-सोच बिमोचन, राजिव दल लोचन तथा रघुराई।

(3) 'सोच बिमोचन' में यमक अलंकार तथा 'स्रवत सलिल' में अनुप्रास अलंकार है।

(4) अन्यत्र संपूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार की छटा देखी जा सकती है।

(5) सहज एवं सरल साहित्यिक अवधी भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(6) प्रसाद गुण है तथा करुण रस का परिपाक है।

(7) चौपाई छंद तथा संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।
तुरत बैद तव कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि बाता।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा॥
यह वृतांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। विविध जतन करि ताहि जगावा॥

शब्दार्थ-

हरषि = प्रसन्न होकर। भेटेउ = भेंट की। कृतग्य = आभारी। सुजाना = ज्ञानी। बैद = वैद्य। उपाई = उपाय । हरषाई = प्रसन्न होकर। सकल = सारे। भालु = भालू जाति के वनवासी। व्राता = समूह। कपि = वानर जाति के वनवासी। जेहि बिधि = जिस ढंग से। लइ आवा = ले आया था। वृतांत = वर्णन। सुनेऊ = सुना। विषाद = दुख। सिर धुनेऊ = पछताया। पहिं = के पास। विविध = अनेक प्रकार के। जतन = प्रयत्न। जगावा = जगाया।

व्याख्या-

प्रसन्न होकर श्रीराम ने हनुमान से भेंट की। परम ज्ञानी होते हुए भी राम ने हनुमान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की अर्थात् उन्होंने हनुमान का उपकार माना। संजीवनी प्राप्त होते ही वैद्य ने लक्ष्मण का उपचार किया और वे प्रसन्न होकर उठ बैठे। उन्हें होश आ गया। तब प्रभु राम ने लक्ष्मण को अपने हृदय से लगा लिया। जिसे देखकर सभी भालू और वानर समूह अत्यधिक प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् हनुमान ने वैद्य को वहाँ पहुँचाया, जहाँ से वह उन्हें सम्मानपूर्वक लाया था। रावण ने यह सारा वृत्तांत सुना। वह अत्यधिक दुखी होकर अपना सिर धुन-धुन कर पछताने लगा। इसके बाद वह व्याकुल होकर अपने भाई कुंभकरण के पास आया और उसने अनेक प्रकार के प्रयत्न करके उसे गहरी नींद से जगाया।

विशेष-

(1) इस पद में कवि ने जहाँ एक ओर राम, लक्ष्मण, भालू तथा वानर सेना की प्रसन्नता का वर्णन किया है, वहीं दूसरी ओर रावण के विषाद का भी सजीव वर्णन किया है।

(2) मर्यादा पुरुषोत्तम होते हुए भी राम ने हनुमान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है।

(3) संपूर्ण पद्य में अनुप्रास अलंकार का सफल प्रयोग हुआ है।

(4) सहज एवं सरल साहित्यिक अवधी भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(5) चौपाई छंद का प्रयोग है तथा वर्णनात्मक शैली है।

जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि वैसा॥
कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई।
कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी॥
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे॥
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी॥

अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा।।

शब्दार्थ-

निसिचर = राक्षस। कालु = काला। देह धरि = शरीर धारण करके। कहु = कही। तव = तुम्हारा। तेहिं = तैसा। जेहि = जैसा। तात = भाई। कपिन्ह = वानरों ने। संघारे = मारे। जोधा = योद्धा । सुररिपु = देवशत्रु। मनुज अहारी = मानव खाने वाले। अतिकाय = भारी शरीर वाले। अपर = दूसरा। महोदर = एक राक्षस का नाम। समर = युद्ध। महि = पृथ्वी।

व्याख्या-

नींद से जागने पर वह राक्षस कुंभकरण ऐसा लग रहा था मानों मृत्यु देह धारण करके बैठी हो अर्थात् कुंभकरण देखने में बहुत ही भयंकर था। तब कुंभकरण ने रावण से पूछा हे भाई! मुझे बताओ किस कारण से तुम्हारे मुख सूख गए हैं अर्थात् तुम घबराए हुए क्यों हो? तब उस अभिमानी रावण ने वह सारी कथा कह सुनाई जिस प्रकार वह सीता का हरण करके लाया था। रावण ने कहा-हे भाई! वानर सेना ने सारे राक्षसों को मार दिया है और मेरे बड़े-बड़े योद्धाओं का वध कर दिया है। दुर्मुख, देवशत्रु, मनुष्य भक्षक, महायोद्धा, अतिकाय, अकंपन, महोदर आदि मेरे असंख्य वीर योद्धा युद्ध-क्षेत्र में मारे गए हैं। भाव यह है कि मेरी सेना के बड़े-बड़े योद्धा वानर सेना ने मार गिराए हैं।

विशेष-

(1) यहाँ कुंभकरण ने निर्भीक होकर अभिमानी रावण पर टिप्पणी की है।

(2) रावण ने अपने भाई कुंभकरण के सामने अपनी पराजय का यथार्थ वर्णन किया है।

(3) अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

(4) संपूर्ण पद्य में साहित्यिक अवधी भाषा का प्रयोग देखा जा सकता है।

(5) चौपाई छंद का प्रयोग है तथा संवादात्मक शैली है।

सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान।
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान।।

शब्दार्थ-

दसकंधर = रावण। बिलखान = दुखी होकर। जगदंबा = जगत जननी सीता। हरि = हरण करके। सठ = दुष्ट।

व्याख्या-

रावण के वचनों को सुनकर कुंभकरण ने दुखी होकर कहा-हे दुष्ट रावण! तू जगत-माता सीता का हरण करके अब अपना कल्याण चाहता है। ऐसा कदापि नहीं हो सकता। अतः तेरा विनाश तो निश्चित ही है।

विशेष-

(1) यहाँ कवि ने कुंभकरण के मुख से रावण के प्रति घृणा-भाव का वर्णन किया है।

(2) अनुप्रास अलंकार का सफल प्रयोग हुआ है।

(3) साहित्यिक अवधी भाषा का प्रयोग है। शब्द-चयन उचित तथा भावानुकूल है।

(4) दोहा छंद का प्रयोग है।

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

किसबी, किसान- कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल, नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,

अटत गहन-गन अहन अखेटकी ॥
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाई एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बडवागितें बड़ी है आगि पेटकी ।।

1. तुलसीदासजी के समय समाज की स्थिति कैसी थी ?

(क) लोग बहुत निर्धन थे। (ख) लोगों के पास काम-धंधे नहीं थे।
(ग) भूख मिटाने के लिए कोई भी अनुचित कार्य करने को तैयार थे। (घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर - विकल्प (घ) सही है।

2. पेट की अग्नि की तुलना किससे की गई है ?

(क) चूल्हे की अग्नि से । (ख) बड़वाग्नि से ।
(ग) दावानल से। (घ) यज्ञ की अग्नि से ।

उत्तर - विकल्प (ख) सही है।

3. कवि को इस समस्या के समाधान के लिए किस पर भरोसा है -

(क) श्रीराम की भक्ति पर (ख) श्रीकृष्ण की भक्ति पर
(ग) राजा की कृपा पर (घ) कड़े परिश्रम पर।

उत्तर-विकल्प (क) सही है।

4. अनुप्रास अलंकार का उदाहरण नहीं है -

(क) किसबी, किसान-कुल (ख) बेचत बेटा बेटकी
(ग) बड़ी है आगि पेट की (घ) चोर, चार, चेटकी ।

उत्तर - विकल्प (ग) सही है।

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों' कहाँ जाई, का करी ?"
बेद पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
सौकरे सर्व पै, राम रावरें कृपा करी।
दारिद दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु ।
दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी|

1. प्रकृति और शासन की विषमता का क्या कारण है?

(क) दैवीय कोप से ग्रस्त है. (ख) उनमें देशभक्ति की भावना नहीं है।
(ग) लोग आजीविका विहीन हैं। (घ) लोगों में आलस्य भरा है।

उत्तर - विकल्प (ग) सही है।

2. कवि ने दरिद्रता की तुलना किससे की है ?

(क) मृत्यु से (ख) रावण से
(ग) अंधकार से (घ) श्रीराम से।

उत्तर-विकल्प (ख) सही है।

3. कवि को इस दुर्व्यवस्था में किसका भरोसा है ?

(क) श्रीराम का (ख) शासन का

(ग) इंद्र का (घ) भाग्य का ।

उत्तर - विकल्प (क) सही है।

4. कवि ने वेद, पुराण आदि ग्रंथों का उल्लेख किया है-

(क) ज्ञान-प्राप्ति को प्रेरित करने के लिए (ख) अपनी बात को सही बताने के लिए

(ग) श्रीराम की भक्ति का प्रमाण देने के लिए (घ) गरीबी की भयावहता दर्शाने के लिए।

उत्तर-विकल्प (ग) सही है।

5. उपर्युक्त काव्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

(क) कवितावली (ख) गीतावली

(ग) रामचरितमानस (घ) रचनावाली

उत्तर-विकल्प (क) सही है।

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैह नाथ तुरंत
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेठ हनुमत।।
भरत बाहुबल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार
मन महुँ जात सराहत पुनि-पुनि पवनकुमार

1. काव्यांश में हनुमान जी ने किससे चलने की आज्ञा माँगी ?

(क) श्री राम जी से (ख) भरत जी में

(ग) लक्ष्मण जी से (घ) सुग्रीव जी मे

उत्तर-विकल्प (ग) सही है।

2. हनुमान ने भरत जी को आश्वासन दिया कि-

(क) का प्रताप हृदय में रख समय पर पहुँच जाऊंगा

(ख) आपकी आवभगत से मन हृदय प्रफुल्लित है।

(ग) मैं प्रभु से आपकी प्रशंसा करूँगा।

(घ) शीघ्र ही प्रभु को आपसे मिलने के लिए राजी कर लूंगा

उत्तर-विकल्प (क) सही है।

3. हनुमान जी कि भेंट भरत जी से कहाँ पर हुई थी ?

(क) पंचवटी में (ख) अयोध्या में

(ग) चित्रकूट में (घ) लंका में

उत्तर-विकल्प (ख) सही है।

प्रभु प्रलाप सुनी कान बिकम भए बानर निकर
आई गयऊ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस
हरषि राम भेटेउ हनुमाना, अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई, उठि बैठे लछिमन हर्षाई
हृदयं लाई प्रभु भेंटेउ भ्राता हर्षे सकल भालु कपि भ्राता
कपि पुनि बैंद तहां पहुँचावा जेहि बिधि तबहिं ताहि लई आवा

1. प्रभु राम के विलाप का कारण क्या था ?

(क) भरत से वियोग (ख) सीता का हरण

(ग) पिता की मृत्यु (घ) लक्ष्मण कि मूर्छा

उत्तर-विकल्प (घ) सही है।

2. हनुमान जी के आगमन से करूण रस के बीच किस रस की उत्पत्ति हो गयी ?

(क) रौद्र रस (ख) भयानक रस
(ग) वीर रस (घ) अद्भुत रस

उत्तर-विकल्प (ग) सही है।

3. लक्ष्मण की मूर्छा समाप्त होने पर सुषेण वैद्य के प्रति कैसा व्यवहार किया गया ?

(क) प्रताड़ित किया गया (ख) उनके घर पहुँचाया गया
(ग) बंदी बना लिया गया (घ) अपना राज्वैदय नियुक्त किया गया

उत्तर-विकल्प (ख) सही है।

जौं जनतेऊँ बन बंधु बिछोहू ।पिता बचन मनतेऊँ नहिं ओहू ।।
सुत बित नारि भवन परिवारा।होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता।मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना ।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही ।जौं जड़ दैव जिआवै मोही
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई । नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई ।।
बरु अपजस सहते जग माहीं।नारि हानि बिसेष छति नाहीं ।।

1. यह संभव नहीं था की श्री राम जी पिता के वचन नहीं मानें,फिर वे ऐसा क्यों कर रहे थे ?

(क) लक्ष्मण के मूर्छित होने के कारण (ख) सीता का अपहरण हो जाने के कारण
(ग) अयोध्या की याद आने के कारण (घ) अवतार होने पर मानव लीला होने के कारण

उत्तर-विकल्प (घ) सही है।

2. पक्षी और हाथी के माध्यम से श्री राम क्या बताना चाहते हैं ?

(क) पक्षी पंख के बिना नहीं उड़ सकता है (ख) सूंड के बिना हाथी का कोई अस्तित्व नहीं है
(ग) लक्ष्मण के बिना मेरा जीवन व्यर्थ है (घ) पक्षी और हाथी के समान वे भी दर दर भटक रहे हैं

उत्तर-विकल्प (ग) सही है।

3. यहाँ किसकी क्षति को महत्वहीन बताया गया है ?

(क) भाई की (ख) नारी की
(ग) परिवार की (घ) स्वास्थ्य की

उत्तर-विकल्प (क) सही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'कवितावली' के अनुसार वेदों और पुराणों में क्या कहा गया है?

उत्तर- 'कवितावली' के अनुसार वेदों और पुराणों में बताया गया। है कि धरती पर जब-जब संकट उत्पन्न होता है तब प्रभु श्रीराम अवतार लेकर सबके कष्ट व संकट दूर करते हैं।

प्रश्न 2. कवितावली' कविता के आधार पर बताइए कि तुलसीदास जी समाज से क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर-'कवितावली' के माध्यम से तुलसीदास कहना चाहते हैं कि समाज उनके बारे में जो कुछ कहना चाहता है कहे, उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला। वह समाज के लोगों से कोई मतलब नहीं रखना चाहते।

प्रश्न 3. कवि अपने जीवन-निर्वाह हेतु क्या करने को तत्पर है?

उत्तर- कवि तुलसीदासजी कहते हैं कि वे भिक्षा माँग कर अपना जीवन-निर्वाह कर लेंगे, परंतु अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटने वाले। उन्हें कोई कुछ कहता है कहे, इसकी परवाह उन्हें नहीं है। जीवन-निर्वाह हेतु भिक्षा लेने को तत्पर हैं। वे केवल अपने प्रभु श्रीराम पर ही आश्रित हैं। उन्हें किसी अन्य से कोई लेना-देना नहीं है। वे निश्चिंत होकर मस्ज़िद में सोते हैं।

प्रश्न 4. तुलसीदास के समय तत्कालीन समाज कैसा था ?

उत्तर-तुलसीदास के समय में सामाजिक मान्यताएं व परम्पराएं - नष्ट हो रही थीं। समाज में धार्मिक अंधविश्वास फैल रहा था जिनमें पूरा समाज फँसता जा रहा था। समाज में नारी की स्थिति शोचनीय थी

प्रश्न 5. भरत को वीर हनुमान ने क्या भरोसा दिलाया ?

उत्तर- भरत को वीर हनुमान ने भरोसा दिलाया कि, हे नाथ! मैं आपके प्रताप को हृदय में रखकर शीघ्र ही संजीवनी बूटी लेकर लंका में श्रीराम के पास पहुँच जाऊँगा। आप बिल्कुल भी चिंता न करें

प्रश्न 6. तुलसीदास के अनुसार पेट की आग का शमन कौन कर सकता है ?

उत्तर- तुलसीदास के अनुसार पेट की आग का शमन ईश्वर-कृपा द्वारा ही हो सकता है। प्रभु कृपा और संतोष-भावना से ही भूख शांत हो सकती है।

प्रश्न 7. कवि श्रीराम से क्या चाहता है और क्यों ?

उत्तर- कवि श्रीराम से यह कहना चाहता है कि संकट के समय में प्रभु श्रीराम कृपा करें क्योंकि वे दीनबंधु हैं और संकट पड़ने पर सबकी सहायता वे ही कर सकते हैं ।

प्रश्न 8. लक्ष्मण के होश में न आने पर राम के हृदय को कौन-कौन से कष्ट व्यथित कर रहे थे?

उत्तर- लक्ष्मण के होश में न आने पर राम के हृदय को यह कष्ट सता रहा था कि वह अपनी माता को किस प्रकार समझा पाएँगे कि मैं अपनी स्त्री को बचाने के लिए अपने भाई को गँवा आया।

प्रश्न 9. कुंभकरण गहरी नींद में कैसा लग रहा था ? उसे कैसे उठाया गया ?

उत्तर- कुंभकरण का आकार विशाल व भयंकर था। गहरी नींद में सोता हुआ वह ऐसे लग रहा था मानो स्वयं काल सोया हुआ

प्रश्न 10. रावण की बात पर कुंभकर्ण की क्या प्रतिक्रिया था ?

उत्तर- रावण की बात सुनकर कुंभकर्ण बिलखने लगा। उसने रावण से कहा कि तुम मूर्ख हो। जगत जननी सीता का हरण करके कल्याण की बात सोचना मूर्खता ही है। अब किसी भी प्रकार तुम्हारा भला नहीं हो सकता

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पेट की आग राम भक्ति के मेघ से ही शांत हो सकती है— तुलसी की रचना की पृष्ठभूमि में तत्कालीन सामाजिक दशा पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर- कवितावली की इस पंक्ति में तुलसी ने यह बताया है कि समाज में लोगों को रोज़गार उपलब्ध नहीं है। न किसान को खेती है, न व्यापारी को व्यापार और न चाकर को नौकरी । सब लोग पेट की आग (भूख) से त्रस्त हैं। यह आग राम भक्ति रूपी जल (रामकृपा) से ही शांत हो सकती है। समाज की दशा अत्यंत दयनीय थी

प्रश्न 2. "माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो" - तुलसी के इस कथन के मर्म पर अपने विचार लिखिए ।

उत्तर -तुलसीदास स्वाभिमान और निडरता का परिचय देते हुए कहते हैं। मुझे अपने संसार बिगड़ने का कोई भय नहीं है। आराध्य के प्रति हमेशा पूर्ण समर्पण का भाव होना चाहिए। अपनी भक्ति पर अभिमान नहीं होना चाहिए। तुलसीदास की तरह भीख माँगकर खाने में या मस्ज़िद में सोने में कोई हर्ज नहीं परंतु आत्मसम्मान से कोई समझौता नहीं करना चाहिए। सामाजिक दिखावे या यश- निंदा की परवाह नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 3. 'धूत कहौ', अवधूत कहौ.....' सवैये में तुलसीदास का स्वाभिमान प्रतिबिंबित होता है' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास जी ने राम को ईश्वर के साथ-साथ देशकाल के आदर्शों के अनुरूप मानवीय धरातल पर भी वर्णित किया है। वे ग्रामीण एवं कृषक संस्कृति, रक्त संबंध की मर्यादा के आदर्श रूप के चितेरे कवि हैं। उन्हें श्रीराम की भक्ति पर पूर्ण विश्वास है। वे श्रीराम को भव-सागर से पार कराने का माध्यम मानकर उनकी उपासना करते हैं। तुलसी दास के अनुसार राम शरणागत भक्त को आश्रय प्रदान करते हैं। भक्त उन्हें अपनी रुचि, भावना के अनुसार पूजता और उपासना करता है।

प्रश्न 4 'कवितावली के छंदों में अपने युग की आर्थिक एवं सामाजिक विषमता की अभिव्यक्ति है'-कथन की पुष्टि कीजिए ।

उत्तर—तुलसी राम भक्त कवि थे। वह अपने युग के सजग प्रहरी थे और अपनी खुली आँखों से अपने युग की कठिनाइयों को देख रहे थे। उन्होंने देखा कि उनके समय में भयंकर बेरोज़गारी और भुखमरी थी। मज़दूर, किसान, व्यापारी, भिखारी, कलाकार, नौकर, आदि सभी काम की कमी के कारण परेशान थे। काम न मिलने के कारण चारों ओर भुखमरी और विवशता थी। सब यही कहते थे कि कहाँ जाएँ और क्या करें? अत: कहा जा सकता है कि तुलसीदास ने अपने युग की आर्थिक व सामाजिक विषमता को भली भाँति समझा और अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

प्रश्न 5. कवितावली के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी ।

उत्तर तुलसीदास ने अपने काव्य में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विशद वर्णन किया है। जब सभी श्रमजीवी, किसान वर्ग, बनिया, भिखारी, भाट, नौकर, नटवर्ग, चोर तथा जादूगर अपनी भूख मिटाने के लिए जीविकोपार्जन हेतु पढ़ते-लिखते थे तथा कुशलता अर्जित करते थे। पहाड़ पर चढ़ने जैसे कठिन कार्य को करते थे। ये सब पेट की खातिर यहाँ-वहाँ भटकते थे। शिकारी गहरे वन में दिन भर मारे-मारे भटकते थे। पेट की भूख मिटाने के लिये अत्याचार, अन्याय, ऊँच-नीच, अनैतिक, धर्म-अधर्म के कार्य करके पेट भरते थे। पेट की खातिर अपने बेटे-बेटियों को भी बेचने का नीच कार्य भी करते थे

प्रश्न 6."लक्ष्मण मूर्च्छा पर राम का विलाप' में तुलसीदास नारी के प्रति तत्कालीन समाज की मान्यताओं के प्रभाव से बच नहीं पाए।" - सोदाहरण इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

उत्तर- समाज में नारी को सहज उपलब्ध माना जाता था। तुलसी दास ने भी राम के शब्दों में कहलाया है। कि सुत,बित, नारी, भवन और परिवार संसार में सहज सुलभ नारी की स्थिति एक वस्तु मात्र, तुलसीदास ने नारी की तुलना धन और भवन से की है जोकि स्थूल वस्तुएँ हैं नारी को पुरुष के बराबर नहीं समझा जाता था। उसे समुचित सम्मान नहीं दिया जाता था। तभी तुलसी ने कहा कि की कोई विशेष क्षति नहीं है

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप' काव्या'श के आधार पर आव्रर्शाक में बेचैन राय कौ दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत काँजिए ।

अथवा

'लक्ष्मण-मूच्छा और राम का विलाप' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लक्ष्मण को मूर्चिछत देखकर राम भाव-विहवल हो उठते हैं। वे आम व्यक्ति की तरह विलाप करने लगते हैं। वे लक्ष्मण को अपने साथ लाने के निर्णय पर भी पछताते हैं। वे लक्ष्मण के गुणों को याद करके रोते हैं। वे कहते हैं कि पुत्र, नारी, धन, परिवार आदि तो संसार में बार-बार मिल जाते हैं, किंतु लक्ष्मण जैसा भाई दुबारा नहीं मिल सकता। लक्ष्मण के बिना वे स्वयं को पंख कटे पक्षी के समान असहाय, मणिरहित साँप के समान तेजरहित तथा सँड़रहित हाथी के समान असक्षम मानते हैं। वे इस चिंता में थे कि अयोध्या में सुमित्रा माँ को क्या जवाब देंगे तथा लोगों का उपहास कैसे सुनेंगे कि पत्नी के लिए भाई को खो दिया।

2. बेकारी की समस्या तुलसी के जमाने में भी थी, उस बेकारी का वर्णन तुलसी के कवित्त के आधार पर कीजिए।

अथवा

तुलसी ने अपने युग की जिस दुर्दशा का चित्रण किया हैं, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-तुलसीदास के युग में जनसामान्य के पास आजीविका के साधन नहीं थे। किसान की खेती चौपट रहती थी। भिखारी को भीख नहीं मिलती थी। दान-कार्य भी बंद ही था। व्यापारी का व्यापार ठप था। नौकरी भी लोगों को नहीं मिलती थी। चारों तरफ बेरोजगारी थी। लोगों को समझ में नहीं आता था कि वे कहाँ जाएँ क्या करें?

3. तुलसी के समय के समाज के बारे में बताइए।

उत्तर-तुलसीदास के समय का समाज मध्ययुगीन विचारधारा का था। उस समय बेरोजगारी थी तथा आम व्यक्ति की हालत दयनीय थी। समाज में कोई नियम-कानून नहीं था। व्यक्ति अपनी भूख शांत करने के लिए गलत कार्य भी करते थे। धार्मिक कट्टरता व्याप्त थी। जाति व संप्रदाय के बंधन कठोर थे। नारी की दशा हीन थी। उसकी हानि को विशेष नहीं माना जाता था।

4. तुलसी के युग की आर्थिक स्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर-तुलसी के समय आर्थिक दशा खराब थी। किसान के पास खेती न थी, व्यापारी के पास व्यापार नहीं था। यहाँ तक कि भिखारी को भीख भी नहीं मिलती थी। लोग यही सोचते रहते थे कि क्या करें, कहाँ जाएँ? वे धन-प्राप्ति के उपायों के बारे में सोचते थे। वे अपनी संतानों तक को बेच देते थे। भुखमरी का साम्राज्य फैला हुआ था।

5. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम क्या सोचने लगे?

उत्तर-लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्च्छित हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे हैं। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बड़ी हानि नहीं होगी, परंतु भाई के खो जाने का कलंक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

6. क्या तुलसी युग की समस्याएँ वतमान में समाज में भी विद्यमान हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-तुलसी ने लगभग 500 वर्ष पहले जो कुछ कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय की मूल्यहीनता, नारी की स्थिति, आर्थिक दुरवस्था का चित्रण किया है। इनमें अधिकतर समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। आज भी लोग जीवन-निर्वाह के लिए गलत-सही कार्य करते हैं। नारी के प्रति नकारात्मक सोच आज भी विद्यमान है। अभी भी जाति व धर्म के नाम पर भेदभाव होता है। इसके विपरीत, कृषि, वाणिज्य, रोजगार की स्थिति आदि में बहुत बदलाव आया है। इसके बाद भी तुलसी युग की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं।

7. कुंभकरण ने रावण को किस सच्चाई का आइना दिखाया?

उत्तर-कुंभकरण रावण का भाई था। वह लंबे समय तक सोता रहता था। उसका शरीर विशाल था। देखने में ऐसा लगता था मानो काल आकर बैठ गया हो। वह मुँहफट तथा स्पष्ट वक्ता था। वह रावण से पूछता है कि तुम्हारे मुँह क्यों सूखे हुए हैं? रावण की बात सुनने पर वह रावण को फटकार लगाता है तथा उसे कहता है कि अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। इस प्रकार उसने रावण को उसके विनाश संबंधी सच्चाई का आईना दिखाया।

8. कुंभकरण के द्वारा पूछे जाने पर रावण ने अपनी व्याकुलता के बारे में क्या कहा और कुंभकरण से क्या सुनना पड़ा?

उत्तर-कुंभकरण के पूछने पर रावण ने उसे अपनी व्याकुलता के बारे में विस्तारपूर्वक बताया कि किस तरह उसने माता संकण किया कि उसे बताया कि हानुमान ने सवागस मारडले हैं औ महान यथाओं का साहार कर दिया है।

उसकी ऐसी बातें सुनकर कुंभकरण ने उससे कहा कि अरे मूर्ख! जगत-जननी को चुराकर अब तू कल्याण चाहता है। यह संभव नहीं है।

स्वयं करें

1.आप कवि तुलसीदास के नारी संबंधी सामाजिक दृष्टिकोण को वर्तमान में कितना प्रासंगिक समझते हैं? लिखिए।

2.'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता"-यदि लोगों द्वारा इसे अपने जीवन में उतार लिया जाए तो सामाजिक समरसता पर क्या असर पडेगा?

3.तुलसी के समय में आर्थिक विषमता का बोलबाला था-कवितावली (उत्तरकांड से) के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4.तुलसीदास ने वेद-पुराण के किस कथन की ओर संकेत किया है और क्यों?

5.'राम-लक्ष्मण का परस्पर प्रेम भ्रातृ-प्रेम का अनूठा उदाहरण है।' इस कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।

पाठ सं-09

रुबाइयाँ

फिराक गोरखपुरी

प्रतिपादय एवं सार

रुबाइयाँ

फ़िराक की रुबाइयाँ उनकी रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत हैं। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है। सार-इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है। वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है। वह उसे साफ़ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है।

बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है। दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते हैं। चीनी-मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं। वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है। आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है। रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वहीं संबंध भाई का बहन से है।

पद्यांशों की व्याख्या

आंगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती हैं उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती हैं खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

शब्दार्थ-

चाँद का टुकड़ा-बहुत प्यारा। गोद-भरी-गोद में भरकर, आँचल में लेकर। लोका देती हैं-उछाल देती है।

व्याख्या-शायर कहता है कि एक माँ चाँद के टुकड़े अर्थात अपने बेटे को अपने घर के आँगन में लिए खड़ी है। वहीं अपने चाँद के टुकड़े को अपने हाथों पर झुलाने लगती है। बीच-बीच में वह उसे हवा में उछाल भी देती है। इस प्रक्रिया से बच्चा प्रसन्न हो उठता है तथा बच्चे की खिलखिलाहट-भरी हँसी गूँजने लगती है।

विशेष–

- माँ द्वारा बच्चे को झुलाना, बच्चे का हँसना आदि स्वाभाविक क्रियाएँ हैं। स्वभावोक्ति अलंकार है।
- वात्सल्य रस है।
- दृश्य बिंब है-'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी', 'गोद-भरी', 'हाथों पे झुलाती', 'हवा में जो लोका देती है'।
- अंतिम पंक्ति में श्रव्य बिंब है।
- 'चाँद के टुकड़े' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।
- 'रह-रह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- 'लोका देना' देशज भाषा का प्रयोग है।
- उर्दू-हिंदी मिश्रित शब्दावली है।

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी
किस प्यार से देखता हैं बच्चा मुँह को
करके जब घुटनियों में ले के हैं पिन्हाती कपड़े।

शब्दार्थ-

छलके-हिलते-डुलते। निमल-स्वच्छ, साफ़। गेसुओं-बालों। घुटनियों-घुटनों। पिन्हाती-पहनाती।

व्याख्या-शायर कहता है कि माँ अपने बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है। उसके उलझे हुए बालों से पानी छलक रहा है। माँ क्यों केवल की कत है जब वाहउसे अप्ने पुटों में लेक कहे पिहनात हैत बच्था अयंता ने सेम के मुवक निहारता रहता है।

विशेष–

- माँ के स्नेह का स्वाभाविक वर्णन है। अत: स्वभावोक्ति अलंकार है।
- वात्सल्य रस की सहज अभिव्यक्ति है।
- 'छलके-छलके' में पुनरुक्ति प्रकाश एवं 'कंघी करके' में अनुप्रास अलंकार है।
- 'जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े' में लोकभाषा का प्रयोग है।
- उर्दू-हिंदी भाषा का मिश्रित रूप है।
- दृश्य बिंब है।
- रुबाई छंद है।

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पैं इक नम दमक

बच्चे के घरौंदे में जलाती हैं दिए।

शब्दार्थ-

शाम-संध्या। युते-साफ़-सुथरे, रैंगे। लावे-लाए। रूपवती-सुंदरी। मुखड़े-मुख। हुक-एक। दमक-चमक। घरोंदे-मिट्टी के घर। दिए-दीपक।

व्याख्या-शायर कहता है कि आज दीवाली की शाम है। इस अवसर पर घर रंग-रोगन से पुता हुआ तथा सजा हुआ है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने हुए खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। माँ के सुंदर मुँह पर हलकी चमक-सी आ जाती है। वह बच्चे के छोटे-से घर में दिया जलाती है।

विशेष-

- आम व्यक्ति के घर में दीवाली के अवसर पर हुई रौनक का स्वाभाविक चित्रण है।
- माँ की ममता का सुंदर चित्रण है।
- दृश्य बिंब है-

'रंग-रोगन से पुते और सजे घर', 'चीनी के खिलौने जगमगाते', 'रूपवती मुखड़े पै इक नर्मदमक', 'घरौदे में जलाती है दिए'।

- 'रूपवती मुखड़ा' व 'नर्म दमक' विलक्षण प्रयोग है।
- रुबाई छंद तथा भाषा का मिश्रित रूप है।

आँगन में ठुनक रहा हैं जिदयाय है
बालक तो हई चाँद में ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही हैं माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

शब्दार्थ-

ठुनक-मचलना, बनावटी रोना। जिदयाया-जिद के कारण मचला हुआ। हड़-है ही। दयण-शीशा। आड़ना-दर्पण।

व्याख्या-शायर कहता है कि छोटा बच्चा आँगन में मचल रहा है। वह जिद लगाए हुए है कि उसे आकाश का चाँद चाहिए। उसका मन उस चाँद पर ललचा गया है। माँ उसे दर्पण में चाँद दिखाते हुए कहती है कि देख बेटा, दर्पण में चाँद उतर आया है। इस तरह वह बच्चे की जिद पूरी करती है।

विशेष-

- बच्चे की जिद तथा माँ द्वारा उसके समाधान का स्वाभाविक वर्णन हुआ है। अत: स्वभावोक्ति अलंकार है।
- 'जिदयाया' और 'हई' शब्द का प्रयोग विशेष है। इससे कोमलता में वृद्धि हुई है।
- वात्सल्य रस घनीभूत है।
- चित्रात्मक शैली है।
- उर्दू-हिंदी मिश्रित भाषा है।
- 'आईने में चाँद उतर आया'-सुंदर कल्पना है।
- 'ठुनक' शब्द में बच्चे के बाल-मनोविज्ञान का सहज वर्णन है।

रक्षाबंदन की सुबह रस की पुतली

छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

शब्दार्थ-

रस की पुतली-आनंद की सौगात, मीठा बंधन। घटा-बादल। गगन-आकाश। लच्छा-राखी के चमकदार लच्छा।

व्याख्या-कवि कहता है कि रक्षाबंधन की सुबह आनंद व मिठास की सौगात है। यह दिन मीठे बंधन का दिन है। सावन का महीना है। आकाश में काले-काले बादलों की हल्की घटाएँ छाई हुई हैं। इन बादलों में बिजली चमक रही है। इसी तरह राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हैं। बहिन अपने भाई की कलाई पर चमकीली राखी बाँधती है।

विशेष–

- रक्षाबंधन के त्योहार का प्रभावी चित्रण है।
- उर्दू-हिंदी मिश्रित भाषा है।
- 'हलकी-हलकी' में पुनरुक्ति प्रकाश तथा 'बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे' में उपमा अलंकार है।
- प्रसन्न बालिका को 'रस की पुतली' की संज्ञा दी गई है।
- रुबाई छंद का प्रयोग है।

मुख्य बिंदु: -

1) फ़िराक की रुबाइयों उनकी रचना ' गुले नग्मा से उद्धृत हैं।

2) रुबाई उर्दू और फारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है। और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

3) फिराक गोरखपुरी की इन दवाइयों में हिन्दी का एक घरेलू रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सुरदास के वात्सल्य वर्णन का स्मरण हो आता है।

4) यहाँ पर कवि द्वारा बच्चे के प्रति मां के वात्सल्य, दीपावली के पर्व की रौनक और आत्मीयतापूर्ण वातावरण तथा राखी और भाई बहिन के पवित्र बंधन की मिठास का सुन्दर चित्रण हुआ।

शिल्प-सौन्दर्य :

- रुवाई छंद का प्रयोग ।
- बिंबों का नए रूप में प्रयोग
- दृश्य बिम्ब-आँगन में लिए
- श्रव्य बिम्व गूंज उठती है...
- देशज भाषा का प्रयोग (लोका देना ...)
- मुहावरों वाली भाषा (चाँद का टुकड़ा..)

पठित काव्यांश-01

आंगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती हैं उसे गोद भरी

रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती हैं खिलखिलाते बच्चे की हँसी
नहला के छल-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के हैं पिन्हाती कपड़े

1. प्रस्तुत काव्यांश में 'चाँद का टुकड़ा' किसे कहा गया है?

(क) नन्हें बच्चे को (ख) माँ को
(ग) चाँद को (घ) चांदनी को

2. 'आंगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी' प्रस्तुत काव्यांश में 'चाँद का टुकड़ा' वाक्यांश है-

(क) अलंकार (ख) समास
(ग) मुहावरा (घ) लोकोक्ति

3. रह-रह के हवा में जो लोका देती है प्रस्तुत पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(क) पुनरुतिप्रकाश (ख) रूपक
(ग) अनुप्रास (घ) यमक

4. नन्हा बच्चा माँ को प्यार से कब देखता है?

(क) जब माँ उसको नहलाती है। (ख) जब माँ उसके गेसुओं में कंघी करती है
(ग) जब माँ उसको कपड़े पहनाती है। (घ) जब माँ उसकी प्यार से बाना खिलाती है

5.खिलखिलाते बच्चे की हँसी कब गूंज उठती है?

(क) जब माँ उसको प्यार से हवा में उछालती है (ख) जब माँ उसके गेसुओं में कंधी करती है।
(ग) जब माँ उसको कपड़े पहनाती है (घ) जब माँ उसको खेलने के लिए खिलौने देती है

6.प्रस्तुत काव्यांश में किस रस की अभिव्यक्ति हुई है?

(क) शांत रस (ख) वात्सल्य रस
(ग) श्रृंगार रस (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 01

1. क 2. ग 3. क 4. ग 5. क 6. ख

पठित काव्यांश-02

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुख इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए
आँगन में उनक रहा है जिदयाया है

बालक तो हई चाँद पे ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है
रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हलकी - हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

1. दीवाली पर लोग क्या करते हैं?

(क) चीनी मिट्टी के खिलौनों से घरों को सजाते-संवारते हैं (ख) घरों में दीये जलाते हैं
(ग) अपने घरों में रंगाई-पुताई करते हैं (घ) उपर्युक्त सभी

2. दीवाली की शाम माँ बच्चे के लिए क्या विशेष करती है?

(क) बच्चे को नए कपड़े पहनाती है (ख) बच्चे को घुमाने बाहर ले जाती है।
(ग) बच्चे के घरोंदे में दीये जलाती है। (घ) बच्चे को आतिशबाजी करने देती है

3.बालक किस पर ललचाया है?

(क) खिलौनों पर (ख) नए कपड़ों पर
(ग) स्वादिष्ट मिठाईयों पर (घ) चाँद पर

4. माँ दर्पण किसे देती है तथा उसे क्या कहती है?

(क) मा दर्पण अपने पुत्र को देती है तथा उसे कहती है कि देखो, चाँद कितना सुंदर दिखाई दे रहा है।
(ख) माँ दर्पण अपने पुत्र को देती है तथा उसे कहती है कि देखो, दर्पण में चाँद उत्तर आया है।
(ग) माँ दर्पण अपनी पुत्री को देती है तथा उसे कहती है कि देखो, दर्पण में चाँद उत्तर आया है दे रहा है
(घ) माँ दर्पण अपने पुत्री को देती है तथा उसे कहती है कि देखो, चाँद कितना सुंदर दिखाई

5. रक्षाबंधन की सुबह आसमान कैसा है?

(क) आसमान साफ है (ख) आसमान में गहरे काले बादल छाए हुए हैं
(ग) आसमान में हलके-हलके बादल छाए हुए हैं। (घ) आसमान में इन्द्रधनुष दिखाई दे रहा है

6. राखी के लच्छे किस तरह चमक रहे हैं?

(क) चाँद की चांदनी की तरह (ख) सूरज की चमकती किरणों की तरह
(ग) इन्द्रधनुष की तरह (घ) आसमान में चमकती बिजली की तरह

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 02

उत्तर 1. घ 2 ग 3.घ 4.ख 5.ग 6. घ

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:'रुबाइयाँ" के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के द्वश्य-बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर –कवि दीपावली के त्योहार के बारे में बताते हुए कहता है कि इस अवसर पर घर में पुताई की जाती है तथा उसे सजाया जाता है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। बच्चे के छोटे-से घर में दिए के जलाने से माँ के मुखड़े की चमक में नयी आभा आ जाती है। रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है। इस त्योहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई होती हैं। राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 2:'फिराक' की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –'फिराक' की रुबाइयों में घरेलू जीवन का चित्रण हुआ है। इन्होंने कई बिंब उकेरे हैं। एक बिंब में माँ छोटे बच्चे को अपने हाथ में झुला रही है। बच्चे की तुलना चाँद से की गई है। दूसरे बिंब में माँ बच्चे को नहलाकर कपड़े पहनाती है तथा बच्चा उसे प्यार से देखता है। तीसरे बिंब में बच्चे द्वारा चाँद लेने की जिद करना तथा माँ द्वारा दर्पण में चाँद कवि दवाक बचेक बहानेक कशिक बताया गया है। ये साथ बिंबालभागह घेलूजवनामें पाए जाते हैं।

प्रश्न 3:फिराक की रुबाई में भाषा के विलक्षण प्रयोग किए गए हैं-स्पष्ट करें।

उत्तर –कवि की भाषा उर्दू है, परंतु उन्होंने हिंदी व लोकभाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में हिंदी, उर्दू व लोकभाषा के अनूठे गठबंधन के विलक्षण प्रयोग हैं जिसे गाँधी जी हिंदुस्तानी के रूप में पल्लवित करना चाहते थे। ये विलक्षण प्रयोग हैं-लोका देना, घुटनियों में लेकर कपड़े पिन्हाना, गेसुओं में कंघी करना, रूपवती मुखड़ा, नर्म दमक, जिदयाया बालक, रस की पुतली। माँ हाथ में आईना देकर बच्चे को बहला रही है

देख आईने में चाँद उतर आया है।
चाँद की परछाई भी चाँद ही है।

अन्य हल प्रश्न

प्रश्न 1.बच्चे की हँसी सबसे ज्यादा कब गूँजती है?

उत्तर:-जब माँ अपने बच्चे को उछाल-उछाल कर प्यार करती है तो बच्चे की हँसी सबसे ज्यादा गूँजती है। बच्चा खुले वातावरण में आकर बहुत खुशी महसूस करता है। जब वह ऊपर की ओर बार-बार उछलता है तो वह रोमांचित हो उठता है।

प्रश्न 2.माँ बच्चे को किस प्रकार तैयार करती है?

उत्तर:माँ बच्चे को छलकते हुए निर्मल और स्वच्छ पानी से नहलाती है। उसके बालों में प्यार से कंघी करती है। उसे कपड़े पहनाती है। यह सारे कार्य देखकर बच्चा बहुत खुश होता है। वह ठंडे पानी से नहाकर ताजा महसूस करता है। अपनी माँ को प्यार से देखता है।

प्रश्न 3.बच्चा किस वस्तु के कारण लालची बन जाता है?

उत्तर:बच्चा जब चाँद को देखता है तो उसका मन लालची हो जाता है। वह चाँद को पकड़ने की जिद करता है। वह माँ से कहता है कि मुझे यही वस्तु चाहिए। चाँद को देखते ही उसका मन लालच से भर जाता है।

प्रश्न 6.फिराक गोरखपुरी की भाषा-शैली पर विचार करें।

उत्तर:फिराक गोरखपुरी मूलत: शायर हैं। रुबाइयाँ भी उन्होंने लिखी हैं। इन सबके लिए उन्होंने प्रमुख रूप से उर्दू भाषा का प्रयोग किया है। खास बात यह है कि इनकी भाषा में कठिनाई नहीं है। हाँ, कुछ शब्द उलझाव पैदा करते हैं, लेकिन वे पाठक को कठिन नहीं लगते।

प्रश्न 8.गोरखपुरी की रुबाइयों के कला पक्ष के बारे में बताएँ।

उत्तर:गोरखपुरी की रूबाइयाँ कलापक्ष की दृष्टि से बेहतरीन बन पड़ी हैं। भाषा सहज, सरल और प्रभावी हैं। भावानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है। उर्दू शब्दावली के साथ-साथ शायर ने देशज संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी स्वाभाविक ढंग से किया है। लोका, पिन्हाती, पुते, लावे आदि शब्दों के प्रयोग से उनकी रुबाइयाँ अधिक प्रभावी बन पड़ी हैं।

प्रश्न 9.रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे भाई के हैं बाँधती चमकती राखी"-इस रुबाई का कला सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर:भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली है। शायर ने उर्दू शब्दों के साथ-साथ देशज शब्दों का भावानुकूल प्रयोग किया है। अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश और रूपक अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 10.काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें-

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ीं
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूंज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

उत्तर:कवि बताता है कि माँ अपने चाँद जैसे बच्चे को आँगन में लिए खड़ी है। वह हाथों के झूले में झुला रही है। वह उसे हवा में धीरे-धीरे उछाल रही है। इस काम से बच्चे की हँसी गूंज उठती है। 'चाँद के टुकड़े' में उपमा अलंकार है। 'रह रह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। बालसुलभ चेष्टाओं का वर्णन है। उर्दू मिश्रित शब्दावली है। गेयता है। दृश्य बिंब है। भाषा सहज व सरल है। उर्दू भाषा है।

प्रश्न 11.फिराक की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में ग्रामीण अंचल के घरेलू रूप की स्वाभाविकता और सात्विकता के अनूठे चित्र चित्रित हुए हैं' – पाठ्यपुस्तक में संग्रहीत रुबाइयों के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर:फिराक की रुबाइयों में ग्रामीण अंचल के घरेलू रूप का स्वाभाविक चित्रण मिलता है। माँ अपने शिशु को आँगन में लिए खड़ी है। वह उसे झुलाती है। बच्चे को नहलाने का दृश्य दिल को छूने वाला है। दीवाली व रक्षाबंधन पर जिस माहौल को चित्रित किया गया है। वह आम जीवन से जुड़ा हुआ है। बच्चे का किसी वस्तु के लिए जिद करना तथा उसे किसी तरह बहलाने के दृश्य सभी परिवारों में पाए जाते हैं।

प्रश्न 12.रुबाइयाँ के आधार पर घर आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर:दीवाली के त्योहार पर पूरा घर रंगरोगन से पुता हुआ है। माँ अपने नन्हें बेटे को प्रसन्न करने के लिए चीनी मिट्टी के जगमगाते खिलौने लेकर आती है। वह बच्चों के घर में दीया जलाती है। इसी तरह राखी के समय आकाश में काले-काले बादलों की हल्की घटा छाई हुई है। छोटी बहन ने पाँवों में पाजेब पहनी हुई है जो बिजली की तरह चमक रही है।

पाठ – 10

छोटा मेरा खेत

उमाशंकर जोशी

पाठ के सार:-

खेती के रूपक द्वारा काव्य रचना- प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया हे। काव्य कृति की रचना बीज- वपन से लेकर पौधे के पुष्पित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती है। अंतर केवल इतना है कि कवि कर्म की फसल कालजयी, शाश्वत होती है। उसका रस-क्षरण अक्षय होता है। कागज का पन्ना, जिस पर रचना शब्दबद्ध होती है, कवि को एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अँधड़ (आशय भावनात्मक आँधी से होगा) के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज -रचना विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह मूल रूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है, जो कृषि-कर्म के लिहाज से पल्लवित -पुष्पित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस -धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई है।

बगुलों के पंख

पाठ के सार –

बगुलों के पंख कविता एक चाक्षुष बिंब की कविता है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं, जिसमें से सबसे प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के व्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन और आत्मगत के संयोग की यह युक्ति पाठक को उस मूल सौंदर्य के काफी निकट ले जाती है। जोशी जी को इस कविता में ऐसा ही है। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों में अटका -सा रह जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता हैं। क्या यह सौंदर्य से बाँधने और विंधने की चरम स्थिति को व्यक्त करने का एक तरीका है। प्रकृति का स्वतंत्र (आलंबन गत) चित्रण आधुनिक कविता की विशेषता है।चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है तो दूसरी ओर इस अप्रतिम दृश्य के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है। मंत्र भुग्ध कवि इस दृश्य के प्रभाव से आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है। विषय एवं विषयीगत सौन्दर्य के दोनों रूप कविता में उद्घाटित हुए हैं।

पठित काव्यांश-01

झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना।

1.काव्यांश में कवि ने किसके झूमने की बात कही है?

a)पेड़-पौधे के
b)साहित्यकार के
c)भाव और विचार के
d)फल के

2.कविता में कवि ने किसकी कटाई की बात की है?

a)फसल की
b)अंकुर की
c)क्षण की
d) अनंतता की

3.कवि ने किस रस की अमृत धारा को अक्षय बताया है?

a) श्रृंगार की
b) साहित्य की
c)हास्य की
d)करुणा की

4.कवि के खेत में पैदा होने वाले कविता रूपी फल किस विशेषता से युक्त हैं?

a)अलौकिक रस
b)वात्सल्य रस
c)क्लिष्टता
d)श्रृंगारिकता

5.छोटा मेरा खेत चौकोना उपमान का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

a)वर्गाकार रूप के लिए
b)पल्लव के लिए
c)कागज के पन्ने के लिए
d)फसल के लिए

6.हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से - पंक्ति में रेखांकित पद में प्रयुक्त अलंकार है -

a)पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
b)मानवीकरण अलंकार
c)यमक अलंकार
d)श्लेष अलंकार

7.छोटा मेरा खेत काव्य के आधार पर कवि ने अभिव्यक्ति रूपी बीज किस पर बोया था?

a)छत पर
b)कागज के पृष्ठ पर
c)आँगन में
d)खेत में

8.कवि के मन प्राणों को किसने अपनी आकर्षक माया में बाँध लिया है?

a)आकाश में छाए हुए काले बादलों ने
b)काले बादलों की छाया में उड़ते सफ़ेद बगुलों की पंक्ति ने
c)आकाश में छाए हुए सफ़ेद बादलों ने
d)सफ़ेद बगुलों की छाया में उड़ते हुए काले बगुलों की पंक्ति ने

9.बगुलों के पँख काव्य के आधार पर नम में पंक्तिबद्ध बगुलों के पंखों ने कवि की कौन-सी इंद्रियों को चुराया?

a)रसना
b)कान
c)आँख
d)नासिका

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 01

1.(d) फल के

2. (d) अनंतता की

3. (b) साहित्य की

4. (a) अलौकिक रस

5. (c) कागज के पन्ने के लिए

6. (a) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

व्याख्या: जहाँ एक शब्द की आवृत्ति हो और उनका अर्थ परिवर्तित न होता है वहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार होता है। यहाँ 'हौले-हौले' पद का अर्थ दोनों बार ही 'धीरे' है इसलिए यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

7. (b) कागज के पृष्ठ पर

व्याख्या: कवि कहना चाहता है कि जब वह छोटे खेतरूपी कागज के पन्ने पर विचार और अभिव्यक्ति का बीज बोता है तो वह कल्पना के सहारे उगता है।

8.(b) काले बादलों की छाया में उड़ते सफ़ेद बगुलों की पंक्ति ने

व्याख्या: कवि के मन प्राणों को आकाश में छाए हुए काले-काले बादलों के बीच उड़ते हुए सफ़ेद बगुलों की पंक्ति ने बाँध लिया है। वह चाह कर भी अपने नज़रें वहाँ से हटा नहीं पा रहा है।

9.(c) आँख

पठित काव्यांश-02

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

1.प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने किस खेत की बात की है?

a)प्रेमरूपी खेत　　b)हरियालीरूपी खेत

c)मनरूपी खेत　　d)कागजरूपी खेत

2.कवि ने अपने खेत में कैसा बीज बोया था?

a)शब्द रूपी बीज　　b)धान रूपी बीज

c)सभी विकल्प सही हैं　　d)प्रेमरूपी बीज

3.कवि ने अभिव्यक्ति रूपी बीज कहाँ बोया था?

a)कागज के पृष्ठ पर　　b)खेत में

c)छत पर　　d)घर के आँगन में

4.कोई अंधड़ कहीं से आया पंक्ति में अंधड़ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

a)अनजान व्यक्ति के लिए　　b)आँधी के लिए

c)विरोधी व्यक्ति के लिए　　d)कवि के मन के भावों के लिए

5.कवि ने अपने रचना कार्य की तुलना किससे की है?

a)श्रेष्ठ काव्य कृति से b)महान साहित्यकार से

c)अपने सहयोगी से d)खेती के कार्य से

6.'बगुलों के पंख' कविता में कवि किस को रोक रखने की बात कहता है?

a)बादलों की छाया b)आकाश की छाया

c)आकाश में उड़ती हुई बगुलों की पंक्ति d)कजरारे बादलों

7.उमाशंकर जोशी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

a)सन् 1914, राजस्थान b)सन् 1911, गुजरात

c)सन् 1912, उत्तर प्रदेश d)सन् 1913, मध्य प्रदेश

8.छोटा मेरा खेत काव्य के आधार पर लुटते रहने से जरा भी कम क्या नहीं होती?

a)संपत्ति b)औषधि का पात्र

c)रस का पात्र d)पुस्तक का पात्र

9.बगुलों के पंख कविता में कवि किस दृश्य पर मुग्ध है?

a)सुबह का दृश्य b)शाम का दृश्य

c)आकाश में छाए हुए बादल d)सफ़ेद बगुलों का पंक्ति बनाकर उड़ना

उत्तरमाला :- पठित पद्यांश- 02

1. (d) कागजरूपी खेत
2. (a) शब्द रूपी बीज
3. (a) कागज के पृष्ठ पर
4. (d) कवि के मन के भावों के लिए
5. (d) खेती के कार्य से
6. (c) आकाश में उड़ती हुई बगुलों की पंक्ति

व्याख्या: बगुलों के पंख कविता में कवि आकाश में उड़ती हुई बगुलों की पंक्ति को रोक कर रखना चाहता है क्योंकि वे बगुले आकाश में उड़ते हुए बहुत ही सुनहरी पंक्ति बनाए हुए थे।

7.(b) सन् 1911, गुजरात

व्याख्या: उमाशंकर जोशी का जन्म सन् 1911 को गुजरात में हुआ था।

8.(c) रस का पात्र

व्याख्या: कवि इस रस को जितना लुटाता है, उतना ही यह बढ़ता जाता है। कविता के रस का पात्र कभी समाप्त नहीं होता। कवि कहता है कि उसका कविता रूपी खेत छोटा-सा है, उसमें रस कभी समाप्त नहीं होता।

9. (d) सफ़ेद बगुलों का पंक्ति बनाकर उड़ना

व्याख्या: कवि उस समय के दृश्य पर मुग्ध है जब आकाश में छाये काले बादलों के बीच सफ़ेद बगुलों की पंक्ति बनाकर उड़ रहे हैं। ये बगुलें कवि को बादलों के ऊपर तैरती सांझ की श्वेत काया की तरह प्रतीत हो रहे हैं।

पठित काव्यांश-03

कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

1.कवि ने रसायन किसे कहा है?

a)शब्द को
b)साहित्य को
c)कल्पना को
d)खाद को

2.बीज के गल जाने के बाद उसका क्या हुआ?

a)उससे नयापन आया
b)उससे शब्द रूपी अंकुर फूटे
c)बीज नष्ट हो गया
d)उससे फसल तैयार हुई

3.खेत में अंकुर के विकसित होने का क्या परिणाम होता है?

a)खेत नष्ट हो जाता है
b)खेत पत्तों और फूलों से भर जाता है
c)खेत की उपजाऊ क्षमता घट जाती है
d)सभी विकल्प सही हैं

4.कवि के शब्दरूपी अंकुर विकसित होने पर क्या करते हैं?

a)कृति का रूप धारण करते हैं
b)गरीबी को दूर करते हैं
c)प्रतिस्पर्द्धा की भावना विकसित करते हैं
d)समाज को भोजन प्रदान करते हैं

5.काव्यांश में प्रयुक्त नमित शब्द से क्या तात्पर्य है?

a)अवरोधी
b)नमी युक्त
c)अनमेल
d)झुका हुआ

6.'बगुलों के पंख' कविता में किसका वर्णन है?

a)संध्या
b)बगुलों
c)काले बादलों
d)प्रकृति की सुंदरता

7.कवि ने कविता के रस को क्या कहा है? (उमाशंकर जोशी)

a)अक्षय पात्र
b)फूल की सुगंध
c)फूल का रस
d)फल की सुगंध

8.छोटा मेरा खेत काव्य के आधार पर कवि ने अपने खेत में कौन-सा बीज बोया?

a)धान रूपी बीज
b)प्रेम रूपी बीज
c)शब्द रूपी बीज
d)बादल रूपी बीज

9.खेत की तुलना किससे की गई है?

a)भावों की रचना से
b)कागज़ के पन्ने से
c)बीजों से
d)लहलहाती फसल से

उत्तरमाला:- पठित पद्यांश- 03

1. (c) कल्पना को

2. (b) उससे शब्द रूपी अंकुर फूटे

3. (b) खेत पत्तों और फूलों से भर जाता है

4. (a) कृति का रूप धारण करते हैं

5. (d) झुका हुआ

6. (d) प्रकृति की सुंदरता

व्याख्या:कवि उमाशंकर जोशी ने बगुलों के पंख कविता में प्रकृति की सुंदरता का एक अद्भुत वर्णन किया गया है।

7. (a) अक्षय पात्र

व्याख्या:कवि ने कविता के रस को अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार अक्षय पात्र कभी रिक्त नहीं होता उसी प्रकार कविता को किसी भी युग में पढो उसका आनंद हमेशा बना ही रहता है।

8. (c) शब्द रूपी बीज

9. (b) कागज़ के पन्ने से

व्याख्या:खेत की तुलना कागज़ के पन्ने से की गई है क्योंकि जिस प्रकार खेत में बीज बोये जाते हैं उसी प्रकार कागज़ के पन्ने पर अपने मन के भाव रखे जाते हैं।

पठित काव्यांश-04

नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।
हौले हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें
नभ में पाँती-बँधी बगुलों की पाँखें।

1.काव्यांश में बगुलों के पंखों द्वारा आँखें चुराने से क्या आशय है?

a)चोरी करना
b)न्यौछावर होना
c)ध्यान भंग करना
d)सुंदर दिखाई देना

2.साँझ की सतेज श्वेत काया क्या कर रही है?

a)भाग रही है
b)नहा रही है
c)तैर रही है
d)उड़ रही है

3.कवि के अनुसार आकाश में कैसे बादलों की छाया छाई है?

a)काले
b)सुनहरे

c)गहरे नीले d)श्वेत

4.कवि को बगुलों का कौन-सा सौंदर्य अपने आकर्षण में बाँध रहा है?

a)माया रूपी सौंदर्य b)काया रूपी सौंदर्य

c)शांति रूपी सौंदर्य d)पंक्तिबद्ध रूपी सौंदर्य

5.बगुलों के पंख बादलों के ऊपर तैरते हुए किसके समान प्रतीत होते हैं?

a)गोधूलि बेला की पीली काया b)रात्रि की काली काया

c)साँझ की श्वेत काया d)प्रातःकाल की संदुरी काया

6.बगुलों के पंख कविता के कवि कौन हैं?

a)आलोक धन्वा b)गजानन माधव मुक्तिबोध

c)उमाशंकर जोशी d)फ़िराक गोरखपुरी

7.कवि ने खेत की तुलना किससे की है?

a)फलों के निकलने से b)फूलों के खिलने से

c)फसल के उगने से d)कागज़ के चौकोर पन्ने से

8.पल्लव-पुष्प को किसका प्रतीक माना गया है?

a)बीज का b)कविता का

c)फूलों का d)नए पत्तों का

9.कविता कर्म का पहला चरण कौनसा है? (उमाशंकर जोशी)

a)विचाररूपी बीज का पड़ना b)फसल का लहलहाना

c)खेत में बीज डालना d)कविता का लिखना

उत्तरमाला:- पठित पद्यांश- 04

1.(d) सुंदर दिखाई देना

2. (c) तैर रही है

3. (a) काले

4. (a) माया रूपी सौंदर्य

5. (c) साँझ की श्वेत काया

6. (c) उमाशंकर जोशी

व्याख्या:'बगुलों के पंख' कविता के रचयिता उमाशंकर जोशी जी हैं। यह कविता प्रकृति सौन्दर्य से सम्बंधित है। आकाश में उड़ते हुए सफ़ेद बगुलों की पंक्तियाँ कवि को मुग्ध कर रही हैं।

7.(d) कागज़ के चौकोर पन्ने से

व्याख्या:कागज़ रुपी खेत पर कवि ने अपने भावों - विचारों के बीज बोये थे। वे फसल की भांति ही उगकर कवि को आनंद प्रदान करते हैं इसलिए कवि ने खेत की तुलना कागज़ के चौकोर पन्ने से की है।

8.(b) कविता का

व्याख्या:खेत अगर कागज़ है तो बीज क्षण का विचार और उस कागज़ पर पल्लव-पुष्प कविता है। यह भावरूपी कविता पत्तों व पुष्पों से लदकर झुक जाती है।

9. (a) विचाररूपी बीज का पड़ना

व्याख्या:कविता कर्म का पहला चरण है विचाररूपी बीज का पड़ना। विचाररूपी बीज के पड़ने पर शब्द रूपी अंकुर फूटने लगते हैं और इसके बाद ही रचना अपना स्वरूप ग्रहण करती है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षयपात्र क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने खेत को रस का अक्षयपात्र कहा है | अक्षयपात्र में रस कभी खत्म नहीं होता | रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है | खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है| कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है | यह सृजन कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है |

2. 'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि के कार्य के समान बताया है | जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर जनता का पेट भरता है | इस प्रकार भावनात्मक आँधी के कर्ण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है | यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण क्र लेता है | इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है | साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता |

3. कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत क्यों पड़ी?

उत्तर- कवि का उद्देश्य कवि-कर्म को महत्ता देना है | वह कहता है कि काव्य रचना बेहद कठिन कार्य है | चिंतन के बाद कोई विचार उत्पन्न होता हा तथा कल्पना के सहारे उसे विकसित किया जाता है | इसी प्रकार खेती में बीज बोने से लेकर फसल कटाई तक बहुत परिश्रम किया जाता है | इसलिए कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत पड़ी|

4. 'छोटा मेरा खेत' कविता का उद्देश्य बताइए |

उत्तर- कवि ने रूपक के माध्यम से कवि-कर्म को कृषक के समान बताया है | किसान अपने खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरती होकर पौधा बनता है तथा पकने पर उससे फल मिलता है जिससे लोगों की भूख मिटती है | इसी तरह कवि ने कागज को अपना खेत माना है | इस खेत में भावों की आँधी से कोई बीज बोया जाता है | फिर वह कल्पना के सहारे विकसित होता है | शब्दों के अंकुर निकलते ही रचना स्वरूप ग्रहण करने लगती है तथा इससे अलौकिक रस उत्पन्न होता है | यह रस अनंतकाल तक पाठकों को अपने में डुबोए रखता है | कवि ने कवि-कर्म को कृषि-कर्म से महान बताया है क्योंकि कृषि-कर्म का उत्पाद निश्चित समय तक रस देता है, परंतु कवि-कर्म का उत्पाद अनंतकाल तक रस प्रदान करता है |

5. शब्द रूपी अंकुर फूटने से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- कवि कहता है कि जिस प्रकार खेत में बीज पड़कर कुछ दिनों के बाद समें अंकुर फूटने लगते हैं, उसी प्रकार विचार रूपी बीज पड़ते ही शब्द रूपी अंकुर फूटने लगते हैं | यह कविता कर्म का पहला चरण है | इसके बाद ही रचना अपना स्वरूप ग्रहण करती है |

6. कविता लुटने पर भी क्यों नहीं मिटती या खत्म होती?

उत्तर- यहाँ 'लुटने से' आशय बाँटने से है | कविता का आस्वादन अनेक पाठक करते हैं | इसके बावजूद यह खत्म नहीं होती क्योंकि कविता जितने अधिक लोगों तक पहुँचती है उतने ही उस पर चिंतन किया जाता है | वह शाश्वत हो जाती है |

7. 'अंधड़' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'अंधड़' भावनात्मक आवेग है | काव्य-रचना अचानक किसी प्रेरणा से होती है | कवि के मन में भावनाएँ होती हैं | जिस भी विचार का आवेग अधिक होता है, उसी विचार की रचना अपना स्वरूप ग्रहण करती है |

8. 'बीज गल गया निःशेष' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- इसका अर्थ है कि जब तक कवि के मन में कविता का मूल भाव पूर्णतया समा नहीं जाता, तब तक निजता से मुक्त नहीं हो सकता | कविता तभी सफल मानी जाती है, जब वह समग्र मानव जाति की भावना को व्यक्त करती है | कविता को सार्वजनिक बनाने के लिए कवि का अहं नष्ट होना आवश्यक है |

अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

"छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना, कोई अंधड़ कहां से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।"

1. 'छोटा मेरा खेत' किसका प्रतीक है और क्यों?

उत्तर- 'छोटा मेरा खेत' काग़ज के उस पन्ने का प्रतीक है जिस पर कवि अपनी कविता लिखता है।

2. कवि खेत में कौन-सा बीज बोता है?

उत्तर- कवि खेत में अपनी कल्पना का बीज बोता है?

3. कवि की कल्पना से कौन से पल्लव अंकुरित होते हैं?

उत्तर- कवि की कल्पना से शब्द के पल्लव अंकुरित होते हैं।

4. उपर्युक्त पद का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- खेती के रूपक द्वारा काव्य-रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। काव्य कृति की रचना बीज-वपन से लेकर पौधे के पुष्पित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती है। अंतर केवल इतना है कि कवि कर्म की फसल कालजयी, शाश्वत होती है। उसका रस-क्षरण अक्षय होता है।

सौंदर्य-बोध संबंधी प्रश्नोत्तर

"झुमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की

लुटते रहने से जरा भी कम नहीं होती।

रस का अक्षय पात्र सदा का

छोटा मेरा खेत चौकोना।"

1. इस कविता की भाषा संबंधी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - 1. प्रतीकात्मकता

2. लाक्षणिकता-

रूपक अलंकार- रस का अक्षय पात्र सदा का छोटा मेरा खेत चोंकोना।

2. रस अलौकिक , अमृत धाराएँ रोपाई - कटाई-प्रतीकों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- रस अलौकिक – काव्य रस निष्पति

अमृत धाराएँ - काव्यानंद

रोपाई – अनुभूति को शब्दबद्ध करना

कटाई – रसास्वादन

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. उमाशंकर जोशी ने किस भाषा में कविताएँ लिखी हैं?

उत्तर- गुजराती भाषा

2. कृषि -कर्म एवं कवि-कर्म में क्या क्या समानताएँ हैं?

उत्तर- कृषि कर्म एवं कवि-कर्म में निम्नलिखित समानताएँ हैं-

काव्य कृति की रचना बीज-वपन से लेकर पौधे के पुष्पित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती है।

कृषि-कर्म एवं कवि-कर्म में समानताएँ:-

- कागज का पन्ना, जिस पर रचना शब्दबद्ध होती है, कवि को एक चौकोर खेत लगता है।
- इस खेत में किसी अँधड़ (आशय भावनात्मक आँधी से होगा) के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज-रचना विचार और अभिव्यति का हो सकता है।
- यह मूल रूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है। इसी प्रकार बीज भी खाद, पानी, सूर्य की रोशनी हवा आदि लेकर विकसित होता है।
- काव्य-रचना से शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है, जो कृषि-कर्म के लिहाज से पल्लवित-पुष्पित और फलित होने की स्थिति है।

उमाशंकर जोशी (बगुलों के पंख)

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर- यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है।

वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

2. 'पाँती बँधी' से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए –

उत्तर- इसका अर्थ है – एकता। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों को एकता के साथ रहना चाहिए। एक होकर चलने से मनुष्य अद्‌भुत विकास करेगा तथा उसे किसी का भी भी नहीं रहेगा।

अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं में मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें
नभ में पाँती-बँधे बगुलों की पाँखें।
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

1. इस कविता में कवि ने किसका चित्रण किया है?

उत्तर- कवि ने काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्रण किया है।

2. आँखें चुराने का क्या अर्थ है?

उत्तर- आँखे चुराने का आशय है- ध्यान पूरी तरह खांच्या लेना, एकटक देखना, मंत्रमुग्ध कर देना

3. "कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
होले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।" -आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- काले बादलों के बीच साँझ का सुरमई वातावरण बहुत सुंदर दिखता है। ऐसा अप्रतिम सौंदर्य अपने आकर्षण में कवि को बाँध लेता है।

4. 'उसे कोई तनिक रोक रक्खो।' - से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- बगुलों की पंक्ति आकाश में दूर तक उड़ती जा रही है कवि की मंत्रमुग्ध आँखें उनका पीछा कर रही हैं। कवि उन बगुलों को रोक कर रखने की गुहार लगा रहा है कि कहीं वे उसकी आँखें ही अपने साथ न ले जाएँ।

सौंदर्य-बोध संबंधी प्रश्नोत्तर

1. कविता की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- 1. चित्रात्मक भाषा

2. बोलचाल के शब्दों का प्रयोग- हौले-हौले, पाँती, कजरारे, साँझ

2. कविता में प्रयुक्त अलंकार चुन कर लिखिए।

उत्तर- अनुप्रास अलंकार- बँधे बगुलों के पंख,

मानवीकरण अलंकार- चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें।

3. 'निज माया' के लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रकृति का अप्रतिम सौंदर्य वह माया है जो कवि को आत्मविभोर कर देती है। यह पंक्ति भी प्रशंसात्मक उक्ति है।

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. 'चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें' से कवि का क्ण तात्पर्य है?

उत्तर- चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है तथा इस अप्रतिम दृश्य के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है। कवि के अनुसार यह दृश्य उनकी आँखें चुराए लिए जा रहा है। मंत्र मुग्ध कवि इस दृश्य के प्रभाव से आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है।

2. कवि किस माया से बचने की बात कहता है?

उत्तर- माया विश्व को अपने आकर्षण में बाँध लेने के लिए प्रसिद्ध है। कबीर ने भी 'माया महा ठगिनी हम जानी' कहकर माया की शक्ति को प्रतिपादित किया है। काले बादलों में बगुलों की सुंदरता अपना माया जाल फैला कर कवि को अपने वश में कर रही है।

आरोह भाग-02

गद्य -भाग

पाठ सं-11

भक्तिन

महादेवी वर्मा

पाठ का सार:-

इस पाठ में भक्तिन लेखिका महादेवी वर्मा की सेविका है, जिसका मूल नाम लछमिन या लक्ष्मी था। भक्तिन के जीवन को मुख्य रूप से चार परिच्छेदों में बाँटा गया है-

पहला परिच्छेद:-इस परिच्छेद में भक्तिन के जन्म से लेकर ससुराल आने तक का वर्णन है। बचपन में ही भक्तिन की माँ का निधन हो गया था और सौतेली माँ ने पांच वर्ष की छोटी-सी आयु में ही उसका विवाह करवा दिया था | नौ वर्ष की उम्र में गौना करके ससुराल भी भेज दिया था। इस परिच्छेद में भक्तिन को माता का सुख न मिलकर विमाता की ईर्ष्या ही मिलती है।

दूसरा परिच्छेद:-इस परिच्छेद में भक्तिन के ससुराल आने से लेकर पति की मृत्यु तक का वर्णन है। ससुराल में तीन बेटियों को जन्म देने के कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। भक्तिन और बेटियाँ दिन भर काम करती थीं और जिठानियाँ व उनके बेटे आराम करते थे। जिठानियों के बेटों को दूध-मक्खन मिलता था जबकि भक्तिन की बेटियाँ साधारण-सा भोजन पाती थी। भक्तिन पति की सहमति से अलगौझा कर लेती है। खेतों में सारा काम भक्तिन ही करती थी, जिससे अच्छे-अच्छे खेतों व जानवरों के बारे में उसका ही ज्ञान अधिक था अतः ऊपर से असंतोष और अंदर से प्रसन्न होती हुई सभी अच्छी चीजें प्राप्त करने में वह कामयाब हो जाती है। अलगौझा करने के बाद मेहनती दंपति अपनी बेटियों के साथ सुखपूर्वक रहने लगते हैं किंतु भक्तिन का भाग्य भी उससे कम हठी न था और बड़ी लड़की का विवाह करने के बाद पति ने दो कन्याओं और कच्ची गृहस्थी का भार 29 वर्षीय पत्नी पर छोड़कर इस संसार से विदा ले ली।भक्तिन के हरे-भरे खेतों, गाँय-भैसों तथा फलों से लदे पेड़ों को देखकर जेठ-जिठानियों के मुँह में पानी भर आया और उन्हें हड़पने के लिए भक्तिन की दूसरी शादी करने की सोचने लगे। भक्तिन ने भी गुरु से कान फुकवाकर, कंठी बांधकर व केशों को पति के नाम पर समर्पित कर कभी न विवाह करने की घोषणा कर दी और दोनों छोटी लड़कियों की शादी कर बड़े दामाद को अपने घर में साथ रहने को कहा ।

तीसरा परिच्छेद:-भक्तिन के दुर्भाग्य से बड़ी लड़की विधवा हो गई। भक्तिन की सम्पत्ति हड़पने के इरादे से जिठौत ने विधवा बहन का विवाह करवाने के लिए अपने तीतर लड़ाने वाले आवारा साले को बुला लिया, लेकिन भक्तिन की बेटी ने उसे अस्वीकार कर दिया। जिठौत हर तरीके से यह गठबंधन करवाना चाहते थे और एक दिन वो इस चाल में कामयाब भी हो जाते हैं। पंचायत ने अपीलहीन फैसला करते हुए भक्तिन की बड़ी बेटी का विवाह उस तीतरबाज साले से करवा दिया। गले पड़ा दामाद भक्तिन और इसकी बेटी के लिए दुर्भाग्य ही था, जिसके कारण दोनों को अनेक कष्ट झेलने पड़े। दामाद कुछ भी काम नहीं करता था तथा सारी संपत्ति नष्ट हो गई और लगान न देने के कारण जमींदार ने भक्तिन को दिन भर कड़ीधूप में खड़ा करके उसे दण्ड देकर अपमानित भी किया। स्वाभिमानी और मेहनती भक्तिन यह अपमान सहन न कर सकी और अपना घर-बार सब कुछ छोड़कर काम की तलाश में शहर में लेखिका के पास आ गई और इसी के साथ उसके जीवन का तीसरा परिच्छेद समाप्त हो जाता है।

चौथा और अंतिम परिच्छेद:-जब भक्तिन शहर आती है तो वह अपना वास्तविक नाम छिपाती है क्योंकि उसके नाम और भाग्य में बहुत ज्यादा विरोधाभास था। उसकी वेशभूषा आदि देखकर लेखिका ने उसका नया नामकरण (भक्तिन) किया। भक्तिन एक समर्पित सेविका है और सेवक धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा तक करती है। भक्तिन के आ जाने के बाद लेखिका की दिनचर्या में अनेक बदलाव आए और लेखिका धीरे-धीरे भक्तिन के साथ रहते हुए ग्रामीण भोजन आदि करते हुए देहातिन-सी होने लगी। भक्तिन जीवन के अंत तक लेखिका का साथ छोड़ने को तैयार न थी | युद्ध के कारण भक्तिन लेखिका को गाँव चलने का अनुरोध करती है तथा रूपए न होने का बहाना बनाने पर कुछ रुपए गड़े होने की बात बताती है। समग्र रूप से देखे तो इस पाठ में भक्तिन और लेखिका के बीच सेवक-स्वामी का सम्बंध बताना कठिन है। भक्तिन को नौकर कहना भी असंगत है। लोग लेखिका के जेल जाने की बात कहकर भक्तिन को चिढ़ाते थे और यह सच भी है कि वह लेखिका के लिए बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार हो जाती थी। लेखिका भी भक्तिन को बहुत ज्यादा चाहती थी और सोचती थी कि जब यमराज का बुलावा आएगा तब यह देहातिन वृद्धा और स्वयं वह क्या करेगी। भक्तिन और लेखिका दोनों ही एक दूसरे को नहीं छोड़ना चाहती थीं।

शब्दार्थ-

संकल्प – निश्चय। विचित्र-आश्चर्यजनक। जिज्ञासु – उत्सुक। चिंतन – विचार। मुद्रा-अंग-विन्यास। ठुड्डी- होठों के नीचे का भाग। कंठ-गला ।स्पर्द्धा – मुकाबला। रत्ती भर-थोड़ा। अंजना – हनुमान की माता। दुर्वह – जिसे ढोना मुश्किल हो। कपाल – माथा। संकुचित – सिकुड़ी हुई। शेष इतिवृत्त – पूरी कथा /इतिहास। अंशत: – थोड़ा-सा।विमाता – सौतेली माता। किंवदंती – जनता में प्रचलित बातें। वय – आयु। गौना – विवाह के बाद पति का अपने ससुराल से अपनी पत्नी को पहली बार अपने घर ले आना। अगाध – अधिक, गहरा । मरणान्तक – जानलेवा। नैहर – मायका। अप्रत्याशित – जिसकी आशा न हो। अनुग्रह – कृपा। पुनरावृत्तियाँ – बार-बार कहना। ठेल ले जाना –पहुँचाना। लेश – तनिक। चिर बिछोह – स्थायी वियोग। मर्मव्यथा – हृदय को कष्ट देने वाली पीड़ा। परिच्छेद – अध्याय। विधात्री – जन्म देने वाली। मचिया – खाट की तरह बुनी हुई छोटी चौकी (बैठकी) । विराजमान – बैठना। पुरखिन – बड़ी-बूढ़ी। अभिषिक्त – जिसका अभिषेक हुआ हो, काकभुशंडी – राम का एक भक्त जो शापवश एक कौआ बना। सृष्टि – रचना, संसार। लीक छोड़ना – परंपरा को तोड़ना। राब – खाँड़, गाढ़ा सीरा। औटना – ताप से गाढ़ा करना। टकसाल – वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं। चुगली-चबाड़ – निंदा। परिणति – निष्कर्ष।अलगौझा – बँटवारा। खलिहान – कटी फसल को रखने का स्थान। निरंतर – लगातार। कुकुरी – कुतिया। बिलारी – बिल्ली। होरहा – होला, आग पर भुना हरे चने का रूप। अजिया ससुर – पति का बाबा। कै – कितने ही। उपार्जित – कमाई। कटिबद्ध – तैयार। जिठौत – पति के बड़े भाई का पुत्र। गठबंधन – विवाह, शादी।परिमार्जन – शुद्ध करना, सुधार करना। कर्मठता – मेहनत। दीक्षित – जिसने दीक्षा ग्रहण की हो। अथ – प्रारंभ। अभिनंदन – स्वागत।नितांत – पूर्णत:। वीतराग – आसक्तिरहित। आसीन – बैठा। निर्दिष्ट – निश्चित। पितिया ससुर – पति का चाचा। मौखिक – ज़बानी। निवारण – दूर करना। उपचार – इलाज। जागृत – सचेत।मकई – मक्का। लपसी-पतला –सा हलुवा। क्रियात्मक – व्यावहारिक। पोपला – दाँतरहित मुँह। दंत-कथाएँ – परंपरा से चले आ रहे किस्से। कंठस्थ – याद। नरो वा कुंजरो वा – मनुष्य या हाथी। सिर घुटाना – जड़ से बाल कटवाना। असंकुचित भाव – बिना संकोच के। चूड़ाकर्म – सिर के बाल को कटवाना। नापित – नाई। निष्पन्न – पूर्ण।अपमान – निरादर। मंथरता – धीमी गति। पटु – चतुर। पिंड छुड़ाया – छुटकारा पाया।अतिशयोक्तियाँ – बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातें। अमरबेल – जड़रहित बेल जो दूसरे वृक्षों से जीवनरस लेकर फैलती है। आभा – प्रकाश।

उद्भासित – आलोकित। पागुर –जुगाली। निस्तब्धता – शांति। प्रशांत – पूरी तरह शांत।आतंकित – भयभीत। नाती – बेटी का पुत्र। विनीत – विनम्र। मचान – बाँस आदि की सहायता से बनाया गया ऊँचा आसन। स्नेह – प्रेम। सम्मान – आदर। अपभ्रंश – बिगड़ा हुआ। कारागार – जेल। माई– माँ। बड़े लाट – वायसराय। विषम – विपरीत। दुर्लभ – कठिन।

पाठ के महत्त्वपूर्ण बिन्दु-

भक्तिन - (भाग-1)

1.पाठ की लेखिका का नाम - महादेवी वर्मा

2.पाठ में लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के बारे में लिखा है।

3.भक्तिन में सबसे कहती थी कि वह लेखिका के साथ 50 साल से रह रही है क्योंकि उसके लेखिका के साथ अपना लंबा संबंध बताने में बहुत संतोष मिलता है।

4.अपने सेवक धर्म के कारण लेखिका ने भक्तिन की तुलना राम भक्त हनुमान जी से की है।

5. भक्तिन का असली नाम लक्ष्मी या लछमिन था।

6. लेखिका ने भक्तिन के गले में कंठी माला देखकर उसका नाम भक्तिन रखा।

7. भक्तिन शब्द का अर्थ भक्ति करने वाली है।

8. भक्तिन का विवाह पिता ने एक संपन्न गोपालक के सबसे छोटे बेटे से किया।

9.भक्तिन की ससुराल में उसके पति के अलावा उसकी सास, दो जेठ-जेठानियाँ और उनके बेटे थे।

10.ससुराल वाले भक्तिन से नफरत करते थे क्योंकि उसकी 3 बेटियाँ थी और कोई बेटा नहीं था।

भक्तिन (भाग-2)

1. विमाता ने भक्तिन को पिता के रोग की सूचना नहीं दी क्योंकि भक्तिन के पिता उससे बहुत स्नेह करते थे। उसको डर था कि कहीं पिता भक्तिन को संपत्ति न दे दे।

2.नैहर जाकर भक्तिन ने पाया उसके पिता मर चुके थे।

3.भक्तिन सास से नाराज़ थी क्योंकि सास ने उसे पिता की मौत की खबर नहीं दी थी।

4.भक्तिन और उसकी बेटियों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार होता था। भक्तिन से खूब काम लिया जाता था और उन्हें खाने को भी रूखा-सूखा मिलता था।

5.जेठानियाँ भक्तिन से जलती थीं क्योंकि भक्तिन का पति उससे स्नेह करता था और उसे कभी मारता न था।

6.अलगौझा या बँटवारे के बाद भक्तिन का जीवन खुशहाली भरा था क्योंकि वह मेहनती थी।

7.भक्तिन के पति की मृत्यु बड़ी बेटी के विवाह के बाद हुई जब भक्तिन 29 साल की थी।

8.भक्तिन की संपत्ति छीनने के लिए भक्तिन के ससुरालवाले उसका दूसरा विवाह करना चाहते थे।

9.अपना दूसरा विवाह रोकने के लिए भक्तिन ने कंठी माला पहनकर केश हटा दिए।

10.भक्तिन ने अपनी और बेटियों की रक्षा के लिए दोनों का विवाह कर दिया और एक दामाद को अपने घर में रहने को कहा।

भक्तिन (भाग-3)

1.पाठ में 'भइयहू' भक्तिन को कहा गया है। वह जिठौतों की भाभी थी।

2.जिठौत भक्तिन की बेटियों के चचेरे भाई थे अर्थात् भक्तिन के जिठौतों के बेटे थे।

3. भक्तिन की बड़ी बेटी के विधवा होने पर एक जिठौत ने उनकी संपत्ति हड़पने की योजना बनाई और अपने निकम्मे साले से उसका जबरन विवाह करने की साज़िश की।

4.भक्तिन की बड़ी बेटी को न चाहकर भी जिठौत के निकम्मे साले से विवाह करना पड़ा। उसे पंचायत के अन्यायपूर्ण फैसले को मानना पड़ा।

5.भक्तिन के निकम्मे दामाद ने सारी जमा-पूंजी अपनी बुरी आदतों में नष्ट कर दी।

6.जमींदार ने भक्तिन को दण्ड दिया क्योंकि भक्तिन लगान नहीं दे पाई।

7.दण्ड के अपमान के कारण भक्तिन कमाई के लिए अपने गाँव से दूर शहर आ गई और लेखिका की सेविका बन गई।

भक्तिन (भाग-4)

1.छूत –पाक मानने के कारण भक्तिन लेखिका को रसोई में आने-जाने नहीं देती थी।

2.भक्तिन लेखिका को बिलकुल देहाती भोजन खिलाती थी।

3.लेखिका के गिरते स्वास्थ और परिवारवालों की चिंता के कारण उनको भोजन पकाने के लिए सेविका रखनी पड़ी थी।

4.भक्तिन के स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह दूसरों को अपने अनुसार बना लेना चाहती है पर स्वयं किसी के अनुसार बदलना नहीं चाहती।

5.लेखिका के घर में इधर-उधर पड़े पैसों को वह अपनी मटकी में डाल लेती थी और कहती थी कि उसने तो अपने घर का सामान संभाल कर रखा है। वह लेखिका की नाराज़गी से बचने के लिए झूठ भी बोलती थी।

6.हर बृहस्पतिवार को भक्तिन एक नाई से अपने केश निकलवाती थी।

7.यह कहकर भक्तिन पढ़ाई-लिखाई से बचती थी कि उसकी मालकिन (लेखिका) तो सब समय पढ़ने लिखने में व्यस्त रहती हैं अगर वह भी पढ़ेगी तो घर का काम कौन करेगा।

8.लेखिका जब देर रात तक जग कर काम करती थी तब भक्तिन भी जागा करती थी और लेखिका की मदद करने को तत्पर रहती थी।

9.भक्तिन युद्ध के हालात में भी घरवालों के बुलाने पर भी अपने गाँव नहीं जाती थी क्योंकि वह लेखिका की सेवा को छोड़कर नहीं जाना चाहती थी।

10.युद्ध के हालात में भक्तिन ने लेखिका को अपने साथ अपने गाँव चलने को कहा।

11.भक्तिन लेखिका के परिचितों को उतना ही सम्मान देती थी जितना लेखिका उन्हें देती थी।

12.स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण जब लेखिका के जेल जाने की संभावना बनी तब जेल से डरने पर भी भक्तिन लेखिका के साथ जेल जाने को तैयार थी।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

पठित गद्यांश-01

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धिसूचक नाम किसी को बताती नहीं।

(i) लेखिका के लिए क्या दुर्वह है?

(क) भक्तिन का समृद्धि सूचक नाम (ख) खुद के नाम की विशालता

(ग) भक्तिन की समझदारी (घ) जीवन का विरोधाभास

(ii)यहाँ भक्तिन के कौन-से गुणों का उल्लेख है ?

(क)सेवा भाव,समझदारी (ख)सुंदरता,ईमानदारी

(ग)पाक शास्त्री,सेवाभाव (घ)चतुर,मेहनती

(iii) इनमें से किस शब्द का अर्थ है-'प्रतियोगिता'-

(क)समृद्धि (ख)स्पर्धा

(ग)अनामधर्मा (घ)विरोधाभास

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए । उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

कथन(A)-भक्तिन हनुमान से स्पर्धा करती थी ।

कारण (R)-हनुमान की तरह भक्तिन एक समर्पित सेविका थी।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है ।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)भक्तिन साधारण गोपालक की पुत्री थी ।

(II) भक्तिन भाग्यशाली थी ।

(III) भक्तिन गर्व से सबको अपना असली नाम बताती थी।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क)(I) और (II) (ख) (II) और (III)

(ग) केवल (I) (घ) केवल (III)

उत्तर –

(i) (ख)खुद के नाम की विशालता

(ii) (क)सेवा भाव,समझदारी

(iii) (ख)स्पर्धा

(iv) (क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(v) (ग) केवल (I)

पठित गद्यांश-02

पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावत: ईष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चिन्ह शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।

(i)सास ने क्या कहकर भक्तिन को मायके भेजा ?

(क) पिता को भयानक रोग है (ख) पिता मर चुके हैं

(ग)बहुत दिनों से मायके नहीं गई (घ)विमाता ने याद किया है

(ii) मायके के लोगों को भक्तिन से सहानुभूति थी क्योंकि-

(क) पिता के मरने के बाद भक्तिन आई (ख) बहुत दिनों बाद वह आई

(ग) भक्तिन को संपत्ति नहीं मिली (घ)विमाता का व्यवहार कठोर था

(iii)'अप्रत्याशित' में निहित उपसर्ग और प्रत्यय है-

(क)अप्र ,त (ख)आ,शित

(ग)अ,इत (घ)प्रति,ईत

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)-सास ने भक्तिन को उसके पिता की मृत्यु की खबर नहीं दी।

कारण (R)- सास घर में रोने-पीटने को अपशकुन मानती थी।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) पिता भक्तिन से बहुत स्नेह करते थे।

(II) पिता के रोगग्रस्त होते ही भक्तिन को समाचार मिला।

(III) विमाता संपत्ति की रक्षा करना चाहती थी।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क)(I) और (II) (ख) (I) और (III)

(ग) केवल (I) (घ) केवल (III)

उत्तर –

(i) (ग) बहुत दिनों से मायके नहीं गई

(ii) (क) पिता के मरने के बाद भक्तिन आई

(iii) (ग) अ, इत

(iv) (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(v) (ख) (I) और (III)

पठित गद्यांश-03

जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओंठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशंडी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।

(i)'दो संस्करण ' से यहाँ क्या आशय है?

(क) दो पुस्तकें (ख) दो पुत्र

(ग) दो पुत्रियाँ (घ) दो बहुएँ

(ii) भक्तिन किस प्रकार लीक छोड़कर चल पड़ी थी?

(क)गोपालिका की कन्या थी (ख)पति का स्नेह पाती थी

(ग)उसने केवल पुत्रियों को जन्म दिया (घ)उसकी संतान नहीं थी

(iii)' काले लालों' का अर्थ है-

(क)काले और लाल रंग (ख) क्रोध से लाल-काला होना

(ग)काले वर्ण के बेटे (घ)लाल-काले बादल

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)-भक्तिन को पुत्रियों को जन्म देने के कारण दंड मिला।

कारण (R)- पुत्रियों को परिवार में सम्मानपूर्वक तथा स्नेह से स्वीकारा जाता है।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया

(II) भक्तिन के जीवन का यह समय सुखपूर्ण था

(III) जिठानियों ने पुत्रों को जन्म दिया

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(क)(I) और (II) (ख) (I) और (III)

(ग) केवल (I) (घ) केवल (III)

उत्तर –

(i) (ग) दो पुत्रियाँ

(ii) (ग)उसने केवल पुत्रियों को जन्म दिया

(iii) (ग)काले वर्ण के बेटे

(iv) (घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) (ख) (I) और (III)

पठित गद्यांश-04

इस दंड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं, पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगोझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने छाँट-छाँट कर, ऊपर से असंतोष की मुद्रा के साथ और भीतर से पुलकित होते हुए जो कुछ लिया, वह सबसे अच्छा भी रहा, साथ ही परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से उसका सोना बन जाना भी स्वाभाविक हो गया।

(i)भक्तिन को खोटे सिक्कों की टकसाल कहा गया है क्योंकि-

(क) वह कोई काम ठीक से नहीं जानती थी। (ख) वह कटुभाषी थी।

(ग) वह गररीब परिवार की थी। (घ) वह तीन बेटियों की माता थी।

(ii)संपत्ति के बँटवारे के समय भक्तिन ने असंतोष की मुद्रा क्यों दिखाई ?

(क)वह वास्तव में दुखी थी। (ख)वह असंतुष्ट थी।

(ग)वह अपनी संतुष्टी को छिपाना चाहती थी। (घ)वह बँटवारा नहीं चाहती थी।

(iii)इनमें से कौन-सा शब्द विशेषण नहीं है-

(क) परिश्रमी (ख) चुगली-चबाई

(ग) तेजस्विनी (घ)सच्ची

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)- सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी।

कारण (R)- भक्तिन परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति समर्पित सच्ची पत्नी थी।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)चुगली के कारण भक्तिन को पति से दंड मिलता था।

(II)बँटवारे के बाद भक्तिन की उन्नति हुई।

(III)पति भक्तिन के गुणों को पहचानता था।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क) (I) और (II) (ख)(II) और (III)

(ग)केवल (II) (घ)केवल (III)

उत्तर –

(i) (घ) वह तीन बेटियों की माता थी।

(ii) (ग)वह अपनी संतुष्टी को छिपाना चाहती थी।

(iii) (ख) चुगली-चबाई

(iv) (क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(v) (ख)(II) और (III)

पठित गद्यांश-05

भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई। विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका गठबंधन हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसंद कर दिया। बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाइयों के लिए सुविधाजनक नहीं था, अत: यह प्रस्ताव जहाँ-का-तहाँ

रह गया। तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी संपत्ति की देख-भाल करने लगीं और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे।

(i)'भइयहू' और 'काकी' शब्द किसके लिए प्रयुक्त है?

(क)जिठानी (ख)बड़ी बेटी

(ग)भक्तिन (घ)सास

(ii) 'जिठौत' कौन थे?

(क)जेठ के भाई (ख) जेठ के साले

(ग) जेठ के पुत्र (घ) जेठ के पौत्र

(iii)'दुर्भाग्य' एन कौन-सा उपसर्ग है?

(क)दूभ ख)दू

(ग)दुर् (घ)दु

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)-जिठौत अपने साले से विधवा बहन का विवाह करना चाहते थे।

कारण (R)- जिठौत अपनी विधवा बहन का हित चाहते थे।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)भक्तिन की बड़ी बेटी कम समझदार थी।

(II)वर के समर्थक भक्तिन के हितैषी थे।

(III)भक्तिन और उसकी बेटी दोनों विधवा थीं।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क) (I) और (II) (ख)(II) और (III)

(ग)केवल (II) (घ)केवल (III)

उत्तर –

(i) (ग)भक्तिन

(ii) (ग) जेठ के पुत्र

(iii) (ग)दुर्

(iv) (घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) (घ)केवल (III)

पठित गद्यांश-06

तीतरबाज युवक कहता था, वह निमंत्रण पाकर भीतर गया और युवती उसके मुख पर अपनी पाँचों उँगलियों के उभार में इस निमंत्रण के अक्षर पढ़ने का अनुरोध करती थी। अंत में दूध-का-दूध पानी-का-पानी करने के लिए पंचायत बैठी और सबने सिर हिला-हिलाकर इस समस्या का मूल कारण कलियुग को स्वीकार किया। अपीलहीन फैसला हुआ कि चाहे उन दोनों में एक सच्चा हो चाहे दोनों झूठे; जब वे एक कोठरी से निकले, तब उनका पति-पत्नी के रूप में रहना ही कलियुग के दोष का परिमार्जन कर सकता है। अपमानित बालिका ने होंठ काटकर लहू निकाल लिया और माँ ने आग्नेय नेत्रों से गले पड़े दामाद को देखा। संबंध कुछ सुखकर नहीं हुआ, क्योंकि दामाद अब निश्चित होकर तीतर लड़ाता था और बेटी विवश क्रोध से जलती रहती थी। इतने यत्न से सँभाले हुए गाय-ढोर, खेती-बारी जब पारिवारिक द्वेष में ऐसे झुलस गए कि लगान अदा करना भी भारी हो गया, सुख से रहने की कौन कहे। अंत में एक बार लगान न पहुँचने पर जमींदार ने भक्तिन को बुलाकर दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा। यह अपमान तो उसकी कर्मठता में सबसे बड़ा कलंक बन गया, अत: दूसरे ही दिन भक्तिन कमाई के विचार से शहर आ पहुँची।

(i)पंचों के फैसले का भक्तिन के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क)उसे एक योग्य दामाद मिला (ख)उसकी उन्नति हुई

(ग)उसकी संपत्ति नष्ट हुई (घ)इनमें से कोई नहीं

(ii) 'आग्नेय नेत्रों से देखने'का क्या अर्थ है?

(क)समानपूर्वक देखना (ख)विस्मित होकर देखना

(ग)क्रोधित होकर देखना (घ)ईर्ष्या से देखना

(iii)'दूध-का-दूध पानी-का-पानी करने' का क्या अर्थ है?

(क)दूध और पानी को अलग करना (ख)अन्यायपूर्ण निर्णय करना

(ग)पक्षपात करना (घ) उचित निर्णय करना ।

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए । उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

कथन(A)- भक्तिन कमाई के विचार से शहर आ पहुँची।

कारण (R)-भक्तिन शहरी जीवन को पसंद करती थी ।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है ।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) पंचायत का फैसला न्यायपूर्ण था।

(II) पारिवारिक द्वेष ने भक्तिन को निर्धन बना दिया ।

(III)भक्तिन को पंचायत ने दंड दिया।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क) (I) और (II)　　(ख)(II) और (III)

(ग)केवल (I)　　(घ)केवल (II)

उत्तर –

(i) (ग)उसकी संपत्ति नष्ट हुई

(ii) (ग)क्रोधित होकर देखना

(iii) (घ) उचित निर्णय करना।

(iv) (घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) (ख)(II) और (III)

पठित गद्यांश-07

दूसरे दिन तड़के ही सिर पर कई लोटे औंधाकर उसने मेरी धुली धोती जल के छींटों से पवित्र कर पहनी और पूर्व के अंधकार और मेरी दीवार से फूटते हुए सूर्य और पीपल का दो लोटे जल से अभिनंदन किया। दो मिनट नाक दबाकर जप करने के उपरांत जब वह कोयले की मोटी रेखा से अपने साम्राज्य की सीमा निश्चित कर चौके में प्रतिष्ठित हुई, तब मैंने समझ लिया कि इस सेवक का साथ टेढ़ी खीर है। अपने भोजन के संबंध में नितांत वीतराग होने पर भी मैं पाक-विद्या के लिए परिवार में प्रख्यात हूँ और कोई भी पाक-कुशल दूसरे के काम में नुक्ताचीनी बिना किए रह नहीं सकता। पर जब छूत-पाक पर प्राण देने वाले व्यक्तियों का बात-बात पर भूखा मरना स्मरण हो आया और भक्तिन की शंकाकुल दृष्टि में छिपे हुए निषेध का अनुभव किया, तब कोयले की रेखा मेरे लिए लक्ष्मण के धनुष से खींची हुई रेखा के सामने दुर्लंघ्य हो उठी। निरुपाय अपने कमरे में बिछौने में पड़कर नाक के ऊपर खुली हुई पुस्तक स्थापित कर मैं चौके में पीढ़े पर आसीन अनाधिकारी को भूलने का प्रयास करने लगी। ।

(i)भक्तिन के बारे में कौन-सा कथन असत्य है?

(क)वह छूत -पाक मानती थी।　　(ख)उसे लेखका का चौके में जाना स्वीकार था।

(ग)वह बड़ी हठी थी।　　(घ)उसने चौके पर अधिकार कर लिया।

(ii)'नुक्ताचीनी' का क्या अर्थ है?

(क) नुक्ता और चीनी　　(ख)प्रशंसा करना

(ग)काम में कमी निकालना　　(घ) कुशलता से काम करना

(iii)'टेढ़ी खीर' होने का क्या अर्थ है?

(क)आसान कार्य　　(ख) कठिन कार्य

(ग)मधुर अनुभव　　(घ)कटु अनुभव

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)-लेखिका का चौके में प्रवेश-निषेध हो गया।

कारण (R)-भक्तिन छूत-पाक मानती थी।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)लेखिका पाककला में निपुण थी।

(II)भक्तिन ने चौके पर अधिकार कर लिया।

(III)लेखिका और भक्तिन का साथ बड़ा सरल था।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क) (I) और (II) (ख)(II) और (III)

(ग)केवल (I) (घ)केवल (III)

उत्तर –

(i) (ख)उसे लेखका का चौके में जाना स्वीकार था।

(ii) (ग)काम में कमी निकालना

(iii) (ख) कठिन कार्य

(iv) (क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(v) (क) (I) और (II)

पठित गद्यांश-08

मेरे इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये, भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अंतरहित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस संबंध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए संभव नहीं यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! उसके जीवन का परम कर्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है-जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर-उधर करके बताना, क्या झूठ है! इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा।

(i)इनमें से सत्य कथन कौन-सा है?

(क)भक्तिन में कोई बुरा गुण नहीं था। (ख) भक्तिन में कुछ बुराइयाँ थीं।

(ग) भक्तिन झूठ न बोलती और न चोरी करती थी। (घ) भक्तिन से बहस में कोई भी जीत सकता था।

(ii)'धर्मराज महाराज कौन हैं?

(क)हरिश्चंद्र (ख)राम

(ग)युधिष्ठिर (घ)कृष्ण

(iii)'शास्त्रार्थ' का क्या अर्थ है?

(क)चर्चा (ख)लड़ाई

(ग)शस्त्र विद्या (घ)उपदेश

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)-भक्तिन लेखिका से झूठ नहीं बोलती थी।

कारण (R)-भक्तिन लेखिका को क्रोधित नहीं करना चाहती थी।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) भक्तिन बहस करने में कुशल थी।

(II) भक्तिन अपनी गलती मान लेती थी।

(III) भक्तिन में कोई बुरा गुण नहीं था।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(क) (I) और (II) (ख) (II) और (III)

(ग)केवल (I) (घ)केवल (III)

उत्तर –

(i) (ख) भक्तिन में कुछ बुराइयाँ थीं।

(ii) (ग)युधिष्ठिर

(iii) (क)चर्चा

(iv) (ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(v) (ग)केवल (I)

पठित गद्यांश-09

पर वह स्वयं कोई सहायता नहीं दे सकती, इसे मानना अपनी हीनता स्वीकार करना है-इसी से वह द्वार पर बैठकर बार-बार कुछ काम बताने का आग्रह करती है। कभी उत्तर-पुस्तकों को बाँधकर, कभी अधूरे चित्र को कोने में रखकर, कभी रंग की प्याली धोकर और कभी चटाई को आँचल से झाड़कर वह जैसी सहायता पहुँचाती है, उससे भक्तिन का अन्य व्यक्तियों से अधिक बुद्धिमान होना प्रमाणित हो जाता है। वह जानती है कि जब दूसरे मेरा हाथ बँटाने की कल्पना तक नहीं कर सकते, तब वह सहायता की इच्छा को क्रियात्मक रूप देती है। इसी से मेरी किसी पुस्तक के प्रकाशित होने पर उसके मुख पर प्रसन्नता की आभा वैसे ही उद्भासित हो उठती है जैसे स्विच दबाने से बल्ब में छिपा आलोक। वह सूने में उसे बार-बार छूकर, आँखों के निकट ले जाकर और सब ओर घुमा-फिराकर मानो अपनी सहायता का अंश खोजती है और उसकी दृष्टि में व्यक्त आत्मघोष कहता है कि उसे निराश नहीं होना पड़ता। यह स्वाभाविक भी है। किसी चित्र को पूरा करने में व्यस्त, मैं

जब बार-बार कहने पर भी भोजन के लिए नहीं उठती, तब वह कभी दही का शर्बत, कभी तुलसी की चाय वहीं देकर भूख का कष्ट नहीं सहने देती।

(i)भक्तिन का सेवा भाव किस बात से सिद्ध होता है?

(क)बार-बार कहने पर भी उसका भोजन के लिए न उठना।

(ख)अपनी हीनता न स्वीकार करना ।

(ग)खुद को अधिक बुद्धिमान सिद्ध करना।

(घ)लेखिका की उपलब्धि पर प्रसन्न होना।

(ii)भक्तिन लेखिका के कामों में संलग्न होते हुए क्या करती थी?

(क)अपनी इच्छा को क्रियान्वित करना। (ख)दूसरों से खुद को अधिक बुद्धिमान जताना ।

(ग)प्रसन्नता व संतुष्टी का अनुभव करना (घ)उपर्युक्त सभी ।

(iii)'हाथ बटाने' का क्या अर्थ है?

(क)हाथ बांधना (ख)साथ छोड़ना

(ग)सहयोग देना (घ)हाथों से बाँटना

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए । उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

कथन(A)- भक्तिन लेखिका के द्वार पर बैठकर बार-बार कुछ काम बताने का आग्रह करती है।

कारण (R)- भक्तिन स्वयं कोई सहायता नहीं दे सकने की अपनी हीनता स्वीकार करना नहीं चाहती है।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है ।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) भक्तिन लेखिका के हर कार्य में सहयोग देती थी।

(II) भक्तिन लेखिका की प्रकाशित पुस्तकों में अपना योगदान खोजती थी।

(III) भक्तिन लेखिका के कार्यों में खलल डालती थी ।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(क) (I) और (II) (ख)(II) और (III)

(ग)केवल (I) (घ)केवल (III)

उत्तर –

(i) (क)बार-बार कहने पर भी उसका भोजन के लिए न उठना।

(ii) (घ)उपर्युक्त सभी ।

(iii) (ग)सहयोग देना

(iv) (क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(v) (क) (I) और (II)

पठित गद्यांश-10

मेरे भ्रमण की भी एकांत साथिन भक्तिन ही रही है। बदरी-केदार आदि के ऊँचे-नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे वह हठ करके मेरे आगे चलती रही है, वैसे ही गाँव की धूलभरी पगडंडी पर मेरे पीछे रहना नहीं भूलती। किसी भी समय, कहीं भी जाने के लिए प्रस्तुत होते ही मैं भक्तिन को छाया के समान साथ पाती हूँ। देश की सीमा में युद्ध को बढ़ते देखकर जब लोग आतंकित हो उठे, तब भक्तिन के बेटी-दामाद उसके नाती को लेकर बुलाने आ पहुँचे; पर बहुत समझाने-बुझाने पर भी वह उनके साथ नहीं जा सकी। सबको वह देख आती है; रुपया भेज देती है; पर उनके साथ रहने के लिए मेरा साथ छोड़ना आवश्यक है; जो संभवत: भक्तिन को जीवन के अंत तक स्वीकार न होगा। गत वर्ष जब युद्ध के भूत ने वीरता के स्थान में पलायन-वृत्ति जगा दी थी, तब भक्तिन पहली ही बार सेवक की विनीत मुद्रा के साथ मुझसे गाँव चलने का अनुरोध करने आई। वह लकड़ी रखने के मचान पर अपनी नयी धोती बिछाकर मेरे कपड़े रख देगी, दीवाल में कीलें गाड़कर और उन पर तख्ते रखकर मेरी किताबें सजा देगी, धान के पुआल का गोंदरा बनवाकर और उस पर अपना कंबल बिछाकर वह मेरे सोने का प्रबंध करेगी। मेरे रंग, स्याही आदि को नयी हैंड़ियों में सँजोकर रख देगी और कागज-पत्रों को छींके में यथाविधि एकत्र कर देगी।

(i)भक्तिन को क्या कदापि स्वीकार न था?

(क)अपने गाँव जाना (ख)अपने घर रुपये भेजना

(ग)लेखिका के साथ जेल जाना (घ)लेखिका का साथ छोड़ना

(ii)'पलायन वृत्ति' का क्या अर्थ है?

(क)पालन करना (ख)साहस दर्शाना

(ग)डरकर भागना (घ)धैर्य रखना

(iii)लेखका ने भक्तिन के साथ को _____ के समान बताया है।

(क)बादल (ख)संगीत

(ग)सूरज (घ)छाया

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)- भक्तिन के बेटी-दामाद बुलाने आ पहुँचे पर बहुत समझाने-बुझाने पर भी वह उनके साथ नहीं जा सकी।

कारण (R)- उनके साथ रहने के लिए लेखिका का साथ छोड़ना भक्तिन को जीवन के अंत तक स्वीकार न होगा।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)हर यात्रा में भक्तिन लेखिका की साथिन थी।

(II)भक्तिन को अपने परिवार से कोई लगाव न था।

(III)भक्तिन लेखिका को भी अपने गाँव ले जाना चाहती थी।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(क) (I) और (II) (ख)(I) और (III)

(ग)केवल (I) (घ)केवल (III)

उत्तर –

(i) (घ)लेखिका का साथ छोड़ना

(ii) (ग)डरकर भागना

(iii) (घ)छाया

(iv(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।)

(v) (ख)(I) और (III)

पठित गद्यांश-11

भक्तिन और मेरे बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख-दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए है।

(i)गद्यांश में भक्तिन के जीवन का कौन-सा भाग वर्णित है?

(क)पहला (ख)दूसरा

(ग)तीसरा (घ)चौथा

(ii) गद्यांश का मूल विषय है-

(क)भक्तिन का दुखमय अतीत (ख)भक्तिन की कार्य कुशलता

(ग)लेखिका और भक्तिन का संबंध (घ)लेखिका की दिनचर्या

(iii)कौन-से शब्द-युग्म विलोम नहीं हैं?

(क)सेवक-स्वामी (ख)सुख-दुख

(ग)अंधेरे-उजाले (घ)अस्तित्व-व्यक्तित्व

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन(A)- भक्तिन और लेखिका बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है।

कारण (R)-भक्तिन लेखिका के जीवन का अभिन्न अंग बन गई।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)भक्तिन लेखिका की सेविका मात्र थी।

(II) भक्तिन को नौकर कहना असंगत है।

(III)भक्तिन लेखिका के हर आदेश की अवज्ञा करती थी।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

(क) (I) और (II)　　(ख)(I) और (III)

(ग)केवल (I)　　(घ)केवल (II)

उत्तर –

(i) (घ)चौथा

(ii) (ग)लेखिका और भक्तिन का संबंध

(iii) (घ)अस्तित्व-व्यक्तित्व

(iv) (ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(v) (घ)केवल (II)

पठित गद्यांश-12

भक्तिन के संस्कार ऐसे हैं कि वह कारागार से वैसे ही डरती है, जैसे यमलोक से। ऊँची दीवार देखते ही, वह आँख मूँदकर बेहोश हो जाना चाहती है। उसकी यह कमजोरी इतनी प्रसिद्ध पा चुकी है कि लोग मेरे जेल जाने की संभावना बता-बताकर उसे चिढ़ाते रहते हैं। वह डरती नहीं, यह कहना असत्य होगा; पर डर से भी अधिक महत्व मेरे साथ का ठहरता है। चुपचाप मुझसे पूछने लगती है कि वह अपनी कै धोती साबुन से साफ़ कर ले, जिससे मुझे वहाँ उसके लिए लज्जित न होना पड़े। क्या-क्या सामान बाँध ले, जिससे मुझे वहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो सके। ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं, यह आश्वासन भक्तिन के लिए कोई मूल्य नहीं रखता। वह मेरे न जाने की कल्पना से इतनी प्रसन्न नहीं होती, जितनी अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित। भला ऐसा अंधेर हो सकता है। जहाँ मालिक वहाँ नौकर-मालिक को ले जाकर बंद कर देने में इतना अन्याय नहीं, पर नौकर को अकेले मुक्त छोड़ देने में पहाड़ के बराबर अन्याय है। ऐसा अन्याय होने पर भक्तिन को बड़े लाट तक लड़ना पड़ेगा। किसी की माई यदि बड़े लाट तक नहीं लड़ी, तो नहीं लड़ी; पर भक्तिन का तो बिना लड़े काम ही नहीं चल सकता। ऐसे विषम प्रतिद्वंद्वियों की स्थिति कल्पना में भी दुर्लभ है। मैं प्राय: सोचती हूँ कि जब ऐसा बुलावा आ पहुँचेगा, जिसमें न धोती साफ़ करने का अवकाश रहेगा, न सामान बाँधने का, न भक्तिन को रुकने का अधिकार होगा, न मुझे रोकने का, तब चिर विदा के अंतिम क्षणों में यह देहातिन वृद्धा क्या करेगी और मैं क्या करूंगी।

(i)भक्तिन को कब लड़ना होगा ?

(क)भक्तिन को लेखिका ले साथ जेल न जाने देने पर (ख) लेखिका को जेल भेजने पर

(ग) लोगों द्वारा चिढ़ाए जाने पर (घ)गाँव न जाने देने पर

(ii)यहाँ 'विषम प्रतिद्वंद्वी' कौन हैं?

(क)लेखिका-भक्तिन (ख)बड़े लाट-लेखिका

(ग) बड़े लाट-भक्तिन (घ) नौकर-मालिक

(iii) इनमें से कौन-सा शब्द का निषेधार्थक नहीं है-

(क)असत्य (ख)असुविधा

(ग)अन्याय (घ)अवकाश

(iv)निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए । उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

कथन(A)- चिर विदा के अंतिम क्षणों में यह देहातिन वृद्धा क्या करेगी और मैं क्या करूंगी।

कारण (R)-लेखिका को बंदी बनाया जाएगा तब भक्तिन और लेखिका क्या करेंगी।

(क) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(ख) कथन(A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है ।

(ग) कथन(A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं ।

(घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

(v)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)भक्तिन कारागार को यमलोक मानती थी ।

(II)चिर विदा का अर्थ मृत्यु है।

(III)भक्तिन लेखिका के साथ जेल जाने की बात से बहुत डरती थी ।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ?

(क) (I) और (II) (ख)(I) और (III)

(ग)केवल (I) (घ)केवल (II)

उत्तर –

(i) (क)भक्तिन को लेखिका ले साथ जेल न जाने देने पर

(ii) (ग) बड़े लाट-भक्तिन

(iii) (घ)अवकाश

(iv) (घ) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

(v) (क) (I) और (II)

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.भक्तिन पाठ के अधार पर भक्तिन का चरित्र – चित्रण कीजिए।

उत्तर –'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। लेखिका ने उसके जीवन-संघर्ष का वर्णन किया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1.व्यक्तित्व-भक्तिन अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं।

2.परिश्रमी-भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

3.स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानिनी है। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वारा अपमानित किए जाने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

4.महान सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण हैं। लेखिका ने उसे हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

प्रश्न 2.भक्तिन की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर –भक्तिन झूँसी गाँव के एक गोपालक की इकलौती संतान थी। इसकी माता का देहांत हो गया था। फलत: भक्तिन की देखभाल विमाता ने किया। पिता का उस पर अगाध स्नेह था। पाँच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह गाँव के एक ग्वाले के सबसे छोटे पुत्र के साथ कर दिया गया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। विमाता उससे ईर्ष्या रखती थी। उसने उसके पिता की बीमारी का समाचार तक उसके पास नहीं भेजा।

प्रश्न 3.भक्तिन के ससुराल वालों का व्यवहार कैसा था?

उत्तर –भक्तिन के ससुराल वालों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। घर की महिलाएँ चाहती थीं कि भक्तिन का पति उसकी पिटाई करे। वे उस पर रौब जमाना चाहती थीं। इसके अतिरिक्त, भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया, जबकि उसकी सास व जेठानियों ने लड़के पैदा किए थे। इस कारण उसे सदैव प्रताड़ित किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने भक्तिन पर पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला। उसकी विधवा लड़की का विवाह षडयंत्र से करवा दिया गया जिससे उसकी संपत्ति नष्ट हो गई । अंत में, भक्तिन को गाँव छोड़ना पड़ा ।

प्रश्न 4.भक्तिन का जीवन सदैव दुखों से भरा रहा। स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर –भक्तिन का जीवन प्रारंभ से ही दुखमय रहा। बचपन में ही माँ मर गई । विमाता से हमेशा भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला। विवाह के बाद तीन लड़कियाँ उत्पन्न करने के कारण उसे सास व जेठानियों का बुरा व्यवहार सहना पड़ा। किसी तरह परिवार से अलग होकर समृद्धि पाई, परंतु भाग्य ने उसके पति को छीन लिया। ससुराल वालों ने उसकी संपत्ति छीननी चाही, परंतु वह संघर्ष करती रही। उसने बेटियों का विवाह किया तथा बड़े जमाई को घर-जमाई बनाया। शीघ्र ही उसका देहांत हो गया। इस तरह उसका जीवन शुरू से अंत तक दुखों से भरा रहा।

प्रश्न 5.लछमिन के पैरों के पंख गाँव की सीमा में आते ही क्यों झड़ गए?

उत्तर –लछमिन की सास का व्यवहार सदैव कटु रहा। जब उसने लछमिन को मायके यह कहकर भेजा कि "तुम बहुत दिन से मायके नहीं गई हो, जाओ देखकर आ जाओ" तो यह उसके लिए अप्रत्याशित था। उसके पैरों में पंख से लग गए थे। खुशी-खुशी जब वह मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोगों ने फुसफुसाना प्रारंभ कर दिया कि 'हाय! बेचारी लछमिन अब आई है।" लोगों की नजरों से सहानुभूति झलक रही थी। उसे इस बात का अहसास नहीं था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है या वे गंभीर बीमार थे। विमाता ने उसके साथ अन्याय किया था। इसलिए वह हतप्रभ थी। उसकी तमाम खुशी समाप्त हो गई।

प्रश्न 6.लछमिन ससुराल वालों से अलग क्यों हई? इसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर –लछमिन मेहनती थी। तीन लड़कियों को जन्म देने के कारण सास व जेठानियाँ उसे सदैव प्रताड़ित करती रहती थीं। वह व उसके बच्चे घर, खेत व पशुओं का सारा काम करते थे, परंतु उन्हें खाने तक में भेदभावपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ता था। उसकी दशा नौकरों जैसी थी। अत: उसने ससुराल वालों से अलग होकर रहने का फैसला किया। अलग होते समय उसने अपने ज्ञान के कारण खेत, पशु घर आदि में अच्छी चीजें ले लीं। परिश्रम के बलबूते पर उसका घर समृद्ध हो गया।

प्रश्न 7. लछमिन को शहर क्यों जाना पड़ा?

उत्तर –लछमिन के बड़े दामाद की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर परिवार वालों ने जिठौत के साले को जबरदस्ती विधवा लड़की का पति बनवा दिया। पारिवारिक द्वेष बढ़ने से खेती चौपट हो गई। स्थिति यहाँ तक आ गई कि लगान भी नहीं चुकाया गया। जब जमींदार ने लगान न पहुँचाने पर भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा तो उसके स्वाभिमानी हृदय को गहरा आघात लगा। यह उसकी कर्मठता के लिए सबसे बड़ा कलंक बन गया। इस अपमान के कारण वह दूसरे ही दिन कमाई के विचार से शहर आ गई।

प्रश्न 8. भक्तिन का दुर्भाग्य क्या था? उसे हठी क्यों कहा गया है?

उत्तर- भक्तिन का दुर्भाग्य ही था कि उसकी माँ उसको बचपन में ही अकेला छोड़ कर भगवान के पास चली गई। विमाता के अत्याचारों को सहना पड़ा। छोटी आयु में ही उसका विवाह कर दिया गया जिससे उसका बचपन छीन गया। किंतु उसका दुर्भाग्य इतने पर ही खत्म नहीं हुआ उसके पिता और पति की भी अकाल मृत्यु से वह अकेली रह गई और अति तब हुई जब उसकी बड़ी लड़की का पति भी उसके युवती बनते ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसलिए भक्तिन के दुर्भाग्य को हठी कहा गया है।

प्रश्न-9. भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का उल्लेख किया है। जैसे-

1. लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव
2. विधवाओं की समस्या
3. न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के मानवाधिकार को कुचलना
4. अशिक्षा और अंधविश्वास
5. बाल विवाह।

प्रश्न-10. भक्तिन पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है। भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी। सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पड़ता था। भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जिठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे।

प्रश्न-11. भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायत के न्याय पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारित है। भक्तिन के जिठौत ने संपति के लालच में षडयंत्र कर भोली बच्ची को धोखे से जाल में फंसाया। पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती जिठौत के निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया। पंचायत के अंधे कानून से दुष्टों को लाभ हुआ और निर्दोष को दंड मिला।

प्रश्न 12.भक्तिन (लछमिन) का विवाह मात्र पाँच वर्ष की आयु में हो गया था। अभी भी देश के कुछ राज्यों में लड़कियों का विवाह बहुत छोटी उम्र में कर देने का रिवाज है। क्या ऐसा करना समाज के लिए उचित है? अपना तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर-भक्तिन का विवाह पाँच वर्ष और गौना नौ वर्ष की उम्र में हो गया था। कच्ची आयु में ही उस पर घर-गृहस्थी का बोझा लाद दिया गया था, जो समाज के लिए कदापि उचित नहीं था। छोटी आयु खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई और दुनिया को देखने-समझने की होती है। यही समय हर बच्चे को भावी जीवन के लिए तैयार करता है।यदि इसी उम्र में उन्हें विवाह के बंधन में फँसा दिया जाए तो वे मृत्युपर्यंत अनेक दृष्टिकोणों से अधूरे ही बने रहते हैं। छोटी आयु में जिन लड़कियों का विवाह कर दिया जाता है वे अधिकतर अशिक्षित या अल्पशिक्षित ही रह जाती हैं जिस कारण वे परिवार, समाज और देश के लिए कार्य नहीं कर पातीं जो शिक्षा प्राप्ति के बाद कर सकती थीं। जीव विज्ञान की दृष्टि से भी छोटी आयु में विवाह-बंधन उचित नहीं होता।मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह हानिकारक होता है। परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ सँभालना अबोध अवस्था में नहीं आ पाता। छोटी आयु में बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारी व्यक्तित्व को उभरने नहीं देती। कई बार वे मानसिक कुंठाओं और हीनभावना का शिकार बन जाती हैं। निश्चित रूप से छोटी आयु में विवाह कर देना अच्छा नहीं होता। बाल-विवाह प्रथा का पालन किसी भी अवस्था में नहीं किया जाना चाहिए।

प्रश्न 13.भक्तिन के इतिवृत्त पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-भक्ति का वास्तविक नाम लक्ष्मी था। वह ऐतिहासिक झूँसी के एक प्रसिद्ध सूरमा की इकलौती बेटी थी। पाँच वर्ष की अल्पायु में ही उसका विवाह हँडियाँ ग्राम के एक संपन्न परिवार में गोपालक के बेटे से कर दिया। उसकी विमाता ने नौ वर्ष की आयु में ही उसका गौना कर दिया था क्योंकि उसकी माँ गोपालिका की बचपन में ही मृत्यु हो गई थी।

प्रश्न 14.भक्तिन का खेत-खलिहान के प्रति ज्ञान कैसा था और क्यों?

उत्तर-भक्तिन का खेत-खलिहान के प्रति ज्ञान बहुत अच्छा था क्योंकि वही अपने घर के गाय-भैंस, खेत-खलिहान आदि की देखभाल किया करती थी। जिठानियों की उपेक्षा के कारण उसे ही खेत-खलिहान का कार्यभार सौंपा गया था, जिसे करते-करते उसे अधिक ज्ञान हो गया था।

प्रश्न 15.भक्तिन के जीवन का तीसरा अनुच्छेद कब प्रारंभ हुआ?

उत्तर-भक्तिन ने अनेक प्रयास करने पर भी अपनी जिठानियों के ससुरगणों की उपार्जित जगह जमीन में से नाममात्र भी न देने का निश्चय कर लिया। उसने उसी घर में रहने की घोषणा कर दी तथा भविष्य में भी संपत्ति सुरक्षित रखने हेतु अपनी छोटी लड़कियों का विवाह कर दिया। उसने बड़े दामाद को अपना घरजमाई बनाकर रख लिया। इस तरह भक्तिन के जीवन का तीसरा अनुच्छेद आरंभ हुआ।

प्रश्न 16.भक्तिन के जीवन की कर्मठता में सबसे बड़ा कलंक क्या बन गया?

उत्तर-जब भक्तिन की संपत्ति गाय-भैंस, खेत-खलिहान सब पारिवारिक द्वेष में फंस गए तो इससे लगान अदा करना भारी हो गया। जब अधिक समय तक जमींदार को लगान नहीं मिला तो उसने भक्तिन को बुलाकर पूरा दिन कड़ी धूप में खड़ा करके रखा। यह उसके जीवन की कर्मठता में सबसे बड़ा कलंक बन गया।

प्रश्न 17.भक्तिन के जीवन का चौथा और अंतिम परिच्छेद का प्रारंभ कब और कैसे हुआ?

उत्तर-जब भक्तिन को लगान न मिलने पर जमींदार ने उसको दिनभर धूप में खड़ा रखा तो उसने इसे अपने जीवन पर कलंक माना। तब वह अपना सब कुछ छोड़कर आजीविका पाने हेतु इलाहाबाद आ गई। यहाँ उसकी मुलाकात लेखिका महादेवी वर्मा से हुई। उन्होंने इस दीन-हीन का सहानुभूतिवश अपने यहाँ सेविका के रूप में नौकरी दे दी। यहीं से भक्तिन के जीवन का चौथा तथा अंतिम परिच्छेद प्रारंभ हुआ।

प्रश्न-18. 'सभी को अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है।'- क्यों? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भक्तिन पाठ की लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार संसार में हम सभी में से अधिकांश लोग अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीते हैं अर्थात हमारे नाम के अर्थ एवं गुणों में साम्य होना अनिवार्य नहीं है। लेखिका कहती है कि उनका नाम महादेवी है परंतु वे ऐसा विशेष कुछ नहीं कर पाई हैं कि लोग उनको महान माने और ऐसे ही उनकी सेविका भक्तिन अपने मूल नाम लक्ष्मी के नाम को सार्थक नहीं कर पाती है क्योंकि उसके पास लक्ष्मी (धन) कभी नहीं आ पाई।

प्रश्न 19.भक्तिन व लेखिका के बीच कैसा संबंध था?

उत्तर –लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। दूसरे, वह नौकरानी कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी। वह लेखिका की छाया बनकर घूमती थी। वह आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह पृथक अस्तित्व रखती तथा हर सुख-दुख में लेखिका के साथ रहती थी।

प्रश्न-20. लेखिका को भक्तिन से निपटना टेढ़ी खीर क्यों लगा ? लेखिका के लिए कोयले की रेखा लक्ष्मण रेखा कैसे बन गई?

उत्तर- लेखिका को भक्तिन से निपटना टेढ़ी खीर लगा क्योंकि उसे पता था कि भक्तिन जैसे लोग पक्के इरादों के होते हैं। ऐसे लोगों के कार्य में बाधा होने पर ये खाना-पीना छोड़कर जान देने तक तैयार रहते हैं।भक्तिन धार्मिक प्रवृत्ति की औरत थी। वह रसोई के मामले में बेहद पवित्रता रखती थी। रसोई बनाते समय वह कोयले से मोटी रेखा खींच देती थी ताकि बाहरी व्यक्ति प्रवेश न कर सके। स्वयं लेखिका का प्रवेश भी वर्जित था। यदि वह रेखा का उल्लंघन करती तो भक्तिन जैसे लोग भूखे मरने को तैयार हो जाते हैं अर्थात खाना नहीं खाते। अत: कोयले की रेखा महादेवी जी ले लिए लक्ष्मण रेखा जैसी बन गई थी।

प्रश्न-21. इधर-उधर बिखरे रुपये-पैसों का भक्तिन जो कुछ करती है, क्या आप उसे चोरी मानेंगे? क्यों?

उत्तर- इधर-उधर बिखरे रुपये-पैसों का भक्तिन जो कुछ करती है, उसे हम चोरी मानेंगे। इसका कारण यह है कि वह घर में नौकरी करती है। घर की किसी वस्तु पर उसका स्वामित्व नहीं है। पैसे या अन्य सामान मिलने पर उसकी जिम्मेदारी यह है कि वह उन चीजों को घर की मालिक महादेवी जी को दे। ऐसा न करने पर उसका कार्य चोरी के अंतर्गत आएगा।

प्रश्न-22. भक्तिन अन्य व्यक्तियों से किस प्रकार अधिक बुद्धिमान प्रमाणित होती है?

उत्तर- अन्य व्यक्ति महादेवी जी के लेखन या चित्रकारी में सहायता करने के विषय में सोच भी नहीं पाते हैं, परंतु भक्तिन सदैव लेखिका के सामने बैठकर कुछ-न-कुछ क्रियात्मक सहयोग देती रहती थी। अन्य लोग जहाँ लेखिका का हाथ बटाने की कल्पना तक नहीं कर पाते थे, वहीं भक्तिन पुस्तकों को बाँधकर, रंग की प्याली धोकर, अधूरे चित्र कोने में रखकर आदि प्रकार से सहयोग करती थी। इससे सिद्ध होता है कि वह अन्य लोगों से अधिक बुद्धिमान थी।

प्रश्न-23. अनपढ़ भक्तिन को लेखिका की नवप्रकाशित पुस्तकों से निराश नहीं होना पड़ता था-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- महादेवी जी की पुस्तक प्रकाशित होने पर भक्तिन पुस्तक को चारों ओर से छूकर तथा अपनी आँखों के समीप लाकर असीम आनंद की अनुभूति करती थी। इस तरीके से वह अपनी सहायता का अंश खोजती थी। उसकी नजरों से आत्मतुष्टि की झलक मिलती थी। इससे लगता है कि भक्तिन को निराश नहीं होना पड़ता।

प्रश्न-24. महादेवी जी के लिए आँगन में फूलने वाला गुलाब और आम सेवक क्यों नहीं हैं? क्या यह बात भक्तिन पर भी लागू होती है?

उत्तर- लेखिका के लिए आँगन में खिलने वाला गुलाब व आम सेवक नहीं हैं। इसका कारण यह है कि ये हमें सुख देते हैं, परंतु हमसे कोई अपेक्षा नहीं रखते। इनका अपना अस्तित्व है। भक्तिन पर भी यह बात लागू होती है। वह निस्वार्थ से लेखिका के लिए सारे कार्य करती है।

प्रश्न-25. भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगी और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी। भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

प्रश्न 26.भक्तिन ने लेखिका को कौन-सा सारगर्भित लेक्चर दिया? उसका लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर-भक्तिन ने जब लेखिका के घर में सेविका-धर्म का निर्वाह करते हुए पहली बार खाना बनाया तो उसे देखकर लेखिका हैरान रह गई। बस फिर भक्तिन लेखिका से कहने लगी कि रोटियाँ अच्छी सेंकने के प्रयास में कुछ ज्यादा खरी हो गई हैं किंतु अच्छी हैं।तरकारियाँ अवश्य थीं परंतु जब दाल बनी है तो उनका क्या काम। वह शाम की तरकारी बना देगी। दूध-घी उसे अच्छा नहीं लगता अन्यथा सब ठीक हो जाता। अब न हो तो अमचूर और लाल मिर्च की चटनी पीस लें। यदि इससे भी काम न चले तो वह गाँव से लाया हुआ थोड़ा-सा गुड़ दे देगी। शहर के लोग ये क्या कलाबत्तू खाते हैं। फिर वह अनाड़िन या फूहड़ नहीं है। उसके ससुर, पितिया ससुर, अजिमा सास आदि ने उसकी कुशलता के लिए असंख्य मौखिक प्रमाण-पत्र दिए हुए हैं। भक्तिन के सारगर्भित लेक्चर का लेखिका पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसने मीठे से विरक्ति होने के कारण तथा गुड़ और घी से अरुचि के कारण रूखी दाल से एक मोटी रोटी खा ली। इसके पश्चात यह ठाठ से यूनिवर्सिटी पहुँची और न्यायसूत्र पढ़ते-पढ़ते शहर और देहात के जीवन के इस अंतर पर विचार करती रही।

प्रश्न 27.भक्तिन की सहजबुद्धि किस संबंध में विस्मित कर देनेवाली है?

उत्तर-भक्तिन का लेखिका के परिचितों एवं साहित्यिक बंधुओं से विशेष परिचय है किंतु उनके प्रति सम्मान की भावना लेखिका के प्रति सम्मान की भावना पर निर्भर है। उसका सद्भाव उनके प्रति लेखिका के सद्भाव से निश्चित होता है। इसी संबंध में भक्तिन की सहजबुद्धि विस्मित कर देने वाली है।

प्रश्न 28.कारागार के नाम से भक्तिन पर क्या प्रभाव पड़ता था?

उत्तर –वह जेल जाने के लिए क्यों तैयार हो गई? भक्तिन को कारागार से बहुत भय लगता था। वह उसे यमलोक के समान समझती थी। कारागार की ऊँची दीवारों को देखकर वह चकरा जाती थी। जब उसे पता चला कि महादेवी जेल जा रही हैं तो वह उनके साथ जेल जाने के लिए तैयार हो गई। वह महादेवी के बिना अलग रहने की कल्पना मात्र से परेशान हो उठती थी।

प्रश्न 29.भक्तिन लाट-साहब तक लड़ने को तत्पर क्यों थी? इससे उसके स्वभाव की कौन-सी विशेषता उजागर होती हैं?

उत्तर-भक्तिन लाट-साहब तक लड़ने को इसलिए तत्पर थी क्योंकि वह अपनी मालकिन को किसी भी कीमत पर खो देना नहीं चाहती। वह चाहती है कि उसकी मालकिन सदैव उसके साथ रहे। इससे उसके स्वभाव की सच्ची सेविका, अपने धर्म का पालन करने वाली, निडरता एवं साहसी विशेषताएँ उजागर होती हैं।

प्रश्न 30:महादेवी ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में बाँटा?

उत्तर -महादेवी ने भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में बाँटा जो निम्नलिखित हैं -

प्रथम - विवाह से पूर्व।

द्वितीय - ससुराल में सधवा के रूप में।

तृतीय - विधवा के रूप में।

चतुर्थ - महादेवी की सेवा में।

प्रश्न 31:'भक्तिन' अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेव जी के लिए अनमोल क्यों थी?

उत्तर-अनेक अवगुणों के होते हुए भी भक्तिन महादेवी वर्मा के लिए इसलिए अनमोल थी क्योंकि

1. भक्तिन में सेवाभाव कूट-कूटकर भरा था।
2. भक्तिन लेखिका के हर कष्ट को स्वयं झेल लेना चाहती थी।
3, वह लेखिका द्वारा पैसों की कमी का जिक्र करने पर अपने जीवनभर की कमाई उसे दे देना चाहती थी।
4. भक्तिन की सेवा और भक्तिन में नि:स्वार्थ भाव था। वह अनवरत और दिन-रात लेखिका की सेवा करना चाहती थी।

प्रश्न 32 - भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर - लेखिका ने भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का यह उदाहरण दिया है "शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती है। मुझे स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता। अतः मैंने भक्तिन को रोका। उसने अंकुठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है ।कुतूहलवश मैं पूछ ही बैठी-'क्या लिखा है ?' तुरंत उत्तर मिला-'तीरथ गए मुंडाए सिद्ध' कौन से शास्त्र का यह रहस्यमय सूत्र है, यह जान लेना लेखिका के लिए संभव ही नहीं था। अतः वह हारकर मौन ही रही और भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार को एक दरिद्र नापित के गंगाजल से धुले अस्तुरे द्वारा यथाविधि होता रहा।

प्रश्न 33 - भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

उत्तर- भक्तिन एक देहाती अर्थात् ग्रामीण महिला थी जो अनपढ़ थी। इसलिए वह बिल्कुल देहाती भाषा का प्रयोग किया करती थी। भक्तिन एक देहाती होने के साथ-साथ समझदार भी थी। उसका स्वभाव ऐसा बन चुका था कि वह दूसरों को तो अपने मन के अनुसार बना लेती थी लेकिन अपने अंदर किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं चाहती थी। महादेवी वर्मा बार-बार प्रयास करके भी उसके स्वभाव को परिवर्तित न कर सकी। इसलिए भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई। लेखिका देहाती भोजन भी खाने लगी।

प्रश्न 34 'भक्तिन वाक्पटुता में बहुत आगे थी', पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्टि कीजिए।

उत्तर: यह कथन सही है कि भक्तिन वाक्पटुता में बहुत आगे थी। उसके पास हर बात का सटीक उत्तर तैयार रहता था। लेखिका ने जब उसको सिर घुटाने से रोका तो उसका उत्तर था – तीरथ गए मुंडाए सिद्ध'। इसी तरह उसके बनाएँ खाने पर कटाक्ष करने पर उसने उत्तर दिया – वह कुछ अनाड़िन या फूछड़ नहीं। ससुर, पितिया ससुर, अजिया सास आदि ने उसकी पाक कुशलता के लिए न जाने कितने मौखिक प्रमाणपत्र दे डाले थे।झूठ बोलने और चोरी करने को भी वह चतुराई से सही सिद्ध कर देती थी।

प्रश्न 35. 'आलो आँधारि' की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं?

उत्तर:'आलो आँधारि' की नायिका एक घरेलू नौकरानी है। भक्तिन भी लेखिका के घर में नौकरी करती है। दोनों में यही समानता है। दूसरे, दोनों ही घर में पीड़ित हैं। परिवार वालों ने उन्हें पूर्णत: उपेक्षित कर दिया था। दोनों ने आत्मसम्मान को बचाते हुए जीवन-निर्वाह किया। दोनों को जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ा। स्त्री होने के कार्न पग-पग पर दोनों के जीवन में कई कठिनाइयाँ आईं। दोनों ने डटकर उनका सामना किया। भक्तिन को लेखिका और बेबी को तातुश जैसे सज्जन लोगों का साथ और सहारा मिला।

पाठ सं-12

बाज़ार दर्शन

जैनेन्द्र कुमार

पाठ का प्रतिपादय एवं सारांश

प्रतिपादय – 'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। जैनेंद्र जी अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक-दमक में फेंसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज में तो कहीं किस्सागो की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में इन्होंने केवल बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

सारांश – लेखक अपने मित्र की कहानी बताता है कि एक बार वे बाजार में मामूली चीज लेने गए, परंतु वापस बंडलों के साथ लौटे। लेखक के पूछने पर उन्होंने पत्नी को दोषी बताया। लेखक के अनुसार, पुराने समय से पति इस विषय पर पत्नी की ओट लेते हैं। इसमें मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी भी विशेष भूमिका अदा करता है। पैसा पावर है, परंतु उसे प्रदर्शित

करने के लिए बैंक-बैलेंस, मकान-कोठी आदि इकट्ठा किया जाता है। पैसे की पर्चेजिंग पावर के प्रयोग से पावर का रस मिलता है। लोग संयमी भी होते हैं। वे पैसे को जोड़ते रहते हैं तथा पैसे के जुड़ा होने पर स्वयं को गर्वीला महसूस करते हैं। मित्र ने बताया कि सारा पैसा खर्च हो गया। मित्र की अधिकतर खरीद पर्चेजिंग पावर के अनुपात से आई थी, न कि जरूरत की।

लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। यह ऐसा सजा होता है कि बेहया ही इसमें नहीं फँसता। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण में आग्रह नहीं है। ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष, तृष्णा व ईर्ष्या से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

लेखक का दूसरा मित्र दोपहर से पहले बाजार गया तथा शाम को खाली हाथ वापस आ गया। पूछने पर बताया कि बाजार में सब कुछ लेने योग्य था, परंतु कुछ भी न ले पाया। एक वस्तु लेने का मतलब था, दूसरी छोड़ देना। अगर उसे अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं। सब चीजें खरीदने का मन करता है।

जादू उतरते ही फैंसी चीजें आराम नहीं, खलल ही डालती प्रतीत होती हैं। इससे स्वाभिमान व अभिमान बढ़ता है। जादू से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली न रखो। मन में लक्ष्य हो तो बाजार आनंद देगा। वह आपसे कृतार्थ होगा। बाजार की असली कृतार्थता है-आवश्यकता के समय काम आना। मन खाली रखने का मतलब मन बंद नहीं करना है। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। मनुष्य अपूर्ण है। मनुष्य इच्छाओं का निरोध नहीं कर सकता। यह लोभ को जीतना नहीं है, बल्कि लोभ की जीत है।

मन को बलात बंद करना हठयोग है। वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अत: मन की भी सुननी चाहिए क्योंकि वह भी उद्देश्यपूर्ण है। मनमानेपन को छूट नहीं देनी चाहिए। लेखक के पड़ोस में भगत जी रहते थे। वे लंबे समय से चूरन बेच रहे थे। चूरन उनका सरनाम था। वे प्रतिदिन छह आने पैसे से अधिक नहीं कमाते थे। वे अपना चूरन थोक व्यापारी को नहीं देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। छह आने पूरे होने पर वे बचा चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे। वे सदा स्वस्थ रहते थे।

उन पर बाजार का जादू नहीं चल सकता था। वे निरक्षर थे। बड़ी-बड़ी बातें जानते नहीं थे। उनका मन अडिग रहता था। पैसा भीख माँगता है कि मुझे लो। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है, परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

लेखक कहता है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। एक दिन बाजार के चौक में भगत जी व लेखक की राम-राम हुई। उनकी आँखें खुली थीं। वे सबसे मिलकर बात करते हुए जा रहे थे। लेकिन वे भौचक्के नहीं थे और ना ही वे किसी प्रकार से लाचार थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा था किंतु उनको मात्र अपनी जरूरत की चीज से मतलब था। वे रास्ते के फैंसी स्टोरों को छोड़कर पंसारी की दुकान से अपने काम की चीजें लेकर

चल पड़ते हैं। अब उन्हें बाजार शून्य लगता है। फिर चाँदनी बिछी रहती हो या बाजार के आकर्षण बुलाते रहें, वे उसका कल्याण ही चाहते हैं।

लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता वह मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार को व्यंग्य दे जाते हैं, वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ये कपट को बढ़ाते हैं जिससे सद्भाव घटता है। सद्भाव नष्ट होने से ग्राहक और बेचक रह जाते हैं। वे एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। ऐसे बाजारों में व्यापार नहीं, शोषण होता है। कपट सफल हो जाता है तथा बाजार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

शब्दार्थ-

आशय – अर्थ, मतलब। महिमा – महत्ता। प्रमाणित – सिद्ध। माया – आकर्षण। ओट – सहारा। मनीबैग – पैसे रखने का थैला। पावर – शक्ति, ताकत। माल-टाल – सामान। परचेज़िंग पावर – खरीदने की शक्ति। फिजूल – व्यर्थ। दरकार – इच्छा, परवाह। बेहया – बेशर्म। हर्ज – नुकसान। आग्रह – खुशामद। तिरस्कार – अपमान। मूक – मौन। परिमित – सीमित। अतुलित – अपार। कामना – इच्छा। विकल – व्याकुल। तृष्णा – लालसा, इच्छा द्वेष – जलन।

त्रास – दुख। सेक – तपन। खुराक – भोजन। कृतार्थ – अहसानमंद। शून्य – खाली।

सनातन – शाश्वत। निरोध – रोकना। राह – मार्ग। अकारथ – व्यर्थ। व्यापक – विस्तृत। संकीण – सँकरा। विराट – विशाल। क्षुद्र – तुच्छ। बलात – जबरदस्ती। अप्रयोजनीय –अर्थरहित। अखिल – संपूर्ण। सरनाम – प्रसिद्ध। खुद – स्वयं। खुशहाल – संपन्न। पेशगी आर्डर – सामान के लिए अग्रिम पैसा देना।

नाचीज – तुच्छ। अपदार्थ – महत्वहीन। अडिग – स्थिर। निर्मम – ममतारहित। कुंठित – व्यर्थ। दारुण – भयंकर। वंचित – रहित। कृतघ्न – अहसान न मानने वाला। अपर – दूसरी। स्पिरिचुअल – धार्मिक। प्रतिपादन – वर्णन। सरोकार – मतलब। स्पृहा – इच्छा। अबलता – कमजोरी। कोसना – गाली देना। पेशोपेश – असमंजस। अप्रीति – वैर । ज्ञात – मालूम। विनाशक – विनाशकारी। बेचक – व्यापारी। ठगना – धोखा देकर लूटना। पोषण – पालन।

महत्वपूर्ण बिंदु :-

1. बाजार का आकर्षण।
2. बाजार का जादू।
3. खाली मन और बंद मन का अंतर।
4. पैसे की व्यंग शक्ति
5. बाजार की सार्थकता

पठित गद्यांश-01

बाजार में एक जादू है। वह जादू आंख की राह काम करता है वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसे हालात में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भर आना हो तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुंच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन की किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूं, वह

भी लूं। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है।

प्रश्न 1. 'मन खाली होने' का आशय है -मन में किसी इच्छा या आवश्यकता का ना होना। सत्य या असत्य में उत्तर दीजिए-

क) सत्य
ख) असत्य
ग) पूर्ण असत्य
घ) संदेह है

प्रश्न 2. आज का उपभोक्ता जेब खाली होने पर भी खरीदारी करता है,यह समाज की अंध- उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। सत्य है या असत्य में उत्तर दीजिए-

क) अपूर्ण सत्य
ख) अपूर्ण असत्य
ग) बिल्कुल सत्य
घ) संदेहात्मक सत्य

प्रश्न 3. बाजार के जादू को 'रूप का जादू 'क्यों कहा गया है?

क) बाजार में सुंदर महिलाओं की उपस्थिति होने के कारण।
ख) बाजार का रूप बड़ा आकर्षक होने के कारण।
ग) बाजार में आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती।
घ) बाजार में जरूरी वस्तुएं होने के कारण।

प्रश्न 4 बाजार के जादू का लोगों पर जल्दी असर हो जाता है क्योंकि?

अ) बाजार का जादू उन लोगों पर अधिक असर करता है जिनका मन खाली होता है, परंतु जेब भरी होती है।
ब) खाली जेब है अधूरे भरे मन पर बाजार का जादू चलता है ऐसे व्यक्ति अपने शक्ति दिखाने के लिए गैर जरूरी वस्तुएं भी खरीदते हैं।
स) बाजार का जादू का असर शीघ्रता से होने के कारण।
द) बाजारवाद को बढ़ावा देने के कारण।

क)अ और ब दोनों गलत है।
ख) अ और ब दोनों सही है।
ग) स और द सही है।
घ) सभी वाक्य गलत है।

प्रश्न 5. मन खाली होने पर मनुष्य कार्य करता है। अनुचित वाक्य बताइए-

क) जब मानव का मन खाली होता है तो बाजार में अनाप-शनाप खरीदारी की जाती हैं।
ख) बाजार की सुंदरता को देख मनुष्य उसके जाल में फंस जाता है।
ग) मनुष्य बाजार से बिना कुछ वस्तुएं खरीदें वापस अपने घर आ जाता है।
घ) रंग बिरंगी लाइटों से प्रभावित होकर महंगी ड्रेस खरीद कर ले आता है।

पठित गद्यांश-02

बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है और जो नही जानते कि वे क्या चाहते है, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व मे अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति (शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति) ही बाज़ार को देते है। न तो वे बाज़ार से लाभ उठा सकते है, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते है। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते है। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते है। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर सद्भाव की घटी।

1.बाज़ार का बाज़ारूपन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

a)अविश्वास बढ़ाना
b)सद्भाव घटाना
c)कपट बढ़ाना
d)कपट के बढ़ने से सद्भाव का घटना

2.बाजार को सार्थकता कौन दे सकता है?

a)जरूरतमंद व्यक्ति
b)जिज्ञासु व्यक्ति
c)स्वार्थी व्यक्ति
d)धनवान व्यक्ति

3.पर्चेजिंग पावर क्या है?

a)बाजार देखना
b)क्रयशक्ति
c)विक्रय शक्ति
d)बाजार घूमना

4.पर्चेजिंग पावर से बाज़ार का अहित कैसे होता है?

a)महँगाई बढ़ना
b)बाजारूपन का बढ़ना
c)भ्रम फैलना
d)छल-कपट बढ़ना

5.विनाशक,शैतानी क्रय शक्ति का जन्म बाजार में कब होता है?

a)धन खर्चने से
b)गर्व से युक्त होकर फिजूलखर्च करने पर
c)गर्व भावना से
d)दिखावा करने से

6.बाज़ार दर्शन पाठ के आधार पर लेखक भगत को चूरन बेचते हुए कितने वर्षों से देख रहा है?

a)आठ वर्षों से
b)बारह वर्षों से
c)चौदह वर्षों से
d)दस वर्षों से

7.बाज़ार दर्शन पाठ के आधार पर धन की ओर कौन झुकता है?

a)निर्धन
b)विवश
c)इनमें से कोई नहीं
d)निर्बल

8."बाजार दर्शन" निबंध में लेखक के पड़ोसी कौन थे?

a)चरणदास
b)भगत जी
c)चटनी वाला
d)भक्तिन

9.बाज़ार में एक ____ होता है।

a)मालिक
b)भूत
c)जादू
d)सेवक

उत्तर –

1.(d) कपट के बढ़ने से सद्भाव का घटना

2. (a) जरूरतमंद व्यक्ति

3. (b) क्रयशक्ति

4. (b) बाजारूपन का बढ़ना

5. (b) गर्व से युक्त होकर फिजूलखर्च करने पर

6. (d) दस वर्षों से

7. (d) निर्बल

व्याख्या: निर्बल व्यक्ति धन की ओर झुकता है।

8.(b) भगत जी

व्याख्या: लेखक के पड़ोसी भगत जी थे जो चूरन बेचा करते थे।

9.(c) जादू

व्याख्या: बाज़ार में एक जादू है। यह जादू तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाज़ार की चीजें निमंत्रण देती हैं।

पठित गद्यांश-03

पैसे की व्यंग्य-शक्ति की सुनिए। वह दारुण है। मैं पैदल चल रहा हूँ कि पास ही धूल उड़ाती निकल गई मोटर। वह क्या निकली मेरे कलेजे को कौंधती एक कठिन व्यंग्य की लीक ही आर-से-पार हो गई। जैसे किसी ने आँखों में उँगली देकर दिखा दिया हो कि देखो, उसका नाम है मोटर, और तुम उससे वंचित हो! यह मुझे अपनी ऐसी विडंबना मालूम होती है कि बस पूछिए नहीं। मैं सोचने को हो आता हूँ कि हाय, ये ही माँ-बाप रह गए थे जिनके यहाँ मैं जन्म लेने को था! क्यों न मैं मोटरवालों के यहाँ हुआ! उस व्यंग्य में इतनी शक्ति है कि ज़रा में मुझे अपने सगों के प्रति कृतघ्न कर सकती है।

लेकिन क्या लोकवैभव की यह व्यंग्य-शक्ति उस चूरन वाले अर्किंचित्कर मनुष्य के आगे चूर-चूर होकर ही नहीं रह जाती? चूर-चूर क्यों, कहो पानी-पानी।

तो वह क्या बल है जो इस तीखे व्यंग्य के आगे ही अजेय ही नहीं रहता, बल्कि मानो उस व्यंग्य की क्रूरता को ही पिघला देता है?

उस बल को नाम जो दो; पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

1.पैसों की व्यंग्य शक्ति क्या कर सकती है?

a)अपनों के प्रति कृतज्ञ
b)अपनों के प्रति कृतघ्न
c)दूसरों के प्रति कृतज्ञ
d)सोचने को विवश

2.मनुष्य का धन की ओर झुकना क्या है?

a)धन पर मनुष्य की विजय
b)जड़ पर चेतन की विजय
c)मनुष्य पर धन की विजय
d)मनुष्य पर मनुष्य की विजय

3.एक व्यक्ति की निर्बलता किससे प्रमाणित होती है?

a)धन की चाहत से b)बल नहीं होने से

c)धन नहीं होने से d)धन होने से

4.प्रस्तुत गद्यांश में लेखक किस बल की बात कर रहा है?

a)जो मनुष्य को योग्य बनाता है b)जो वैभव की व्यंग्य-शक्ति को तोड़ देता है

c)जो मनुष्य को सबल बनाता है d)जो संसारी वैभव को बढ़ावा देता है

5.अकिंचित्कर शब्द का क्या अर्थ है?

a)महत्व b)भयावह

c)अर्थहीन d)अर्थवान

6.बाज़ार दर्शन पाठ में लेखक के कितने मित्रो का जिक्र हुआ है?

a)तीन b)चार

c)दो d)एक

7.जैनेन्द्र का पहला उपन्यास क्या है?

a)त्यागपत्र b)सुनीता

c)परख d)मुक्तिबोध

8.जैनेन्द्र को किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया?

a)त्यागपत्र b)समय और हम

c)मुक्तिबोध d)पाज़ेब

9.बाज़ार दर्शन पाठ के अनुसार इस संसार में पूर्ण कौन है?

a)प्रकृति b)योगी

c)परमात्मा d)मनुष्य

उत्तर –

1.(b) अपनों के प्रति कृतघ्न

2. (c) मनुष्य पर धन की विजय

3. (a) धन की चाहत से

4. (b) जो वैभव की व्यंग्य-शक्ति को तोड़ देता है

5. (c) अर्थहीन

6. (c) दो

व्याख्या: पाठ में लेखक के दो मित्रों का जिक्र हुआ है।

7. (c) परख

व्याख्या:जैनेन्द्र का पहला उपन्यास परख है, जो 1929 में प्रकाशित हुआ था।

8.(c) मुक्तिबोध

व्याख्या:जैनेन्द्र को उनके उपन्यास मुक्तिबोध के लिए 1966 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

9.(c) परमात्मा

व्याख्या:पाठ के अनुसार इस संसार में परमात्मा संपूर्ण है। वह शून्य होने का अधिकार रखता है, परंतु मनुष्य अपूर्ण है। उसमें इच्छा बनी रहती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बाजार दर्शन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर:-बाजार दर्शन से अभिप्राय है -बाजार के बारे में बताना। लेखक ने बाजार की प्रवृत्ति, ग्राहक के प्रकार, आधुनिक ग्राहकों की सोच आदि के बारे में पाठकों को बताया है।

2. लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है, इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:-बाजार की चमक -दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने को विवश हो जाते हैं।

3. बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर:-मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नहीं करते वह भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

4. जेब भरी हो और मन खाली तो हमारी क्या दशा होती है?

उत्तर:- जेब भरी हो और मन खाली हो तो हमारे ऊपर बाजार का जादू खूब असर करता है। मन, खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण मन तक पहुंच जाता है और उस समय यदि जेब भरी हो तो मन हमारे नियंत्रण में नहीं रहता।

5. पैसे की व्यंग -शक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर:-पैसे की व्यंग शक्ति का तात्पर्य है-पैसे के आधार पर अपने अभाव के कारण स्वयं को हीन समझना या अधिक पैसे के कारण स्वयं को ऊंचा समझना। पैसा ही हीनता या श्रेष्ठता का एहसास कराता है यही पैसे की व्यंग्य सकती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बाजार दर्शन पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर: 'बाजार दर्शन'निबंध में गहरी वैचारिक ता व साहित्य के सुलभ लालित्य का सहयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद में बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। लेखक अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना देती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं ।इसके विपरीत, बाजार की चमक -दमक में फंसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं।

प्रश्न 2. भगत जी बाजार को सार्थक और समाज को शांत कैसे कर रहे हैं? बाजार दर्शन पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर: भगत जी निम्नलिखित तरीके से बाजार को सार्थक और समाज को शांत कर रहे हैं-

*निश्चित समय पर चूर्ण बेचने के लिए निकलते हैं।

*छः आने की कमाई होते ही बचे चूर्ण को बच्चों में मुफ्त बांट देते हैं।

*बाजार में जीरा व नमक खरीदते हैं।

*सभी का अभिवादन करते हैं।

*बाजार के आकर्षण से दूर रहते हैं।

*अपने चूर्ण का व्यवसायिक तौर पर उत्पादन नहीं करते।

प्रश्न 3. कैसे लोग बाजार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं? वे 'बाजारूपन' को कैसे बढ़ाते हैं?

उत्तर:-लेखक कहता है कि समाज में कुछ लोग क्रय शक्ति के बल पर बाजार से वस्तुएं खरीदते हैं, परंतु उन्हें अपनी जरूरत का पता ही नहीं होता। ऐसे लोग बाजार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे धन के बल पर बाजार में कपट को बढ़ावा देते हैं। वे समाज में असंतोष बढ़ाते हैं। सामान्य लोगों के सामने अपनी क्रय -शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। वे शान के लिए उत्पाद खरीदते हैं। इस प्रकार से वे बाजारूपन को बढ़ाते हैं।

प्रश्न 4 लेखक किसी बाजार को मानवता के लिए विडंबना कहा है और क्यों?

उत्तर:-लेखक ने ऐसे बाजार को मानवता के लिए विडंबना कहा है जिसमें लोग आवश्यकता पूर्ति हेतु क्रय विक्रय नहीं करते अपितु परचेजिंग पावर का प्रदर्शन करते हैं। ऐसे बाजार में कपट बढ़ता है, सद्भाव नष्ट होता है, परस्पर भाई-भाई के संबंध में रहकर शोषण के संबंध बन जाते हैं। इसे बाजार में सभी लोग दूसरे की हानि करके अपना लाभ कमाना चाहते हैं। ऐसा व्यापार पूरी मानवता के लिए अभिशाप है। इसमें मानव की हानि भी अधिक होती है। बाजार का जो मूल लक्ष्य है- आवश्यकता में काम आना, वह भी नहीं हो पाता।

प्रश्न 5 लेखक के दोनों मित्रों की स्वभाव में कौन सी समानता और असमानता दिखाई देती है?

उत्तर:-समानता-लेखक के दोनों मित्र बाजार में खाली मन से गए। पहला मित्र थोड़ा सा सामान लेने का लक्ष्य अवश्य रख कर गया, किंतु उसका मन कुछ भी खरीदने के लिए खाली था। दूसरा मित्र भी निर् उद्देश्य बाजार में घूमने गया। दोनों बाजार के आकर्षण जाल में फंस गए। यह अलग बात है कि एक ने कुछ खरीदा, परंतु दूसरा सोचता ही रह गया।

असमानता-पहले मित्र में पैसे की गर्मी अधिक है। वह उत्साही है। वह पैसा बहाना जानता है। दूसरा मित्र दुविधा ग्रस्त हैं। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले पाता।

पाठ सं-13

काले मेघा पानी दे

(धर्मवीर भारती)

पाठ का सारांश-

लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धड़ंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लँगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती हैं। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं –

काले मेघा पानी दे पानी दे, गुड़धानी दे

गगरी फूटी बैल पियासा काले मेघा पानी दे।

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर 'पानी' की पुकार लगाती थी तो घरों में सहेजकर रखे पानी से इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते तथा कीचड़ में लथपथ हो जाते। यह वह समय होता था जब हर जगह लोग गरमी में भुनकर त्राहि-त्राहि करने लगते थे; कुएँ सूखने लगते थे; नलों में बहुत कम पानी आता था, खेतों की मिट्टी में पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती थी। लू के कारण व्यक्ति बेहोश होने लगते थे।

पशु पानी की कमी से मरने लगते थे, लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता था। जब पूजा-पाठ आदि विफल हो जाती थी तो इंदर सेना अंतिम उपाय के तौर पर निकलती थी और इंद्र देवता से पानी की माँग करती थी। लेखक को यह समझ में नहीं आता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग घरों में कठिनाई से इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों फेंकते थे। इस प्रकार के अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है। अगर यह सेना इंद्र की है तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? ऐसे पाखंडों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए।

लेखक स्वयं मेढक-मंडली वालों की उमर का था। वह आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था। उसमें समाजसुधार का जोश ज्यादा था। उसे सबसे ज्यादा मुश्किल अपनी जीजी से थी जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं। जिन अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था। वे ये सब कार्य लेखक को पुण्य मिलने के लिए करवाती थीं। जीजी लेखक से इंदर सेना पर पानी फेंकवाने का काम करवाना चाहती थीं। उसने साफ़ मना कर दिया। जीजी ने काँपते हाथों व डगमगाते पाँवों से इंदर सेना पर पानी फेंका। लेखक जीजी से मुँह फुलाए रहा। शाम को उसने जीजी की दी हुई लड्डू-मठरी भी नहीं खाई। पहले उन्होंने गुस्सा दिखाया, फिर उसे गोद में लेकर समझाया। उन्होंने कहा कि यह अंधविश्वास नहीं है।

यदि हम पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे। यह पानी की बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य है। दान में देने पर ही इच्छित वस्तु मिलती है। ऋषियों ने दान को महान बताया है। बिना त्याग के दान नहीं होता। करोड़पति दो-चार रुपये दान में दे दे तो वह त्याग नहीं होता। त्याग वह है जो अपनी जरूरत की चीज को जनकल्याण के लिए दे। ऐसे ही दान का फल मिलता है। लेखक जीजी के तर्कों के आगे पस्त हो गया। फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। जीजी ने फिर समझाया कि तू बहुत पढ़ गया है। वह अभी भी अनपढ़ है। किसान भी तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ बोता है। इसी तरह हम अपने घर का पानी इन पर फेंककर बुवाई करते हैं। इसी से शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं।

ऋषि-मुनियों ने भी यह कहा है कि पहले खुद दो, तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे। यह आदमी का आचरण है जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सच है। गाँधी जी महाराज भी यही कहते हैं। लेखक कहता है कि यह बात पचास साल पुरानी होने के बावजूद आज भी उसके मन पर दर्ज है। अनेक संदर्भों में ये बातें मन को कचोटती हैं कि हम देश के लिए क्या करते हैं? हर क्षेत्र में माँगें बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। आज स्वार्थ एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, परंतु खुद अपनी जाँच नहीं करते। काले मेघ उमड़ते हैं, पानी बरसता है, परंतु गगरी फूटी की फूटी रह जाती है। बैल प्यासे ही रह जाते हैं। यह स्थिति कब बदलेगी, यह कोई नहीं जानता?

शब्दार्थ-

इंदर सेना – इंद्र के सिपाही। काँदो – कीचड़। अगवानी – स्वागत। जाँघिया – कच्छा। जयकारा – नारा, उद्घोष। छज्जा – दीवार से बाहर निकला हुआ छत का भाग। बारजा –छत पर मुँडेर के साथ वाली जगह। समवेत – सामूहिक। गुड़धानी –

गुड में मिलाकर बनाया गया लड्डू। धकियाते – धक्का देते। दुमहले – दो मंजिलों वाला। जेठ – जून का महीना। सहेजकर – सँभालकर। तर करना – अच्छी तरह भिगो देना। लोट लगाना – जमीन में लेटना। लथपथ होना – पूरी तरह सराबोर हो जाना। बदन – शरीर। हाँक – जोर की आवाज। मंडली बाँधना – समूह बनाना। टेरना – आवाज लगाना। भुनना – जलना। त्राहिमाम – मुझे बचाओ। दसतपा – भयंकर गरमी के दस दिन। पखवारा – पंद्रह दिन का समय। क्षितिज-धरती – आकाश के मिलन का काल्पनिक स्थान। खौलता हुआ – उबलता हुआ, बहुत गर्म।

कथा-विधान – धार्मिक कथाओं का आयोजन। निर्मम – कठोर। बरबादी – व्यर्थ में नष्ट करना।

पाखण्ड – ढोंग, दिखावा। संस्कार – आदत। कायम – स्थापित होना। तरकस में तीर रखना – हमले के लिए तैयार होना। खान – भंडार। सतिया –स्वास्तिक का निशान। पँजीरी – गुड़ और गेहूँ के भुने आटे से बना भुरभुरा खाद्य। हरछठ – जन्माष्टमी के दो दिन पूर्वी उत्तर प्रदेश में मनाया जाने वाला पर्व। कुल्ही – मिट्टी का छोटा बर्तन। भूजा – भुना हुआ अन्न। अरवा चावल – बिना उबाले धान से निकाला चावल। मुहफुलाना – नाराजगी व्यक्त करना। तमतमाना – क्रोध में आना। अर्घ्य – जल चढ़ाना।

ढकोसला – दिखावा। किला पस्त होना – हारना। दर्ज होना – लिखा होना। संदर्भ –प्रसंग। कचोटना – बुरा लगना। चटखारे लेना – मजे लेना। दायरा – सीमा। अंग बनना – हिस्सा बनना। झमाझम – भरपूर, निरंतर।

पाठ से संबंधित मुख्य बातें-

- काले मेघा पानी दे पाठ की विधा का नाम – संस्मरण
- पाठ की मुख्य विषयवस्तु – विज्ञान व लोक प्रचलित विश्वासों का द्वंद्व
- मुख्य पात्र – जीजी, लेखक, मेढक - मंडली
- लेखक का मत (विचारधारा) – विज्ञान सम्मत
- जीजी का मत (विचारधारा) – लोक प्रचलित विश्वास सम्मत
- भारतीय समाज के लिए प्रयुक्त विशेषण – उत्सवधर्मी
- बच्चों के समूह का नाम – इन्दरसेना,मेढकमंडली
- इन्दरसेना का प्रमुख जयकारा – गंगा मैया की जय
- पाठ में उल्लिखित हिंदी महीनों का नाम – जेठ, आषाढ़
- वर्षा के बादलों के स्वामी का नाम – इंद्र देवता
- लेखक किस संगठन/सभा का उपमंत्री था – कुमार सुधार सभा
- लेखक को संस्कार प्राप्त हुआ – आर्यसमाज से

पठित गद्यांश-01

उन लोगों के दो नाम थे-इंदर सेना या मेढक-मंडली। बिलकुल एक-दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्नस्वरूप शरीर, उनकी उछल-कूद, उनके शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ काँदो से चिढ़ते थे, वे उन्हें कहते थे मेढ़क-मंडली। उनकी अगवानी गालियों से होती थी। वे होते थे दस-बारह बरस से सोलह-अठारह बरस के लड़के, साँवला नंगा बदन सिर्फ एक जांघिया या कभी-कभी सिर्फ़ लंगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था, "बोल गंगा मैया की जय।"

जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे, बारजे से झाँकने लगती थीं और यह विचित्र नंग-धड़ंग टोली उछलती-कूदती समवेत पुकार लगाती थी –

काले मेघा पानी दे पानी दे, गुड़धानी दे

गगरी फूटी बैल पियासा काले मेघा पानी दे।

उछलते -कूदते, एक-दूसरे को धकियाते ये लोग गली में दुमहले मकान के सामने रुक जाते, पानी दे मैया, "इंदर सेना आई है|"

1.पानी माँगने वालों के नाम क्या थे?

क.इंदर सेना　　ख. मेढक मंडली

ग. केवल क सही है　　घ. क और ख दोनों सही है

2.मेढक मंडली के विषय में कौन सा कथन सत्य नहीं है –

क.जांघिया या लंगोटी पहने हुए　　ख.शोर-शराबा पूर्ण प्रदर्शन

ग.नग्नस्वरूप शरीर　　घ.अठारह से बीस बरस के लड़के

3.इंदर सेना के जयकारे की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

क.लोग भागने लगते थे　　ख.लोग उछलने कूदने लगते थे

ग.लोग सावधान हो जाते थे　　घ.उपर्युक्त सभी

4.गंगा मैया से क्या तात्पर्य है?

क.गंगा नामक औरत　　ख.गंगा नदी

ग.क और ख दोनों सही है　　घ.इनमें से कोई नहीं

5.'दुमहले' शब्द का अर्थ होगा –

क.दो महल　　ख. दो घर

ग.दो मंजिला　　घ. इनमें से कोई नहीं

पठित गद्यांश-02

वर्षा के बादलों के स्वामी, हैं इंद्र और इंद्र की सेना टोली बाँधकर कीचड़ में लथपथ निकलती, पुकारते हुए मेघों को, पानी मांगते हुए प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए | पानी की आशा पर जैसे सारा जीवन आकर टिक गया हो। बस एक बात मेरे समझ में नहीं आती थी कि जब चारों ओर पानी की इतनी कमी है तो लोग घर में इतनी कठिनाई से इकट्ठा करके रखा हुआ पानी बाल्टी भर-भरकर इन पर क्यों फेंकते हैं। कैसी निर्मम बरबादी है पानी की। देश की कितनी क्षति होती है इस तरह के अंधविश्वासों से। कौन कहता है इन्हें इंद्र की सेना? अगर इंद्र महाराज से ये पानी दिलवा सकते हैं तो खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते? क्यों मुहल्ले भर का पानी नष्ट करवाते घूमते हैं? नहीं यह सब पाखंड है। अंधविश्वास है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए और गुलाम बन गए।

1.लेखक को कौन-सी बात समझ में नहीं आती?

क.पानी की अधिकता होने पर पानी फेंकना　　ख.पानी की कमी होने पर भी पानी फेंकना

ग. क और ख दोनों सही है　　घ.इनमें से कोई नहीं

2.सत्य कथन चुनकर लिखिए –

क.पानी की अधिकता होने पर सभी पानी फेंक रहे |

ख.पानी की आशा पर जैसे सारा जीवन आकर टिक गया हो |

ग .अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों से आगे निकल गए |

घ.उपर्युक्त सभी

3. निम्नलिखित में से मेघ शब्द का पर्यायवाची है –

क.बादल ख. इंद्र

ग.पाखंड घ. इनमें से कोई नहीं

4.निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) - ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए और गुलाम बन गए।

कारण (R)- अगर इंद्र महाराज से ये पानी दिलवा सकते हैं तो खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते? क्यों मुहल्ले भर का पानी नष्ट करवाते घूमते हैं?

क.कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है |

ख.कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है |

ग.कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है |

घ.कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है |

5. पानी की बर्बादी कैसी है -

क.उज्जवल ख. कठोर

ग. निर्मम घ.उपर्युक्त सभी

पठित गद्यांश-03

मैं असल में था तो इन्हीं मेढक-मंडली वालों की उमर का, पर कुछ तो बचपन के आर्यसमाजी संस्कार थे और एक कुमारसुधार सभा कायम हुई थी उसका उपमंत्री बना दिया गया था-सो समाज-सुधार का जोश कुछ ज्यादा ही था। अंधविश्वासों के खिलाफ तो तरकस में तीर रखकर घूमता रहता था। मगर मुश्किल यह थी कि मुझे अपने बचपन में जिससे सबसे ज्यादा प्यार मिला वे थीं जीजी। यूँ मेरी रिश्ते में कोई नहीं थीं। उम्र में मेरी माँ से भी बड़ी थीं, पर अपने लड़के-बहू सबको छोड़कर उनके प्राण मुझी में बसते थे। और वे थीं उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों की खान जिन्हें कुमार सुधार सभा का यह उपमंत्री अंधविश्वास कहता था, और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता था। पर मुश्किल यह थी कि उनका कोई पूजा-विधान, कोई त्योहार अनुष्ठान मेरे बिना पूरा नहीं होता था। दीवाली है तो गोबर और कौड़ियों से गोवर्धन और सतिया बनाने में लगा हूँ, जन्माष्टमी है तो रोज आठ दिन की झाँकी तक को सजाने और पंजीरी बाँटने में लगा हूँ, हर-छठ है तो छोटी रंगीन कुल्हियों में भूजा भर रहा हूँ | किसी में भुना चना, किसी में भुनी मटर, किसी में भुने अरवा चावल, किसी में भुना गेहूं | जीजी यह सब मेरे हाथों से करातीं, ताकि उनका पुण्य मुझे मिले | केवल मुझे |

1.कुमार सुधार सभा का उपमंत्री किसे अंधविश्वास समझता था?

क.कुमार सुधार सभा की बैठकों को ख.रीति-रिवाजों, पूजा-अनुष्ठानों को

ग.गोबर से गोबर्धन बनाने को　　घ. ख और ग दोनों सही हैं

2.बेमेल को चुनकर लिखिए –

क. हर-छठ　　- कुल्हियों में भूजा भरना

ख. दीवाली　　- गोबर से गोबर्धन बनाना

ग.जन्माष्टमी　　- आठ दिन तक झांकी सजाना

घ.होली　　- रंग तैयार करना

3.जीजी के प्राण किसमें बसते थे?

क.लेखक में　　ख.मेढक मंडली में

ग. इंदरसेना में　　घ.ख और ग दोनों में

4.गद्यांश के अनुसार जीजी का व्यक्तित्व कैसा है –

i. रीति-रिवाज को मानने वाली

ii. पूजा अनुष्ठान करने वाली

iii. विधि-विधान से तीज-त्यौहार मनाने वाली

iv. लेखक को उपमंत्री बनाने में सहायता करने वाली

निम्नलिखित में से कौन सा/ कौन से विकल्प सही हैं –

क.केवल (i) सही है　　ख.केवल (ii) सही है

ग. (i), (ii) और (iii) सही हैं　　घ. (i),(ii),(iii) और (iv) सही हैं

5.जन्माष्टमी का क्या तात्पर्य है -

क. एक त्यौहार

ख. कृष्ण जी के जन्म की तिथि

ग. कृष्ण जी के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला त्यौहार

घ. उपर्युक्त सभी

पठित गद्यांश-04

लेकिन इस बार मैंने साफ़ इनकार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भरकर पानी इस गंदी मेढक-मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भरकर पानी ले गईं-उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू-मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोलीं, 'देख भइया, रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं, "तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

1. लेखक ने किस कार्य को करने से इनकार कर दिया?

क.लड्डू मठरी खाने से　　ख.मेढक मंडली पर पानी फेंकने से

ग. केवल ख सही है　　घ. क और ख दोनों सही हैं

2. ऋषि-मुनियों ने ..... को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

क. कर्म　　ख. दान

ग. धर्म　　घ. इनमें से कोई नहीं

3. जीजी का विश्वास है कि -

क.पानी का अर्घ्य देने से इंद्र भगवान पानी नहीं देंगे

ख. गरीबों को पानी देने से इंद्र भगवान पानी देंगे

ग. पानी का अर्घ्य देने से इंद्र भगवान पानी देंगे

घ. उपर्युक्त सभी

4. जब जीजी बाल्टी भरकर पानी ले गईं-उनके बूढ़े पाँव –

क.डगमगा रहे थे　　ख. काँप रहे थे

ग. दौड़ रहे थे　　घ. क और ख दोनों सही हैं

5. जीजी ने नाराज़ लेखक से क्या कहा?

क. देख भैया, रूठ मत　　ख. मेरी बात सुन

ग. यह अन्धविश्वास नहीं है　　घ. उपर्युक्त सभी

पठित गद्यांश-05

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे के समय हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि 'यथा प्रजा तथा राजा'। यह तो गाँधी जी महाराज कहते हैं।" जीजी का एक लड़का राष्ट्रीय आंदोलन में पुलिस की लाठी खा चुका था, तब से जीजी गाँधी महाराज की बात अकसर करने लगी थीं। इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आए पर ज्यों की त्यों मन पर दर्ज़ हैं | कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

1. "यथा राजा तथा प्रजा" मुहावरे का सही अर्थ चुनकर लिखिए -

क.जैसा राजा वैसी प्रजा　　ख. राजा के स्वभाव के अनुसार प्रजा का व्यवहार होता है

ग . केवल ख सही है　　घ. क और ख दोनों सही हैं

2. निम्नलिखित में कौन सा कथन गांधी जी कहते थे?

क . यथा राजा तथा प्रजा　　ख. यथा राजा यथा प्रजा

ग . यथा प्रजा तथा राजा　　घ. इनमें से कोई नहीं

3. 'आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?' वाक्य में किस स्थिति को बदलने का उल्लेख है?

क.स्वार्थ और परमार्थ　　ख. स्वार्थ और भ्रष्टाचार

ग . जनकल्याण और स्वार्थ　　घ. उपर्युक्त सभी

4. "क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं?"वाक्य में 'हम' शब्द का क्या अर्थ है –

क. नेता　　ख. अधिकारी

ग. आम जनता　　घ. इनमें से कोई नहीं

5. गद्यांश के अनुसार असत्य कथन छांटकर लिखिए -

क. स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है

ख. मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह कई बार देखा है

ग . जो सूखे के समय हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है।

घ. देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे

(उत्तर - माला)

पठित गद्यांश-1

1-घ　2-घ　3-ग　4-ख　5-ग

पठित गद्यांश-2

1-ख　2-ख　3-क　4-क　5-ग

पठित गद्यांश-3

1-घ　2-घ　3-क　4-ग　5-घ

पठित गद्यांश-4

1-घ　2-ख　3-ग　4-घ　5-घ

पठित गद्यांश-5

1-घ　2-ग　3-ख　4-ग　5-ख

महत्वपूर्ण हल -प्रश्न

प्रश्न 1:काले मेघा पानी दे,संस्मरण के लेखक ने लोक – प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कह कर उनके निराकरण पर बल दिया है। – इस कथन की विवेचना कीजिए ?

उत्तर – लेखक ने इस संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहा है। पाठ में इंदर सेना के कार्य को वह पाखंड मानता है। आम व्यक्ति इंदर सेना के कार्य को अपने-अपने तर्कों से सही मानता है, परंतु लेखक इन्हें गलत बताता है। इंदर सेना पर पानी फेंकना पानी की क्षति है जबकि गरमी के मौसम में पानी की भारी कमी होती है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण देश का बौद्धिक विकास अवरुद्ध होता है। हालाँकि एक बार इन्हीं अंधविश्वास की वजह से देश को एक बार गुलामी का दंश भी झेलना पड़ा।

प्रश्न 2: 'काले मेघा पानी दे' पाठ की 'इंदर सेना' युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती हैं-तर्क सहित उतर दीजिए।

उत्तर – इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। इंदर सेना सामूहिक प्रयास से इंद्र देवता को प्रसन्न करके वर्षा कराने के लिए कोशिश करती है। यदि युवा वर्ग के लोग समाज की बुराइयों, कमियों के खिलाफ़ सामूहिक प्रयास करें तो देश का स्वरूप अलग ही होगा। वे शोषण को समाप्त कर सकते हैं। दहेज का विरोध करना, आरक्षण का विरोध करना, नशाखोरी के खिलाफ़ आवाज उठाना-आदि कार्य सामूहिक प्रयासों से ही हो सकते हैं।

प्रश्न 3: 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर – गली-मोहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी से भुन-भुन कर त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख-सूखकर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देने वाली लू चलती थी। ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा-पाठ में लगे थे। अंत में इंद्र से वर्षा के लिए प्रार्थना करने इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

प्रश्न 4: जीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर – लेखक ने जीजी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं

(क) स्नेहशील-जीजी लेखक को अपने बच्चों से भी अधिक प्यार करती थीं। वे सारे अनुष्ठान, कर्मकांड लेखक से करवाती थीं ताकि उसे पुण्य मिलें।

(ख) आस्थावती-जीजी आस्थावती नारी थीं। वे परंपराओं, विधियों, अनुष्ठानों में विश्वास रखती थीं तथा श्रद्धा से उन्हें पूरा करती थीं।

(ग) तर्कशीला-जीजी अपनी बात के समर्थन में तर्क देती थीं। उनके तकों के सामने आम व्यक्ति पस्त हो जाता था। इंदर सेना पर पानी फेंकने के पक्ष में जो तर्क वे देती हैं, उनका कोई सानी नहीं। लेखक भी उनके समक्ष स्वयं को कमजोर मानता है।

प्रश्न 5: 'गगरी फूटी बैल पियासा' का भाव या प्रतीकार्थ देश के संदर्भ में समझाइए।

उत्तर – 'गगरी फूटी बैल पियासा' एक ओर जहाँ सूखे की ओर बढ़ते समाज का सजीव एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है वहीं यह देश की वर्तमान हालत का भी चित्रण करता है। यहाँ गाँव तथा आम लोगों के कल्याणार्थ भेजी अरबों-खरबों की राशि न जाने कहाँ गुम हो जाती है। भ्रष्टाचार का दानव इस समूची राशि को निगल जाता है और आम आदमी की स्थिति वैसी की वैसी ही रह जाती है अर्थात उसकी आवश्यकता रूपी प्यास अनबुझी रह जाती है।

6. 'काल मेघा पानी दें।' सस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता हैं-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में वर्षा न होना, सूखा पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा न होने जैसी समस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें सत्य से परिचित कराता है। इस सत्य पर लोक प्रचलित विश्वास और सहज प्रेम की जीत हुई है क्योंकि लोग इस समस्या का हल अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने में जुट जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। लोगों में प्रचलित विश्वास इतना पुष्ट है कि वे विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते हैं।

7. धर्मवीर भारती मेंढक मंडली पर पानी डालना क्यों व्यर्थ मानते थे?

उत्तर- लेखक धर्मवीर भारती मेंढक मंडली पर पानी डालना इसलिए व्यर्थ मानता है क्योंकि चारों ओर पानी की घोर कमी हैं। लोग पीने के लिए बड़ी कठिनाई से बाल्टी भर पानी इकट्ठा करके रखे हुए हैं, जो इस मेंढक मंडली पर फेंक कर पानी की घोर बर्बादी करते हैं। इससे देश को क्षति होती है। वह पानी को यूँ फेकना अंधविश्वास के सिवा कुछ नहीं मानता है।

8. 'काले मेघा पानी दे' में लेखक ने लोक मान्यताओं के पीछे छिपे किस तर्क को उभारा है, आप भी अपने जीवन के अनुभव से किसी अंधविश्वास के पीछे छिपे तर्क को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'काले मेघा पानी दे' में लेखक ने लोक मान्यताओं के पीछे छिपे उस तर्क को उभारा है, जिसके अनुसार ऐसी मान्यता है कि जब तक हम किसी को कुछ देंगे नहीं, तब तक उससे लेने का हकदार कैसे बन सकते हैं। उदाहरणतया-यदि हम इंद्र देवता को पानी नहीं देंगे तो वे हमें पानी क्यों देंगे। इंद्र सेना पर बाल्टी भरकर पानी फेंकना ऐसी ही लोकमान्यता का प्रमाण है।

हमारे जीवन के अनुभव से अंधविश्वास के पीछे छिपा तर्क यह है कि यदि काली बिल्ली रास्ता काट जाती है तो अंधविश्वासी लोग कहते हैं कि रुक जाओ, बाद में जाना, पर मेरा तर्क यह है कि इसमें कोई सत्यता नहीं है। यह समय को बरबाद करने के अलावा कुछ नहीं है।

9. मेंढक मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक और जीजी के विचारों में क्या भिन्नता थी?

उत्तर- मेंढक मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक का विचार यह था कि यह पानी की घोर बर्बादी है। भीषण गर्मी में जब पानी पीने को नहीं मिलता हो और लोग दूरदराज से इसे लाए हों तो ऐसे पानी को इस मंडली पर फेंकना देश का नुकसान है। इसके विपरीत जीजी इसे पानी की बुवाई मानती हैं। वे कहती हैं कि सूखे के समय हम अपने घर का पानी इंदर सेना पर फेंकते हैं, तो यह भी एक प्रकार की बुवाई है। यह पानी गली में बोया जाता है जिसके बदले में गाँव, शहर, कस्बों में बादलों की फसल आ जाती है।

पाठ पर आधारित अन्य प्रश्नोत्तर

1. इन्दर सेना घर-घर जाकर पानी क्यो माँगती थी?

उत्तर- गाँव के लोग बारिश के लिए भगवान इंद्र से प्रार्थना किया करते थे। जब पूजा-पाठ व्रत आदि उपाय असफल हो जाते थे तो भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे।

2. इन्दरसेना को लेखक मेढक-मंडली क्यों कहता है, जीजी के बार-बार कहने पर भी वह इन्दरसेना पर पानी फेंकने को राजी क्यों नहीं होता?

उत्तर- इन्दरसेना का कार्य आर्यसमाजी विधारधारा वाले लेखक को अंधविश्वास लगता है, उसका मानना है कि यदि इंदरसेना देवता से पानी दिलवा सकती है तो स्वयं अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? पानी की कमी होने पर भी लोग घर में एकत्र किये हुए पानी को इंदरसेना पर फेंकते हैं। लेखक इसे पानी की निर्मम बरबादी मानता है।

3. रूठे हुए लेखक को जीजी ने किस प्रकार समझाया?

उत्तर- जीजी ने लेखक को प्यार से लड्डू मठरी खिलाते हुए निम्न तर्क दिए-

1- त्याग का महत्व- कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है।

2- दान की महत्ता- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। जो चीज अपने पास भी कम हो और अपनी आवश्यकता को भूलकर वह चीज दूसरों को दान कर देना ही त्याग है।

3- इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढाना-इंदरसेना पर पानी फेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना है।

4- पानी की बुवाई करना- जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए जमीन पर बीज डालकर बुवाई करता है वैसे ही पानी वाले बादलों की फ़सल पाने के लिए इन्दर सेना पर पानी डाल कर पानी की बुवाई की जाती है।

4. नदियों का भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है?

उत्तर- गंगा भारतीय समाज में सबसे पूज्य सदानीरा नदी है। जिसका भारतीय इतिहास में धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व है। वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है, स्वर्ग की सीढ़ी है, मोक्षदायिनी है। उसमें पानी नहीं अपितु अमृत तुल्य जल बहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ फली-फूली हैं। बड़े-बड़े नगर तीर्थस्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं ऐसे परिवेश में भारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं, हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही भारत भूमि हरी-भरी है। नदियों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते, यही कारण है कि हम भारतीय नदियों की पूजा करते हैं।

5. आजादी के पचास वर्षों के बाद भी लेखक क्यों दुखी है, उसके मन में कौन से प्रश्न उठ रहे हैं?

उत्तर- आजादी के पचास वर्षों बाद भी भारतीयों की सोच में सकारात्मक बदलाव न देखकर लेखक दुखी है। उसके मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं-

1. क्या हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं?
2. क्या हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को समझ पाए हैं?
3. राष्ट्र निर्माण में हम पीछे क्यों हैं, हम देश के लिए क्या कर रहे हैं?
4. हम स्वार्थ और भ्रष्टाचार मे लिप्त रहते हैं, त्याग में विश्वास क्यों नहीं करते?
5. सरकार द्वारा चलाई जा रही सुधारवादी योजनाएँ गरीबों तक क्यों नहीं पहुँचती है?

पाठ सं-14

पहलवान की ढोलक

फणीश्वर नाथ रेणु

पाठ का प्रतिपादय एवं सारांश

पहलवान की ढोलक' कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ़ व्यक्तिगत सत्ता-परिवर्तन नहीं, बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने की समस्या है जो लुट्टन पहलवान को लोक-कलाकार के आसन से उठाकर पेट-भरने के लिए हाय-तौबा करने वाली निरीहता की भूमि पर पटक देती है।

ऐसी स्थिति में गाँव की गरीबी पहलवानी जैसे शौक को क्या पालती? फिर भी, पहलवान जीवट ढोल के बोल में अपने आपको न सिर्फ़ जिलाए रखता है, बल्कि भूख व महामारी से दम तोड़ रहे गाँव को मौत से लड़ने की ताकत भी प्रदान करता है। कहानी के अंत में भूख-महामारी की शक्ल में आए मौत के षड्यंत्र जब अजेय लुट्टन की भरी-पूरी पहलवानी को फटे ढोल की पोल में बदल देते हैं तो इस करुणा/त्रासदी में लुट्टन हमारे सामने कई सवाल छोड़ जाता है। वह पोल पुरानी व्यवस्था की है या नई व्यवस्था की ? क्या कला की प्रासंगिक व्यवस्था की मुखापेक्षी है अथवा उसका कोई स्वतंत्र मूल्य भी है? मनुष्यता की साधना और जीवन-सौंदर्य के लिए लोक-कलाओं को प्रासंगिक बनाए रखने हेतु हमारी क्या भूमिका हो सकती है? यह पाठ ऐसे कई प्रश्न छोड़ जाता है।

सारांश-सर्दी का मौसम था। गाँव में मलेरिया व हैजे का प्रकोप था। अमावस्या की ठंडी रात में निस्तब्धता थी। आकाश के तारे ही प्रकाश के स्रोत थे। सियारों व उल्लुओं की डरावनी आवाज से वातावरण की निस्तब्धता कभी-कभी भंग हो जाती थी। कभी किसी झोपड़ी से कराहने व कै करने की आवाज तथा कभी-कभी बच्चों के रोने की आवाज आती थी। कुत्ते जाड़े के कारण राख के ढेर पर पड़े रहते थे। सायं या रात्रि को सब मिलकर रोते थे। इस सारे माहौल में पहलवान की ढोलक संध्या से प्रात:काल तक एक ही गति से बजती रहती थी। यह आवाज मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी।

गाँव में लुट्टन पहलवान प्रसिद्ध था। नौ वर्ष की आयु में वह अनाथ हो गया था। उसकी शादी हो चुकी थी। उसकी विधवा सास ने उसे पाला। वह गाय चराता, ताजा दूध पीता तथा कसरत करता था। गाँव के लोग उसकी सास को तंग किया करते थे। लुट्टन इनसे बदला लेना चाहता था। कसरत के कारण वह किशोरावस्था में ही पहलवान बन गया। एक बार लुट्टन श्यामनगर मेला में 'दंगल' देखने गया। पहलवानों की कुश्ती व दाँव-पेंच देखकर उसने 'शेर के बच्चे' को चुनौती दे डाली। 'शेर के बच्चे' का असली नाम था-चाँद सिंह। वह पहलवान बादल सिंह का शिष्य था। तीन दिन में उसने पंजाबी व पठान पहलवानों को हरा दिया था। वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था। श्यामनगर के दंगल व शिकार-प्रिय वृद्ध राजा साहब उसे दरबार में रखने की सोच रहे थे कि लुट्टन ने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी।

दर्शक उसे पागल समझते थे। चाँद सिंह बाज की तरह लुट्टन पर टूट पड़ा, परंतु वह सफ़ाई से आक्रमण को सँभालकर उठ खड़ा हुआ। राजा ने लुट्टन को समझाया और कुश्ती से हटने को कहा, किंतु लुट्टन ने लड़ने की इजाजत माँगी। मैनेजर से लेकर सिपाहियों तक ने उसे समझाया, परंतु लुट्टन ने कहा कि इजाजत न मिली तो पत्थर पर माथा पटककर मर जाएगा। भीड़ में अधीरता थी। पंजाबी पहलवान लुट्टन पर गालियों की बौछार कर रहे थे। दर्शक उसे लड़ने की अनुमति देना चाहते थे।

विवश होकर राजा साहब ने इजाजत दे दी। बाजे बजने लगे। लुट्टन का ढोल भी बजने लगा था। चाँद ने उसे कसकर दबा लिया था। वह उसे चित्त करने की कोशिश में था। लुट्टन के समर्थन में सिर्फ़ ढोल की आवाज थी, जबकि चाँद के पक्ष में राजमत व बहुमत था।

लुट्टन की आँखें बाहर निकल रही थीं, तभी ढोल की पतली आवाज सुनाई दी'धाक-धिना, तिरकट-तिना, धाक-धिना, तिरकट-तिना।' इसका अर्थ था-दाँव काटो, बाहर हो जाओ। लुट्टन ने दाँव काटी तथा लपक कर चाँद की गर्दन पकड़ ली। ढोल ने आवाज दी-चटाक्-चट्-धा अर्थात उठाकर पटक दे। लुट्टन ने दाँव व जोर लगाकर चाँद को जमीन पर दे मारा। ढोलक ने 'धिना-धिना, धिक-धिना।' कहा और लुट्टन ने चाँद सिंह को चारों खाने चित्त कर दिया। ढोलक ने 'वाह बहादुर!" की ध्वनि की तथा जनता ने माँ दुर्गा की, महावीर जी की, राजा की जय-जयकार की। लुट्टन ने सबसे पहले ढोलों को प्रणाम किया और फिर दौड़कर राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब ने उसे दरबार में रख लिया।

पंजाबी पहलवानों की जमायत चाँद सिंह की आँखें पोंछ रही थी। राजा साहब ने लुट्टन को पुरस्कृत न करके अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया। राजपंडित व मैनेजर ने लुट्टन का विरोध किया कि वह क्षत्रिय नहीं है। राजा साहब ने उनकी एक न सुनी। कुछ ही दिन में लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने सभी नामी पहलवानों को हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवान को भी हरा दिया। उसके बाद वह दरबार का दर्शनीय जीव बन गया। लुट्टन सिंह मेलों में घुटने तक लंबा चोंगा पहने, अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह झूमता चलता। हलवाई के आग्रह पर दो सेर रसगुल्ला खाता तथा मुँह में आठ-दस पान एक साथ ठूँस लेता। वह बच्चों जैसे शौक रखता था। दंगल में उससे कोई लड़ने की हिम्मत नहीं करता। कोई करता तो उसे राजा साहब इजाजत नहीं देते थे। इस तरह पंद्रह वर्ष बीत गए। उसके दो पुत्र हुए। उसकी सास पहले ही मर चुकी थी और पत्नी भी दो पहलवान पैदा करके स्वर्ग सिधार गई। दोनों लड़के पहलवान थे। दोनों का भरण-पोषण दरबार से हो रहा था।

पहलवान हर रोज सुबह उनसे कसरत करवाता। दिन में उन्हें सांसारिक ज्ञान भी देता। वह बताता कि उसका गुरु ढोल है, और कोई नहीं। अचानक राजा साहब स्वर्ग सिधार गए। नए राजकुमार ने विलायत से आकर राजकाज अपने हाथ में ले लिया। उसने पहलवानों की छुट्टी कर दी। लुट्टन ढोलक कंधे से लटकाकर अपने पुत्रों के साथ गाँव लौट आया। गाँव वालों ने उसकी झोपड़ी बना दी तथा वह गाँव के नौजवानों व चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। खाने-पीने का खर्च गाँव वालों की तरफ से बँधा हुआ था। गरीबी के कारण धीरे-धीरे किसानों व मजदूरों के बच्चे स्कूल में आने बंद हो गए। अब वह अपने लड़कों को ही ढोल बजाकर कुश्ती सिखाता।

लड़के दिनभर मजदूरी करके कमाकर लाते थे। गाँव पर अचानक संकट आ गया। सूखे के कारण अन्न की कमी हो गई तथा फिर मलेरिया व हैजा फैल गया। घर के घर खाली हो गए। प्रतिदिन दो-तीन लाशें उठने लगीं। लोग एक-दूसरे को ढाँढ़स देते तथा शाम होते ही घरों में घुस जाते। लोग चुप रहने लगे। ऐसे समय में केवल पहलवान की ढोलक ही बजती थी जो गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति भरती थी। एक दिन पहलवान के दोनों बेटे भी चल बसे। पहलवान सारी रात ढोल पीटता रहा। दोनों पेट के बल पड़े हुए थे। उसने लंबी साँस लेकर कहा-दोनों बहादुर गिर पड़े। उस दिन उसने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जाँघिया पहनी और सारे शरीर पर मिट्टी मलकर थोड़ी कसरत की फिर दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया। इस घटना के बाद गाँव वालों की हिम्मत टूट गई।

रात में फिर पहलवान की ढोलक बजने लगी तो लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। चार-पाँच दिनों के बाद एक रात ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। सुबह उसके शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश 'चित' पड़ी है। शिष्यों ने बताया कि उसके गुरु ने कहा था कि उसके शरीर को चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह कभी 'चित' नहीं हुआ और चिता सुलगाने के समय ढोल जरूर बजा देना।

शब्दार्थ-

अमावस्या-चाँद रहित रात। भयात-भय से पीड़ित। सन्नाटा-चुप्पी। साम्राज्य-राज्य। निस्तब्धता-गतिहीनता। चेष्टा-कोशिश। ज्योति-प्रकाश। क्रदन-विलाप, रोना। पेचक-उल्लू। कै-उल्टी। टेर-पुकार। कठ-गला। बाधा-रुकावट। ताड़ना-भाँपना। घूरा-गंदगी का ढेर। मन मारना-उदास होना, इच्छा को समाप्त करना। भीषणता-भयंकरता। ताल ठोकना-चुनौती देना। ललकारना-लड़ने का निमंत्रण देना। सजीवनी-जीवन देने वाली।

अनुसरण करना-पीछे-पीछे चलना। धारोष्ण-दुधारू पशु के थनों से निकला ताजा दूध। किशोरावस्था-10 से 15 वर्ष की आयु। मांसल-जिस पर मांस चढ़ गया हो। दाँव-पेंच-तौर-तरीके, तकनीक। बिजली उत्पन्न करना-तेजी से जगा देना। चुनौती-ललकार। गिरोह-समूह। पट्ठा-पहलवान। टायटिल-पदवी। किलकारी भरना-खुशी प्रकट करने के लिए गले से आवाजें निकालना। दुलकी लगाना-उछल-उछल कर खेलना। किंचित-शायद। स्पर्धा-मुकाबला। खलबली मचना-हड़कंप मचना।

गोश्त-मांस। दुहाई-विनती। अधीर-व्याकुल। जमायत-सभा। बौछार करना-अत्यधिक देना। यक्ष-समर्थन। प्रतिद्वंद्वी-मुकाबला करने वाला। विवश-मजबूर। हलुआ होना-पूरी तरह कुचला जाना। चित्त करना-जमीन पर पीठ लगाना, हराना।

सीमा न रहना-बहुत अधिक होना। जनमत-लोगों का समर्थन। जय-ध्वनि-जय-जयकार। सन जाना-भर जाना, लथपथ हो जाना। गदगद होना-खुश होना। लाज रखना-सम्मान बचाना। पुरस्कृत-इनाम देना। मुंह बिचकाना-घृणा भाव व्यक्त करना। संकुचित-सिकुड़ा हुआ। कीर्ति-यश। स्नेह-दृष्टि-प्यार की नजर। चार चाँद लगाना-शान को अधिक बढ़ा देना। आसमान दिखाना-हरा देना। टूट पड़ना-हमला करना। लकवा मारना-पंगु होना।

दर्शनीय-देखने योग्य। अस्त-व्यस्त-बिखरा हुआ। मतवाला-मस्त। चुहल-शरारत। उदरस्थ-पेट में डालकर। हुलिया-रूपसज्जा। अबरख-रंगीन चमकीला कागज। वृद्धि-बढ़ोतरी। देह-शरीर, तन। अजेय-जिसे जीता न जा सके। अनायास-बिना प्रयास के। प्रताप-शक्ति।पानी फिरना-समाप्त होना। शिथिलता-ढिलाई। चपेटाघात-लपेट में लेकर आघात करना। टैरिबुल-भयानक। हरिबुल-महाभयंकर। साफ जवाब मिलना-इन्कार कर देना। चरवाहा-पशु चराने वाला। वज्रपात-वज्र गिरना। अनावृष्टि-अकाल, सूखा पड़ना। कलरव-मंद और मधुर स्वर। हाहाकार-चीख-पुकार। प्रभा-ज्योति, प्रकाश। दृष्टिगोचर होना-दिखाई देना। काँखते-कूंखते-सूखी खाँसी खाँसते हुए। आत्मीय-अपने। ढाँढ़स-तसल्ली।

विभीषिका-भयानक दशा। अर्धमृत-अधमरा। संजीवनी शक्ति-जीवन देने वाली शक्ति। स्पंदन-शक्तिशून्य-धड़कन की शक्ति से रहित। स्नायु-नसें । सर्वनाश-सब कुछ नष्ट करना। आँख मूंदना-मृत्यु होना। क्रूर काल-कठोर मृत्यु। असहाय वेदना-जिस कष्ट को सहा न जा सके। निस्पद-भावनाहीन, चेतनाहीन। दंग रहना-हैरान रहना। हिम्मत टूटना-निराश होना। संतप्त-दुखी। डेढ़ हाथ का कलेजा-सहनशील। दिलेर-बहादुर। रुग्ण-बीमार।

पठित गद्यांश-01

शांत दर्शकों की भीड़ में खलबली मच गई-'पागल है पागल, मरा-ऐं! मरा-मरा।'... पर वाह रे बहादुर! लुट्टन बड़ी सफाई से आक्रमण को सँभालकर निकलकर उठ खड़ा हुआ और पैंतरा दिखाने लगा। राजा साहब ने कुश्ती बंद करवाकर लुट्टन को

अपने पास बुलवाया और समझाया। अंत में, उसकी हिम्मत की प्रशंसा करते हुए, दस रुपये का नोट देकर कहने लगे- "जाओ, मेला देखकर घर जाओ।..."

1.शांत भीड़ में खलबली क्यों मच गई?

a.चाँद सिंह द्वारा लुट्टन सिंह को झपटकर दबोच लेने के कारण

b.भीड़ में उपद्रवियों के घुस आने के कारण

c.राजा द्वारा कुश्ती न करने का आदेश देने के कारण

d.सभी विकल्प सही हैं

2.राजा ने किसे अपने पास बुला लिया?

a.बादल सिंह को

b.लुट्टन सिंह को

c.चाँद सिंह को

d.भीड़ के एक व्यक्ति को

3.राजा साहब ने लुट्टन सिंह की प्रशंसा क्यों की?

a.क्योंकि उसने गाँव के लोगों की सहायता की

b.क्योंकि उसने चाँद सिंह को कुश्ती की चुनौती दी थी

c.क्योंकि उसने अपने परिवार को सँभाला था

d.क्योंकि उसने कुश्ती के लिए संघर्ष किया था

4.पर वाह रे बहादुर। पंक्ति में बहादुर शब्द किस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है?

a.राजा साहब

b.मैनेजर साहब

c.लुट्टन सिंह पहलवान

d.चाँद सिंह पहलवान

5.राजा द्वारा लुट्टन सिंह को दस रुपये का नोट देकर मेला देखकर घर जाने को कहने के पीछे क्या कारण था?

a.कुश्ती लड़ने से मना करना

b.कुश्ती लड़ने के लिए तैयार करना

c.कुश्ती की प्रतियोगिता हार जाना

d.कुश्ती की प्रतियोगिता जीत जाना

6.पहलवान की ढोलक कहानी में लुट्टन को राजदरबार से हटाने का मुख्य कारण क्या था?

a.पुरानी सोच का होना

b.लुट्टन पर दैनिक व्यय

c.लुट्टन का बूढ़ा होना

d.कुश्ती हार जाना

7.राजपुरोहित और मैनेजर लुट्टन का विरोध क्यों कर रहे थे?

a.क्योंकि लुट्टन ने चाँद सिंह को हराया था

b.क्योंकि लुट्टन क्षत्रिय नहीं था

c.क्योंकि लुट्टन ने उनका कहना नहीं माना

d.क्योंकि लुट्टन कमज़ोर पहलवान था

8.लुट्टन सिंह ने किस नामी पहलवान को पटककर हरा दिया था?

a.अफजल खाँ

b.कल्लू खाँ

c.अब्दुल खाँ

d.काला खाँ

9.निम्न में से कौन सा रेणु का उपन्यास है?

a.वनतुलसी की गंध

b.ठुमरी

c.दीर्घतपा

d.नेपाली क्रांति कथा

उत्तरमाला

1.(a) चाँद सिंह द्वारा लुट्टन सिंह को झपटकर दबोच लेने के कारण

2.(b) लुट्टन सिंह को

3.(b) क्योंकि उसने चाँद सिंह को कुश्ती की चुनौती दी थी

4.(c) लुट्टन सिंह पहलवान

5. (a) कुश्ती लड़ने से मना करना

6. (b) लुट्टन पर दैनिक व्यय

व्याख्या: कहानी के अनुसार लुट्टन को राज दरबार से इसीलिए निकाल दिया गया, क्योंकि उस पर होने वाला दैनिक व्यय बहुत अधिक था और नए महाराज को कुश्ती जैसे बेकार के खेल से कुछ लेना देना नहीं था।

7.(b) क्योंकि लुट्टन क्षत्रिय नहीं था

व्याख्या:राज पंडित और मैनेजर उच्च जाति के थे और लुट्टन सिंह नीची जाति का था। राज-पंडित और मैनेजर क्षत्रिय या ब्राह्मण को राज-पहलवान बनाना चाहते थे इसलिए वे लुट्टन सिंह का विरोध कर रहे थे।

8. (d) काला खाँ

व्याख्या:लुट्टन सिंह ने काला खाँ पहलवान को पटककर हरा दिया था।

9.(c) दीर्घतपा

व्याख्या:दीर्घतपा रेणु का एक उपन्यास है, जिसमे इन्होंने महिलाओं के उत्पीड़न को चित्रित करके उजागर किया है।

पठित गद्यांश-02

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार पथ्य-विहीन, प्राणियों में यह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े, बच्चे, जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य, स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

1.पहलवान की ढोलक में किस बीमारी को रोकने की शक्ति थी?

a.बुखार को　　b.तपेदिक को

c.महामारी को　　d.इनमें से कोई नहीं

2.गाँव के वासियों में संजीवनी शक्ति भरने का काम किसने किया?

a.पहलवान ने　　b.वैद्य जनों ने

c.पहलवान की ढोलक ने　　d.राजा ने

3.गाँव के बच्चे, बूढ़े, जवानों को पहलवान की ढोलक की आवाज़ सुनते ही क्या याद आ जाता था?

a.दंगल का दृश्य　　b.मृत्यु का भय

c.रात्रि का अंधकार　　d.राजा की दयालुता

4.ढोलक की आवाज़ को सुनकर बिना किसी तकलीफ के अपने प्राण कौन त्याग देता था?

a.चाँद सिंह b.लुट्टन सिंह

c.स्वस्थ व्यक्ति d.मरता हुआ व्यक्ति

5.गाँव के लोगों की कैसी स्थिति थी?

a.अर्द्धमृत और औषधि उपचार पथ्य विहीन दोनों b.संतोषजनक

c.अर्द्धमृत d.औषधि उपचार पथ्य विहीन

6.लुट्टन के माता-पिता उसे किस उम्र में अनाथ बना कर चल बसे थे?

a.आठ वर्ष b.दस वर्ष

c.नौ वर्ष d.ग्यारह वर्ष

7.सर्वप्रथम आंचलिक शब्द का प्रयोग किसने किया?

a.जैनेन्द्र b.विष्णु खरे

c.फणीश्वरनाथ रेणु d.धर्मवीर भारती

8.पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर दंगल का स्थान किसने ले लिया था?

a.क्रिकेट ने b.घोड़ों की रेस ने

c.भाला फेंक ने d.फुटबाल ने

9.रेणु द्वारा लिखित कौन सा कहानी संग्रह नहीं है?

a.ठुमरी b.दीर्घतपा

c.अग्निखोर d.आदिम रात्रि की महक

उत्तरमाला

1.(d) इनमें से कोई नहीं

2. (c) पहलवान की ढोलक ने

3. (a) दंगल का दृश्य

4. (d) मरता हुआ व्यक्ति

5. (a) अर्द्धमृत और औषधि उपचार पथ्य विहीन दोनों

6. (c) नौ वर्ष

व्याख्या:लुट्टन पहलवान जब नौ वर्ष का था, तब उसके माता - पिता का स्वर्गवास हो गया था।

7. (c) फणीश्वरनाथ रेणु

व्याख्या:रेणु ने सर्वप्रथम आंचलिक शब्द का प्रयोग 1954 में प्रकाशित अपने उपन्यास मैला आँचल की भूमिका में किया था।

8.(b) घोड़ों की रेस ने

9. (b) दीर्घतपा

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'ढोल में तो जैसे पहलवान की जान बसी थी' - 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर- लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मँजे हुए पहलवान को ललकार बैठा, तो सारा जनसमूह, राजा और पहलवानों की समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। हालाँकि लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज़्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह ने थी। हाँ ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने 'शेर के बच्चे' को खूब धोया, उठा-उठा कर पटका और हरा दिया। इस जीत में एक मात्र ढोल ही उसके साथ था। अतः जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा और उसे प्रणाम किया।

2. 'पहलवान की ढोलक' कहानी के प्रारंभ में चित्रित प्रकृति का स्वरूप कहानी की भयावहता की ओर संकेत करता है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- कहानी के प्रारंभ में प्रकृति का स्वरूप कहानी की भयावहता की ओर संकेत करता है। रात के भयावह वर्णन में बताया गया है कि चारों तरफ सन्नाटा है। सियारों का क्रंदन व उल्लू की डरावनी आवाज निस्तब्धता को कभी-कभी भंग कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़ सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। इससे रात्रि की निस्तब्धता में बाधा नहीं पड़ती थी।

3. पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- पहलवान लुट्टन के सुख-चैन के दिन तब शुरू हुए जब उसने चाँद सिंह को कुश्ती में हराकर अपना नाम रोशन किया। राजा ने उसे दरबार में रखा। इससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन व राजा की स्नेह-दृष्टि मिलने से उसने सभी नामी पहलवानों को जमीन सुँघा दी। अब वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह लंबा चोगा व अस्त-व्यस्त पगड़ी पहनकर मस्त हाथी की तरह चलता था। हलवाई उसे मिठाई खिलाते थे।

4. लुट्टन के राज-पहलवान बन जाने के बाद की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- लुट्टन जब राज-पहलवान बन गया तो उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन मिलने से वह राज दरबार का दर्शनीय जीव बन गया। ठाकुरबाड़े के सामने पहलवान गरजता-'महावीर'। लोग समझ लेते पहलवान बोला। मेलों में वह घुटने तक लंबा चोगा पहनकर अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह चलता था। मेले के दंगल में वह लँगोट पहन, शरीर पर मिट्टी मलकर स्वयं को साँड़ या भैंसा साबित करता रहता था।

5. 'पहलवान की ढोलक' कहानी का प्रतिपाद्य बताइए।

अथवा

'पहलवान की ढोलक' पात्र के आधार पर लुट्टन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर- लुट्टन पहलवान के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(i) व्यक्तित्व-लुट्टन सिंह लंबा-चौड़ा व ताकतवर व्यक्ति था। वह लंबा चोगा व अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधता था। वह इकलौती संतान था। नौ वर्ष की आयु में उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। उसका पालन-पोषण विधवा सास ने किया थीं।

(ii) भाग्यहीन-लुट्टन का भाग्य शुरू से ही खराब था। बचपन में माता-पिता गुजर गए। पत्नी युवावस्था में ही चल बसी थी। गाँव की महामारी की भेंट उसके दोनों लड़के चढ़ गए। इस प्रकार वह सदैव पीड़ित रहा।

(iii) साहसी-लुट्टन साहसी था। उसने इसके बल पर चाँद सिंह जैरो पहलवान को चुनौती दी तथा उसे हराया। 'काला खाँ' जैसे पहलवान को भी चित कर दिया। महामारी में भी वह सारी रात ढोल बजाता था।

(iv) संवेदनशील-लुट्टन में संवेदना थी। वह अपनी सास पर हुए अत्याचारों को सहन नहीं कर सका और पहलवान बन गया। गाँव में महामारी के समय निराशा का माहौल था। ऐसे में वह रात में ढोल बजाकर लोगों में जीने के लिए उत्साह पैदा करता था।

6. 'पहलवान की ढोलक' कहानी का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने को रेखांकित करती है। राजा साहब के मरते ही नयी व्यवस्था ने जन्म लिया। पुराने संबंध समाप्त कर दिए गए। पहलवानी जैसा लोकखेल समाप्त कर दिया गया। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने का प्रतीक है। यह व्यवस्था लोक कलाकार को भूखा मरने पर मजबूर कर देती है।

7. लुट्टन को गाँव वापस क्यों लौटना पड़ा?

उत्तर- तत्कालीन राजा कुश्ती के शौकीन थे, परन्तु उनकी मृत्यु के बाद विलायत से शिक्षा पाए राजकुमार ने सत्ता सँभाली। उन्होंने राजकाज से लेकर महल के तौर-तरीकों में भी परिवर्तन कर दिए। मनोरंजन के साधनों में कुश्ती का स्थान घुड़सवारी ने ले लिया। अतः पहलवानों पर राजकीय खर्च का बहाना बनाकर उन्हें जवाब दे दिया गया। इस कारण लुट्टन को गाँव वापस लौटना पड़ा।

8. पहलवान के बेटों की मृत्यु पर गाँववालों की हिम्मत क्यों टूट गई?

उत्तर- पहलवान के दोनों बेटे गाँव में फैली महामारी की चपेट में आकर चल बसे। इस घटना से गाँववालों की हिम्मत टूट गई क्योंकि वे पहलवान को अपना सहारा मानते थे। अब उन्हें लगा कि पहलवान अंदर से टूट जाएगा तथा उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं रहेगा।

9. 'पहलवान की ढोलक; कहानी में किस प्रकार पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या को व्यस्त किया गया है? लिखिए।

उत्तर- 'पहलवान की ढोलक' कहानी में पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या यह है-

(i) पुरानी व्यवस्था में कलाकारों और पहलवानों को राजाओं का आश्रय एवं संरक्षण प्राप्त था। वे शाही खर्चे पर जीवित रहते थे, पर नई व्यवस्था में ऐसा न था।

(ii) पुरानी व्यवस्था में राजदरबार और जनता द्वारा इन कलाकारों को मान-सम्मान दिया जाता था, पर नई व्यवस्था में उन्हें सम्मान देने का प्रचलन न रहा।

पाठ पर आधारित अन्य प्रश्नोत्तर

1. लुट्टन को पहलवान बनने की प्रेरणा कैसे मिली?

उत्तर- लुट्टन जब नौ साल का था तो उसके माता-पिता का देहांत हो गया था। सौभाग्य से उसकी शादी हो चुकी थी। अनाथ लुट्टन को उसकी विधवा सास ने पाल-पोसकर बड़ा किया। उसकी सास को गाँव वाले परेशान करते थे। लोगों से बदला लेने के लिए उसने पहलवान बनने की ठानी। धारोष्ण दूध पीकर, कसरत कर उसने अपना बदन गठीला और ताकतवर बना लिया। कुश्ती के दाँवपेंच सीखकर लुट्टन पहलवान बन गया।

2. रात के भयानक सन्नाटे में लुट्टन की ढोलक क्या करिश्मा करती थी?

उत्तर- रात के भयानक सन्नाटे में लुट्टन की ढोलक महामारी से जूझते लोगों को हिम्मत बँधाती थी। ढोलक की आवाज से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था। महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली-सी दौड़ जाती थी, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले लगा लेते थे। इस प्रकार ढोल की आवाज, बीमार-मृतप्राय गाँववालों की नसों में संजीवनी शक्ति को भर बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

3. लुट्टन ने सर्वाधिक हिम्मत कब दिखाई?

उत्तर- लुट्टन सिंह ने सर्वाधिक हिम्मत तब दिखाई जब दोनों बेटों की मृत्यु पर वह रोया नहीं बल्कि हिम्मत से काम लेकर अकेले उनका अंतिम संस्कार किया। यही नहीं, जिस दिन पहलवान के दोनों बेटे महामारी की चपेट में आकर मर गए पर उस रात को भी पहलवान ढोलक बजाकर लोगों को हिम्मत बँधा रहा था। श्यामनगर के दंगल में पूरा जनसमुदाय चाँद सिंह के पक्ष में था चाँद सिंह को हराते समय लुट्टन ने हिम्मत दिखाई और बिना हताश हुए दंगल में चाँद सिंह को चित कर दिया।

4. लुट्टन सिंह राज पहलवान कैसे बना?

उतर- श्यामनगर के राजा कुश्ती के शौकीन थे। उन्होंने दंगल का आयोजन किया। पहलवान लुट्टन सिह भी दंगल देखने पहुँचा। चांदसिंह नामक पहलवान जो शेर के बच्चे के नाम से प्रसिद्ध था, कोई भी पहलवान उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं करता था। चाँदसिंह अखाड़े में अकेला गरज रहा था। लुट्टन सिंह ने चाँदसिंह को चुनौती दे दी और चाँदसिंह से भिड़ गया। ढोल की आवाज सुनकर लुट्टन की नस-नस में जोश भर गया। उसने चाँदसिंह को चारों खाने चित कर दिया। राजासाहब ने लुट्टन की वीरता से प्रभावित होकर उसे राजपहलवान बना दिया।

5. पहलवान की अंतिम इच्छा क्या थी?

उत्तर- पहलवान की अंतिम इच्छा थी कि उसे चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह जिंदगी में कभी चित नहीं हुआ था। उसकी दूसरी इच्छा थी कि उसकी चिता को आग देते समय ढोल अवश्य बजाया जाए।

6. ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँवपेंच में संबंध बताइए।

उत्तर- ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँवपेंच में संबंध

चट धा, गिड़ धा -आजा भिड़ जा।

चटाक चट धा -उठाकर पटक दे।

चट गिड़ धा - मत डरना।

धाक धिना तिरकट तिना - दाँव काटो, बाहर हो जाओ।

धिना धिना, धिक धिना -चित करो

पाठ सं-17

शिरीष के फूल

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

पाठ का सारांश-

लेखक शिरीष के पेड़ों के समूह के बीच बैठकर लेख लिख रहा है। जेठ की गरमी से धरती जल रही है। ऐसे समय में शिरीष ऊपर से नीचे तक फूलों से लदा है। कम ही फूल गरमी में खिलते हैं। अमलतास केवल पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है। कबीरदास को इस तरह दस दिन फूल खिलना पसंद नहीं है। शिरीष में फूल लंबे समय तक रहते हैं। वे वसंत में खिलते हैं तथा भादों माह तक फूलते रहते हैं। भीषण गर्मी और लू में यही शिरीष अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का मंत्र पढ़ाता रहता है। शिरीष के वृक्ष बड़े व छायादार होते हैं| पुराने रईस मंगल-जनक वृक्षों में शिरीष को भी लगाया करते थे । वात्स्यायन कहते है कि बगीचे के घने छायादार वृक्षों में ही झूला लगाना चाहिए। पुराने कवि बकुल के पेड़ में झूला डालने के लिए कहते हैं, परंतु लेखक शिरीष को भी उपयुक्त मानता है। शिरीष की डालें कुछ कमज़ोर होती हैं, परंतु उस पर झूलनेवालियों का वज़न भी कम ही होता है। शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कोमल माना जाता है। कालिदास ने लिखा कि शिरीष के फूल केवल भौंरों के पैरों का दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का नहीं। इसके आधार पर भी इसके फूलों को कोमल माना जाने लगा पर इसके फलों की मज़बूती नहीं देखते। तभी स्थान छोड़ते हैं, जब उन्हें धकिया दिया जाता है। लेखक को उन नेताओं की याद आती है जो समय को नहीं पहचानते तथा धक्का देने पर ही पद को छोड़ते हैं। सोचता हूं कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती। वृद्धावस्था व मृत्यु-ये जगत के सत्य है। शिरीष के फूलो को भी समझना चाहिए कि झड़ना निश्चित है, परंतु सुनता कोई नहीं। मृत्यु का देवता निरंतर कोड़े चला रहा है। उसमें कमज़ोर समाप्त हो जाते हैं। प्राणधारा व काल के बीच संघर्ष चल रहा है। हिलने-डुलने वाले कुछ समय के लिए बच सकते हैं। झड़ते ही मृत्यु निश्चित है। लेखक को शिरीष अवधूत की तरह लगता है। वह हर स्थिति में ठीक रहता है। भयंकर गरमी में भी यह अपने लिए जीवन-रस ढूँढ लेता है। एक वनस्पतिशास्त्री ने बताया कि यह वायुमंडल से अपना रस खींचता है तभी तो भंयकर लू में ऐसे सुकुमार केसर उगा सका। अवधूतों के मुँह से भी संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं| कबीर व कालिदास उसी श्रेणी के हैं। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जिससे लेखा-जोखा मिलता है, वह कवि नहीं है। कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिका देवी ने ब्रह्मा बाल्मीकि व व्यास को ही कवि माना। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसका फक्कड़ होना बहुत ज़रूरी है। कालिदास अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ, विदग्ध प्रेमी थे। उनका एक-एक श्लोक मुग्ध करने वाला है। शकुंतला का वर्णन कालिदास ने किया। राजा दुष्यंत ने भी शंकुतला का चित्र बनाया, परंतु उन्हें हर बार इसमें कमी महसूस होती थी। काफी देर बाद उन्हें समझ आया कि शंकुतला के कानों में शिरीष का 'फूल लगाना भूल गए हैं। कालिदास सौंदर्य के बाहरी आवरण को भेदकर उसके भीतर पहुँचने में समर्थ थे। वे सुख-दुख दोनों में भाव-रस खींच लिया करते थे। ऐसी प्रकृति सुमित्रानंदन पंत व रवींद्रनाथ में भी थी। शिरीष पक्के अवधूत को तरह लेखक के मन में भाव तरंगें उठा देता है। वह आग उगलती धूप में भी सरस बना रहता है। आज देश में मारकाट, आगजनी, लूटपाट आदि का बवंडर है। ऐसे में क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। गाँधी जी भी रह सके थे। ऐसा तभी संभव हुआ है जब वे वायुमंडल से रस खींचकर कोमल व कठोर बने। लेखक जब शिरीष की ओर देखता है तो हूक उठती है--हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!

शब्दार्थ-

धरित्री- पृथ्वी। निर्धूम- धुआँरहित। कर्णिकार- कनेर या कनियार नामक फूल। आरग्वध- अमलतास नामक फूल। लहकना- खिलना। खंखड़- ठूँठ, शुष्क। दुमदार- पूँछवाले। लंडूरे- पूँछ विहीन। निर्घात- बिना आघात या बाधा के। उमस- गर्मी। लू- गर्म हवाएँ। कालजयी- समय को पराजित करने वाला। अवधूत- सांसारिक मोहमाया से विरक्त मानव। नितांत- पूरी तरह से। हिल्लोल- लहर। अरिष्ठ- रीठा नामक वृक्ष। पुन्नाग- एक बड़ा सदाबहार वृक्ष। घनमसृण- गहरा चिकना। हरीतिमा- हरियाली। परिवेष्टित- ढँका हुआ। कामसूत्र- वात्स्यायन के ग्रंथ का नाम। बकुल- मौलसिरी का वृक्ष। दोला- झूला। तुंदिल- तोंद वाला। परवर्ती- बाद के। मर्मरित- पत्तों की खड़खड़ाहट की ध्वनि से युक्त। जीर्ण- फटा-पुराना। उर्ध्वमुखी- प्रगति को ओर। दुरंत- जिसका विनाश होना मुश्किल है। सर्वव्यापक- हर जगह व्याप्त। कालाग्नि- मृत्यु की आग। हज़रत- श्रीमान, (व्यंग्यात्मक स्वर)। अनासक्त- विषय-भोग से ऊपर उठा हुआ। अनाविल- स्वच्छ। उन्मुक्त- स्वतंत्र। फक्कड़- सांसारिक मोह से मुक्त। कर्णाट- प्राचीनकाल का कर्नाटक राज्य। उपालम्भ- उलाहना। स्थिरप्रज्ञता- अविचल बुद्धि की अवस्था। विदग्ध- अच्छी तरह तपा हुआ। मुग्ध- आनंदित। विमूढ़- आश्चर्यचकित। कार्पण्य- कंजूसी। गण्डस्थल- गाल। शरच्चंद्र- शरद ऋतु का चंद्रमा। शुभ्र- श्वेत। मृणाल-कमलनाल। कृपिवल- किसान। निर्दलित- भलीभाँति निचोड़ा हुआ। ईक्षुदण्ड- गन्ना । अभ्रभेदी- गगनचुंबी। गतंव्य- लक्ष्य। खून-खच्चर- लड़ाई-झगड़ा। हूक- वेदना।

मुख्य बिंदु-

(i) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध कल्पलता से उद्धृत है। इसमें लेखक, आँधी, लू और गर्मी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौंदर्य बिखेर रहे है।

(ii) शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा और तुमुल कोलाहल कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित करता है| ऐसी भावधारा में बहते हुए उसे देह-बल के उपर आत्मबल का महत्त्व सिद्ध करने वाली इतिहास-विभूति गाँधी जी की याद हो आती है तो वह गाँधीवादी मूल्यों के अभाव की पीड़ा से भी कसमसा उठता है।

(iii) निबंध की शुरूआत में लेखक शिरीष पुष्प की कोमल सुंदरता के जाल बुनता है, फिर उसे भेदकर उसके इतिहास में और फिर उसके जरिए मध्यकाल के सांस्कृतिक इतिहास में पैठता है, फिर तत्कालीन जीवन व सामंती वैभव-विलास को सावधानी से उकेरते हुए उसका खोखलापन भी उजागर करता है। वह अशोक के फूल के भूल जाने की तरह ही शिरीष को नज़रअंदाज किए जाने की साहित्यिक घटना से आहत है।

(iv) इस निबंध में लेखक को सच्चे कवि का तत्व-दर्शन भी होता है। उसका मानना है कि योगी की अनासक्त शून्यता और प्रेमी की सरस पूर्णता एक साथ उपलब्ध होना सत्कवि होने की एकमात्र शर्त है। ऐसा कवि ही समस्त प्रकृति और मानवीय वैभव में रमकर भी चुकता नहीं और निरंतर आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा देता है।

पठित गद्यांश-01

एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधों का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते है। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को

कैसे उगा सकता था ? अवधूतों के मुँह से ही संचार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी ज़रूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और ' मेघदूत" का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?

(क) लेखक ने शिरीष को क्या संज्ञा दी है?

(i)मादक (ii) अद्‌भुत अवधूत

(iii) फक्कड़ (iv) अनासक्त

उत्तर - (ii) अद्‌भुत अवधूत

(ख) 'अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली है।' इसका आशय है-

(i) फक्कड़पन, मस्ती व अनासक्ति के कारण सरस रचना कर सकता है।

(ii) सरल परिस्थिति में रचना कर सकता है।

(iii) वायुमंडल से प्रेरित होकर रचना कर सकता है।

(iv) मानवीय वैभव में रम कर रचना कर सकता है।

उत्तर - (i) फक्कड़पन, मस्ती व अनासक्ति के कारण सरस रचना कर सकता है।

(ग) 'अनासक्त' शब्द का अर्थ क्या है-

(i) भलीभाँति निचोड़ा हुआ (ii) अविचल बुद्धि की अवस्था

(iii) विषय-भोग से ऊपर उठा हुआ (iv) सांसारिक मोह से मुक्त

उत्तर - (iii) विषय-भोग से ऊपर उठा हुआ

(घ) कालिदास की प्रमुख रचना इनमें से कौन सी है?

(i) शकुन्तला (ii) मेघदूत

(iii) शिरीष के फूल (iv) अशोक के फूल

उत्तर - (ii) मेघदूत

(ङ) कबीरदास जी के संदर्भ में कौन सा कथन सत्य है?

(i) मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक (ii) स्थूल और बाहरी

(iii) सूक्ष्म और संम्पूर्ण (iv) अतिक्रम और अभ्रभेदी

उत्तर - (i) मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक

पठित गद्यांश-02

शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस जिन मंगल-जनक वृक्षों को अपनी वृक्ष-वाटिका की चारदीवारी के पास लगाया करता था, उनमें एक शिरीष भी है। (वृहतसंहिता 55, 13) अशोक, अरिष्ट, पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घनमसृण हरीतिमा से परिवेष्टित वृक्ष-वाटिका जरूर बड़ी मनोहर दिखती होगी। वात्सायन ने 'कामसूत्र' में बताया है कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला (प्रेंखा दोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने

कवि बकुल के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे, पर शिरीष भी क्या बुरा है। डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूरी होती है, पर उसमें झूलनेवालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम ख्याल नहीं करते।

1. गद्यांश के अनुसार शिरीष के वृक्ष की क्या विशेषता होती है?

a. सूक्ष्म और फलदार
b. बड़े और छायादार
c. फल एवं फूल विहीन
d. हरे और पीले

2. वास्त्यायन के अनुसार, झुला कहाँ लगाना चाहिए?

a. बगीचे के मजबूत पेड़ों की डालियों में
b. बगीचे के घने छायादार वृक्षों की छाया में
c. जंगल के विशाल वृक्षों की छाया में
d. नदी के किनारे वृक्षों की छाया में

3. लेखक को कवियों की कौन-सी बात बुरी लगती है?

a. सभी विकल्प सही हैं
b. वे प्रकृति चित्रण उचित प्रकार नहीं करते
c. उनका अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन करना
d. वे वजन का ख्याल नहीं करते

4. डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूर होती है पंक्ति में इसकी शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

a. शिरीष वृक्ष
b. अरिष्ट वृक्ष
c. सभी विकल्प सही हैं
d. अशोक वृक्ष

5. पुराने कवि किस पेड़ की डाली पर झूला डालने की बात करते हैं?

a. शिरीष के पेड़ पर
b. अशोक के पेड़ पर
c. पुन्नाग के पेड़ पर
d. बकुल के पेड़ पर

6. शिरीष की डालें कैसी होती हैं?

a. मजबूत
b. पतली
c. मोटी
d. कमजोर

7. शिरीष की समानता का उपमान है:-

a. अशोक
b. बकुल
c. अवधूत
d. ईश

8. शिरीष के फूल पाठ के आधार पर अमलतास कितने दिनों के लिए फूलता है?

a. 2 सप्ताह
b. 1-2 महीने
c. 15-20 दिन
d. 4 सप्ताह

9. लेखक ने शिरीष को किसकी संज्ञा दी है?

a. सर्वग्रासी
b. कालजयी संन्यासी की
c. अनासक्त की
d. अलमस्त

उत्तरमाला

1. (b) बड़े और छायादार

2. (b) बगीचे के घने छायादार वृक्षों की छाया में

3. (d) वे वजन का ख्याल नहीं करते

4. (a) शिरीष वृक्ष

5. (d) बकुल के पेड़ पर

6. (d) कमजोर

व्याख्या: शिरीष की डालें कुछ कमजोर होती हैं, परंतु उस पर झूलनेवालियों का वजन भी कम ही होता है।

7. (c) अवधूत

व्याख्या:लेखक को शिरीष अवधूत की तरह लगता है। यह हर स्थिति में ठीक रहता है। भयंकर गरमी में भी यह अपने लिए जीवन-रस ढूँढ़ लेता है।

8. (c) 15-20 दिन

व्याख्या:अमलतास केवल पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है।

9. (b) कालजयी संन्यासी की

व्याख्या:लेखक ने ऐसा ही कहा है क्योंकि शिरीष काल के परे योगी की तरह संयमित है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. कालिदास ने शिरीष की कोमलता और द्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर- कालिदास और संस्कृत साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का कथन कि "पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणाम्" -शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं। लेकिन इससे हज़ारी प्रसाद द्विवेदी सहमत नहीं हैं। उनका विचार है कि इसे कोमल मानना भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन पर जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, तब भी शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।

2. शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक को किस महात्मा की याद आती है और क्यों?

उत्तर- शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की याद आती है। शिरीष तरु अवधूत है, क्योंकि वह बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित होता रहता है। इसी प्रकार महात्मा गाँधी भी मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर के बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे। इस समानता के कारण लेखक को गाँधी जी की याद आ जाती है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्मबल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज़ है। आत्मा की शक्ति है। जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सका है, वैसे ही महात्मा गाँधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्व वाले थे। यह वृक्ष और वह मनुष्य दोनों ही अवधूत हैं।

3. शिरीष की तीन ऐसी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने उसे 'कालजयी अवधूत' कहा है।

उत्तर- आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष को 'कालजयी अवधूत' कहा है। उन्होंने उसकी निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

(i) वह संन्यासी की तरह कठोर मौसम में जिंदा रहता है।

(ii) वह भीषण गरमी में भी फूलों से लदा रहता है तथा अपनी सरसता बनाए रखता है।

(iii) वह कठिन परिस्थितियों में भी घुटने नहीं टेकता।

(iv) वह संन्यासी की तरह हर स्थिति में मस्त रहता है।

4. लेखक ने शिरीष के माध्यम से किस द्वंद्व को व्यक्त किया है?

उत्तर- लेखक ने शिरीष के पुराने फलों की अधिकार-लिप्सु खड़खड़ाहट और नए पत्ते-फलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालने में साहित्य, समाज व राजनीति में पुरानी व नयी पीढ़ी के द्वंद्व को बताया है। वह स्पष्ट रूप से पुरानी पीढ़ी व हम सब में नएपन के स्वागत का साहस देखना चाहता है।

5. 'शिरीष के फूल' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह 'निबन्ध 'कल्पलता' से उद्धत है। इसमें लेखक, आँधी, लू और गरमी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौन्दर्य बिखेर रहे शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा और तुमुल कोलाहल कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित करता है। ऐसी भावधारा में बहते हुए उसे देह-बल के ऊपर आत्मबल का महत्त्व सिद्ध करने वाली इतिहास-विभूति गाँधी जी की याद हो आती है तो वह गाँधीवादी मूल्यों के अभाव की पीड़ा से भी कसमसा उठता है।

निबन्ध की शुरुआत में लेखक शिरीष पुष्प की कोमल सुंदरता के जाल बुनता है, फिर उसे भेदकर उसके इतिहास में और फिर उसके जरिए मध्यकाल के सांस्कृतिक इतिहास में पैठता है, फिर तत्कालीन जीवन व सामंती वैभव-विलास को सावधानी से उकेरते हुए उसका खोखलापन भी उजागर करता है वह अशोक के फूल के भूल जाने की तरह ही शिरीष को नज़रअंदाज किए जाने की साहित्यिक घटना से आहत है। इसी में उसे सच्चे कवि का तत्व-दर्शन भी होता है। उसका मानना है कि योगी की अनासक्त शून्यता और प्रेमी की सरस पूर्णता एक साथ उपलब्ध होना सत्कवि होने की एकमात्र शर्त है। ऐसा कवि ही समस्त प्राकृतिक और मानवीय वैभव में रमकर भी चुकता नहीं और निरंतर आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा देता है।

6. कालिदास-कृत शकुंतला के सौंदर्य वर्णन को महत्त्व देकर लेखक 'सौंदर्य' को स्त्री को एक मूल्य के रूप में स्थापित करता प्रतीत होता है। क्या यह सत्य है? यदि हाँ, तो क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर- लेखक ने शकुंतला के सौंदर्य का वर्णन कर उसे एक स्त्री के लिए आवश्यक तत्व स्वीकार किया है। प्रकृति ने स्त्री को कोमल भावनाओं से युक्त बनाया है। स्त्री को उसके सौंदर्य से ही अधिक जाना गया है, न कि शक्ति से। यह तथ्य आज भी उतना ही सत्य है। स्त्रियों का अलंकारों व वस्त्रों के प्रति आकर्षण भी यह सिद्ध करता है। यह उचित भी है क्योंकि स्त्री प्रकृति की सुकोमल रचना है। अत: उसके साथ छेड़छाड़ करना अनुचित है।

7. 'ऐसे दुमदारों' से तो लँडूरे भले'- इसका भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक कहता है कि दुमदार अर्थात् सजीला पक्षी कुछ दिनों के लिए सुंदर नृत्य करता है, फिर दुम गवाकर कुरूप हो जाते हैं। यहाँ लेखक मोर के बारे में कह रहा हैं। वह बताता है कि सौंदर्य क्षणिक नहीं होना चाहिए। इससे अच्छा तो पूँछ कटा पक्षी ही ठीक है। उसे कुरूप होने की दुर्गति तो नहीं झेलनी पड़ेगी।

8. विज्जिका ने ब्रह्मा, वाल्मीकि और व्यास के अतिरिक्त किसी को कवि क्यों नहीं माना है?

उत्तर- कर्णाट राज की प्रिया विज्जिका ने केवल तीन ही को कवि माना है। ब्रह्मा ने वेदों की रचना की जिसमें ज्ञान की अथाह राशि है। वाल्मीकि ने रामायण की रचना की जो भारतीय संस्कृति के मानदंडों को बताता है। व्यास ने महाभारत की रचना की। यह अपनी विशालता व विषय-व्यापकता के कारण विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में से एक है। भारत के अधिकतर साहित्यकार इनसे प्रेरणा लेते हैं। अन्य साहित्यकारों की रचनाएँ प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित नहीं हो पाई। अतः उसने किसी और व्यक्ति को कवि नहीं माना।

पाठ पर आधारित अन्य प्रश्नोत्तर

1. सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है?

उत्तर- शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है। जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है। बाहरी गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू उसे प्रभावित नहीं करती। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है। शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

2. आरग्वध (अमलतास) की तुलना शिरीष से क्यों नहीं की जा सकती?

उत्तर- शिरीष के फूल भयंकर गरमी में खिलते हैं और आषाढ़ तक खिलते रहते हैं जबकि अमलतास का फूल केवल पन्द्रह-बीस दिनों के लिए खिलता है। उसके बाद अमलतास के फूल झड़ जाते हैं और पेड़ फिर से ठूँठ का ठूँठ हो जाता है। अमलतास अल्पजीवी है। विपरीत परिस्थितियों को झेलता हुआ ऊष्ण वातावरण को हँसकर झेलता हुआ शिरीष दीर्घजीवी रहता है। यही कारण है कि शिरीष की तुलना अमलतास से नहीं की जा सकती।

3. शिरीष के फलों को राजनेताओं का रूपक क्यों दिया नया है?

उत्तर- शिरीष के फल उन बूढ़े, ढीठ और पुराने राजनेताओं के प्रतीक हैं जो अपनी कुर्सी नहीं छोड़ना चाहते। अपनी अधिकार-लिप्सा के लिए नए युवा नेताओं को आगे नहीं आने देते। शिरीष के नए फलों को जबरदस्ती पुराने फलों को धकियाना पड़ता है। राजनीति में भी नई युवा पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी को हराकर स्वयं सता सँभाल लेती है।

4. काल देवता की मार से बचने का क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर- काल देवता की मार से बचने का अर्थ है- मृत्यु से बचना। इसका एकमात्र उपाय यह है कि मनुष्य स्थिर न हो। गतिशील, परिवर्तनशील रहे। लेखक के अनुसार जिनकी चेतना सदा ऊर्ध्वमुखी (आध्यात्म की ओर) रहती है, वे टिक जाते हैं।

5. गाँधीजी और शिरीष की समानता प्रकट कीजिए।

उत्तर- जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, लू वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है, अनासक्त रहकर अपने वातावरण से रस खींचकर सरस, कोमल बना रहता है, उसी प्रकार गाँधी जी ने भी अपनी आँखों के सामने आजादी के संग्राम

में अन्याय, भेदभाव और हिंसा को झेला। उनके कोमल मन में एक ओर निरीह जनता के प्रति असीम करुणा जागी वहीं वे अन्यायी शासन के विरोध में डटकर खड़े हो गए।

पाठ सं-18

1.श्रम विभाजन और जाति प्रथा

2.मेरी कल्पना का आदर्श समाज

लेखक- बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर

श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

पाठ का सारांश- लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपत्ति यह है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए।

जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रुचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरुचि दिखाते हैं। अत: आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

मेरी कल्पना का आदर्श समाज

सारांश- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्त्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है –

1. शारीरिक वंश परंपरा,

2. सामाजिक उत्तराधिकार,

3. मनुष्य के अपने प्रयत्न।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उत्तम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वश में है, परंतु वंश व सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अत: वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है।

शब्दार्थ-

जीविकोपार्जन – रोजगार जुटाना। आलोचक – निंदक, तर्कयुक्त समीक्षक। वज़न रखना – महत्त्वपूर्ण होना। तथ्य –वास्तविक। नियामक – दिशा देने वाले। उत्तराधिकार – पूर्वजों या पिता से मिलने वाला अधिकार। ज्ञानार्जन – ज्ञान प्राप्त करना। विशिष्टता – अलग पहचान। सर्वथा – सब तरह से। बाजी मार लेना – जीत हासिल करना। उत्तम – श्रेष्ठ। कुल – परिवार। ख्याति – प्रसिद्धि। प्रतिष्ठा – सम्मान। निष्पक्ष – भेदभाव रहित। तकाज़ा –आवश्यकता। नितांत – बिलकुल। औचित्य – उचित होना। पाला पड़ना – संपर्क होना। व्यवहार्य – जो व्यावहारिक हो। कसौटी – जाँच का आधार। विडंबना – उपहास का विषय। पोषक – बढ़ाने वाला। समर्थन – स्वीकार। आपत्तिजनक – परेशानी पैदा करने वाली बात। अस्वाभाविक – जो सहज न हो। करार – समझौता। दूषित – दोषपूर्ण। प्रशिक्षण – किसी कार्य के लिए तैयार करना। निजी – अपनी, व्यक्तिगत। दृष्टिकोण – विचार का ढंग। स्तर – श्रेणी, स्थिति। अनुपयुक्त – उपयुक्त न होना। अपर्याप्त – नाकाफी। तकनीक – विधि। प्रतिकूल – विपरीत। चारा होना – अवसर होना। पैतृक – पिता से प्राप्त। पारंगत – पूरी तरह कुशल। प्रत्यक्ष – आँखों के सामने। गंभीर – गहरे। पूर्व लेख – जन्म से पहले भाग्य में लिखा हुआ। उत्पीड़न – शोषण। विवशतावश – मजबूरी से। दुर्भावना – बुरी नीयत। निर्विवाद – बिना विवाद के। आत्म-शक्ति – अंदर की शक्ति। खेदजनक – दुखदायक। नीरस गाथा – उबाऊ बातें। भ्रातृता – भाईचारा। वांछित – आवश्यक। संचारित – फैलाया हुआ। बहुविधि – अनेक प्रकार। अबाध – बिना किसी रुकावट के। गमनागमन – आना-जाना। स्वाधीनता – आजादी।

पठित गद्यांश- 01

'जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा सम्पति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परन्तु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतन्त्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होगें, क्योंकि इस प्रकार की स्वतन्त्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतन्त्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति-प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना सम्भव है, जहाँ कुछ लोगों की अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।'

1. पोषक' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

क. लेने वाला　　ख. बढ़ाने वाला

ग. घटाने वाला　　घ. मिटाने वाला

2. प्रस्तुत पाठ के अनुसार किसके पोषकों की कमी नहीं हैं?

क. जातिवाद के　　ख. भाईचारे के

ग. धर्म-निरपेक्ष के　　घ. समाजवाद के

3.कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए मजबूर करना क्या कहलाता हैं?

क. मजबूरी　　ख. आज्ञा पालन

ग. गरीबी　　घ. दासता

4. लेखक के अनुसार 'दासता' का संबंध किसके नहीं है?

क. समाज से　　ख. कानून से

ग. शिक्षा से　　घ. धन से

5. लेखक के अनुसार जाति-प्रथा के समर्थक किस अधिकार को देने के लिए राजी हो सकते हैं?

क. मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता का अधिकार

ख. व्यवसाय न चुनने की स्वतन्त्रता का अधिकार

ग. जीवन, शारीरिक सुरक्षा व सम्पति का अधिकार

घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला पठित गद्यांश- 01

1. (ख) बढ़ाने वाला
2. (क) जातिवाद के
3. (घ) दासता
4. (ख) कानून से
5. (ग) जीवन, शारीरिक सुरक्षा व सम्पति का अधिकार

पठित गद्यांश- 02

श्रम विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परन्तु किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।'

1. आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए किसे आवश्यक मानता है?

क. जाति प्रथा को　　ख. श्रम-विभाजन को

ग. शिक्षा को　　घ. प्रोत्साहन को

2. कौन-सा समाज 'कार्यकुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है?

क. आदिमानव समाज　　ख. असभ्य समाज

ग. सभ्य-आधुनिक समाज　　घ. सभी पुरातन समाज

3. किस देश की जाति प्रथा ऊँच-नीच में भेदभाव करती है?

क. चीन की　　ख. अमेरिका की

ग. भारत की　　घ. इंग्लैण्ड की

4. जाति-प्रथा का श्रम विभाजन किस प्रकार का है?

क. स्वाभाविक　　ख. अस्वाभाविक

ग. सार्थक　　घ. निरर्थक

5. जाति-प्रथा समाज में क्या पैदा करती है?

क. समानता　　ख. ऊँच-नीच का भेदभाव

ग. गरीबी　　घ. कार्य-कुशलता

उत्तरमाला

1 (ख) श्रम-विभाजन को

2 (ग) सभ्य-आधुनिक समाज

3 (ग) भारत की

4 (ख) अस्वाभाविक

5 (ख) ऊँच-नीच का भेदभाव

पठित गद्यांश- 03

'समता' का औचित्य यहीं पर समाप्त नहीं होता। उसका और भी आधार उपलब्ध है। एक राजनीतिज्ञ पुरुष का बहुत बड़ी जनसंख्या से पाला पड़ता है। अपनी जनता से व्यवहार करते समय, राजनीतिज्ञ के पास न तो इतना समय होता है न प्रत्येक के विषय में इतनी जानकारी ही होती है, जिससे वह सबकी अलग-अलग आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के आधार पर वांछित अलग-अलग व्यवहार कर सके। वैसे भी आवश्यकताओं व क्षमताओं के आधार पर भिन्न व्यवहार कितना भी आवश्यक व औचित्यपूर्ण क्यों न हो, 'मानवता' के दृष्टिकोण से समाज दो वर्गों व श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता। ऐसी स्थिति में, राजनीतिज्ञ का अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है, कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। राजनीतिज्ञ यह व्यवहार इसलिए नहीं करता, कि सब लोग समान होते, बल्कि इसलिए कि वर्गीकरण एवं श्रेणीकरण सम्भव होता।'

1. किस पुरुष का बहुत बड़ी जनसंख्या से पाला पड़ता है?

क. राजनीतिक पुरुष का　　ख. सामाजिक पुरुष का

ग. आर्थिक पुरुष का　　घ. शिक्षित पुरुष का

2. समाज को किस आधार पर दो वर्गों और श्रेणियों में बाँटना अनुचित है?

क. आर्थिक आधार पर　　ख. मानवता के आधार पर

ग. सामाजिक आधार पर　　घ. राजनीतिक आधार पर

3. 'समता' राजनीतिज्ञ के व्यवहार की एकमात्र क्या है?

क. पूँजी　　ख. चाल

ग. राजनीति　　घ. कसौटी

4. बाबा साहेब आंबेडकर ने किस प्रकार के समाज की कल्पना की है?

क. स्वतंत्र समाज की　　ख. समान समाज की

ग. आदर्श समाज की　　घ. गतिशील समाज की

5. व्यवहार्य सिदांत के अनुसार राजनीतिज्ञ को-

क. सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

ख. सब मनुष्यों के साथ उनकी क्षमताओं के आधार पर व्यवहार करना चाहिए।

ग. सब मनुष्यों के साथ उनकी आवश्यकताओं के आधार पर व्यवहार करना चाहिए।

घ. सब मनुष्यों के साथ भिन्न व्यवहार करना चाहिए।

उत्तरमाला

1. (क) राजनितिक पुरुष का
2. (ख) मानवता के आधार पर
3. (घ) कसौटी
4. (ग) आदर्श समाज की
5. (क) सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

प्रश्न 1: बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?

उत्तर – आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

प्रश्न 2: मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर होती है?

उत्तर –मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है –

1. शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।
2. सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।
3. मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

प्रश्न 3: लेखक ने जाति-प्रथा की किन-किन बुराइयों का वर्णन किया हैं?

उत्तर – लेखक ने जाति-प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का वर्णन किया है –

1. यह श्रमिक-विभाजन भी करती है।
2. यह श्रमिकों में ऊँच-नीच का स्तर तय करती है।
3. यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।
4. यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही वह पेशा अनुपयुक्त हो।
5. यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती।

प्रश्न 4: लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र क्या है?

उत्तर – लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है। वस्तुत: यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न 5: आर्थिक विकास के लिए जाति-प्रथा कैसे बाधक है?

उत्तर – भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। जबरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरुचि हो जाती है वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का विकास नहीं होता।

प्रश्न 6: डॉ. आंबेडकर 'समता' को कैसी वस्तु मानते हैं तथा क्यों?

उत्तर – डॉ० आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु मानते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही। सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परंतु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

प्रश्न 7:जाति और श्रम-विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है? 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर – जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि –

1. जाति-विभाजन, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है।
2. जाति-विभाजन में श्रम-विभाजन या पेशा चुनने की छूट नहीं होती जबकि श्रम-विभाजन में ऐसी छूट हो सकती है।
3. जाति-प्रथा विपरीत परिस्थितियों में भी रोजगार बदलने का अवसर नहीं देती, जबकि श्रम-विभाजन में व्यक्ति ऐसा कर सकता है।

प्रश्न 8: जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता?

उत्तर – जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे डॉ.आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं –

1. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है।
2. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। यह जन्म पर आधारित होता है।
3. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त क्यों न हो।

प्रश्न 9: जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही हैं? क्या यह स्थिति आज भी हैं?

उत्तर - भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर एक पेशे से बाँध दिया जाता था। इस निर्णय में व्यक्ति की रुचि, योग्यता या कुशलता का ध्यान नहीं रखा जाता था। उस पेशे से गुजारा होगा या नहीं, इस पर भी विचार नहीं किया जाता था। इस कारण भुखमरी की स्थिति आ जाती थी। इसके अतिरिक्त, संकट के समय भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती थी। भारतीय समाज पैतृक पेशा अपनाने पर ही जोर देता था। उद्योग-धंधों की विकास प्रक्रिया व तकनीक के कारण कुछ व्यवसायी रोजगारहीन हो जाते थे। आज भारत की स्थिति बदल रही है। सरकारी कानून, सामाजिक सुधार व विश्वव्यापी परिवर्तनों से जाति-प्रथा के बंधन काफी ढीले हुए हैं, परंतु समाप्त नहीं हुए हैं। आज लोग अपनी जाति से अलग पेशा अपना रहे हैं।

प्रश्न 10: लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या हैं? समझाइए।

उत्तर – लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है। जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रश्न 11: आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया हैं अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेगी?

उत्तर –आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है। उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृता' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है-भाईचारा। यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारे के सहारे ही संबंध बनते हैं। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचता है।

प्रश्न 12: शारीरिक वंश – परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर – शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद डॉ.आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। उनका तर्क है कि उत्तम व्यवहार के हक में उच्च वर्ग बाजी मार ले जाएगा। अत: सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

वितान भाग-02

पाठ सं-01

सिल्वर वैडिंग

मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सार

यह लंबी कहानी लेखक की अन्य रचनाओं से कुछ अलग दिखाई देती है। आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। जो हुआ होगा और समहाउ इंप्रापर के दो जुमले इस कहानी के बीज वाक्य हैं। जो हुआ होगा में यथास्थितिवाद यानी ज्यों-का-त्यों स्वीकार लेने का भाव है तो समहाउ इंप्रापर में एक अनिर्णय की स्थिति भी है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं। वे इन स्थितियों का जिम्मेदार भी किसी व्यक्ति को नहीं ठहराते। वे अनिर्णय की स्थिति में हैं।

दफ़्तर में सेक्शन अफ़सर यशोधर पंत ने जब आखिरी फ़ाइल का काम पूरा किया तो दफ़्तर की घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। वे अपनी घड़ी सुबह-शाम रेडियो समाचारों से मिलाते हैं, इसलिए वे दफ़्तर की घड़ी को सुस्त बताते हैं। इनके कारण अधीनस्थ को भी पाँच बजे के बाद भी रुकना पड़ता है। वापसी के समय वे किशन दा की उस परंपरा का निर्वाह करते हैं जिसमें जूनियरों से हल्का मजाक किया जाता है।

दफ़्तर में नए असिस्टेंट चड्ढा की चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पंत जी को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होते हैं। उसने थोड़ी बदतमीजीपूर्ण व्यवहार करते हुए पंत जी की चूनेदानी का हाल पूछा। पंत जी ने उसे जवाब दिया। फिर चड्ढा ने पंत जी की कलाई थाम ली और कहा कि यह पुरानी है। अब तो डिजिटल जापानी घड़ी ले लो। सस्ती मिल जाती है। पंत जी उसे बताते हैं कि यह घड़ी उन्हें शादी में मिली है। यह घड़ी भी उनकी तरह ही पुरानी हो गई है। अभी तक यह सही समय बता रही है।

इस तरह जवाब देने के बाद एक हाथ बढ़ाने की परंपरा पंत जी ने अल्मोड़ा के रेम्जे स्कूल में सीखी थी। ऐसी परंपरा किशन दा के क्वार्टर में भी थी जहाँ यशोधर को शरण मिली थी। किशन दा कुंआरे थे और पहाड़ी लड़कों को आश्रय देते थे। पंत जी जब दिल्ली आए थे तो उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। तब किशन दा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। उन्होंने यशोधर को कपड़े बनवाने व घर पैसा भेजने के लिए पचास रुपये दिए। इस तरह वे स्मृतियों में खो गए। तभी चड्ढा की आवाज से वे जाग्रत हुए और मेनन द्वारा शादी के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहने लगे'नाव लेट मी सी, आई वॉज़ मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फ़ोर्टी सेवन।'

मेनन ने उन्हें 'सिल्वर वैडिंग की बधाई दी। यशोधर खुश होते हुए झेपे और झेपते हुए खुश हुए। फिर भी वे इन सब बातों को अंग्रेजों के चोंचले बताते हैं, किंतु चड्ढा उनसे चाय-मट्ठी व लड्डू की माँग करता है। यशोधर जी दस रुपये का नोट चाय के लिए देते हैं, परंतु उन्हें यह 'समहाउ इंप्रॉपर फाइंड' लगता है। अत: सारे सेक्शन के आग्रह पर भी वे चाय पार्टी में शरीक नहीं होते है। चडढ़ा के जोर देने पर वे बीस रुपये और दे देते हैं, किंतु आयोजन में सम्मिलित नहीं होते। उनके साथ बैठकर चाय-पानी और गप्प-गप्पाष्टक में वक्त बरबाद करना उनकी परंपरा के विरुद्ध है।

यशोधर बाबू ने इधर रोज बिड़ला मंदिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने या स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नयी रीति अपनाई है। यह बात उनकी पत्नी व बच्चों को अखरती थी। क्योंकि वे बुजुर्ग नहीं थे। बिड़ला मंदिर से उठकर

वे पहाड़गंज जाते और घर के लिए साग-सब्जी लाते। इसी समय वे मिलने वालों से मिलते थे। घर पर वे आठ बजे से पहले नहीं पहुँचते थे।

आज यशोधर जब बिड़ला मंदिर जा रहे थे तो उनकी नजर किशन दा के तीन बेडरूम वाले क्वार्टर पर पड़ी। अब वहाँ छह-मंजिला मकान बन रहा है। उन्हें बहुमंजिली इमारतें अच्छी नहीं लग रही थीं। यही कारण है कि उन्हें उनके पद के अनुकूल एंड्रयूजगंज, लक्ष्मीबाई नगर पर डी-2 टाइप अच्छे क्वार्टर मिलने का ऑफ़र भी स्वीकार्य नहीं है और वे यहीं बसे रहना चाहते हैं। जब उनका क्वार्टर टूटने लगा तब उन्होंने शेष क्वार्टर में से एक अपने नाम अलाट करवा लिया। वे किशन दा की स्मृति के लिए यहीं रहना चाहते थे।

पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी व बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा है। इसी वजह से उन्हें घर जल्दी लौटना अच्छा नहीं लगता था। उनका बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पर लग गया था। यशोधर बाबू को यह भी 'समहाउ' लगता था क्योंकि यह कंपनी शुरू में ही डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह वेतन देती थी। उन्हें कुछ गड़बड़ लगती थी। उनका दूसरा बेटा आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा था। उसका एलाइड सर्विसेज में न जाना भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनका तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया। उनकी एकमात्र बेटी शादी से इनकार करती है। साथ ही वह डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की धमकी भी देती है। वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश हैं, परंतु उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते।

यशोधर की पत्नी संस्कारों से आधुनिक नहीं है, परंतु बच्चों के दबाव से वह मॉडर्न बन गई है। शादी के समय भी उसे संयुक्त परिवार का दबाव झेलना पड़ा था। यशोधर ने उसे आचार-व्यवहार के बंधनों में रखा। अब वह बच्चों का पक्ष लेती है तथा खुद भी अपनी सहूलियत के हिसाब से यशोधर की बातें मानने की बात कहती है। यशोधर उसे 'शानयल बुढ़िया', 'चटाई का लहँगा' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे' कहकर उसके विद्रोह का मजाक उड़ाते हैं, परंतु वे खुद ही तमाशा बनकर रह गए। किशन दा के क्वार्टर के सामने खड़े होकर वे सोचते हैं कि वे शादी न करके पूरा जीवन समाज को समर्पित कर देते तो अच्छा होता।

यशोधर ने सोचा कि किशन दा का बुढ़ापा कभी सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने मकान ले लिए। रिटायरमेंट के बाद किसी ने भी उन्हें अपने पास रहने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर भी यह पेशकश नहीं कर पाए क्योंकि वे शादीशुदा थे। किशन दा कुछ समय किराये के मकान में रहे और फिर अपने गाँव लौट गए। सालभर बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें कोई बीमारी भी नहीं हुई थी। यशोधर को इसका कारण भी पता नहीं। वे किशन दा की यह बात याद रखते थे कि जिम्मेदारी पड़ने पर हर व्यक्ति समझदार हो जाता है।

वे मन-ही-मन यह स्वीकार करते थे कि दुनियादारी में उनके बीवी-बच्चे अधिक सुलझे हुए हैं, परंतु वे अपने सिद्धांत नहीं छोड़ सकते। वे मकान भी नहीं लेंगे। किशन दा कहते थे कि मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। रिटायरमेंट होने पर गाँव के पुश्तैनी घर चले जाओ। वे इस बात को आज भी सही मानते हैं। उन्हें पता है कि गाँव का पुश्तैनी घर टूट-फूट चुका है तथा उस पर अनेक लोगों का हक है। उन्हें लगता है कि रिटायरमेंट से पहले कोई लड़का सरकारी नौकरी में आ जाएगा और क्वार्टर उनके पास रहेगा। ऐसा न होने पर क्या होगा, इसका जवाब उनके पास नहीं होता।

बिड़ला मंदिर के प्रवचनों में उनका मन नहीं लगा। उम्र ढलने के साथ किशन दा की तरह रोज मंदिर जाने, संध्या-पूजा करने और गीता-प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे। मन के विरोध को भी वे अपने तर्कों से खत्म कर देते हैं। गीता

के पाठ में 'जनार्दन' शब्द सुनने से उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद आई। उनकी चिट्ठी से पता चला कि वे बीमार है। यशोधर बाबू अहमदाबाद जाना चाहते हैं, परंतु पत्नी व बच्चे उनका विरोध करते हैं। यशोधर खुशी-गम के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं तथा बच्चों को भी वैसा बनाने की इच्छा रखते हैं। किंतु उस दिन हद हो गई जिस दिन कमाऊ बेटे ने यह कह दिया कि "आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा।"

यशोधर की पत्नी का कहना है कि उन्होंने बचपन में कुछ नहीं देखा। माँ के मरने के बाद विधवा बुआ ने यशोधर का पालन-पोषण किया। मैट्रिक पास करके दिल्ली में किशन दा के पास रहे। वे भी कुंवारे थे तथा उन्हें भी कुछ नहीं पता था। अत: वे नए परिवर्तनों से वाकिफ़ नहीं थे। उन्हें धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी पारिवारिक चिंतन में डूबा रहना अच्छा नहीं लगा। ध्यान लगाने का कार्य रिटायरमेंट के बाद ठीक रहता है। इस तरह की तमाम बातें यशोधर बाबू पैदाइशी बुजुर्गवार है।

जब तक किशन दा दिल्ली में रहे, तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। उनके जाने के बाद घर में होली गवाना, रामलीला के लिए क्वार्टर का एक कमरा देना, 'जन्यो पुन्यू' के दिन सब कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए घर बुलाना आदि कार्य वे पत्नी व बच्चों के विरोध के बावजूद करते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि बच्चे उनसे सलाह लें, परंतु बच्चे उन्हें सदैव उपेक्षित करते हैं। प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मंडी गए। वे चाहते थे कि उनके लड़के घर का सामान खुद लाएँ, परंतु उनकी आपस की लड़ाई से उन्होंने इस विषय को उठाना ही बंद कर दिया। बच्चे चाहते थे कि वे इन कामों के लिए नौकर रख लें। यशोधर को यही 'समहाउ इंप्रॉपर' मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उन्हें दे। क्या वह ज्वाइंट एकाउंट नहीं खोल सकता था? उनके ऊपर, वह हर काम अपने पैसे से करने की धौंस देता है। घर में वह तमाम परिवर्तन अपने पैसों से कर रहा है। वह हर चीज पर अपना हक समझता है।

सब्जी लेकर वे अपने क्वार्टर पहुँचे। वहाँ एक तख्ती पर लिखा था-वाई०डी० पंत। उन्हें पहले गलत जगह आने का धोखा हुआ। घर के बाहर एक कार थी। कुछ स्कूटर, मोटर-साइकिलें थीं तथा लोग विदा ले-दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागजों की झालरें व गुब्बारे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को कार में बैठे किसी साहब से हाथ मिलाते देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने अपनी पत्नी व बेटी को बरामदे में खड़ा देखा जो कुछ मेमसाबों को विदा कर रही थीं। लड़की जींस व बगैर बाँह का टॉप पहने हुए थी। पत्नी ने होंठों पर लाली व बालों में खिजाब लगाया हुआ था। यशोधर को यह सब 'समहाउ इंप्रापर' लगता था।

यशोधर चुपचाप घर पहुँचे तो बड़े बेटे ने देर से आने का उलाहना दिया। यशोधर ने शर्मीली-सी हँसी हँसते हुए पूछा कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है? यशोधर के दूर के भांजे ने कहा, "जबसे तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार महीने कमाने लगा है, तब से।" यशोधर को अपनी सिल्वर बैडिंग की यह पार्टी भी अच्छी नहीं लगी। उन्हें यह मलाल था कि सुबह ऑफ़िस जाते समय तक किसी ने उनसे इस आयोजन की चर्चा नहीं की थी। उनके पुत्र भूषण ने जब अपने मित्रों-सहयोगियों से यशोधर बाबू का परिचय करवाया तो उस समय उन्होंने प्रयास किया कि भले ही वे संस्कारी कुमाऊँनी हैं तथापि विलायती रीति-रिवाज से भी अच्छी तरह परिचित होने का एहसास कराएँ।

बच्चों के आग्रह पर यशोधर बाबू अपनी शादी की सालगिरह पर केक काटने के स्थान पर जाकर खड़े हो गए। फिर बेटी के कहने पर उन्होंने केक भी काटा, जबकि उन्होंने कहा-'समहाउ आई डोंट लाइक आल दिस।" परंतु उन्होंने केक नहीं खाया क्योंकि इसमें अंडा होता है। अधिक आग्रह पर उन्होंने संध्या न करने का बहाना किया तथा पूजा में चले गए। आज उन्होंने

पूजा में देर लगाई ताकि अधिकतर मेहमान चले जाएँ। यहाँ भी उन्हें किशन दा दिखाई दिए। उन्होंने पूछा कि 'जो हुआ होगा' से आप कैसे मर गए? किशन दा कह रहे थे कि भाऊ सभी जन इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं चाहे वह गृहस्थ हो या ब्रहमचारी, अमीर हो या गरीब। शुरू और आखिर में सब अकेले ही होते हैं।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशन दा आज भी उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं और यह बताने में भी कि मेरे बीवी-बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं, उनके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए? किशन दा अकेलेपन का राग अलाप रहे थे। उनका मानना था कि यह सब माया है। जो भूषण आज इतना उछल रहा है, वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असहाय अनुभव करेगा, जितना कि आज तू कर रहा है।

इस बीच यशोधर की पत्नी ने वहाँ आकर झिड़कते हुए पूछा कि आज पूजा में ही बैठे रहोगे। मेहमानों के जाने की बात सुनकर वे लाल गमछे में ही बैठक में चले गए। बच्चे इस परंपरा के सख्त खिलाफ़ थे। उनकी बेटी इस बात पर बहुत झल्लाई। टेबल पर रखे प्रेजेंट खोलने की बात कही। भूषण उनको खोलता है कि यह ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। सुबह दूध लाने के समय आप फटा हुआ पुलोवर पहनकर चले जाते हैं, वह बुरा लगता है। बेटी पिता का पाजामा-कुर्ता उठा लाई कि इसे पहनकर गाउन पहनें। बच्चों के आग्रह पर वे गाउन पहन लेते हैं। उनकी आँखों की कोर में जरा-सी नमी चमक गई। यह कहना कठिन है कि उनको भूषण की यह बात चुभ गई कि आप इसे पहन कर दूध लेने जाया करें। वह स्वयं दूध लाने की बात नहीं कर रहा।

शब्दार्थ-

सिल्वर – रजत, वैडिंग – विवाह	अनदेखा करना – ध्यान न देना
निराकरण – समाधान, उपाय	बिरादरी – जाति – भाई
परंपरा – प्रथा	खुराफात – शरारती कार्य
बदतमीजी – अशिष्ट व्यवहार	विरासत – उत्तराधिकार, बाप दादा से जुडी हुई चीजें
चूनेदानी – पान खाने वालों का चूना रखने का बरतन	मौज – आनंद
धृष्टता – अशिष्टता	पुश्तैनी – खानदानी
बाबा आदम का जमाना – पुराना समय	लोक – संसार
नहले पर दहला – जैसे को तैसा	बाध्य – मजबूर
ठठाकर – जोर से हंसना	बाट – पगडंडी
चोंचले – आडंबरपूर्ण व्यवहार	सर्वथा – पूरी तरह से
माया – धन – दौलत, सांसारिक मोह	लहजा – ढंग, तरीका
चुग्गे भर – पेट भरने लायक	मर्यादा पुरूष – परंपराओं एवं आस्थाओं को मानने वाला
नगण्य – जो गिनने लायक न हो, न के बराबर	निष्ठा – आस्था
नागवार – अनुचित, मान्य नहीं	दुराग्रह – अनुचित हठ
निहायत – एकदम	कुहराम – शोर-शराबा
गप-गपाष्टक – इधर-उधर की बेकार की बातचीत	मर्तबा – बार
विरूद्ध – विपरीत	खिजाब – बालों को काला करने का पदार्थ
प्रवचन – धार्मिक व्याख्यान	आमादा – तत्पर होना
फिकरा – वाक्यांश	रवैया – व्यवहार
उपेक्षा – तिरस्कार का भाव	भव्य – सुंदर
तरफदारी – पक्ष लेना	अनमनी – उदासा – भरी
जिठानी – पति के बडे भाई की पत्नी	

ढोंग – ढकोसला, आडंबरपूर्ण आचरण आचरण- व्यवहार	ना नुकुर करना – आनाकानी करना मिसाल – उदाहरण

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1.नई पीढ़ी का रवैया पाठ में कैसा है?

(क) असंवेदनशील (ख) संवेदनशील

(ग) सहानुभूतिपूर्ण (घ) सहयोगात्मक

2. कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में 'जो हुआ होगा' से कहानीकार का क्या तात्पर्य रहा है?

(क) लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है (ख) लेखक को मृत्यु का कारण पता है

(ग) लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है (घ) लेखक को मृत्यु से कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

3. किशोर दा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता क्यों नहीं कर पाए थे?

(क) यशोधर बाबू की पत्नी किशन दा से नाराज थी

(ख) यशोधर बाबू के घर में किशन दा के लिए स्थान का अभाव था

(ग) यशोधर बाबू का अपना परिवार था जिसे वे नाराज नहीं करना चाहते थे

(घ) किशन दा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा था जिससे किशन दा ने स्वीकार नहीं किया

4. कहानी 'सिल्वर वैडिंग' के अनुसार –"यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती हैं लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं।" यशोधर बाबू की असफलता का क्या कारण था?

(क) किशन दा उन्हें भड़काते थे (ख) पत्नी बच्चों से अधिक प्रेम करती थी

(ग) पीढ़ी के अन्तराल के कारण (घ) वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे

5. मकान के विषय में किशनदा की कौनसी उक्ति यशोधर बाबू को जँचती थी?

(क) अपना मकान होना ही चाहिए (ख) मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं

(ग) सरकारी क्वार्टर सरकारी ही होता है (घ) इनमें से कोई नहीं

6. यशोधर बाबू ने किस स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी?

(क) सरस्वती विद्यालय (ख) रेम्जे स्कूल, अल्मोड़ा

(ग) शिष्यगण विद्यालय (घ) अन्य

7. यशोधर पंत जब दिल्ली आए थे तब उन्हें नौकरी किसने दिलवाई?

(क) किशनदा ने (ख) शर्मा ने

(ग) किसी ने नहीं (घ) अन्य

8. यशोधर बाबू का विवाह कब हुआ था?

(क) 6 फरवरी, 1947 (ख) 6 फरवरी, 1946

(ग) 5 फरवरी, 1947 (घ) 6 फरवरी, 1945

9. किशनदा ने अपना जीवन किसके नाम कर दिया था?

(क) परिवार के नाम (ख) समाज के नाम

(ग) दोस्तों के नाम (घ) अन्य

10. यशोधर बाबू किस मंत्रालय में काम करते थे?

(क) वित्त मंत्रालय (ख) गृह मंत्रालय

(ग) रक्षा मंत्रालय (घ) खेल मंत्रालय

11. यशोधर बाबू के कितने बेटे थे?

(क) दो बेटे (ख) तीन बेटे

(ग) चार बेटे (घ) इनमें से कोई भी नहीं

12.यशोधर बाबू के बड़े बेटे का नाम क्या था?

(क) जनार्दन (ख) गिरीश

(ग) भूषण (घ) इनमें से कोई भी नहीं

13. किशन दा का पूरा नाम क्या था?

(क) कृष्ण पांडे (ख) कृष्णानंद पांडे

(ग) किशन पांडे (घ) उक्त में से कोई भी नहीं

14. यशोधर बाबू की बेटी क्या करना चाहती थी?

(क) अमेरिका जाकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई (ख) अमेरिका जाकर डॉक्टरी की पढ़ाई

(ग) इंग्लैंड जाकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई (घ) इंग्लैंड जाकर डॉक्टरी की पढ़ाई

15. यशोधर बाबू के विवाह के पश्चात् उनके क्वार्टर में उनके साथ और कौन रहता था?

(क) यशोधर बाबू के ताऊ जी (ख) यशोधर बाबू के पिताजी

(ग) यशोधर बाबू के चाचा जी (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

16. यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किससे प्रभावित था?

(क) किशनदा से (ख) अपने ताऊ जी से

(ग) अपने पिताजी से (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

17. यशोधर बाबू की पत्नी उनसे नाराज क्यों रहती थी?

(क) विवाह के पश्चात् संयुक्त परिवार में रहने के कारण

(ख) विवाह के पश्चात् बंदिशों के कारण

(ग) नवविवाहिता पर पुराने नियम लागू होने के कारण

(घ) उपर्युक्त सभी

18. आप 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना किसे कहेंगे?

(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य (ख) पीढ़ी का अन्तराल

(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

19. यशोधर बाबू के बेटे भूषण ने उन्हें उनकी शादी की 25 वीं वर्षगाँठ पर क्या उपहार दिया?

(क) कुर्ता पजामा (ख) ऊनी ड्रेसिंग गाउन

(ग) आधुनिक घड़ी (घ) इनमें से कुछ भी नहीं

20. यशोधर बाबू कहाँ के रहने वाले हैं?

(क) कुमाऊँ प्रदेश (ख) गढ़वाल प्रदेश

(ग) पंजाब (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

21. यशोधर बाबू स्वयं को डेमोक्रेटिक कैसे समझते हैं?

(क) वे अपने नियम परिवार में लागू नहीं करते। (ख) सभी को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है।

(ग) बेटा बेटी सभी को समान मानते हैं (घ) उपर्युक्त सभी

22. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाउ इम्प्रापर" इन जुमले में कौनसा भाव निहित है?

(क) यथास्थितिवाद यानि ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेने का भाव

(ख) अनिर्णय की स्थिति

(ग) द्वंद्व का भाव

(घ) उपर्युक्त सभी

23. यशोधर बाबू का दफ्तर कितने बजे बंद होता था?

(क) पाँच (ख) चार

(ग) सात (घ) आठ

24. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाउ इम्प्रापर" ये दो जुमले, जो कहानी के बीजवाक्य हैं, कहानी के किस पात्र में बदलाव को असंभव बना देते हैं?

(क) यशोधर (ख) किशनदा

(ग) यशोधर की पत्नी (घ) उपर्युक्त सभी

25. यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश होते हुए "समहाउ इम्प्रापर" क्या अनुभव करते हैं?

(क) वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे।

(ख) अपने बच्चों द्वारा गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा उन्हें नहीं जँचती।

(ग) साधारण पुत्र को असाधारण वेतन देने वाली नौकरी समझ नहीं आती।

(घ) उपर्युक्त सभी

26. यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक न होते हुए भी आधुनिकता में कैसे ढल गई?

(क) बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी के कारण

(ख) वक़्त को देखते हुए

(ग) मन की इच्छा से

(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

27. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी में शादी की वर्षगाँठ थी?

(क) 20 वीं (ख) 25वीं

(ग) 35वीं (घ) 15वीं

28. यशोधर पंत का तीसरा बेटा कहाँ रहता था?

(क) अमेरिका (ख) रूस

(ग) फ्रांस (घ) चीन

29. जनार्दन जोशी कौन थे?

(क) यशोधर पंत के अधीनस्थ कर्मचारी (ख) यशोधर पंत के पड़ोसी

(ग) यशोधर पंत के मित्र (घ) यशोधर पंत के बहनोई

30. यशोधर बाबू अपने बीमार बहनोई को देखने कहाँ जाना चाहते थे?

(क) राजस्थान (ख) इलाहाबाद

(ग) अहमदाबाद (घ) पटना

31. यशोधर को जीवन जीने की कला किसने सिखाई?

(क) किशन दा (ख) श्री टी एन शर्मा

(ग) भूषण (घ) वाई. डी. पन्त

32. किशन दा की किस परंपरा को यशोधर ने जीवंत रखा?

(क) घर में होली गवाना (ख) जन्मदिन मनाना

(ग) शादी की वर्षगाँठ बनाना (घ) भोज का आयोजन करना

33. भूषण प्रतिमाह कमाता था?

(क) 2500 रु (ख) 2000 रु

(ग) 1500 रु (घ) 1000 रु

34. यशोधर बाबू ऑफिस कैसे जाते थे?

(क) कार से (ख) स्कूटर से

(ग) साइकिल से (घ) पैदल

35. इनमें सिल्वर वेडिंग कहानी के पात्र नहीं हैं?

(क) यशोधर बाबू (ख) भूषण

(ग) किशन दा (घ) रवि दा

36. किशन दा रहते थे?

(क) पंजाब (ख) दिल्ली

(ग) पटना (घ) महाराष्ट्र

37. यशोधर बाबू से बदतमीजी किसने की?

(क) चड्ढा ने (ख) भूषण ने

(ग) वाई. डी. पंत ने (घ) जनार्दन जोशी ने

38. घर में दूध लाने की जिम्मेदारी किस पर थी?

(क) भूषण पर (ख) यशोधर पंत की बेटी पर

(ग) यशोधर पंत की पत्नी पर (घ) यशोधर पंत पर

39. यशोधर पंत को भाऊ कौन कहता था?

(क) किशन दा (ख) जनार्दन जोशी

(ग) भूषण (घ) वाई. डी. पंत

40. भगवानदास कौन था?

(क) ऑफिस का चपरासी (ख) ऑफिस का कर्मचारी

(ग) ऑफिस का बड़ा बाबू (घ) ऑफिस का अर्दली

41. किशन दा के मानस पुत्र कौन हैं?

(क) जनार्दन जोशी (ख) भगवान दास

(ग) यशोधर पंत (घ) वाई डी पंत

42. 'जनार्दन' शब्द सुनकर यशोधर पंत को किसकी याद आई?

(क) किशन दा की (ख) भूषण की

(ग) अपने बहनोई जनार्दन जोशी की (घ) चड्ढा की

43. पाँच बजकर तीस मिनट होने पर ऑफिस की घड़ी बजा रही थी?

(क) 3.00 (ख) 4.25

(ग) 5.25 (घ) 6.00

44. यशोधर पंत ऑफिस के बाद प्रतिदिन कौन से मंदिर जाते थे?

(क) बिड़ला मंदिर (ख) योग माया मंदिर

(ग) गौरी शंकर मंदिर (घ) अक्षरधाम मंदिर

45. दिल्ली में यशोधर पंत को किसने आश्रय दिया?

(क) किशन दा (ख) जनार्दन जोशी

(ग) वाई. डी. पंत (घ) चड्ढा

46. यशोधर पंत की बेटी पढ़ाई कर रही है?

(क) डॉक्टरी की (ख) इंजीनियरिंग की

(ग) बैंक की (घ) एम.बी.ए. की

47. अधीनस्थ कर्मचारियों ने पार्टी के रूप में माँगा?

(क) चाय (ख) मट्ठी

(ग) लड्डू (घ) उपर्युक्त सभी

48. भूषण काम करता था?

(क) विज्ञापन एजेंसी में (ख) पेपर के दफ्तर में

(ग) टेलीफोन के दफ्तर में (घ) शिक्षा कार्यालय में

49. माँ की मृत्यु के पश्चात यशोधर पंत किसके पास रहे?

(क) चाची (ख) बुआ

(ग) भाभी (घ) दादी

50. चंद्र दत्त तिवारी कौन थे?

(क) यशोधर पंत का भानजा (ख) यशोधर पंत का मित्र

(ग) यशोधर पंत का ममेरा भाई (घ) यशोधर पंत का अधीनस्थ कर्मचारी

51. यशोधर बाबू की कितनी बेटियाँ थी?

(क) एक (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार

52. किशनदा की परंपराओं को जीवित रखने की कोशिश में यशोधर बाबू ने किसको नाराज़ किया?

(क) गिरीश को (ख) अपनी पत्नी को

(ग) अपने बच्चों को (घ) पत्नी और बच्चों दोनों को

53. यशोधर बाबू बार-बार कहा करते थे?

(क) ओके (ख) गुड बाय

(ग) समहाउ इमप्रॉपर (घ) यू कैन गो

54. चूनेदानी कहकर किस का मजाक उड़ाया जाता है?

(क) घड़ी का (ख) साइकिल का

(ग) पोशाक का (घ) चश्मे का

55. रिटायरमेंट के समय यशोधर बाबू का वेतन कितना था?

(क) दो हज़ार रुपये (ख) तीन हज़ार रुपये

(ग) डेढ़ हज़ार रुपये (घ) पाँच हज़ार रुपये

56. यशोधर बाबू की पत्नी और बच्चों को उनके घर में किए जाने वाले आयोजनों पर कौन-सी चीज़ें सख्त नापसंद थीं?

(क) वक्त की बर्बादी (ख) खर्च और होने वाला शोर

(ग) विभिन्न लोगों का घर में आना (घ) अन्य

57. दफ़्तर से लौटते वक्त यशोधर बाबू रोज़ कहाँ जाते थे?

(क) सिनेमा घर (ख) दोस्त के घर

(ग) कहीं नहीं (घ) बिड़ला मंदिर

58. बिड़ला मंदिर से यशोधर बाबू कहाँ जाते थे?

(क) घर (ख) गोल मार्केट

(ग) पहाड़गंज (घ) अन्य

59. यशोधर बाबू कितने बजे घर पहुँचते थे?

(क) आठ बजे (ख) सात बजे

(ग) दस बजे (घ) अन्य

60. यशोधर बाबू के कितने बच्चे थे?

(क) पाँच (ख) तीन

(ग) चार (घ) दो

उत्तरमाला

1	(क)	13	(ख)	25	(क)	37	(क)	49	(ख)
2	(ग)	14	(ख)	26	(क)	38	(घ)	50	(क)
3	(ख)	15	(क)	27	(ख)	39	(क)	51	(क)
4	(घ)	16	(क)	28	(क)	40	(क)	52	(ख)
5	(ख)	17	(घ)	29	(घ)	41	(ग)	53	(ग)
6	(ख)	18	(ख)	30	(ग)	42	(ग)	54	(क)
7	(क)	19	(ख)	31	(क)	43	(ग)	55	(ग)
8	(क)	20	(क)	32	(क)	44	(क)	56	(घ)
9	(ख)	21	(घ)	33	(ग)	45	(क)	57	(घ)
10	(ख)	22	(घ)	34	(ग)	46	(क)	58	(ग)
11	(ख)	23	(क)	35	(घ)	47	(घ)	59	(क)
12	(ग)	24	(क)	36	(ख)	48	(क)	60	(ग)

पाठ - 2

जूझ (वितान)

आनंद यादव (1922-1996)

पाठ का सार:

"जूझ" कहानी मूलरूप से मराठी उपन्यास "झोबी" से ली गई हैं। जिसके लेखक डॉ आनंद यादव हैं।इस मराठी कहानी का हिंदी अनुवाद केशव प्रथम वीर द्वारा किया हैं। डॉ आनंद रतन यादव का मूल नाम आनंदा रत्नाप्पा ज़काते हैं। जूझ (अर्थात जूझना या संघर्ष करना) कहानी आनंद यादव की आत्मकथा का एक हिस्सा है ।

लेखक के पिता ने उसे पाठशाला जाने से रोक रखा है। उसके पिता सारा दिन गाँव में घूमते रहते और रखमा बाई के कोठे पर भी जाया करते थे। स्वयं काम न करके लेखक को खेती के काम में लगा दिया था। लेखक पढ़ना चाहता था। उसे लगता था कि खेती से कोई लाभ नही, बल्कि पढ़ने से उसे नौकरी मिल जाएगी या कुछ व्यापार कर सकेगा। दिवाली बीत जाने पर महिना भर ईख पेरने के लिए कोल्हू चलाना पड़ता क्योंकि लेखक के पिता को गुड़ की अच्छी कीमत मिल जाएगी। एक दिन लेखक ने माँ से पाठशाला जाने की इच्छा प्रकट की। माँ भी चाहती थी कि वह पाठशाला जाए लेकिन पिता के गुस्से के कारण वह भी चुप थी। लेखक ने एक तरीका बताया कि यदि दत्ता राव साहब पिता जी को समझाए तो बात बन सकती है। दत्ता राव साहब उस इलाके के प्रभावशाली व्यक्ति थे। माँ –बेटे ने जाकर उनको सारी बात बताई। राव साहब एक समझदार व्यक्ति और शिक्षा प्रेमी थे। उन्होने लेखक के पिता को डरा-धमका कर समझाया कि बेटे को पाठशाला भेजो। यदि तुम असमर्थ हो तो वे स्वयं आनंदा को पाठशाला भेजेंगे। इस तरह लेखक का पाठशाला जाना फिर से शुरू हुआ। वह दूसरे दिन पिता जी की कडी शर्तों के अनुसार विद्यालय जाने लगा। कक्षा में सभी लडके नए थे। कक्षा के शरारती बच्चों ने उसका उपहास किया। लडकों ने उसकी धोती खोलने की कोशिश की। कक्षा में उसकी दोस्ती वसंत पाटिल नाम के होशियार बच्चे से हुई। वह गणित मे तेज़ था। लेखक भी उसकी तरह पढ़ने की कोशिश करने लगा। मास्टर उसे आनंदा कहकर बुलाने लगे। मराठी भाषा के अध्यापक न.पा.सौंदलगेकर से लेखक बहुत प्रभावित हुए। पढाते समय अध्यापक स्वयं रम जाते थे। सुरीले कंठ, छंद और रसिकता के कारण लेखक उनसे प्रभावित हुआ। लेखक भी घर जाकर मास्टर साहब की तरह कविताएँ रचने लगा। अब लेखक का अकेलापन समाप्त हुआ। अब वह खेत में पानी लगाते हुए जानवर को चराते हुए कविता रचने लगा। वह अपने आस-पास के लोगों अपने गाँव , खेतो पर तुकबंदी करने लगा। वह अपनी लिखी हुई कविता मास्टर साहब को दिखाने लगता। मस्टर साहब ने ही उसे छंद अलंकार लय, का ज्ञान कराया। साथ ही अन्य कवियों के काव्य संग्रह भी दिया, जिसे पढ़कर लेखक ने कविता की समझ विकसित की।

शब्दार्थ-

कोल्हू-रस निकालने वाला यंत्र	जिरह-बहस	नापास-अनुत्तीर्ण	बालिस्टर-बैरिस्टर
गमछा-पतले कपडे का तौलिया	काछ-धोती का छोर	निबाह-निर्वाह	मैलखाऊ-जिसमे मैल दिखाई न दे
दहशत-डर	मुनासिब-उचित	कंठस्थ-जबानी याद होना	भान-आभास
ढोर-पशु	अपेक्षा-तुलना	तुकबंदी-छंदबद्ध सामान्य कविता	ढर्रे-शैली

पाठ के कुछ स्मरणीय बिंदु –

1. पाठ 'जूझ' के लेखक आनंद यादव हैं।
2. 'जूझ' पाठ के नायक/लेखक की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-
   - पढ़ने की ललक- लेखक माँ और दत्ता जी राव देसाई की मदद से पुनः पढ़ाई करता है।
   - कठोर परिश्रमी – वह पढ़ाई भी करता है, खेतों में काम भी और ढोर भी चराता है।
   - दूरदर्शी – उसे पता था कि अगर वह पढ़-लिख लेगा तो सरकारी नौकरी लग जाएगी।
   - लगनशील – अपनी लगन के कारण ही वह स्कूल में होशियार बच्चों में गिना जाने लगता है। गणित में दक्ष हो जाता है।
   - मराठी भाषा का अच्छा ज्ञानार्जन करता है और कविता भी लिखता है।
   - अध्यापकों का चहेता --पाठ में तीन अध्यापकों का ज़िक्र है। रणनवरे मास्टर,मंत्री सर जो गणित पढ़ाते थे और न.वा.सौंदलगेकर जो मराठी पढ़ाते थे।
3. वसंत पाटील नाम का एक लड़का शरीर से दुबला-पतला, किंतु बड़ा होशियार था। उसके सवाल हमेशा सही निकलते थे। स्वभाव से शांत। हमेशा पढ़ने में लगा रहता। दूसरों के सवालों की जाँच करता था। मास्टर ने उसे कक्षा मॉनीटर बना दिया था।
4. कविता करना सीख जाने के बाद लेखक को अकेलेपन में भी मज़ा आने लगा, उसे यह भी लगने लगा कि कवि भी मनुष्य ही होते हैं और जब उसकी कविता को स्कूल के समारोह में गवाया गया तो उसे ऐसा लगा मानो उसके पंख निकल आए हों।
5. लेखक जुझारू योद्धा है क्योंकि वह विषम परिस्थिति में भी अपने पढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर लेता है और उसकी प्रतिभा और बुद्धिमत्ता तब सिद्ध हो जाती है जब वह पढ़ाई-लिखाई मे कुशल हो जाता है और कविता भी लिखना शुरू कर देता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दादा कोल्हू जल्दी क्यों लगाना चाहते थे?

(क) काम जल्दी खत्म करने के लिए (ख) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए
(ग) दूसरी फसल के लिए (घ) आराम करने के लिए

उत्तर: (ख) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए

2. 'जूझ'कहानी के शीर्षक का अर्थ क्या हैं?

(क) संघर्ष करना (ख) चालाकी
(ग) मेहनत करना (घ) कठिनाई

उत्तर: (क)संघर्ष करना

3. 'जूझ'कहानी किस उपन्यास से ली गई है?

(क) गुजराती उपन्यास'नटरंग' (ख) गुजराती उपन्यास"झोबी"
(ग) मराठी उपन्यास'नटरंग' (घ) मराठी उपन्यास 'झोबी'

उत्तर: (घ) मराठी उपन्यास 'झोबी'

4. "झोबी" उपन्यास किस भाषा में लिखा गया हैं?

(क) राजस्तानी (ख) हरियाणवी

(ग) गुजराती (घ) मराठी

उत्तर: (घ) मराठी

5. लेखक आनंद यादव के पिता ने उनकी पढ़ाई कब छुड़वा दी?

(क) जब वो चौथी में पढ़ते थे (ख) जब वो पांचवी में पढ़ते थे

(ग) जब वो छठी में पढ़ते थे (घ) जब वो सातवी में पढ़ते थे

उत्तर: (ख) जब वो पांचवी में पढ़ते थे

6. लेखक ने दुबारा कौन सी कक्षा में दाखिला लिया?

(क) पांचवी कक्षा में (ख) छठी कक्षा में

(ग) सातवी कक्षा में (घ) आठवी कक्षा में

उत्तर: (क) पांचवी कक्षा में

7. लेखक के पिता का क्या नाम था?

(क) कणहप्पा (ख) राजप्पा

(ग) रत्नाप्पा (घ) सरहप्पा

उत्तर: (ग) रत्नप्पा

8. लेखक की कक्षा के मॉनीटर का नाम क्या था?

(क) वसंत पाटील (ख) चव्हाण पाटील

(ग) मनोहर पाटील (घ) राव पाटील

उत्तर: (ख) चव्हाण पाटील

9. 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है?

(क) अवधी (ख) ब्रज

(ग) मराठी (घ) गुजराती

उत्तर: (ग) मराठी

10. 'जूझ' के कथानायक का क्या नाम बताया गया है?

(क) आनंद (ख) आनंदा

(ग) नित्यानंदा (घ) परमानंदा

उत्तर: (ख) आनंदा

11. पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की?

(क) दादा से (ख) माँ से

(ग) दत्ता जी राव से (घ) सौंदलगेकर

उत्तर: (ख) माँ से

12. सौंदलगेकर किस विषय का अध्यापक थे?

(क) अंग्रेजी के (ख) गणित के

(ग) मराठी के (घ) संस्कृत के

उत्तर: (ग) मराठी के

13. खेत का कौन-सा काम समाप्त होने के बाद लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की?

(क) पानी लगाने का काम (ख) बिजाई का काम

(ग) कटाई का काम (घ) कोल्हू का काम

उत्तर: (घ) कोल्हू का काम

14. पाठ के अनुसार लेखक के घर कोल्हू कब शुरू होता था?

(क) साल की शुरुआत में (ख) होली पर

(ग) दिवाली के बाद (घ) नवरात्रि में

उत्तर: (ग) दिवाली के बाद

15. लेखक पढ़ना क्यों चाहता है?

(क) ज्ञान के लिए (ख) कवि बनने के लिए

(ग) विद्वान बनने के लिए (घ) नौकरी के लिए

उत्तर: (घ) नौकरी के लिए

16. लेखक की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है?

(क) कुत्ते के समान (ख) शेर के समान

(ग) जंगली सूअर के समान (घ) चीते के समान

उत्तर: (ग) जंगली सूअर के समान

17. लेखक की माँ के अनुसार उसके पति ने लेखक को पाठशाला जाने से क्यों रोक दिया?

(क) खर्चे से बचने के लिए (ख) बीमारी से बचने के लिए

(ग) अनपढ़ता से बचने के लिए (घ) खुद काम से बचने के लिए

उत्तर: (घ) खुद काम से बचने के लिए

18. दादा राव साहब के यहाँ तत्काल क्यों चला गया?

(क) अपना सम्मान समझकर (ख) डरकर

(ग) पैसों के लालच से (घ) घबराकर

उत्तर: (क) अपना सम्मान समझकर

19. स्कूल से छुट्टी के बाद लेखक को कितने घंटे पशु चराने होते थे?

(क) दो घंटे (ख) तीन घंटे

(ग) चार घंटे (घ) एक घंटा

उत्तर: (घ) एक घंटा

20. लेखक के कक्षा अध्यापक का नाम क्या था?

(क) वसंत (ख) सौंदलगेकर

(ग) मंत्री (घ) रत्नप्पा

उत्तर: (ग) मंत्री

21. 'जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है?

(क) पढ़ने की प्रवृत्ति का (ख) कविता करने की प्रवृत्ति का

(ग) लेखन प्रवृत्ति का (घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति का

उत्तर: (घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति का

22. जिस शरारती लड़के ने लेखक के सिर से गमछा छीना था, उसका नाम क्या था?

(क) वसंत (ख) चह्वाण

(ग) मनोहर (घ) सुन्दर

उत्तर: (ख) चह्वाण

23. लेखक के दादा (पिता) की कैसी प्रवृत्ति थी?

(क) परिश्रमी (ख) गुस्सैल और हिंसक

(ग) विनम्र (घ) अहिंसक

उत्तर: (ख) गुस्सैल और हिंसक

24. लेखक को गणित पढ़ाने वाले मास्टर का क्या नाम था?

(क) वसंत (ख) सौंदलगेकर

(ग) मंत्री (घ) रत्नप्पा

उत्तर: (ग) मंत्री

25. "आने दे अब उसे, मैं उसे सुनाता हूँ कि नहीं अच्छी तरह देख।" यह कथन किसने व किससे कहा?

(क) दत्ता राव ने लेखक के पिता से (ख) दत्ता राव ने लेखक की माता से

(ग) लेखक के पिता ने लेखक से (घ) लेखक के पिता ने दत्ता राव से

उत्तर: (क) दत्ता राव ने लेखक के पिता से

26. मराठी अध्यापक की किस बात से लेखक को लगा कि वह भी कविता कर सकता है?

(क) जब मास्टर ने अपने घर के दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर कविता लिखी

(ख) जब मास्टर ने विद्यालय में एक प्रतियोगिता रखी

(ग) जब गाँव में मास्टर जी ने लेखक की तारीफ की

(घ) जब मास्टर ने उन्हे कविता लिखना सिखाया

उत्तर: (क) जब मास्टर ने अपने घर के दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर कविता लिखी

27. जूझ पाठ का शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि-

(क) लेखक पढ़ता रहता था (ख) लेखक खेती के काम में संघर्ष करता था

(ग) लेखक के पिता का संघर्ष करने के कारण (घ) लेखक के संघर्ष से जूझने की प्रवृत्ति के कारण

उत्तर: (घ) लेखक के संघर्ष से जूझने की प्रवृत्ति के कारण

28. 'जूझ'पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

(क) अकेलापन डरावना है (ख) अकेलापन उपयोगी है

(ग) अकेलापन अनावश्यक है (घ) अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है

उत्तर: (ख) अकेलापन उपयोगी है

29. जूझ कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

(क) खेतीबाड़ी में कोई भविष्य नहीं होता

(ख) अच्छे कार्य के लिए झूठ बोलना गलत नहीं है

(ग) सहपाठी तो हंसी मज़ाक करते हैं उनसे दोस्ती बना कर रखनी चाहिए

(घ) जीवन में कितनी तकलीफें क्यों न आयें, हमें हमेशा जुझारू रहना चाहिए

उत्तर: (घ) जीवन में कितनी तकलीफें क्यों न आयें, हमें हमेशा जुझारू रहना चाहिए

30. 'मंत्री' गणित के अध्यापक के बारे में कौन सी बातें असत्य है?

(क) वह उधम करने वाले बच्चों की पिटाई कर देते थे

(ख) वह पढ़ाई करने वाले लड़कों को शाबाशी देते

(ग) बच्चे 'मंत्री' गणित के अध्यापक के डर से पढ़कर आते

(घ) मंत्री अध्यापक बच्चों को रोज दो कविताएं सुनाते थे

उत्तर: (घ) मंत्री अध्यापक बच्चों को रोज दो कविताएं सुनाते थे

31. लेखक किस बच्चे से प्रभावित होकर पढ़ाई के सभी काम करने लगा?

(क) वसंत सैनी (ख) वसंत पटेल

(ग) वसंत पाटील (घ) वसंत दत्ता

उत्तर: (ग) वसंत पाटील

32. मराठी अध्यापक के अध्यापन के विषय में क्या असत्य है?

(क) वे कविता को सुरीले गले, छंद की बढ़िया चाल, रसिकता के साथ पढ़ाते थे

(ख) वे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते

(ग) वे प्रसिद्ध कवियों के संस्मरण भी सुनाते

(घ) कविता सुनाते समय अगर कोई बच्चा बोल दे तो उसकी पिटाई कर देते

उत्तर: (घ) कविता सुनाते समय अगर कोई बच्चा बोल दे तो उसकी पिटाई कर देते

33. मराठी अध्यापक के अध्यापन से लेखक में क्या-क्या नए परिवर्तन आए?

(क) वह खेत में अकेले काम करते हुए कविता गाता

(ख) मास्टर के अभिनय, यति-गति, आरोह-अवरोह की नकल करते हुए खुले कंठ से कविता गाता

(ग) लेखक को अब अकेले रहना अच्छा लग गया

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (घ) उपर्युक्त सभी

34. कक्षा में किस बच्चे को मॉनिटर बनाया गया था?

(क) वसंत पाटिल (ख) चाह्वान

(ग) आनंदा (घ) वसंत दत्ता

उत्तर: (क) वसंत पाटिल

35. आनंद का विश्वास विद्यालय में पुनः क्यों बढ़ने लगा?

(क) विद्यालय में पुरस्कार मिलने के कारण

(ख) मंत्री अध्यापक से वाह वाही मिलने के कारण

(ग) अध्यापकों के अपनेपन और वसंत पाटिल से दोस्ती के कारण

(घ) दत्ता राव साहब के कारण

उत्तर: (ग) अध्यापकों के अपनेपन और वसंत पाटिल से दोस्ती के कारण

36. मास्टर सौंदलगेकर किन कवियों के साथ अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाते?

(i) दिनकर, नरेंद्र कोहली, (ii) निराला जी के

(iii) बोरकर, तांबे (iv) गिरीश और केशव कुमार

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i) (ख) केवल (ii)

(ग) (ii) और (iii) (घ) (iii) और (iv)

उत्तर: (घ) (iii) और (iv)

37. कविताओं को मास्टर के बताए राग से अलग भी गाया जा सकता है। ये आनंदा को कब अनुभव हुआ?

(क) कक्षा के दूसरे बच्चों को कविता सुनाते समय

(ख) कविता लिखते समय

(ग) रात को सोते समय

(घ) खेत में ही काम करते समय मास्टर द्वारा गाये कविताओं को गाते –गाते

उत्तर: (घ) खेत में ही काम करते समय मास्टर द्वारा गाये कविताओं को गाते –गाते

38. लेखक को यह क्यों लगने लगा कि जितना वह अकेले रहे उतना अच्छा है?

(क) अकेलेपन में वह थोड़ा आराम कर सकता था।

(ख) अकेले में वह सिनेमा देख सकता है

(ग) अकेले में वह अलग-अलग चालों से तेज़ आवाज़ में कविता गा सकता था

(घ) अकेले में वह स्वयं से बाते कर सकता था

उत्तर: (ग) अकेले में वह अलग-अलग चालों से तेज़ आवाज़ में कविता गा सकता था

39. 'चाँद रात पसरिते' कविता के सम्बंध में कौन सी बात सत्य है?

(क) यह दिनकर द्वारा रचित है (ख) यह अनंत काणेकर द्वारा रचित है

(ग) यह केशव कुमार द्वारा रचित है (घ) यह सैंदलगेकर द्वारा रचित है

उत्तर: (ख) यह अनंत काणेकर द्वारा रचित है

40. आनंद ने 'चाँद रात पसरिते'कविता को सिनेमा के एक गीत की तर्ज़ पर गाया। वह गाना किस छंद की तर्ज़ पर था?

(क) दोहा (ख) मनोरम

(ग) सवैया (घ) केशव करणी जाति

उत्तर: (घ) केशव करणी जाति

41. मास्टर जी ने आनंदा के नए तर्ज़ पर गीत गाने से प्रभावित होकर क्या किया?

(क) आनंद को कविता के राग बदलने पर समझाया कि यह गलत राग है

(ख) छठी-सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामने उसे बुलाकर गवाया

(ग) उसे पुरस्कार दिया

(घ) उसे कविता न गाने को कहा

उत्तर: (ख) छठी-सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामने उसे बुलाकर गवाया

42. आनंदा को कब यह लगने लगा कि कवि भी उसके जैसे ही हाड़ मांस के व्यक्ति हैं?

(i) जब उसने मराठी अध्यापक को देखा

(ii) खुद मास्टर भी कवि थे

(iii) जब मराठी अध्यापक उसे कवियों के चरित्र और संस्मरण सुनाते

(iv) इनमे कोई नही

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)

(ग) (iii) और (iv) (घ) (i) और (iv)

उत्तर: (ख) (ii) और (iii)

43. आनंद ने कविता लिखने की शुरआत में तुकबंदी के लिए किन विषयों को चुना?

(क) अपने परिवार के लोग (ख) फसलों, जंगली फूलों अपने आस पास के वातावरण पर

(ग) रोज़मर्रा की क्रियाओं पर (घ) पशु और पक्षीयों पर

उत्तर: (ख) फसलों, जंगली फूलों अपने आस पास के वातावरण पर

44. मास्टर सौंदलगेकर द्वारा आनंदा को कविता की बारीकियों को समझाने का उस पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क) कविता के प्रति असीम प्रेम बढ़ गया (ख) विद्यालय के प्रति अपनत्व और बढ़ गया

(ग) खेतों में काम करना बंद कर दिया (घ) पढाई पर ध्यान देने लगा

उत्तर: (क) कविता के प्रति असीम प्रेम बढ़ गया

45.'जूझ' कहानी के नायक द्वारा पढ़ाई के साथ-साथ खेती का काम करने से सम्बंधित कौन सी बात असत्य है?

(क) उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो गई (ख) वह और संघर्षशील हो गया

(ग) वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा। (घ) प्रतिकूल परिस्थितियों ने उसके दृढ़ निश्चय को बढा दिया

उत्तर: (क) उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो गई

46. कविता पाठ करने के समय मराठी अध्यापक क्या करते थे?

(क) कविता की लय भूल जाते थे (ख) कविता लिखने को कहते थे

(ग) कविता के सिद्धांतों पर चर्चा करते थे (घ) कविता पाठ के बीच-बीच में संस्मरण सुनाते थे

उत्तर: (घ) कविता पाठ के बीच-बीच में संस्मरण सुनाते थे

47. इस कहानी के माध्यम से किसके संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है?

(क) खेतिहर मजदूर के संघर्ष (ख) आनंदा के जीवन का संघर्ष

(ग) गरीब माँ का संघर्ष (घ) गरीब किसान का संघर्ष

उत्तर: आनंदा के जीवन का संघर्ष

48. 'जूझ' कहानी में आनंदा के उच्च स्तरीय कवि बनने तक का सफर किस बात का प्रमाण है?

(क) उसके परिश्रम एवं लगन का (ख) पिता की बात को महत्व ना देने का

(ग) झूठ बोल कर पढ़ाई करने का (घ) केवल अपने मन की करने का

उत्तर: (क) उसके परिश्रम एवं लगन का

49. 'जूझ' पाठ के अनुसार लेखक ने अपनी जन्मजात प्रतिभा का परिचय किस प्रकार दिया?

(क) विद्यालय में प्रवेश लेकर (ख) पिता का विरोध करके

(ग) नए-नए विषयों पर कविता लिख कर (घ) माता की आज्ञा का पालन करके

उत्तर: (ग) नए-नए विषयों पर कविता लिख कर

50. 'जूझ' पाठ में आनंदा की कक्षा में शरारत किस कारण कम होने लगी?

(क) वसंत के आ जाने से

(ख) गणित के अध्यापक द्वारा शरारती लड़कों की पिटाई किए जाने से

(ग) मराठी अध्यापक सौंदलगेकरके आने से

(घ) विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा होने से

उत्तर: (ख) गणित के अध्यापक द्वारा शरारती लड़कों की पिटाई किए जाने से

51. मास्टर सौंदलगेकर ने किस पर कविता लिखी थी?

(क) आनंद की जुझारू प्रवृत्ति पर (ख) विद्यालय के अनुशासन पर

(ग) मालती लता की सुंदरता पर (घ) प्रकृति की सुंदरता पर

उत्तर: (ग) मालती लता की सुंदरता पर

52. आनंदा के पिता द्वारा स्वयं खेती ना करके अपने बेटे से खेती का काम करवाना उनके किस चरित्र की ओर संकेत करता है?

(i) पिता अपने बेटे को परिश्रमी बनाना चाहता है

(ii) पिता के आलसी और कमजोर कामचोर रूप को दर्शाता है

(iii) पिता दूरदर्शी है

(iv) पिता के लिए पुत्र ही उसका सब कुछ है

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i) (ख) केवल (ii)

(ग) (i), (iii) और (iv) (घ) (iii) (iv)

उत्तर: (ख) केवल (ii)

53. आनंदा जब पहले दिन पाठशाला गया तो उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

(क) उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा (ख) वह क्रोधित हुआ

(ग) वह अत्यंत उदास था (घ) उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं थी

उत्तर: वह अत्यंत उदास था

54. आनंदा और उसकी माँ द्वारा झूठ का सहारा ना लिए जाने की स्थिति में क्या होता?

(i) आनंदा के जीवन में अकेलापन ठहर जाता

(ii) वह अपनी कविता लिखने के गुण को नहीं निकाल पाता

(iii) वह शिक्षित होने से वंचित रह जाता

(iv) उपर्युक्त सभी

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)

(ग) (iii) और (iv) (घ) (iv)

उत्तर: (घ) (iv)

55. कविता के साथ खेलने से आनंदा को कौन सी शक्ति प्राप्त हुई?

(i) दिव्य शक्ति की

(ii) कविता के साथ नृत्य और अभिनय करने की

(iii) गायक बनने की

(iv) अकेलेपन में भी आनंद अनुभव करने की

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i) (ख) केवल (iii)

(ग) (ii), (iv) (घ) (iii), (iv)

उत्तर: (ग) (ii), (iv)

56. 'जूझ ' पाठ के अनुसार पढ़ाई लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था क्योंकि

(i) लेखक खेती बाड़ी नहीं करना चाहता था

(ii) दत्ता जी राव जानते थे कि खेती-बाड़ी में लाभ नहीं है

(iii) लेखक का पढ़ लिखकर सफल होना बहुत आवश्यक था

(iv) लेखक का पिता नहीं चाहता था कि वह आगे की पढ़ाई करें

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i) (ख) केवल (ii)

(ग) केवल (iii) (घ) (ii) और (iii)

उत्तर: (ग) केवल (iii)

57. दत्ता जी राव की सहायता के बिना जूझ कहानी का 'मैं' पात्र क्या सब नही कर पाता?

(i) पढ नही पाता

(ii) कविता, उपन्यास न लिख पाता

(iii) खती नही कर पाता

(iv) वह कभी स्कूल नही जा पाता

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i) (ख) केवल (ii)

(ग) (i) (ii) और (iii) (घ) (i) (ii) और (iv)

उत्तर: (घ) (i) (ii) और (iv)

58. कविता के प्रति रुचि जगाने में शिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है?

(i) कविता को रटवाना

(ii) कविता को रस,लय,छंद के आधार पर पढाना

(iii) छात्र को प्रोत्साहित करना

(iv) काव्य उपकरणों की जानकारी देना

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) (i) (iii) और (iv)

(ख) (ii) (iii) और (iv)

(ग) (i) (ii) और (iii)

(घ) (i) (ii) और (iv)

उत्तर: (ख) (ii) (iii) और (iv)

59. आनंदा को गणित समझ आने के सम्बंध मे कौन सा/से कथन सत्य है?

(क) मन की एकाग्रता के कारण (ख) वसंत पाटिल की सहायता से

(ग) अध्यापक की सहायता से (घ) मित्रो की सहायता से

उत्तर: (क) मन की एकाग्रता के कारण

60. कहानी में आनंदा लेखन का अभ्यास कैसे करता था?

(क) मिट्टी पर लिखकर (ख) श्यामपट्ट पर लिखकर

(ग) अपने पशुओं की पीठ पर लिखकर (घ) घर की दीवारों पर लिखकर

उत्तर: (ग) अपने पशुओं की पीठ पर लिखकर

पाठ - 3

अतीत में दबे पाँव

ओम थानवी

(पाठ का सार)

अतीत में दबे पाँव" एक यात्रा वृतांत है जिसके लेखक ओम थानवी जी हैं। इस यात्रा वृतांत में ओम थानवी जी ने पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित सिंधु घाटी सभ्यता के एक महत्त्वपूर्ण स्थल"मोहनजोदड़ो" की अपनी यात्रा का सजीव वर्णन किया हैं। सिंधु घाटी सभ्यता को लगभग 5,000 साल पुरानी सभ्यता माना जाता हैं। इसमें दो सभ्यताएँ हड़प्पा सभ्यता (पंजाब प्रांत) और मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित) प्रमुख हैं। सिंधु घाटी सभ्यता को विश्व की सबसे पुरानी सुनियोजित नगरीय सभ्यता माना जाता है।

हड़प्पा में तो रेल लाइन बिछने की वजह से ज्यादा खुदाई नहीं हो पायी मगर मोहनजोदड़ो में विस्तृत खुदाई की गई। मोहनजोदड़ो की खुदाई का कार्य सन 1922 में राखलदास बनर्जी ने उस समय के पुरातत्व विभाग के निदेशक सर जॉन मार्शल के कहने पर किया।

मोहनजोदड़ो (मुर्दो का टीला) उस समय की ताम्रकालीन सभ्यता का सबसे बड़ा शहर था। जो करीब 200 हेक्टर क्षेत्र में फैला था और जिसकी आबादी लगभग 85,000 रही होगी। ऐसा माना जाता हैं कि अपने समय में मोहनजोदड़ो, घाटी की सभ्यता का केंद्र अर्थात राजधानी रही होगी।

लेखक जब मोहनजोदड़ो घूमने गए तो वहाँ घूमते हुए उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कि वो चुपके – चुपके 5,000 वर्ष पूर्व की सभ्यता में पहुँच गए हैं। लेखक कहते हैं कि ताम्रकालीन शहरों का सबसे बड़ा शहर अपनी बड़ी-बड़ी गलियों और इमारतों के बल पर, आज के महानगरों को भी मात देता हुआ नजर आता है।

मोहनजोदड़ो शहर "टीलों" पर बसाया गया है। ये टीले प्राकृतिक नहीं है बल्कि छोटे-छोटे मानव निर्मित टीले हैं जो कच्ची – पक्की ईंटों के बने हैं। ऐसा सिंधु नदी के बाढ़ के पानी के प्रकोप से बचने के लिए किया गया था।

लेखक मोहनजोदड़ो की नगरीय सभ्यता – संस्कृति व जल संस्कृति के बारे में बताते हुए कहते हैं कि यह ताम्र कालीन नगरीय सभ्यता है। यहाँ के खंडहरों को देखकर ऐसा लगता है जैसे यहाँ आज भी कोई रहता है। शहर की नियोजन व्यवस्था बहुत सुंदर हैं। यहाँ की चौड़ी -चौड़ी गलियाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती है।

यहाँ के सभी घर पक्की ईंटों व लकड़ी से बनाए गए हैं जिनकी दीवारें काफी मोटी हैं। शायद दो मंजिले घर बनाने के लिए ऐसा किया गया हो। घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर न खुल कर पीछे की तरफ खुलते हैं। मुख्य सड़क पर बैल गाड़ियाँ चला करती थी। संयोग वश हमारा चंडीगढ़ शहर भी इसी तर्ज पर बना हुआ हैं।

यहाँ पर इंसानी जरूरत का हर वह सामान मौजूद हैं जो कि किसी भी सभ्यता के फलने फूलने के लिए आवश्यक है मगर सारी वस्तुएँ बहुत छोटे – छोटे आकार में मौजूद हैं।

पूर्व दिशा में "अमीरों की बस्ती" बनी हुई हैं जिसमें बड़े – बड़े घर, चौड़ी सड़कें, अधिक कुएँ आदि हैं। जबकि आधुनिक युग में "अमीरों की बस्ती" पश्चिम दिशा में मानी जाती है। मगर मोहनजोदड़ो में ठीक इसका उलटा हैं।

यहाँ के लोग अपने सभी कार्य आपसी तालमेल से करते थे। लेखक के अनुसार यहाँ के लोग व्यापार करते थे। इन्हीं लोगों ने दुनिया को उन्नत खेती करना सिखाया। यहाँ पर एक विशाल कोठार भी हैं जिसमें कर के रूप में प्राप्त अनाज रखा जाता था। यहाँ कपास, गेहूँ, जौ, ज्वार, सरसों, बाजरा, चने, खजूर, खरबूज, अंगूर आदि की खेती के प्रमाण भी मिले हैं।

इस सभ्यता को अधिकतर विद्वान "खेतीहर और पशुपालक सभ्यता" मानते हैं। यहाँ लोहा नहीं पाया गया लेकिन पत्थर (सिंध) व तांबे (राजस्थान) के इस्तेमाल से कृषि के औजार बनाने के सबूत मिले हैं।

माना जाता हैं कि यहाँ के लोग बड़े ही शांतिप्रिय थे क्योंकि यहाँ हथियार जैसे कोई उपकरण नहीं मिले हैं। सैनिकों के सबूत भी नहीं मिले हैं। दुनिया का दूसरे नंबर का सबसे प्राचीन कपड़ा (सूती कपड़ा) यहीं से प्राप्त हुआ है। पहला प्राचीन कपड़ा जॉर्डन से प्राप्त हुआ था। यहाँ रंगाई करने के भी सबूत मिले हैं।

यहाँ के लोगों को ड्रेनेज सिस्टम (जल निकासी) के बारे में अच्छी जानकारी थी। हर घर में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था देखने को मिलती है। जल निकासी के लिए नालियां बनाई गई हैं जो ढकी हुए हैं।

नगर में एक 40 फुट लंबा और 25 फुट चौड़ा व सात फुट गहरा जलकुंड भी है। माना जाता है कि यह किसी विशेष अनुष्ठान के लिए प्रयोग किया जाता होगा। इसकी दीवारें पक्की ईंटों से बनी हुई हैं। इसके पास ही आठ स्नानागार भी हैं। जलकुंड में गंदा पानी न जाये, इसकी भी व्यवस्था की गई है यानी साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा गया हैं।

जलकुंड के पास ही एक कुआँ भी हैं जहां से शायद जलकुंड में पानी आता होगा। इसके अलावा यहाँ 700 कुँए व कई तालाब भी मिले हैं जो पक्की ईटों से बने हैं। यह संसार की पहली सभ्यता हैं जिसने कुँए खोदकर भूमिजल निकाला। इसीलिए सिंधु घाटी सभ्यता को "जल संस्कृति" भी कहते हैं।

लेकिन सिंधु घाटी सभ्यता में न तो कोई भव्य राजमहल मिला और न ही कोई भव्य मंदिर या पिरामिड मिला। इस संस्कृति की खास बात यह थी कि यहाँ पर किसी तरह की कोई भव्यता या दिखावा नहीं दिखाई देता हैं। यानि मोहनजोदड़ो, सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता और आडंबर का नामोनिशान नही है।

यहाँ धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ एवं बर्तन मिले हैं जिसमें चित्रकारी की गई हैं। मोहरे, खिलौने व अन्य साजो सामान आदि की वस्तुओं भी मिली हैं। यहाँ पर मिली एक नर्तकी की मूर्ति, राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली) में रखी हैं। यहाँ पर मिली 50, 000 से अधिक चीज़ें दुनिया के अलग – अलग संग्रहालयों में रखी गई हैं।

मोहनजोदड़ो में एक प्राचीन बौद्ध स्तूप भी है मगर यह कनिष्क कालीन है। इसी के बारे में जानकारी लेने राखलदास बनर्जी यहाँ आए थे। लेकिन जब इसे खोदा गया तो इसके नीचे उन्हें 5,000 साल पुरानी सभ्यता मोहनजोदड़ो का नगर देखने को मिला जिसकी नगर योजना अद्भुत व लाजवाब थी।

लेखक के अनुसार सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध हैं जो वहाँ की छोटी-छोटी वस्तुओं में देखने को मिलता है जो उस समय के समाज द्वारा निर्मित की गई है।

अभ्यास प्रश्न

1. "अतीत में दबे पांव" नामक पाठ के लेखक कौन है?

उत्तर- ओम थानवी।

2. "अतीत में दबे पांव" पाठ क्या हैं?

उत्तर -एक यात्रा वृत्तांत और रिपोर्ताज ।

3. "अतीत में दबे पांव" नामक पाठ में किस सभ्यता का वर्णन हैं?

उत्तर – मुअनजोदड़ो (सिंधुकालीन)

4. वर्तमान में यह पुरातात्विक स्थल कहाँ है?

उत्तर – पाकिस्तान के सिंध प्रांत में।

5. मोहनजोदड़ो किस नदी के तट पर स्थित हैं?

उत्तर – सिंधु नदी ।

6. मुअनजो-दड़ो किस काल के शहरों में सबसे बड़ा शहर है?

उत्तर – ताम्रकालीन।

7. मुअनजो-दड़ो का अर्थ क्या है?

उत्तर – मृतकों या मुर्दों का टीला।

8. वर्तमान में मुअनजोदड़ो को किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर – मोहनजोदड़ो।

9. मुअनजोदड़ो के टीले कैसे हैं?

उत्तर – मानवनिर्मित ।

10. सिंधु नदी के पानी से बचने के लिए जमीन की सतह को किस तरह ऊपर उठाया गया था?

उत्तर – कच्ची – पक्की ईंटों की चिनाई से (टीलों के रूप में) ।

11. मेसोपोटेमिया के अभिलेखों में प्रयोग "मेलुहा" शब्द संभवत किसके लिए प्रयोग होता होगा?

उत्तर – मोहनजोदड़ो के लिए।

12. मुअनजो-दड़ो की खोज किसने की?

उत्तर – राखलदास बनर्जी ।

13. राखलदास बनर्जी कौन थे?

उत्तर – पुरातत्ववेदा।

14. राखलदास बनर्जी यहाँ पर किस वर्ष आए थे?

उत्तर – सन 1922 में।

15. मोहनजोदड़ो की खुदाई किस के निर्देश पर शुरू हुई थी?

उत्तर – जान मार्शल।

16. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक कौन थे

उत्तर – जान मार्शल।

17. यह स्थल किस चीज की अनूठी मिसाल है?

उत्तर – नगर नियोजन की।

18. सिंधु घाटी सभ्यता कितने साल पुरानी हैं?

उत्तर – 5,000 वर्ष पूर्व।

19. मोहनजोदड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है?

उत्तर – 5,000 वर्ष पूर्व।

20. मोहनजोदड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा?

उत्तर – सभ्यता का।

21. मोहनजोदड़ो का समाज कैसा था?

उत्तर – साक्षर और सुसंस्कृत।

22. सिंधु घाटी की सभ्यता को किस सभ्यता के समकक्ष माना जाता है?

उत्तर- मसोपोटेमिया (इराक) और मिस्र की सभ्यता।

23. सिंधु घाटी की जल संबंधी अनूठी विशेषता क्या है?

उत्तर – जल निकासी का प्रबंध

24. मोहनजोदड़ो नगर कितने हेक्टेयर में फैला हुआ था?

उत्तर – 200 हेक्टेयर में

25. लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो की आबादी लगभग कितनी थी?

उत्तर 85000

26. मोहनजोदड़ो के अलावा सिंधु घाटी सभ्यता का दूसरा शहर कौन सा है?

उत्तर– हड़प्पा

27. सिंधु घाटी संस्कृति किस प्रकार की मानी जाती है?

उत्तर – मैदानी संस्कृति

28. 100 वर्षों में अब तक मोहनजोदड़ो के कितने भाग की खुदाई की गई है?

उत्तर – एक तिहाई

29. मोहनजोदड़ो के स्तूप के चबूतरे वाले हिस्से को किस नाम से पुकारते हैं?

उत्तर – गढ़

30. मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी थी?

उत्तर– 33 फीट

31. महाकुंड कितने फुट लंबा है?

उत्तर – 40 फुट

32. महाकुंड की चौडई कितनी है?

उत्तर – 25 फुट

33. महाकुंड की गहराई कितनी है?

उत्तर – 7 फुट

34. महाकुंड के तीन तरफ किसके कमरे बने हुए हैं?

उत्तर – साधुओं के

35. महाकुंड में पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था है?

उत्तर – कुआँ।

36. महाकुंड में ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल क्यों किया गया था?

उत्तर – अशुद्ध पानी के प्रवेश को रोकने के लिए

37. महाकुंड के पास मिले ज्ञान शालाओं के अवशेषों को क्या नाम दिया गया है?

उत्तर – कॉलेज ऑफ प्रीस्ट ।

38. दो पाँत और 8 स्नानागार कहां बने थे?

उत्तर – कुंड के उत्तर में।

39. कोठार किस काम आते थे?

उत्तर – कर से प्राप्त अनाज जमा करने के ।

40. दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया?

उत्तर – याजक नरेश।

41. नर्तकी के अलावा और किसकी मूर्ति मिली थी?

उत्तर – दाढ़ी वाले नरेश।

42. मोहन जोदड़ो से सिंधु नदी कितनी दूरी पर बहती है?

उत्तर – 5 किलोमीटर की दूरी पर।

43. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी है?

उत्तर – राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली ।

44. मोहनजोदड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया?

उत्तर – राजस्थान का।

45. मोहनजोदड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गांव की याद आई?

उत्तर– कुलधरा गांव।

46. मोहनजोदड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीजों की संख्या कितनी है?

उत्तर – 50,000 से अधिक

47. मोहनजोदड़ो की लंबी सड़क अब कितनी बची है?

उत्तर – 1/2 मील लंबी सड़क

48. सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होता था। इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर – सूती कपड़ा।

49. मोहनजोदड़ो को नागर भारत का सबसे पुराना क्या कहा गया है?

उत्तर – लैंडस्केप।

50. मोहनजोदड़ो की सभ्यता और संस्कृति अब किस जगह की शोभा बढ़ा रही हैं?

उत्तर – अजायबघरों की ।

51. मोहनजोदड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है?

उत्तर – चंडीगढ़।

52. खुदाई से प्राप्त गेहूं का रंग कैसा था?

उत्तर – काला।

53. अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम क्या था?

उत्तर – अली नवाज।

54. सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?

उत्तर – सौंदर्यबोध।

55. लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्यबोध को क्या नाम दिया है?

उत्तर – समाज पोषित सौंदर्यबोध ।

56. यहाँ की आडी और सीधी सड़कों को आज के वास्तुकार क्या कहते हैं?

उत्तर – ग्रिड प्लान।

57. भग्न इमारत में कितने खंभे हैं?

उत्तर – 20।

58. डी. के. हलका किसके नाम पर रखा गया हैं?

उत्तर – दीक्षित काशीनाथ के।

59. सोने की 3 सुईयों किसे मिली थी?

उत्तर – काशीनाथ दीक्षित

60. यहाँ के सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्से का नाम डी.के.जी किसके नाम पर रखा गया है?

उत्तर – पुरातत्वविद काशीनाथ दीक्षित।

61. सिंधु घाटी सभ्यता में कौन से फल उगाए जाते थे?

उत्तर – खजूर और अंगूर।

62. मोहनजोदड़ो के सबसे ऊंचे चबूतरे में क्या विद्यमान हैं?

उत्तर – बौद्ध स्तूप।

63. बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है?

उत्तर – 25 फुट।

64. स्तूप से महाकुंड की ओर जाने वाले रास्ते का नाम क्या रखा गया है?

उत्तर– डिविनिटी स्ट्रीट यानि देव मार्ग।

65. चबूतरे पर किसके कमरे बने हुए हैं?

उत्तर – बौद्ध भिक्षुओं के।

66. साधु के कमरे कहाँ थे?

उत्तर – कुंड के तीन तरफ।

67. दक्षिण में टूटे-फूटे घरों के जमघट को किसकी बस्ती माना गया है?

उत्तर – कामगारों की।

68. उत्तर में दो पांत में कितने स्नानघर हैं?

उत्तर – 8 स्नानघर।

69. अनाज की ढुलाई के लिए किस वाहन का प्रयोग किया जाता होगा?

उत्तर – बैलगाड़ी।

70. मोहनजोदड़ो में कुओं को छोड़कर अन्य चीजों के आकार कैसे थे?

उत्तर -चौकोर या आयताकार।

71. सिंधु घाटी के छोटे टीलों पर बनी बस्तियों को क्या कहा गया है?

उत्तर – नीचा नगर।

72. रंगरेज के कारखानों में क्या रखा जाता होगा?

उत्तर – रंगाई के बर्तन।

73. रंगाई का छोटा कारखाना खुदाई के समय किसे मिला था?

उत्तर – माधोस्वरूप वत्स।

74. नालियों की क्या विशेषता थी?

उत्तर – नालियों पक्की ईंटों से बनी और पत्थरों ढकी हुई थी।

75. सिंधु की खास पहचान, छापे वाले कपड़ों को क्या कहते हैं?

उत्तर – अजरक।

76. समूची सिंधु सभ्यता में औजार तो मिले परंतु क्या नहीं मिले?

उत्तर – हथियार।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.कोठार किसके काम आता होगा?

i. सुरक्षा के लिए
ii. धन जमा करने के लिए
iii. अनाज जमा करने के लिए
iv.कर से से प्राप्त अनाज जमा करने के लिए

उत्तर- iv.कर से से प्राप्त अनाज जमा करने के लिए

2.मुअनजो-दड़ो हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है?

i. इस्लामाबाद संग्रहालय में
ii. लाहौर संग्रहालय में
iii. दिल्ली संग्रहालय में
iv. लंदन संग्रहालय में

उत्तर- iii. दिल्ली संग्रहालय में

3.मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया?

i. हरियाणा ii. पंजाब

iii. उत्तर प्रदेश iv. राजस्थान

उत्तर- iv. राजस्थान

4. मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई?

i. शुभधरा ii. बुलधरा

iii. कुलघड़ा iv. कुलधरा

उत्तर- iv. कुलधरा

5.मुअनजो-दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीज़ों की संख्या कितनी थी?

i. 52 हजार से अधिक ii. 50 हजार से अधिक

iii. 20 हजार से अधिक iv. 30 हजार से अधिक

उत्तर- ii. 50 हजार से अधिक

6.सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?

i. नागर-बोध ii. सौंदर्य-बोध

iii. संस्कृति-बोध iv. सभ्यता-बोध

उत्तर- ii. सौंदर्य-बोध

7.लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य-बोध को क्या नाम दिया है?

i. मानव-पोषित ii. धर्म-पोषित

iii. समाज-पोषित iv. व्यापार-पोषित

उत्तर- iii. समाज-पोषित

8.मुअनजो-दड़ो में लगभग कितने कुएँ थे?

i. 700 कुएँ ii. 800 कुएँ

iii. 900 कुएँ iv. 500 कुएँ

उत्तर- i. 700 कुएँ

9.सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी। इसका क्या प्रमाण है?

i. सूती कपड़ा ii. कपास के बीज

iii. ऊन iv. गर्म कपड़ा

उत्तर- i. सूती कपड़ा

10.मुअनजोदड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है?

i. 5000 साल ii. 7000 साल

iii. 4000 साल iv. 6000 साल

उत्तर- i. 5000 साल

11.राखालदास बैनर्जी यहाँ पर किस वर्ष आए थे?

i. सन् 1922 में
ii. सन् 1921 में
iii. सन् 1923 में
iv. सन् 1924 में

उत्तर- i. सन् 1922 में

12.राखालदास बैनर्जी कौन थे?

i. पुरातत्त्ववेत्ता
ii. अध्यापक
iii. अतिथि
iv. व्यापारी

उत्तर- i. पुरातत्त्ववेत्ता

13.मुअनजोदड़ो को नागर भारत का सबसे पुराना क्या कहा गया है?

i. लैंडस्केप
ii. नगर
iii. घर
iv. स्नानघर

उत्तर- i. लैंडस्केप

14.महाकुंड कितने फुट लंबा है?

i. 40 फुट
ii. 50 फुट
iii. 45 फुट
iv. 20 फुट

उत्तर- i. 40 फुट

15.महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए हैं?

i. साधुओं के
ii. मेहमानों के
iii. व्यापारियों के
iv. उपर्युक्त सभी

उत्तर- i. साधुओं के

16.'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ के लेखक का नाम क्या है?

i. ओम थानवी
ii. मनोहर श्याम जोशी
iii. फणीश्वरनाथ रेणु
iv. हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तर- i. ओम थानवी

17. निम्न में से सत्य कथन का चुनाव करिए -

1. मुअनजो-दड़ो ताम्र काल के शहरों में सबसे बड़ा है।

2. हड़प्पा के ज्यादातर साक्ष्य रेललाइन बिछाने के दौरान विकास की भेंट चढ़ गए।

3. मुअनजो-दड़ो के टीले प्राकृतिक हैं।

4. मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है।

(क) (2) व (3)
(ख) (1),(2) व (4)
(ग) (1),(2) व (3)
(घ) इनमे से कोई नही

उत्तर- (ख) (1),(2) व (4)

18.अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो के सभी खंडहरों का नामकरण किस आधार पर किया गया है?

i.खुदाई करने वाले दल के आधार पर
ii.खुदाई करने वाले पुरातत्त्ववेत्ताओं के संक्षिप्त नाम पर
iii.इनमें से कोई नहीं
iv.खुदाई में मिली वस्तुओं के आधार पर

उत्तर- ii.खुदाई करने वाले पुरातत्त्ववेत्ताओं के संक्षिप्त नाम पर

19.अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए हैं?

i.अमीरों के
ii.मेहमानों के
iii.कामगारों के
iv.साधुओं के

उत्तर- iv.साधुओं के

20.अतीत में दबे पाँव पाठ के अनुसार काशीनाथ दीक्षित को किस धातु की सुइयाँ मिली थी?

i.पीतल
ii.चाँदी
iii.लोहा
iv.सोना

उत्तर- iv.सोना

21.मुअनजो-दड़ो का क्या अर्थ है?

i.मुर्दों का टीला
ii.मोहन का नगर
iii.पक्के मकानों का शहर
iv.मुहाने पर स्थित

उत्तर- i.मुर्दों का टीला

22.सिंधु घाटी में किस फसल के बीज नहीं मिलते?

i.ज्वार
ii.अंगूर
iii.कपास
iv.गेहूँ

उत्तर- iii.कपास

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय- 3

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

जनसंचार - प्रत्यक्ष संवाद के बजाय किसी तकनीकी या यान्त्रिक माध्यम के द्वारा समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करना जनसंचार कहलाता है।

जनसंचार के प्रमुख माध्यम-

- **अखबार,**
- **रेडियो,**
- **टीवी,**
- **इंटरनेट,**
- **सिनेमा आदि**

प्रिंट माध्यम (मुद्रित माध्यम)-

समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें

प्रिंट माध्यम (मुद्रित माध्यम)-

- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम है।
- मुद्रण कला की शुरुआत चीन से हुई |
- आधुनिक छापाखाने का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया।
- यूरोप में पुनर्जागरण 'रेनेसाँ' की शुरुआत में छापेखाने का प्रमुख योगदान था |
- भारत में पहला छापाखाना सन 1556 ई. में गोवा में खुला, इसे ईसाई मिशनरियों ने धर्म-प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था

- मुद्रित माध्यमों के अन्तर्गत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि आती हैं ।

मुद्रित माध्यम की विशेषताएँ:

- छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, इन्हें सुविधा अनुसार किसी भी प्रकार से पढ़ा जा सकता है।
- यह माध्यम लिखित भाषा का विस्तार है। इसमें भाषा,व्याकरण,वर्तनी का विशेष ध्यान रखा जाता है|
- यह चिंतन, विचार- विश्लेषण का माध्यम है।

मुद्रित माध्यम की सीमाएँ:

- निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं होते।
- ये तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते।
- इसमें स्पेस तथा शब्द सीमा का ध्यान रखना पड़ता है।
- इसमें एक बार समाचार छप जाने के बाद अशुद्धि-सुधार नहीं किया जा सकता।

मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें:

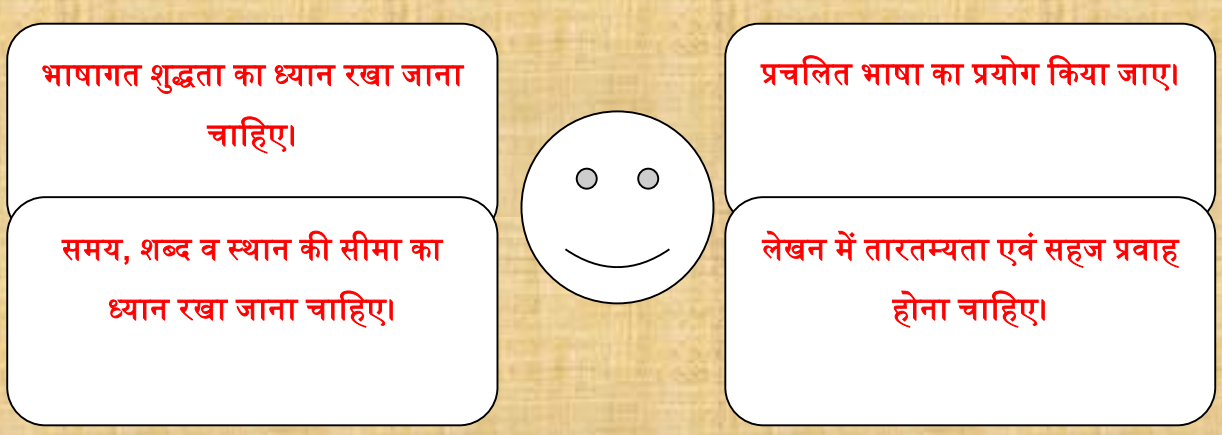

इलेकट्रानिक माध्यम

- रेडियो
- टेलिविजन
- इंटरनेट
- सिनेमा

रेडियो-

रेडियो एक श्रव्य माध्यम है । इसमें शब्द एवं आवाज का महत्व होता है। रेडियो एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है। रेडियो समाचर की संरचना उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है। उल्टापिरामिड शैली में समाचार को तीन भागों बाँटा जाता है-इंट्रो, बाँडी और समापन। इसमें तथ्यों को महत्त्व के क्रम से प्रस्तुत किया जाता है, सर्वप्रथम सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण तथ्य को तथा उसके उपरांत महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में तथ्यों को रखा जाता है।

रेडियो समाचार-लेखन के लिए बुनियादी बातें:

- समाचार वाचन के लिये तैयार की गई कापी साफ़-सुथरी ओर टाइप्ड कॉपी हो।
- कापी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए।
- पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।
- अंकों को लिखने में सावधानी रखनी चाहिए। 1 से 10 तक के अंकों को शब्दों में, 11 से 999 को अंकों में लिखा जाए | बड़े अंकों को शब्दों में लिखना चाहिए |
- संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए। संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग में यह देखा जाना चाहिए कि वह कितना लोकप्रिय है जैसे डब्लूटीओ,यूनिसेफ,सार्क,आईसीआईसीआई आदि |

टेलीविजन (दूरदर्शन):

जनसंचार का सबसे लोकप्रिय व सशक्त माध्यम है। इसमें ध्वनियों के साथ-साथ दृश्यों का भी समावेश होता है। इसके लिए समाचार लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि शब्द व पर्दे पर दिखने वाले दृश्य में समानता हो।

टी०वी० खबरों के विभिन्न चरण:

- **फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज-** इसमें कम से कम शब्दों में सूचना दी जाती है |
- **ड्राई एंकर**-इसमें एंकर खबर दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ,क्या,कब,कैसे हुआ आदि
- **फ़ोन इन-**इसके बाद खबर का विस्तार होता है | एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शको तक पहुँचाता है |
- **एंकर-विजुअल –** जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते है तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है जिसे एंकर द्वारा पढ़ा जाता है |
- **एंकर-बाइट –** बाईट यानि कथन | टेलीविजन में बाईट का बहुत महत्त्व है | टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए प्रत्यक्षदर्शियों के बाईट दिखाई जाती है |
- **लाइव –** लाइव यानि घटना का सीधा प्रसारण |
- **एंकर-पैकेज-** किसी खबर को संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करना |

नेट साउंड- किसी खबर का वाइस ओवर लिखते हुए उसमे शॉट्स के मुताबिक ध्वनियों के लिए गुंजाईश छोड़ देनी चाहिए | टीवी में ऐसी ध्वनियों को नेट साउंड यानि प्राकृतिक आवाज़े कहते है |

रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा शैली:

- भाषा आम लोगों की पहुँच वाली होनी चाहिए परन्तु भाषा के स्तर और गरिमा के साथ कोई समझौता भी न करना पड़े |
- समाचार में वाक्य छोटे,सीधे और स्पष्ट भाषा में लिखे जाए |
- तथा,किन्तु,परन्तु,या,आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए |
- क्रय विक्रह की जगह खरीद बिक्री,स्थानांतरण की जगह तबादला और पंक्ति की जगह कतार टीवी में सहज माने जाते है |

इंटरनेट- संसार का सबसे नवीन व लोकप्रिय माध्यम है। इसमें जनसंचार के सभी माध्यमों के गुण समाहित हैं। यह जहाँ सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक सवादों के आदान-प्रदान के लिए श्रेष्ठ माध्यम है, वहीं अश्लीलता, दुष्प्रचार व गंदगी फ़ैलाने का भी जरिया है ।

इंटरनेट पत्रकारिता:

इंटरनेट पर समाचारों का प्रकाशन या आदान-प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है। इंटरनेट पत्रकारिता दो रूपों में होती है। प्रथम- समाचार संप्रेषण के लिए नेट का प्रयोग करना । दूसरा- रिपोर्टर अपने समाचार को ई-मेल द्वारा अन्यत्र भेजने व समाचार को संकलित करने तथा उसकी सत्यता, विश्वसनीयता सिद्ध करने के लिए करता है

भारत- पहला चरण 1993 से तथा दूसरा चरण 2003 से शुरू माना जाता है। भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटें 'रीडिफ़ डॉट कॉम', इंडिया इफ़ोलाइन' व 'सीफ़ी' हैं । रीडिफ़ को भारत की पहली साइट कहा जाता है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉट्कॉम' को जाता है।

हिंदी में नेट पत्रकारिता:

वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। यह हिन्दी का संपूर्ण पोर्टल है। प्रभा साक्षी नाम का अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ़ नेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिन्दी की सर्व श्रेष्ठ साइट बीबीसी की है, जो इंटरनेट के मानदंडों के अनुसार चल रही है। हिन्दी वेब जगत में 'अनुभूति', अभिव्यक्ति, हिन्दी नेस्ट, सराय आदि साहित्यिक पत्रिकाएँ भी अच्छा काम कर रही हैं। अभी हिन्दी वेब जगत की सबसे बड़ी समस्या मानक की बोर्ड तथा फ़ोंट की है । डायनमिक फ़ौंट के अभाव के कारण हिन्दी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं ।

वैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. इनमें से कौन-सा जनसंचार माध्यम अनपढ़ व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं है?

A. इंटरनेट
B. समाचार-पत्र
C. पत्रिकाएँ
D. तीनों

उत्तर- D. तीनों

2. सर्वाधिक खर्चीला जनसंचार माध्यम कौन-सा है?

A. रेडियो
B. टेलीविज़न
C. समाचार पत्र
D. इंटरनेट

उत्तर- D. इंटरनेट

3. श्रव्य जनसंचार माध्यम कौन-सा है?

A. समाचार पत्र
B. रेडियो
C. इंटरनेट
D. टेलिविजन

उत्तर- B. रेडियो

4. मुद्रण का आरंभ किस देश में हुआ?

A. भारत
B. जापान
C. चीन
D. इंग्लैण्ड

उत्तर- C. चीन

5. वर्तमान छापेखाने का अविष्कार किसने किया?

A. गुटेनबर्ग ने
B. चिनमिन ने
C. निहाल सिंह ने
D. जॉनसन ने

उत्तर- A. गुटेनबर्ग ने

6. भारत में पहला छापाखाना कब लगा?

A. सन् 1556 में
B. सन् 1546 में
C. सन् 1656 में
D. सन् 1576 में

उत्तर- A. सन् 1556 में

7. भारत में पहला छापाखाना कहाँ पर लगाया गया?

A. दिल्ली में
B. कोलकाता में
C. गोवा में
D. कानपुर में

उत्तर- C. गोवा में

8. समाचार लेखन की प्रभावशाली शैली कौन सी है?

A. वर्णनात्मक शैली
B. विवेचनात्मक शैली
C. पिरामिड शैली
D. उल्टा पिरामिड शैली

उत्तर- D. उल्टा पिरामिड शैली

9. इनमें से कौन-सा उल्टा पिरामिड शैली का अंग नहीं है?

A. मध्य भाग
B. बॉडी
C. इंट्रो
D. समापन

उत्तर- A. मध्य भाग

10. उल्टा पिरामिड शैली में समाचार कितने भागों में बाँटा जाता है?

A. तीन
B. चार
C. पाँच
D. दो

उत्तर- A. तीन

11. दृश्यों का किस माध्यम में अधिक महत्व होता है?

A. समाचार पत्र
B. रेडियो
C. टेलीविज़न
D. इंटरनेट

उत्तर- C. टेलीविज़न

12. टेलीविज़न के लिए खबर लिखने की मौलिक शर्त क्या है?

A. साहित्यिक भाषा में लेखन
B. दृश्य के साथ लेखन
C. सनसनीखेज लेखन
D. सामान्य लेखन

उत्तर- B. दृश्य के साथ लेखन

13. हिन्दी में नेट पत्रकारिता किसके साथ आरंभ हुई?

A. वैब दुनिया के साथ
B. दैनिक जागरण के साथ
C. दैनिक भास्कर के साथ
D. राजस्थान पत्रिका के साथ

उत्तर- A. वैब दुनिया के साथ

14. क्रिकेट मैच का प्रसारण किस प्रकार का है?

A. फोन इन
B. एंकर पैकेज
C. सीधा प्रसारण
D. एंकर वाइट

उत्तर- C. सीधा प्रसारण

15. आधुनिक युग में इंटरनेट पत्रकारिता का कौन-सा दौर चल रहा है?

A. द्वितीय
B. तृतीय
C. प्रथम
D. चतुर्थ

उत्तर- B. तृतीय

16. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर कब आरंभ हुआ?

A. 2001 में
B. 2002 में
C. 2003 में
D. 2004 में

उत्तर- C. 2003 में

17. समाचार पत्र प्रकाशित या प्रसारित करने के लिए आखिरी समय सीमा को क्या कहा जाता है?

A. ब्लू लाइन
B. ब्लैक लाइन
C. रैड लाइन
D. डैड लाइन

उत्तर- D. डैड ललाइन

स्वयं करें

1) निम्नलिखित में से कौन सी बातें रेडियों के लिये समाचार लेखन की बुनियादी बातें हैं -

क) साफ-सुथरी और टाइप्ड कॉपी
ख) डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग
ग) क और ख दोनों
घ) कोई भी नहीं

2) प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर कितने स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए?

क) सिंगल स्पेस
ख) डबल स्पेस
ग) ट्रिपल स्पेस
घ) इनमें से कोई भी नहीं

3) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को कहां लिखा जाता है?

क) सबसे पहले
ख) बीच में

ग) आखिर में
घ) कहीं भी

4) लेखन में हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?

क) भाषा
ख) व्याकरण
ग) वर्तनी
घ) उपयुक्त सभी

5) प्रमुख जनसंचार माध्यम कौन-कौन से होते हैं?

क) टी.वी.
ख) रेडियो
ग) इंटरनेट
घ) उपरोक्त सभी

6) इंटरनेट क्या है?

क) लोकल एरिया नेटवर्क का एक इंटरकनेक्शन
ख) एक सिंगल नेटवर्क
ग) विभिन्न नेटवर्क का एक विशाल कनेक्शन
घ) इनमें से कोई भी नहीं

7) इनमें से कौन सा एक इंटरनेट नेटवर्क है?

क) मैन
ख) लेन
ग) वैन
घ) उपरोक्त सभी

8) पहली वेबसाइट अस्तित्व _____ आई थी ?

क) 1992 में
ख) 1991में
ग) 1994 में
घ) 1990 में

9) गूगल क्रोम एक _____ है।

क) सर्च इंजन
ख) ईमेल
ग) वेबसाइट
घ) ब्राउज़र

10) ड्राई एंकर कैसा चरण है?

क) कम से कम समय और शब्दों में सूचना दी जाती है
ख) एंकर, रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर सूचनाएं पहुंचाता है
ग) घटनास्थल से सीधा प्रसारण
घ) एंकर, रिपोर्टर से फोन पर बात करता है

11) 'एंकर बाइट' में बाइट का क्या अर्थ है?

क) मेघा बाइट
ख) कीड़े का काटना
ग) एंकर की आवाज
घ) बाइट यानी कथन

12) किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुंचाना क्या कहलाता है?

क) सीधी रिपोर्ट
ख) ब्रेकिंग न्यूज़
ग) लाइव या सीधा प्रसारण
घ) एंकर विजुअल

13) निम्नलिखित में से कौन-सा टी.वी. का सूचना चरण नहीं होता?

क) फोन-इन
ख) एंकर पैकेज

ग) ड्राई ऐंकर
घ) स्क्रिप्ट

14) भारत में टेलीविजन का आरंभ कब हुआ था?

क) 20 अगस्त 1949
ख) 15 सितंबर 1959
ग) 26 जनवरी 1975
घ) 4 मार्च 1942

15) टेलीविजन में 'लाइव' का क्या अर्थ है?

क) ब्रेकिंग न्यूज़
ख) एंकर विजुअल
ग) घटनास्थल से खबर प्रस्तुत करना
घ) फोन-इन

16) हिंदी में नेट पत्रकारिता किसके साथ शुरू हुई थी?

क) वेब दुनिया
ख) इंटरनेट
ग) अखबार
घ) बी.बी.सी. साइट

17) निम्नलिखित में से कौन सा अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है?

क) अमर उजाला
ख) हिंदुस्तान
ग) भास्कर
घ) प्रभासाक्षी

18) पत्रकारिता की सबसे सर्वश्रेष्ठ साइट कौन सी है?

क) बी.बी.सी. साइट
ख) आई.आई.एम.सी. साइट
ग) एच हिंदी साइट
घ) हिंदी भाषण साइट

19) टेलीविजन लेखन में इनमें से किसकी अहमियत सबसे ज्यादा होती है?

क) स्क्रिप्ट
ख) दृश्य
ग) प्रिंट
घ) इनमें से कोई भी नहीं

20) टेलीविजन के लिए खबर लिखने की मौलिक शर्त क्या है-

क) शब्दों के साथ लेखन
ख) श्रोता के लिए लेखन
ग) चित्रों के साथ लेकन
घ) दृश्य के साथ लेखन

21) टेलीविजन लेखन में कौनसी कला का इस्तेमाल होता है?

क) कम शब्दों में कम खबर
ख) ज्यादा शब्दों में कम खबर
ग) कम शब्दों में ज्यादा खबर
घ) इनमें से कोई भी नहीं

22) टेलीविजन पर प्रसारित खबरों में सबसे महत्वपूर्ण है-

क) विजुअल
ख) बाइट
ग) नेट
घ) उपर्युक्त सभी

23) टेलीविजन पर खबर पेश करने के तरीकों को हम किस प्रकार समझ सकते हैं-

क) खबरों के प्रचलित ढांचे या फॉर्मेट को समझकर
ख) खबरों के प्रचलित ढांचे को समझकर
ग) सिर्फ फॉर्मेट को समझकर
घ) टीवी पर दिखाई खबरों को समझकर

24) टी.वी. में दृश्य और शब्दों के बीच और क्या मिल जाता है?

क) वीडियो ख) नाटक

ग) ध्वनियां घ) इनमें से कोई भी नहीं

25) टी.वी. के लिए अच्छी खबर कैसे खिलकर आती है?

क) छोटे वाक्यों एवं बेहतरीन संपादन से ख) अच्छे चित्रों के रंग से

ग) विजुअल इफेक्ट्स से घ) अच्छे कार्यक्रमों से

26) आम आदमी को समाचारों से जोड़े रखने के लिए क्या माध्यम है?

क) ट्रेन और बस ख) रेडियो और टी.वी.

ग) कागज और कलम घ) कोई भी नहीं

27) रेडियो और टी.वी. पर किस तरह की भाषा का उपयोग होना चाहिए?

क) सरल ख) जटिल

ग) क एवं ख दोनों घ) कोई भी नहीं

28) सरल भाषा लिखने का सबसे बेहतर उपाय कौन-सा है?

क) छोटे, सीधे और स्पष्ट ख) बड़े, सीधे और जटिल

ग) छोटे एवं जटिल घ) कोई भी नहीं

29) रेडियो..... माध्यम है।

क) दृश्य ख) श्रव्य

ग) दृश्य और श्रव्य दोनों घ) इनमें से कोई नहीं

30) पहला छापाखाना सन् 1956 में कहां खुला?

क) केरल ख) दिल्ली

ग) गोवा घ) महाराष्ट्र

महत्वपूर्ण वर्णनात्मक प्रश्न

प्रिंट माध्यम (मुद्रित माध्यम)-

1. प्रिंट मीडिया से क्या आशय है?

छपाई वाले संचार माध्यम को प्रिंट मीडिया कहते हैं। इसे मुद्रण-माध्यम भी कहा जाता है। समाचार-पत्र पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि इसके प्रमुख रूप हैं।

2. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है?

उत्तर- जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम प्रिंट माध्यम है।

3. आधुनिक छापाखाने का आविष्कार किसने किया?

उत्तर- आधुनिक छापाखाने का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया।

4. भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ पर खुला था?

उत्तर- भारत में पहला छापाखाना सन १७७६ में गोवा में खुला, इसे ईसाई मिशनरियों ने धर्म-प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।

5. जनसंचार के मुद्रित माध्यम कौन-कौन से हैं?

उत्तर- मुद्रित माध्यमों के अन्तर्गत अखबार, पत्रिकाएँ पुस्तके आदि आती हैं।

6. मुद्रित माध्यम की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-

- छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, इन्हें सुविधानुसार किसी भी प्रकार से पढ़ा जा सकता है।
- यह माध्यम लिखित भाषा का विस्तार है।
- यह चिंतन, विचार-विश्लेषण का माध्यम है।

7. मुद्रित माध्यम की सीमाएँ (दोष) लिखिए।

उत्तर-

- निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं होते।
- ये तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते।
- इसमें स्पेस तथा शब्द सीमा का ध्यान रखना पड़ता है।
- इसमें एक बार समाचार छप जाने के बाद अशुद्धि-सुधार नहीं किया जा सकता।

8. मुद्रित माध्यमों के लेखन के लिए लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

उत्तर-

- भाषागत शुद्धता का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- प्रचलित भाषा का प्रयोग किया जाए।
- समय, शब्द व स्थान की सीमा का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- लेखन में तारतम्यता एवं सहज प्रवाह होना चाहिए।

रेडियो (आकाशवाणी)

1. इलैक्ट्रानिक माध्यम से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जिस जन संचार में इलैकट्रानिक उपकरणों का सहारा लिया जाता है इलैक्ट्रानिक माध्यम कहते हैं। रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट प्रमुख इलैक्ट्रानिक माध्यम हैं।

2. ऑल इंडिया रेडियो की विधिवत स्थापना कब हुई

सन् १९३६ में

3. एफ़.एम. रेडियो की शुरुआत कब से हुई?

उत्तर-एफ़.एम. (फ़िक्वेंसी माड्युलेशन) रेडियो की शुरुआत सन् १९९३ से हुई।

4. रेडियो किस प्रकार का माध्यम है?

उत्तर- रेडियो एक इलैक्ट्रोनिक श्रव्य माध्यम है। इसमें शब्द एवं आवाज का महत्त्व होता है। यह एक रेखीय माध्यम है।

5. रेडियो समाचार किस शैली पर आधारित होते हैं?

उत्तर- रेडियो समाचार की संरचना उल्टापिरामिड शैली पर आधारित होती है।

6. उल्टा पिरामिड शैली क्या है? यह कितने भागों में बँटी होती है?

उत्तर- जिसमें तथ्यों को महत्त्व के क्रम से प्रस्तुत किया जाता है, सर्वप्रथम सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण तथ्य को तथा उसके उपरांत महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में तथ्यों को रखा जाता है उसे उल्टा पिरामिड शैली कहते हैं। उल्टापिरामिड शैली में समाचार को तीन भागों में बाँटा जाता है- इंट्रो, बॉडी और समापन।

7. रेडियो समाचार-लेखन के लिए किन-किन बुनियादी बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए?

उत्तर-

- समाचार वाचन के लिए तैयार की गई कापी साफ़-सुथरी और टाइप्ड कॉपी हो।
- कॉपी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए।
- पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।
- अंकों को लिखने में सावधानी रखनी चाहिए।
- संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए।

टेलीविजन (दूरदर्शन):

1. दूरदर्शन जनसंचार का किस प्रकार का माध्यम है?

उत्तर- दूरदर्शन जनसंचार का सबसे लोकप्रिय व सशक्त माध्यम है। इसमें ध्वनियों के साथ-साथ दृश्यों का भी समावेश होता है। इसके लिए समाचार लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि शब्द व पर्दे पर दिखने वाले दृश्य में समानता हो।

2. भारत में टेलीविजन का आरंभ और विकास किस प्रकार हुआ?

उत्तर- भारत में टेलीविजन का प्रारंभ १७ सितंबर १९७९ को हुआ। यूनेस्को की एक शैक्षिक परियोजना के अन्तर्गत दिल्ली के आसपास के एक गाँव में दो टी.वी. सैट लगाए गए, जिन्हें २०० लोगों ने देखा। १९६७ के बाद विधिवत टीवी सेवा आरंभ हुई। १९७६ में दूरदर्शन नामक निकाय की स्थापना हुई।

3. टी०वी० खबरों के विभिन्न चरणों को लिखिए।

उत्तर- दूरदर्शन मे कोई भी सूचना निम्न चरणों या सोपानों को पार कर दर्शकों तक पहुँचती है।

(1) फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज (समाचार को कम-से-कम शब्दों में दर्शकों तक तत्काल पहुँचाना)

(2) ड्राई एंकर (एंकर द्वारा शब्दों में खबर के विषय में बताया जाता है)

(3) फ़ोन इन (एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात कर दर्शकों तक सूचनाएँ पहुँचाता है)

(4) एंकर-विजुअल (समाचार के साथ-साथ संबंधित दृश्यों को दिखाया जाना)

(5) एंकर-बाइट (एंकर का प्रत्यक्षदर्शी या संबंधित व्यक्ति के कथन या बातचीत द्वारा प्रामाणिक खबर प्रस्तुत करना)

(6) लाइव (घटनास्थल से खबर का सीधा प्रसारण)

(7) एंकर-पैकेज (इसमें एंकर द्वारा प्रस्तुत सूचनाएँ; संबंधित घटना के दृश्य, बाइट, ग्राफ़िक्स आदि द्वारा व्यवस्थित ढंग से दिखाई जाती हैं)

इंटरनेट-

1. इंटरनेट क्या है? इसके गुण-दोषों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- इंटरनेट विश्वव्यापी अंतर्जाल है, यह जनसंचार का सबसे नवीन व लोकप्रिय माध्यम है। इसमें जनसंचार के सभी माध्यमों के गुण समाहित हैं। यह जहाँ सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए श्रेष्ठ माध्यम है, वहीं अश्लीलता, दुष्प्रचार व गंदगी फ़ैलाने का भी जरिया है।

2. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- इंटरनेट (विश्व्यापी अंतर्जाल) पर समाचारों का प्रकाशन या आदान-प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है। इंटरनेट पत्रकारिता दो रूपों में होती है। प्रथम- समाचार संप्रेषण के लिए नेट का प्रयोग करना। दूसरा- रिपोर्टर अपने समाचार को ई-मेल द्वारा अन्यत्र भेजने व समाचार को संकलित करने तथा उसकी सत्यता, विश्वसनीयता सिद्ध करने के लिए करता है।

3. इंटरनेट पत्रकारिता को और किन-किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर- ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबरपत्रकारिता, वेब पत्रकारिता आदि नामों से।

4. विश्व-स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का विकास किन-किन चरणों में हुआ?

उत्तर- विश्व-स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का विकास निम्नलिखित चरणों में हुआ

- प्रथम चरण ------- १९८२ से १९९२
- द्वितीय चरण ------- १९९३ से २००१
- तृतीय चरण ------- २००२ से अब तक

5. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का प्रारम्भ कब से हुआ?

उत्तर-पहला चरण १९९३ से तथा दूसरा चरण २००३ से शुरू माना जाता है। भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटें 'रीडिफ़ डॉट कॉम', 'इंडियाइंफ़ोलाइन' व 'सीफ़ी' हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जाता है।

6. वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसको जाता है?

उत्तर- 'तहलका डॉटकॉम'

7. भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटों के नाम लिखिए।

उत्तर- 'रीडिफ़ डॉट कॉम', 'इंडियाइंफ़ोलाइन' व 'सीफ़ी'

8. भारत में कौन-कौन से समाचार-पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध हैं?

उत्तर- टाइम्स आफ़ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रैस, हिंदू, ट्रिब्यून आदि।

9. भारत की कौन-सी नेट-साइट भुगतान देकर देखी जा सकती है?

उत्तर- 'इंडिया टुडे'

10. भारत की पहली साइट कौन-सी है, जो इंटरनेट पर पत्रकारिता कर रही हैं?

उत्तर- रीडिफ

11. सिर्फ़ नेट पर उपलब्ध अखबार का नाम लिखिए।

उत्तर- "प्रभा साक्षी" नाम का अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ़ नेट पर उपलब्ध है।

12. पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट कौन-सी है?

उत्तर- पत्रकारिता के लिहाज से हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की हैं, जो इंटरनेट के मानदंडों के अनुसार चल रही है।

13. हिंदी वेब जगत में कौन-कौन सी साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं?

उत्तर- हिंदी वेब जगत में 'अनुभूति', अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं।

14. हिंदी वेब जगत की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

उत्तर- हिन्दी वेब जगत की सबसे बड़ी समस्या मानक की-बोर्ड तथा फोंट की है। डायनमिक फोंट के अभाव के कारण हिन्दी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं।

स्वयं करें

1. भारत में पहला छापाखान किस उद्देश्य से खोला गया?
2. गुटेनबर्ग को किस क्षेत्र में योगदान के लिए याद किया जाता है?
3. रेडियो समाचर किस शैली में लिखे जाते हैं?
4. रेडियो तथा टेलीविजन माध्यमों में मुख्य अंतर क्या है?
5. एंकर बाईट क्या है?
6. समाचार को संकलित करने वाला व्यक्ति क्या कहलाता है?
7. नेट साउंड किसे कहते हैं?
8. ब्रेकिंग न्यूज से आप क्या समझते हैं?

पाठ-4

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

समाचार पत्र या अन्य समाचार माध्यमों (टी.वी.,रेडियो आदि) में काम करने वाले अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाओं को पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं पूर्णकालिक अंशकालिक और फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र ।

पूर्णकालिक पत्रकार- वे पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होते हैं।

अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर)- किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करनेवाले पत्रकार |

फ्रीलांसर पत्रकार -जिन पत्रकारों का सम्बन्ध किसी खास समाचार पत्र से नहीं होता है बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग अलग समाचार पत्रों के लिए लिखते हैं।

पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से होता है।इसलिए यह साहित्यिक लेखन से भिन्न है। जिसमें अनिवार्य रूप से तात्कालिक और अपने पाठकों की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर लेखन किया जाता है पत्र-पत्रिकाओं के पाठक सामान्य साक्षर से लेकर विद्वान और विशेषज्ञ होते हैं इसलिए पत्रकार की लेखन शैली और भाषा में गूढ से गूढ विषय की प्रस्तुति ऐसी सहज, सरल और रोचक होनी चाहिए कि वह आसानी से सबकी समझ में आ जाए। पत्रकारीय लेखन में आलंकारिकता संस्कृतनिष्ठ भाषा शैली के बजाय आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। अखबारों में सीधी, सरल, साफ-सुथरी लेकिन प्रभावी भाषा के इस्तेमाल पर जोर दिया जाता है। शब्द सरल और आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए। वाक्य छोटे और सहज होने चाहिए। जटिल और लम्बे वाक्यों से बचना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए गैर जरूरी विशेषणों (ऐसी शब्दावली जिससे बहुत

कम पाठक परिचित होते हैं) और क्लीशे (दोहराव) का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इनके प्रयोग से भाषा बोझिल हो जाती है।

समाचार लेखन :- सामान्यतः अखवारों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार लिखते हैं, जिन्हें संवाददाता या रिपोर्टर भी कहते हैं। अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते है। इन समाचारों में किसी घटना समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ में उससे कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया समाचार के खत्म होने तक जारी रहती है और इसे ही समाचार लेखन की **'उल्टा पिरामिड शैली** 'कहा जाता है। यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह कथा लेखन की शैली के बिल्कुल उलटी है जिसमें क्लाइमेक्स बिल्कुल आखिर में होता है। इसे 'उल्टा पिरामिड' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी क्लाइमेक्स' पिरामिड के सबसे निचले हिस्से में नहीं होती बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया दिया जाता है।

उल्टा पिरामिड शैली की शुरुआत अमेरिका के गृह युद्ध के दौरान हुई जब संवाददाताओं को किसी घटना की खबर टेलीग्राफ द्वारा शीघ्रता से और संक्षेप में देनी होती थी। इस तरह उल्टा पिरामिड शैली का विकास हुआ और धीरे धीरे लेखन और संपादन की सुविधा के कारण यह शैली समाचार लेखन की मानक (स्टैंडर्ड) शैली बन गई।

समाचार लेखन और छह ककार-

समाचार लिखते हुए मुख्यतः छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है -क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ? इस क्या , किसके (या कौन) कहाँ, कब, क्यों और कैसे को छह ककारों के रूप जाना जाता है। मुखड़ा (इंट्रो) समाचार के मुखड़े (इंट्रो यानी पहले पैराग्राफ या शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार है क्या, कौन, कब और कहाँ ? बाड़ी और समापन में बाकी दो ककारों कैसे और क्यों का जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है। इनमें से पहले चार ककार क्या, कौन, कब और कहाँ सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारों कैसे और क्यों में विवरणात्मक व्याख्यात्मक और विश्लेष्णात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है। समाचार में सूचना के स्रोत यानी जिससे जानकारी मिली है उसको भी अवश्य लिखा जाना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट कैसे लिखें -

रिपोर्ट के गुण- रिपोर्ट का आकार संक्षिप्त होना चाहिए। उसमें निष्पक्षता का भाव बेहद जरूरी है। उसमें पूर्णता व संतुलन होना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट- किसी विषय पर गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर बनने वाली रिपोर्ट्स को विशेष रिपोर्ट कहते हैं। उन्हें तैयार करने के लिए किसी घटना समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है। उससे संबंधित तथ्यों को एकत्रित किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण से उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार-

खोजी रिपोर्ट- इसमें रिपोर्टर मौलिक शोध व छानबीन के जरिए ऐसी सूचनाएं या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजनिक तौर पर पहले उपलब्ध नहीं थी। उसका प्रयोग आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

इन-डेप्थ रिपोर्ट -इसमें सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है। छानबीन के आधार पर किसी घटना समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट्- इसमें किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर जोर दिया जाता है।

विवरणात्मक रिपोर्ट-इसमें किसी घटना या समस्या का विस्तृत और बारीक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

विशेष रिपोर्ट लेखन की शैली- सामान्यतः विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में ही लिखा जाता है, परन्तु कई बार इन्हें फीचर शैली में भी लिखा जाता है। इस तरह की रिपोर्ट आमतौर पर समाचार से बड़ी होती है, इसलिए पाठक की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फीचर दोनों शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है। यदि रिपोर्ट बड़ी हो तो उसे शृंखलाबद्ध करके कई दिन तक किस्सों में छापा जाता है।

फीचर लेखन

फीचर एक सुव्यवस्थित, सुजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।

फीचर लेखन का उद्देश्य- फीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना फीचर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "फैक्ट्रा'(Fectura) शब्द से हुई है जिसका आशय स्वरूप, आकृति, रूपरेखा, लक्षण या व्यक्तित्व होता है।

संक्षेप में किसी स्थान परिवेश, वस्तु या घटना का ऐसा शब्दबद्ध रूप जो भावात्मक संवेदना से परिपूर्ण कल्पनाशीलता से युक्त हो तथा चित्रात्मक शैली में सहज और सरल भाषा द्वारा अभिव्यक्त किया जाए फीचर कहा जाता है। यह पाठक की भावनाओं और संवेदनाओं को उत्प्रेरित करता है। फीचर को हिन्दी में 'रूपक' के नाम से भी जाना जाता है किन्तु सर्वप्रचलित और लोकप्रिय शब्द फीचर ही है। फीचर लिखने का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक दायित्व/ सरोकार के साथ साथ ज्ञानवर्धन मनोरंजन और जीवनगत यथार्थ की भावात्मक अभिव्यक्ति है। फीचर लेखन के विषय का चयन लेखक की रूचि, विशेषज्ञता, विषय की प्रासंगिकता और प्रकाशन की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

फीचर और समाचार में अन्तर:- समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फीचर में लेखक को अपनी राय दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है। समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती। फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फीचर, समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः 250 से 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं।

फीचर लेखन संबंधी सावधानियाँ-

- फीचर में विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी हो।
- कथ्य को पात्रों के माध्यम से बतलाना
- मनोरंजनात्मक और सूचनात्मक हो
- उद्देश्य के इर्द-गिर्द प्रासंगिक सूचनाएं, तथ्य और विचार गूंथे हुए हो।
- उसमें प्रभाव और गति हो जिससे पाठक स्वयं देखकर अनुभव करें।
- फीचर के साथ फोटो रेखांकन, ग्राफिक्स का होना जरूरी है।

- विषय से संबंधित निजी अनुभवों की भावाभिव्यक्ति हो।
- फीचर का प्रारंभ आकर्षक और उत्सुकता पैदा करनेवाला होना चाहिए। प्रारंभ, मध्य और अन्त को स्वाभाविक तरीके से बाँधना।
- भाषा प्रवाहपूर्ण हो जिसमें हर पैराग्राफ एक पहलू पर ही फोकस करें और हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके जुड़ा हो।

फीचर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली किसी विशेष घटना, व्यक्ति, जीव-जन्तु, तीज त्योहार, दिन, स्थान, प्रकृति परिवेश से संबंधित व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित विशिष्ट आलेख होता है जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। अर्थात् फीचर किसी रोचक विषय पर मनोरंजक ढंग से लिखा गया विशिष्ट आलेख होता है।

फीचर के प्रकार:- सूचनात्मक फीचर, विवरणात्मक फीचर, विज्ञापन फीचर, विश्लेषणात्मक फीचर, व्यक्तिपरक फीचर, साक्षात्कार फीचर, इनडेप्थ फीचर अन्य फीचर ।

फीचर की विशेषताएँ:

- किसी घटना की सत्यता या तथ्यता फीचर का मुख्य तत्त्व होता है। एक अच्छे फीचर को किसी सत्यता या तथ्यता पर आधारित होना चाहिए।
- फीचर का विषय समसामयिक होना चाहिए।
- फीचर का विषय रोचक होना चाहिए या फीचर को किसी घटना के दिलचस्प पहलुओं पर आधारित होना चाहिए ।
- फीचर को शुरू से लेकर अन्त तक मनोरंजक शैली में लिखा जाना चाहिए। फीचर को ज्ञानवर्धक, उत्तेजक और परिवर्तनसूचक होना चाहिए।
- फीचर को किसी विषय से संबंधित लेखक के निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए।
- फीचर लेखक किसी घटना की सत्यता या तथ्यता को अपनी कल्पना का पुट देकर फीचर में बदल सकता है।
- फीचर को सीधा सपाट न होकर चित्रात्मक होना चाहिए। फीचर की भाषा सरल, सहज और स्पष्ट होने के साथ-साथ कलात्मक और बिंबात्मक होनी चाहिए।

फीचर लेखन की प्रक्रिया

1. विषय का चयन
2 .सामग्री का संग्रह
3. फीचर योजना

1. विषय का चयन:- किसी भी फीचर की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना रोचक, ज्ञानवर्धक और उत्प्रेरित करने वाला है। इसलिए फीचर का विषय समयानुकूल प्रासंगिक और समसामयिक होना चाहिए। अर्थात् फीचर का विषय ऐसा होना चाहिए जो लोगों की रुचि का हो, लोक मानव को छुए, पाठकों में जिज्ञासा जगाए और कोई नई जानकारी दे।

2. सामग्री का संकलन:- फीचर का विषय तय करने के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरण है विषय संबंधी सामग्री का संकलन। उचित जानकारी और अनुभव के अभाव में किसी विषय पर लिखा गया फीचर उबाऊ हो सकता है। विषय से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री जुटाने के अलावा फीचर लेखक को बहुत सामग्री लोगों से मिलकर कई स्थानों में जाकर जुटानी पड़ सकती है।

3. फीचर योजना- फीचर से संबंधित पर्याप्त जानकारी जुटा लेने के बाद फीचर लेखक को फीचर लिखने से पहले फीचर का एक योजनाबद्ध खाका बनाना चाहिए।

फीचर लेखन की संरचना

1. विषय प्रतिपादन या भूमिका
2. विषय वस्तु की व्याख्या
3. निष्कर्ष

विषय प्रतिपादन या भूमिका : फीचर लेखन की संरचना के इस भाग में फीचर के मुख्य भाग में व्याख्यायित किए जाने वाले विषय का संक्षिप्त परिचय या सार दिया जाता है। इस संक्षिप्त परिचय या सार की कई प्रकार में शुरुआत की जा सकती है। किसी प्रसिद्ध कहावत या उक्ति के साथ, विषय के केन्द्रीय पहलू का चित्रात्मक वर्णन करके, घटना की नाटकीय प्रस्तुति करके, विषय से संबंधित कुछ रोचक सवाल पूछकर । भूमिका का आरम्भ किसी भी प्रकार से किया जाए, इसकी शैली रोचक होनी चाहिए। मुख्य विषय का परिचय इस तरह देना चाहिए कि वह पूर्ण भी लगे लेकिन उसमें ऐसा कुछ छूट जाए जिसे जानने के लिये पाठक पूरा फीचर पढ़ने को बाध्य हो जाए।

विषय वस्तु की व्याख्या:- फीचर की भूमिका के बाद फीचर के विषय या मूल संवेदना की व्याख्या की जाती है। इस चरण में फीचर के मुख्य विषय के सभी पहलुओं को अलग अलग व्याख्या की जानी चाहिए। लेकिन सभी पहलुओं की प्रस्तुति में एक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष क्रमबद्धता होनी चाहिए। फीचर को दिलचस्प बनाने के लिए फीचर में मार्मिकता, कलात्मकता,जिज्ञासा, विश्वसनीयता, उत्तेजना, नाटकीयता आदि का समावेश करना चाहिए।

निष्कर्ष:- फीचर लेखन के इस चरण में व्याख्यायित मुख्य विषय की समीक्षा की जाती है। इस भाग में फीचर लेखक अपने विषय को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर पाठकों की समस्त जिज्ञासाओं को समाप्त करते हुए फीचर का समापन करता है। साथ ही वह कुछ सवालों को पाठकों के लिये अनुत्तरित भी छोड़ सकता है या कुछ नए विचारसूत्र पाठकों के सामने रख सकता है जिससे पाठक उन पर विचार करने को बाध्य हो ।

फीचर लेखन से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलू-

शीर्षक- किसी रचना का यह एक जरूरी हिस्सा होता है और यह उसकी मूल संवेदना या उसके मूल विषय का बोध कराता है। फीचर का शीर्षक मनोरंजक और कलात्मक होना चाहिए जिससे वह पाठकों में रोचकता उत्पन्न कर सके। छायाचित्र होने से फीचर की प्रस्तुति कलात्मक हो जाती है जिसका पाठक पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। विषय से संबंधित छायाचित्र देने से विषय और भी मुखर हो उठता है। साथ ही छायाचित्र ऐसा होना चाहिए जो फीचर के विषय को मुखरित करे। फीचर को कलात्मक और रोचक बनाए तथा पाठक के भीतर विषय की प्रस्तुति के प्रति विश्वसनीयता बनाए।

फीचर व समाचार में अन्तर-

1. फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएं जाहिर करने का अवसर होता है, जबकि समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।

2. फीचर लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता है। इसकी शैली कथात्मक होती है। फीचर लेखन की भाषा सरल व आकर्षक होती है, परन्तु समाचार की भाषा में सपाट बयानी होती है।

3. फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द सीमा लागू होती है।

4 फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

आलेख (लेख) लेखन

समाचारों के सम्पादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और उन विषयों के विशेषज्ञों के आलेख प्रकाशित होते है। आलेख में लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। लेकिन ये विचार तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं और लेखक उन तथ्यों और सूचनाओं का विश्लेषण अपने तर्कों के जरिए अपनी राय प्रस्तुत करता है। विषय के बारे में विस्तृत और समग्र जानकारी के साथ ही पर्याप्त तैयारी आलेख लिखने के लिए आवश्यक है। आलेख में लगा 'आ' उपसर्ग यह प्रकट करता है कि आलेख सम्यक और सम्पूर्ण होना चाहिए। आलेख गद्य की वह विधा है जो किसी एक विषय पर सर्वांगपूर्ण और सम्यक विचार प्रस्तुत करती है।

किसी एक विषय पर प्रधान रचना को आलेख कहते हैं। जिसमें तथ्यात्मक विश्लेषणात्मक अथवा विचारात्मक दृष्टिकोण से संपूर्ण जानकारी होती है, आलेख गद्य लेखन की वह विधा है जिसमें लेखक अपनी बातों को स्वतंत्रतापूर्वक दुनिया के सामने बया कर सकता है।

आलेख लेखन के मुख्य अंग निम्न प्रकार हैं-

आलेख में मुख्य रूप से दो अंग होते हैं। प्रथम अंग है भूमिका तथा इसका द्वितीय व महत्वपूर्ण अंग है विषय का प्रतिपादन भूमिका के अन्तर्गत शीर्षक का अनुरूपण किया जाता है जिसमें भूमिका के अनुरूप संक्षिप्त लेखन द्वारा बात कही जाती है तथा विषय के प्रतिपादन में विषय के क्रमिक विकास तारतम्यता और क्रमबद्धता का ध्यान रखा जाता है, अन्त में तुलनात्मक विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जाता है।

आलेख लेखन संबंधी सावधानियाँ-

1. आलेख लिखने से पहले अध्ययन शोध, चिंतन, मनन और विश्लेषण आवश्यक है।
2. विषयवस्तु से संबंधित आंकड़े और उदाहरण नोट कर लें और आलेख लिखते समय उचित स्थान पर उसका प्रयोग करें।
3. शुरुआत उस विषय से जुड़े सबसे ताजा प्रसंग या घटनाक्रम का विवरण देकर की जा सकती है।
4. वैचारिक और तकनीकी कुशलतायुक्त भाषा का प्रयोग करें, जिसमें विचारों और तथ्यों की स्पष्टता हो। विचार उचित क्रम में होने चाहिए।
5. भाषा सरल, बोधगम्य, रोचक और आकर्षक हो। एक अनुच्छेद में एक ही भाव को प्रकट करें।
6. शैली विवेचन विश्लेषण या विचार प्रधान हो सकती है।
7. भ्रामक जानकारी या संदिग्ध जानकारी न दें। अन्त में निष्कर्ष अवश्य लिखें।

फीचर और आलेख में अन्तर –

पत्रकारिता में समाचारों के बाद आलेख और फीचर का स्थान है। लेख और फीचर दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं,लेकिन दोनों का प्रभाव अलग अलग होता है। फीचर पाठकों की रुचि के अनुरूप, किसी घटना या किसी विषय की तथ्यपूर्ण रोचक प्रस्तुति है। गहन अध्ययन पर आधारित गम्भीर प्रमाणित लेखन, लेख की श्रेणी में आता है। फीचर मन को प्रभावित करता है जबकि लेख दिमाग को । फीचर एक प्रकार का गद्य गीत है जबकि लेख गम्भीर व उच्च स्तर की बहुआयामी गद्य रचना। फीचर किसी भी घटना या विषय के कुछ आयामों को छूता है तो लेख उस घटना के हर पहलू को स्पर्श कर प्रस्तुत करता है पत्रकार पीजी टंडन के अनुसार किताबे पढ़कर आंकड़े जमाकर के लेख लिखा जा सकता है। लेकिन फीचर को अपनी आँख, कान, भावों, अनुभूतियों, मनोवेगों और अन्वेषण का सहारा भी लेना पड़ता है। लेख लम्बा गम्भीर और हर व्यक्ति के अनुकूल न होते हुए भी प्रशंसनीय हो सकता है। लेकिन ये बातें फीचर के लिए जानलेवा है। फीचर को रोचक, दिलचस्प और सबकी रुचि के अनुसार होना ही होता है । लेख सामान्यतः किसी विशेष समस्या पर उसके लिए किसी विशेष पहलू का सूक्ष्म और गहन अध्ययन होता है। लेख विषय की पृष्ठभूमि के अध्ययन से तैयार किया जा सकता है, फीचर नहीं। लेख और फीचर दोनों की शैली भी भिन्न होती है। लेख में लेखक को उपलब्ध आधार सामग्री के अनुसार गंभीरतापूर्वक चीजें प्रस्तुत करनी होती है, मगर फीचर लेखक को जीवन और जीवन की समस्याओं पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने की भी छटपटाहट होती है।

विचारपरक लेखन- लेख, टिप्पणियाँ और संपादकीय-

अखबारों में समाचार और फ़ीचर के अलावा विचारपरक सामग्री का भी प्रकाशन होता है। कई अखबारों की पहचान उनके वैचारिक रुझान से होती है। एक तरह से अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचारपूर्ण लेखन से उस अखबार की छवि बनती है। अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियाँ इसी विचारपरक पत्रकारीय लेखन की श्रेणी में आते हैं। इसके अलावा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों या वरिष्ठ पत्रकारों के स्तंभ (कॉलम) भी विचारपरक लेखन के तहत आते हैं। कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने ऑप एड पृष्ठ पर भी विचारपरक लेख, टिप्पणियाँ और स्तंभ प्रकाशित होते हैं।

संपादकीय लेखन-

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिए किसी घटना समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट की जाती है। संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों पर होता है। आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक, संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता है।

इसी तरह स्तंभ लेखन भी विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर

जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं। लेकिन नए लेखकों को स्तंभ लेखन का मौका नहीं मिलता है।

संपादक के नाम पत्र-

अखवारों के संपादकीय पृष्ठ पर और पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम पाठकों के पत्र भी प्रकाशित होते हैं। सभी अखबारों में यह एक स्थायी स्तंभ होता है। यह पाठकों का अपना स्तंभ होता है। इस स्तंभ के जरिए अखबार के पाठक न सिर्फ़ विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं बल्कि जन समस्याओं को भी उठाते हैं। एक तरह से यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। जरूरी नहीं कि अखबार पाठकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से सहमत हो। यह स्तंभ नए लेखकों के लिए लेखन की शुरुआत करने और उन्हें हाथ माँजने का भी अच्छा अवसर देता है।

लेख-

सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और उन विषयों के विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित करते हैं। इन लेखों में किसी विषय या मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की जाती है। लेख विशेष रिपोर्ट और फीचर से इस मामले में अलग है कि उसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। लेकिन ये विचार तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं और लेखक उन तथ्यों और सूचनाओं के विश्लेषण और अपने तर्कों के जरिये अपनी राय प्रस्तुत करता है। लेख लिखने के लिए पर्याप्त तैयारी जरूरी है। इसके लिए उस विषय से जुड़े सभी तथ्यों और सूचनाओं के अलावा पृष्ठभूमि सामग्री भी जुटानी पड़ती है। लेख की कोई एक निश्चित लेखन शैली नहीं होती और हर लेखक की अपनी शैली होती है। लेकिन अगर आप अखबारों और पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना चाहते है तो शुरुआत उन विषयों के साथ करनी चाहिए जिस पर आपकी अच्छी पकड़ और जानकारी हो। लेख का भी एक प्रारंभ, मध्य और अंत होता है। लेख की शुरुआत में अगर उस विषय के सबसे ताजा प्रसंग या घटनाक्रम का विवरण दिया जाए और फिर उससे जुड़े अन्य पहलुओं को सामने लाया जाए, तो लेख का प्रारंभ आकर्षक बन सकता है। इसके बाद तथ्यों की मदद से विश्लेषण करते हुए, आखिर में आप अपना निष्कर्ष या मत प्रकट कर सकते हैं।

साक्षात्कार इंटरव्यू-

समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्त्व है। पत्रकार एक तरह से साक्षात्कार के जरिए ही समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल इकट्ठा करते हैं। पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बातचीत में यह फर्क होता है कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य उसकी राय और भावनाएँ जानने के लिए सवाल पूछता है। साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढाँचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए आपके पास न सिर्फ ज्ञान होना चाहिए बल्कि आपमें संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. आलेख के विषय नहीं हैं?

a) ब्रेकिंग न्यूज
b) राजनीति
c) विज्ञान
d) समसामयिकी

2. ऐसी पत्रकारिता जो किसी विचाराधारा उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर जनमत तैयार करती है, ____ पत्रकारिता कहलाती है।

a) पीत
b) पेज श्री
c) एडवोकेसी
d) वैकल्पिक

3. समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतनभोगी पत्रकार को क्या कहते हैं?

a) फ्री लांसर
b) अल्पकालिक
c) पूर्णकालिक
d) अंशकालिक

4. देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को ____ कहते हैं।

a) पत्रकारिता
b) वॉचडॉग
c) समाचार-पत्र
d) खोजपरक

5. संपादक के दो सिद्धांत है-

a) समझ एवं समीक्षा
b) अस्पष्ट एवं भ्रम
c) सुलभ एवं स्वच्छता
d) वस्तुपरकता एवं निष्पक्षता

6. ऐसा सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ट लेखन; जिसके माध्यम से सूचनाओं के साथ-साथ मनोरंजन पर भी ध्यान दिया जाता है ___ कहते हैं।

a) समीक्षा करना
b) फीचर लेखन
c) आलेख लेखन
d) रिपोर्ट बनाना

7. भारत में पहला समाचार पत्र कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ?

a) 1780, बंबई
b) 1770, कलकत्ता
c) 1790, चेन्नई
d) 1780, कलकत्ता

8. समाचार-पत्र संपूर्ण कब बनता है?

a) प्रभाविकता, निकटता आदि तत्वों
b) समाचारों का संकलन
c) वाक्य छोटे, सरल और सहज होना
d) टिप्पणी, फोटो और कार्टून का होना

9. जनसंचार का दृश्य एवं श्रव्य माध्यम का उचित उदाहरण है-

a) रेडियो और टेलीविजन दोनों
b) रेडियो
c) टेलीविजन
d) अखबार

10. विभिन्न घटनाओं को समाचारों के रूप में परिवर्तित करते हैं-

a) लेखक
b) संपादक
c) पत्रकार
d) कवि

11. वह जो समाचार के चित्र नहीं आने तक दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर घटना से संबंधित सूचना देता है, कहलता है-

a) विजुअल एंकर-पैकेज
b) एंकर-पैकेज
c) बाइट एंकर
d) ड्राई एंकर

12. समाचार पत्रों में छपने वाले फीचर में लगभग कितने शब्द होने चाहिए?

a) 250 से 2000 शब्द
b) 500 से 5000 शब्द
c) 100 से 500 शब्द
d) 550 से 5000 शब्द

13. फ़ीचर लेखन के कितने प्रकार है?

a) दस
b) चार
c) पाँच
d) आठ

14. ____ सिद्धांत समाचार लेखन का बुनियादी सिद्धांत है।

a) त्रिकोण
b) रेखा
c) वृत
d) उल्टा पिरामिड

15. जनसंचार के कौन-कौन से लोकप्रिय माध्यम वर्तमान में प्रचलित हैं?

a) टेलीविजन एवं इंटरनेट
b) अन्य
c) रेडियो और अखबार
d) टेलीविजन और अखबार

16. तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन और स्रोत हैं-

a) संपादन के सिद्धांत
b) संपादन के गुण
c) संपादन के प्रकार
d) संपादन के तत्त्व

17. किन-किन क्षेत्रों में समीक्षा की जाती है?

a) शिक्षा में
b) रोजगार में
c) फिल्मों में
d) सभी में

18. पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?

a) घूमना-फिरना
b) जिज्ञासा
c) राजनितिक
d) जासूसी करना

19. फीचर की कौन-सी विशेषता है?

a) सभी
b) आत्मनिष्ठ
c) सृजनात्मक
d) सुव्यवस्थित

20 समाचार लेखन की श्रेष्ठ शैली कौन-सी है?

a) सीधा पिरामिड शैली
b) विवेचनात्मक शैली
c) व्याख्या शैली
d) उल्टा पिरामिड शैली

21. पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व किस बात का है?

a) लोगों को विश्वास में लाने का
b) दिखावा करने का
c) सभी
d) समसामयिक घटनाओं की जानकारी

22. भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचर पत्रों में लिखने वाले पत्रकार को क्या कहते हैं?

a) अल्पकालिक
b) संपादक
c) अंशकालिक
d) फ्री लांसर

23. समाचार पत्र का संपादन करने वाले को क्या कहते हैं?

a) संपादक
b) फीचर लेखक
c) प्रकाशक
d) संवाददाता

24. वह पत्रकारिता जो सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और गड़बड़ियों का पर्दाफाश करती है, ____ पत्रकारिता कहलाती है।

a) वॉचडॉग
b) खोजपरक
c) एडवोकेसी
d) विशेषीकृत

25. पत्रकारिता के प्रमुख कितने प्रकार है?

a) छह
b) पाँच
c) चार
d) आठ

26. किसी सामग्री की अशुद्धियों को दूर कर उसे पठनीय बनाना। कहलाता है-

a) वेब पत्रकारिता
b) संपादन
c) पत्रकारिता
d) फीचर लेखन

27. इनमें समाचार पत्र की आवाज किसे माना जाता है?

a) फीचर लेखन
b) संपादकीय
c) आलेख लेखन
d) स्तंभ लेखन

28. जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम क्या है?

a) वेब माध्यम
b) इलैक्ट्रोनिक माध्यम
c) मुद्रित माध्यम
d) रेडियो माध्यम

29. हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्रिका किसे माना जाता है?

a) उदंत मार्तंड
b) केसरी
c) गरुड़ पत्रिका
d) कर्मवीर

30. समाचार लेखन के कितने 'क' कार होते हैं?

a) छह
b) चार
c) सात
d) पाँच

31. जनसंचार माध्यम का लाभ नहीं है-

a) धर्म से लेकर सेहत तक की जानकारी मिल रही है।
b) सरकारी कामकाज पर निगरानी बढ़ी है।
c) यह हमारे दैनिक जीवन में शामिल हो गया है।
d) इसने काल्पनिक जीवन को बढ़ावा दिया है।

32. इंट्रो में कितने ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जानी चाहिए?

a) दो या तीन
b) तीन या चार

c) चार या पाँच
d) एक या दो

33. आलेख का मूल उद्देश्य नही है?

a) समाचार देना
b) ज्ञान का विस्तार
c) मनोरंजन करना
d) जानकारी देना

34. पत्रकारिता एक तरह से कौन-सा लेखन है?

a) पुरातन समाचार लेखन
b) पौराणिक प्रसंग लेखन
c) साप्ताहिक कथा लेखन
d) दैनिक इतिहास लेखन

35. पत्रकारिता में सर्वाधिक महत्त्व किस बात का है?

a) चाटुकारिता का
b) समसामयिक घटनाओं का
c) समीक्षाओं का
d) वर्णन का

36. जब दो व्यक्ति आपस में और आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे ____ कहते हैं।

a) मौखिक संचार
b) जनसंचार
c) समूह संचार
d) अंतरवैयक्तिक संचार

37. फैशन, ग्लैमर, अमीरों की पार्टियों और लोकप्रिय जाने-माने लोगों के जीवन की जानकारी देने वाली सामग्री को ____ पत्रकारिता कहते हैं।

a) इंटरनेट पत्रकारिता
b) वॉचडॉग पत्रकारिता
c) पेज थ्री
d) एडवोकेसी पत्रकारिता

38. पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल किससे प्राप्त होता है?

a) साक्षात्कार से
b) संपादक के नाम पत्र से
c) फीचर से
d) संपादकीय से

39. स्वतंत्र पत्रकार किसे कहा जाता है?

a) किसी विशेष एक समाचार पत्र से संबंध नहीं होता। ऐसे पत्रकार भुगतान के आधार पर कार्य करते हैं।
b) ऐसा पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करता है और नियमित वेतन पाता है।
c) सीमित या कम समय के लिए काम करने वाला। इन्हें प्रकाशित सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक दिया जाता है।
d) संचार प्रक्रिया में संदेश को प्राप्त करने वाला जो सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया करता है।

40. ऐसा समाचार जो दर्शको तक कम से कम शब्दों में तत्काल पहुँचाया जाना जरूरी हो-

a) डेड लाइन न्यूज
b) ब्रेकिंग न्यूज
c) फोन इन न्यूज
d) पीत पत्रकारिता

41. जब व्यक्तियों के समूह के साथ संवाद किसी तकनीकी या यांत्रिकी माध्यम के जरिए समाज के एक विशाल वर्ग से किया जाता है तो इसे ____ कहते हैं।

a) विशेष संचार
b) जनसंचार

c) गुप्त संचार
d) समूह संचार

42. समाचार बनने की संभावना तब बढ़ जाती है, जब उनमें-

a) जनरुचि
b) तथ्यात्मकता
c) सभी
d) नवीनता

43. समीक्षक के गुण नहीं हैं?

a) समसामयिकी का ज्ञाता
b) धारदार भाषा
c) गीतकारी
d) विशेषज्ञ

44. समाचार लिखते हुए मुख्यतः कितने सवालों के जवाब देने की कोशिश की जाती है?

a) नौ
b) छह
c) पाँच
d) सात

45. समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली के तहत लिखे गये समाचारो के सुविधा की दृष्टि से मुख्यत: ____ हिस्सों में विभाजित किया जाता है।

a) चार
b) पाँच
c) दो
d) तीन

46. तथ्यों, सूचनाओं तथा आंकड़ों की गहरी छानबीन करने वाली रिपोर्ट को ____ कहते हैं।

a) इन डेप्थ रिपोर्ट
b) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट
c) खोजी रिपोर्ट
d) विवेचनात्मक रिपोर्ट

47. समाचार तैयार करते समय कौन से ककार सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते है?

a) कब और क्यों
b) क्या, कौन, कब, और कहाँ
c) क्या और कैसे
d) कैसे और क्यों

48. रडियो समीक्षा में क्या आवश्यक नहीं है?

a) दुरूह भाषा
b) अंकों को शब्दों में लिखना
c) समान्य भाषा
d) मुहावरेदार भाषा

49. प्रिंट मीडिया के प्रमुख माध्यम होते हैं-

a) पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ
b) पत्र-पत्रिकाएँ
c) इंटरनेट
d) पुस्तकें

50. पत्र सनसनीखेज खबरों और व्यक्ति-परक चरित्र-हनन जैसे समाचारों को अधिक महत्व देते हैं, उन्हें कहते हैं-

a) वॉचडॉग पत्रकारिता
b) एडवोकेसी पत्रकारिता
c) येलो जर्नलिज़्म
d) पत्रकारिता में बीट

उत्तरमाला-

1. (a) ब्रेकिंग न्यूज

व्याख्या: ब्रेकिंग न्यूज़ आलेख का नहीं रिपोर्ताज का भाग है।

2. (c) एडवोकेसी

3. (c) पूर्णकालिक

4. (a) पत्रकारिता

5. (d) वस्तुपरकता एवं निष्पक्षता

व्याख्या:संपादन के दो सिद्धांत हैं- वस्तुपरकता एवं निष्पक्षता।

6. (b) फीचर लेखन

7. (d) 1780, कलकत्ता

व्याख्या:बंगाल गजट, जिसका प्रकाशन कलकत्ता (अब कोलकत्ता) से सन 1780 में हुआ। इस के संपादक जेम्स ऑगस्ट हिकी थे।

8. (d) टिप्पणी, फोटो और कार्टून का होना

व्याख्या: जब समाचार-पत्र में समाचारों के अलावा विचार, संपादकीय, टिप्पणी, फोटो और कार्टून होते हैं तब समाचार-पत्र पूर्ण बनता है।

9. (c) टेलीविजन

व्याख्या:टेलीविजन जनसंचार का दृश्य एवं श्रव्य माध्यम है। टेलीविजन में आवाज के साथ दृश्य को भी देखा जा सकता है।

10. (c) पत्रकार

11. (d) ड्राई एंकर

व्याख्या:ड्राई एंकर वह है जो समाचार के चित्र नहीं आने तक दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर घटना से संबंधित सूचना देता है।

12. (a) 250 से 2000 शब्द

13. (d) आठ

व्याख्या:फ़ीचर के प्रकार निम्नलिखित हैं

I. समाचार फीचर
II. घटनापरक फीचर
III. व्यक्तिपरक फीचर
IV. लोकाभिरुचि फ़ीचर
V. सांस्कृतिक फ़ीचर
VI. साहित्यिक प्रफीचर
VII. विश्लेषण प्रफीचर
VIII. विज्ञान फ़ीचर

14. (d) उल्टा पिरामिड

15. (a) टेलीविजन एवं इंटरनेट

व्याख्या:टेलीविजन एवं इंटरनेट लोकप्रिय माध्यम वर्तमान समय में उपलब्ध है।

16. (a) संपादन के सिद्धांत

17. (d) सभी में

व्याख्या:समीक्षा प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण है।

18. (b) जिज्ञासा

19. (a) सभी

20. (d) उल्टा पिरामिड शैली

21. (d) समसामयिक घटनाओं की जानकारी

व्याख्या:पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व समसामयिक घटनाओं की जानकारी पर है।

22. (d) फ्री लांसर

23. (a) संपादक

24. (a) वॉचडॉग

25. (b) पाँच

व्याख्या:खोजपरक पत्रकारिता, विशेषीकृत पत्रकारिता, वाचडाग पत्रकारिता, एडव्होकेसी (एडवोकेसी) पत्रकारिता, वैकल्पिक मीडिया।

26. (b) संपादन

व्याख्या:संपादन का अर्थ है-किसी सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाना। एक उप-संपादक अपनी रिपोर्टर की खबर को ध्यान से पढ़कर उसकी भाषागत अशुद्धियों को दूर करके प्रकाशन योग्य बनाता है।

27. (b) संपादकीय

28. (c) मुद्रित माध्यम

व्याख्या:प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना है। आधुनिक युग का प्रारंभ छपाई के आविष्कार से हुआ।

29. (a) उदंत मार्तंड

व्याख्या:हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' को माना जाता है, जो कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकला था।

30. (a) छह

व्याख्या:समाचार में छह तत्वों का समावेश अनिवार्य माना जाता है। ये हैं - क्या, कहां, कब, कौन, क्यो और कैसे।

31. (d) इसने काल्पनिक जीवन को बढ़ावा दिया है।

व्याख्या:इसने काल्पनिक जीवन को बढ़ावा दिया है। इससे पलायनवादी प्रवृत्ति बढ़ रही है।

32. (b) तीन या चार

33. (c) मनोरंजन करना

व्याख्या:आलेख का मूल उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं है

34. (d) दैनिक इतिहास लेखन

35. (b) समसामयिक घटनाओं का

व्याख्या:पत्रकारिता में सर्वाधिक महत्त्व समसामयिक घटनाओं का है।

36. (d) अंतरवैयक्तिक संचार

व्याख्या:अंतरवैयक्तिक संचार:- जब दो व्यक्ति आपस में और आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे अंतरवैयक्तिक संचार कहते हैं। इस संचार की मदद से आपसी संबंध विकसित करते हैं और रोजमर्रा की ज़रूरतें पूरी करते हैं।

37. (c) पेज थ्री

व्याख्या:पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें फ़ैशन, अमीरों की पार्टियों, महफ़िलों और जाने-माने लोगों (सेलीब्रिटी) के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है।

38. (a) साक्षात्कार से

39. (a) किसी विशेष एक समाचार पत्र से संबंध नहीं होता। ऐसे पत्रकार भुगतान के आधार पर कार्य करते हैं।

व्याख्या:ऐसा पत्रकार किसी अखबार विशेष से न बँधकर भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

40. (b) ब्रेकिंग न्यूज

व्याख्या:ऐसा समाचार जो दर्शकों तक कम से कम शब्दों में तत्काल पहुंचाया जाना जरूरी हो, उसे ब्रेकिंग न्यूज कहते हैं। इसमें केवल घटना की सूचना दी जाती है।

41. (b) जनसंचार

व्याख्या:जब व्यक्तियों के समूह के साथ संवाद किसी तकनीकी या यांत्रिकी माध्यम के जरिए समाज के एक विशाल वर्ग से किया जाता है तो इसे जनसंचार कहते हैं। इसमें एक संदेश को यांत्रिक माध्यम के जरिए बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके। रेडियो, अखबार, टीवी, सिनेमा, इंटरनेट आदि इसके माध्यम हैं।

42. (c) सभी

व्याख्या:किसी घटना, विचार और समस्या के समाचार बनने की संभावना तब बढ़ जाती है, जब उनमें निम्नलिखित में से कुछ या सभी तत्व शामिल हों - तथ्यात्मकता, नवीनता, जनरुचि, सामयिकता, निकटता, प्रभाव, पाठक वर्ग, नीतिगत ढांचा, अनोखापन, उपयोगी जानकारियां।

43. (c) गीतकारी

व्याख्या:यह समीक्षक का गुण नहीं हैं

44. (b) छह

व्याख्या:किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यतः छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है। क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ?

इस-क्या, किसके (या कौन), कहाँ, कब, क्यों और कैसे-को छह ककारों के रूप में भी जाना जाता है।

45. (d) तीन

46. (a) इन डेप्थ रिपोर्ट

47. (b) क्या, कौन, कब, और कहाँ

व्याख्या:समाचार तैयार करते समय चार ककार क्या, कौन, कब, और कहाँ - सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते है।

48. (a) दुरूह भाषा

व्याख्या:रडियो समीक्षा में दुरूह भाषा आवश्यक नहीं है।

49. (a) पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ

व्याख्या:प्रिंट मीडिया के प्रमुख माध्यम होते हैं-अखबार, पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ आदि।

50. (c) येलो जर्नलिज़्म

व्याख्या:येलो जर्नलिज़्म-पत्र सनसनीखेज खबरों और व्यक्ति-परक चरित्र-हनन जैसे समाचारों को अधिक महत्व देते हैं, ऐसी प्रवृत्ति को पीत पत्रकारिता कहते हैं।

वर्णनात्मक प्रश्न

1. पत्रकारीय लेखन क्या है?

उत्तर- समाचार माध्यमों मे काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है। पत्रकार को लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए वह सामान्य जनता के लिए लिख रहा है, इसलिए उसकी भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे व सहज हों। कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों, जार्गन्स (अप्रचलित शब्दावली) और क्लीशे (पिष्टोक्ति , दोहराव) का प्रयोग नहीं होना चहिए।

2. पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत क्या-क्या आता है?

उत्तर-पत्रकरिता या पत्रकारीय लेखन के अन्तर्गत समपादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट, फीचर, स्तम्भ तथा कार्टून आदि आते हैं।

3. पत्रकारीय लेखन का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

उत्तर-पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य है- सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना आदि होता है।

4. पत्रकारीय लेखन के प्रकार लिखए।

उत्तर-पत्रकारीय लेखन के कई प्रकार हैं यथा- 'खोजपरक पत्रकारिता', वॉचडॉग पत्रकारिता और एड्वोकैसी पत्रकारिता आदि।

5. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर-पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-

1. पूर्ण कालिक
2. अंशकालिक (स्ट्रिंगर)
3. फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार

6. समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं?

उत्तर-समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह युद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके

बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

7. समाचार के छह ककार कौन-कौन से हैं?

उत्तर-समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छह प्रश्नों- क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार के छह ककार कहा जाता है। प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं।

8. फ़ीचर क्या है?

उत्तर-फ़ीचर एक प्रकार का सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।

9. फ़ीचर लेखन का क्या उद्देश्य होता है?

उत्तर-फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है।

10. फ़ीचर और समाचार में क्या अंतर है?

उत्तर-समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फ़ीचर में लेखक को अपनी राय, दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है। समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फ़ीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती। फ़ीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फ़ीचर, समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः २५० से २००० शब्दों तक के फ़ीचर छपते हैं।

11. विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-सामान्य समाचारों से अलग वे विशेष समाचार जो गहरी छान-बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किए जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं।

12. विशेष रिपोर्ट के विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

(1) खोजी रिपोर्ट: इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन कर सार्वजनिक किया जाता है।

(2) इन्डेप्थ रिपोर्ट: सार्वजानिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान-बीन कर उसके महत्त्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है।

(3) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट: इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है। रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किस्तों में प्रकाशित की जाती है।

(4) विवरणात्मक रिपोर्ट: इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

13. विचारपरक लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर-जिस लेखन में विचार एवं चिंतन की प्रधानता होती है, उसे विचार परक लेखन कहा जाता है। समाचार-पत्रों में समाचार एवं फ़ीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तंभ छपते हैं। ये सभी विचारपरक लेखन के अंतर्गत आते हैं।

14. संपादकीय से क्या अभिप्राय है?

उत्तर-संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार पत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं। संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

15. स्तंभलेखन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-यह एक प्रकार का विचारात्मक लेखन है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचरपत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तंभ-लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं। इस प्रकार किसी समाचार-पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट एवं नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली एवं वैचारिक रुझान के कारण समाज में ख्याति-प्राप्त हो, स्तंभ लेखन कहा जाता है।

16. संपादक के नाम पत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। यह प्रत्येक समाचारपत्र का नियमित स्तंभ होता है। इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवम् राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

17. साक्षात्कार/इंटरव्यू से क्या अभिप्राय है?

उत्तर-किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचारपत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. सामान्य लेखन तथा पत्रकारीय लेखन में क्या अंतर है?
2. पत्रकारीय लेखन के उद्देश्य लिखिए।
3. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?
4. उल्टा पिरामिड शैली का विकास कब और क्यों हुआ?
5. समाचार के प्रकारों के नाम लिखिए।
6. बाड़ी क्या है?
7. फ़ीचर किस शैली में लिखा जाता है?
8. फ़ीचर व समाचार में क्या अंतर है?
9. विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?
10. विशेष रिपोर्ट के भेद लिखिए।
11. इन्डेप्थ रिपोर्ट किसे कहते हैं?
12. विचारपरक लेखन क्या है तथा उसके अन्तर्गत किस प्रकार के लेख आते हैं?
13. स्वतंत्र पत्रकार किसे कहते है?
14. पूर्णकालिक पत्रकार से क्या अभिप्राय है?
15. अंशकालिक पत्रकार क्या होता है?

पाठ 5

विशेष लेखन- स्वरूप और प्रकार

विशेष- लेखन-

एक समाचारपत्र या पत्रिका तभी सम्पूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बारे में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं के बारे मे नियमित रूप से जानकारी दी जाए। अतः विशेष लेखन यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन ही विशेष लेखन कहलाता है।

समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, टी.वी. और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है अतः समाचार माध्यमों में डेस्क का आशय संपादन से होता है । समाचार माध्यमों में सपादकीय कक्ष डेस्क और रिपोर्टिंग में विभक्त होता है। डेस्क पर समाचारों को संपादित किया जाता है और उसे छपने योग्य बनाया जाता है।

संवाददाताओं के बीच में काम का विभाजन उनकी रुचि और ज्ञान के आधार पर किया जाता है मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी होना पर्याप्त है लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करके तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करता है और उसे ही विशेष संवाददाता कहा जाता है।

विशेष लेखन के तहत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर टिप्पणी साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तम्भ लेखन भी आता है।

विशेष लेखन की भाषा और शैली-

सामान्य लेखन की तरह ही विशेष लेखन की भाषा भी सरल और समझ में आने वाली होनी चाहिए किन्तु हर क्षेत्र विशेष की अपनी तकनीकी शब्दावली होती है अतः ऐसे शब्दावली से परिचित करवाना भी आवश्यक है। जैसे कारोबार और व्यापार से जुड़ी खबरों मे हम समाचारपत्र में आवक, तेजड़िए, मंदड़िए, निवेश, बिकवाली, सोने में भारी उछाल इत्यादि शब्द आर्थिक जगत की खबरों में पढ़ने को मिलते हैं। इसी प्रकार पर्यावरण और मौसम से जुड़ी खबरों के लिए - हवाएँ, आर्द्रता, ग्लोबल वार्मिंग आदि ।

विशेष लेखन की शैली उल्टा पिरामिड शैली ही होगी लेकिन यदि आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है।

न्यूज़पेग - न्यूज़पेग का अर्थ है किसी मुद्दे पर लिखे जा रहे लेख या फीचर में उस ताजा घटना का उल्लेख जिसके कारण वह मुद्दा चर्चा में आ गया।

विशेष लेखन के क्षेत्र-

विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं । सामान्य रिपोर्टिंग और बीट को छोड़कर वे सभी क्षेत्र जिनमें विशेषज्ञता की जरूरत होती है। । जैसे- खेल, कारोबार, सिनेमा, विज्ञान, पर्यावरण शिक्षा इत्यादि ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किसी भी विषय में निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आपको क्या बना सकती है?

a) विषय विशेषज्ञ
b) लेखक
c) स्तम्भ लेखक
d) पाठक

2. उल्टा पिरामिड शैली के बाद कौन-सी अन्य शैली भी विशेष लेखन में प्रयुक्त होती है?

a) कथात्मक शैली
b) विवर्णात्मक शैली
c) तथ्यात्मक शैली
d) संस्मरणात्मक

3. विशेष लेखन पद्धति कहाँ प्रचलित है?

a) शोध प्रबंध
b) जनकल्याण संबंधी लेखन
c) जनसंचार के माध्यमों में
d) शैक्षिकलेखन

4. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को कहते हैं-

a) लेखक
b) एंकर
c) संपादक
d) संवाददाता

5. आजकल पत्रकारिता में ____ की माँग की जा रही है।

a) जैक ऑफ़ ऑल ट्रैड
b) सभी विकल्प सही हैं
c) मास्टर ऑफ़ वन
d) मास्टर ऑफ़ नन

6. बीट रिपोर्टिंग के लिए रिपोर्टर को किन शब्दों का ज्ञान होना चाहिए?

a) साहित्यिक
b) तकनीकी
c) गंभीर
d) अलंकार युक्त

7. इनमें से कौन-सा शब्द क्रिकेट जगत का नहीं है?

a) तेजड़िए
b) स्पिन
c) हिट विकेट
d) रन

8. कारोबार और व्यापार से संबंधित खबर का सम्बन्ध किससे है?

a) राजनीतिक क्षेत्र
b) कृषि क्षेत्र से
c) आर्थिक क्षेत्र
d) खेल क्षेत्र से

9. वह पत्रकारिता, जो किसी घटना की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करे और पाठकों को उसका महत्त्व बताए, ____ पत्रकारिता कहलाती है।

a) विशेषीकृत
b) आर्थिक
c) राजनितिक
d) खोजी

10. विशेष लेखन होता है -

a) किसी विशेष लेखन पद्धति पर आधारित लेखन
b) किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन

c) दैनिक विषयों पर आधारित लेखन

d) समस्या प्रधान लेखन

11. विशेषज्ञता कैसे हासिल की जा सकती है?

a) निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता

b) सहजता

c) अध्ययन

d) अभ्यास

12. विशेष लेखन का क्षेत्र है-

a) संकुचित

b) व्यापक

c) सीमित

d) सामान्य

13. विशेष लेखन के लिए प्रयुक्त होने वाली शैली कौन सी है?

a) उल्टा पिरामिड शैली

b) सीधी पिरामिड शैली

c) यथार्थ परकशैली

d) पिरामिड शैली

14. कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी खबरें किस शैली में लिखी जाती है?

a) तथ्यात्मक शैली

b) उल्टा पिरामिड शैली

c) यथार्थपरक शैली

d) आम बोलचाल की भाषा में

15. किसी भी समाचार पत्र में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले पृष्ठ कौन से होते हैं?

a) देश-विदेश

b) अर्थ और खेल

c) मुख्य पृष्ठ

d) अपना शहर

16. विशेष लेखन के कितने क्षेत्र हैं?

a) दो

b) एक

c) अनेक

d) चार

17. दिलचस्पी और ज्ञान के आधार पर संवाददाताओं के बीच किया गया कार्य विभाजन कहलाता है -

a) रिपोर्टिंग

b) एंकरिंग

c) बीट

d) बाइट

18. इनमें से कौन-सा शब्द आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है?

a) तेजड़िए

b) मंदड़िए

c) बिकवाली

d) रन आउट

19. किसी क्षेत्र विशेष से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों का बारीकी से किया गया विश्लेषण ____ कहलाता है।

a) सामान्य रिपोर्टिंग

b) रिपोर्टिंग

c) आम रिपोर्टिंग

d) विशेष रिपोर्टिंग

20. बीट रिपोर्टर को अपनी रिपोर्ट से जुड़ी कौन-सी खबरें देनी होती है?

a) विशेष खबरें

b) पेज थ्री की खबरें

c) अंतराष्ट्रीय

d) सामान्य खबरें

उत्तरमाला-

1. (a) विषय विशेषज्ञ

व्याख्या: निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता विषय विशेषज्ञ बनने में सहायक होते है।

2. (a) कथात्मक शैली

व्याख्या: उल्टा पिरामिड शैली के बाद कथात्मक शैली भी विशेष लेखन में प्रयुक्त होती है।

3. (c) जनसंचार के माध्यमों में

व्याख्या: जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टीवी के माध्यम से दर्शकों और श्रोताओं के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

4. (d) संवाददाता

व्याख्या: बीट की रिपोर्ट लेखन करने वाले को संवाददाता कहते हैं।

5. (c) मास्टर ऑफ़ वन

व्याख्या: आजकल पत्रकारिता में मास्टर ऑफ़ वन की माँग की जा रही है।

6. (b) तकनीकी

व्याख्या: रिपोर्टर को संबंधित विषयों के प्रयोग होने वाले तकनीकी शब्द का ज्ञान होना आवश्यक है।

7. (a) तेजड़िए

व्याख्या: तेजड़िए शब्द क्रिकेट जगत का नहीं है।

8. (c) आर्थिक क्षेत्र

व्याख्या: कारोबार और व्यापार से संबंधित खबर का सम्बन्ध आर्थिक क्षेत्र से है।

9. (a) विशेषीकृत

व्याख्या: विशेषीकृत पत्रकारिता किसी घटना की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट कर पाठकों को उसका अर्थ बताती है।

10. (b) किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन

व्याख्या: किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है।

11. (a) निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता

व्याख्या: निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता से विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है।

12. (b) व्यापक

व्याख्या: वर्तमान में विशेष लेखन देश-विदेश, रक्षा, गृह, राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्र हैं। अतः विशेष लेखन का क्षेत्र व्यापक होता है।

13. (a) उल्टा पिरामिड शैली

व्याख्या: विशेष लेखन के लिए विषय चाहे कोई भी हो उल्टा पिरामिड शैली ही प्रयोग होती है।

14. (b) उल्टा पिरामिड शैली

व्याख्या: ये खबरे उल्टा पिरामिड शैली में लिखी जाती है।

15. (b) अर्थ और खेल

व्याख्या: धन और खेल हर एक के प्रिय विषय होने से सर्वाधिक पढ़े जाते हैं।

16. (c) अनेक

व्याख्या: विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं। जैसे- व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, स्वास्थ्य इत्यादि।

17. (c) बीट

व्याख्या: मीडिया की भाषा में इस तरह का कार्य विभाजन बीट कहलाता है।

18. (d) रन आउट

व्याख्या: रन आउट शब्द आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है।

19. (d) विशेष रिपोर्टिंग

व्याख्या: विशेष रिपोर्टिंग में सामान्य रिपोर्ट से हटकर किसी क्षेत्र विशेष से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों आदि का बारीकी से विश्लेषण किया जाता है।

20. (d) सामान्य खबरें

व्याख्या: बीट रिपोर्टर को केवल सामान्य खबरें ही पाठक को देनी होती है।

वर्णनात्मक प्रश्न

1. विशेष लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर- विशेष लेखन किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन है; जिसमें विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं।

2. डेस्क क्या है?

उत्तर- समाचारपत्र, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा-व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है।

3. बीट से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- विभिन्न विषयों से जुड़े समाचारों के लिए संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

4. बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अन्तर है?

उत्तर- बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी व दिलचस्पी का होना पर्याप्त है, साथ ही उसे आम तौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। किन्तु विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर संबंधित विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों का बारीकी से विश्लेषण कर प्रस्तुतीकरण किया जाता है। बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहा जाता है।

5. विशेष लेखन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का जान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।

6. विशेष लेखन के क्षेत्र कौन-कौन से हो सकते हैं?

उत्तर-विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र होते हैं, यथा- अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, कानून व सामाजिक मुद्दे आदि।

अभ्यासार्थ महत्त्वपूर्ण प्रश्न:

1. किसी खास विषय पर किए गए लेखन को क्या कहते हैं?
2. विशेष लेखन के क्षेत्र लिखिए।
3. पत्रकारीय भाषा में लेखन के लिए निर्धारित स्थल को क्या कहते है?
4. बीट से आप क्या समझते हैं?
5. बीट रिपोर्टिंग क्या है?
6. बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है?
7. विशेष संवाददाता किसे कहते हैं?

पाठ-11

कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

कहानी के नाट्य रूपांतरण में एक दृश्य की कथावस्तु कथानक को सामने रखकर एक-एक घटना को चुनकर निकाला जाता है और उसके आधार पर दृश्य बनता है तात्पर्य यह कि यदि एक घटना, एक स्थान और एक समय में घट रही है तो वह एक दृश्य होगा। स्थान और समय के आधार पर कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जाता ।

प्रश्न 1. कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं?

उत्तर-कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएं हैं। इनमें जहाँ कुछ समानताएं हैं, वहाँ कुछ असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार है

कहानी

1. कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है।
2. कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।
3. कहानी कही अथवा पढ़ी जाती है।
4. कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बाँटा जाता है।
5. कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का महत्त्व नहीं है।

नाटक

1. नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है।

2. नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।

3. नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

4. नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

5. नाटक में मंच सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।

प्रश्न 2. कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है?

उत्तर-कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

2. कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

3. कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

4: ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

6. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

7. संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

8. कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

प्रश्न 3. नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार की मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है?

अथवा

नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं?

उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है-

1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।

2. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।

3. संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है।

4. संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।

5. कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

प्रश्न 4. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए

1. कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।

2. नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।

3. नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।

4. कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।

5. संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावशैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

6. संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।

प्रश्न 5. कहानी और नाटक में क्या समानता है?

उत्तर- समानता यह होती है कि कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है, पात्र होते हैं, परिवेश होता है, कहानी का क्रमिक विकास होता है, संवाद होते हैं, द्वंद्व होता है, क्रम उत्कर्ष होता है। इस तरह हम देखते हैं कि नाटक और कहानी की आत्मा के कुछ मूल तत्व एक ही हैं। यह अवश्य है कि कुछ मूल तत्व जैसे द्वंद्व नाटक में जितना और जिस मात्रा में आवश्यक है उतना सम्भवतः कहानी में नहीं है।

प्रश्न 6. नाटक की शिल्प संरचना पर प्रकाश डालिए?

उत्तर- नाटक के अंतर्गत सर्वप्रथम कहानी के रूप को किसी शिल्प फार्म अथवा संरचना के भीतर पिरोना होता है। इसके लिए नाटक के शिल्प की जानकारी होनी आवश्यक होती है। यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि नाटक का मंचन मंच पर होता है। इसी कारण एक नाटककार को रचनाकार होने के साथ-साथ कुशल संपादक भी होना चाहिए। घटनाओं, स्थितियों, दृश्यों का चयन, मंचन का क्रम आदि रखने का अनुभव और जानकारी होनी अत्यंत आवश्यक है, तभी नाटक सफल हो पाता है।

प्रश्न 7. कहानी लेखन में कथानक के पात्रों का संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- देशकाल, स्थान और परिवेश के बाद कथानक के पात्रों पर विचार करना चाहिए। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानी में वह विकसित भी होता है या अपना स्वरूप भी बदलता है। कहानीकार के सामने पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्त्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। यह जितना स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में आसानी होगी। इसके अंतर्गत पात्रों के अंतः संबंध पर भी विचार किया जाना चाहिए। कौन-से पात्र की किस किस परिस्थिति में क्या प्रतिक्रिया होगी, यह भी कहानीकार को पता होना चाहिए।

पाठ सं- 12

कैसे बनता है रेडियो नाटक

रेडियो श्रव्य माध्यम है। और दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है। श्रव्य माध्यम के अंतर्गत आने वाले नाटक का प्रसारण कैसे हो सकता है ? यह बाद का प्रश्न है। ऐसे नाटक की रचना कैसे होगी यह पहला प्रश्न है? नाटक का रंगमंच से सीधा संबंध है लेकिन रेडियो नाटक रंगमंच के लिए या मंचन के लिए नहीं लिखा जाता। श्रव्य माध्यम पर श्रोताओं के लिए इस नाटक का प्रसारण होता है। यह दृश्य से वंचित हो जाता है और भी बहुत कुछ इसकी परिधि में नहीं आ सकता।

मंचीय नाटक रंगमंच पर अभीहित होता है और केन्द्र में दर्शक होते हैं। दर्शकों के लिए लोकरंजन की व्यवस्था नाटक के तत्वों और उपकरणों के माध्यम से की जाती है। घटना विन्यास ऐसा होता है कि कौतूहल बना रहे । तनाव का सृजन हो पात्रों का प्रभावशाली अभिनय हो सके। प्रकाश व्यवस्था और संगीत का अतिरिक्त योगदान होता है। प्रस्तुतिक्रम में निर्देशकीय परिकल्पना महत्वपूर्ण होती है लेकिन दर्शकों के सामने अभिनेता होता है। उसे त्वरित प्रतिक्रियाएँ मिलती है। इन्ही प्रतिक्रियाओं के आधार पर नाटक सफल या असफल होता है। रंगमंच पर नाटक कई पात्रों और रंग व्यवस्थापको के माध्यम से प्रस्तुत होता है और दर्शकों को सामूहिक रूप से कलास्वादन का अवसर मिलता है।

मंचीय नाटक का उल्लेख इसलिए किया गया कि रेडियो नाटक इससे कब, कितना और कैसे अलग है यह समझा जा सके।रेडियो नाटक मंच की सीमाओं से मुक्त नाटक है।

अदृश्य होने के परिणामस्वरुरूप रोडियो नाटक में जहां कुछ कमी रह जाती है वही इसी उन्मुक्त उड़ान की संभावनाएँ बन जाती है।ऊपर मंच के नाटक की बात की गई हैं। रंग अभिकल्प मंच तैयार करता है। नाटक की आवश्यकता के अनुरूप दृश्य कैसे रचा जाए कि कलात्मक भी हो और प्रभावशाली भी मंच सज्जाकार इसका ध्यान रखता है। इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि किसी प्रस्तुति के नाटक की संख्या अत्यधिक न हो इसके विपरीत रेडियो नाटक में दृश्य अतिकल्पना पर आधारित भी हो सकते हैं। फैन्टेसी या रम्यकल्पना रेडियो का प्रिय क्षेत्र है। आशय यह है कि मंच पर जैसे दृश्य दिखाये नहीं जा सकते श्रव्य नाटक में ऐसे दृश्य बड़ी सहजता से सम्मिलित किए जा सकते हैं।

रेडियो नाटक के तत्व-

इसके लिए 3 तत्वों का सहारा लिया जाता है।रेडियो नाटक में ये 3 तत्व महत्वपूर्ण है

- भाषा
- ध्वनि
- संगीत

इन तीनों के कलात्मक संयोजन से विशेष प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। भाषा केंद्र में है और यहाँ ध्यातव्य है कि भाषित शब्द की शक्ति लिखित सबसे अधिक होती है और शब्द प्रयोग ऐसे हो जिन का उच्चारण अभिनय संपन्न हो सके। यहां वाचिक अभिनय की ओर संकेत है। प्रसंग वश यहां उल्लेखनीय है कि अभिनय चार प्रकार का माना गया है-

१. अंगिक
२.आहार्य
३.सात्विक
४.वाचिक

केवल वाचिक अभिनय इस श्रव्य माध्यम पर हो सकता है।

संगीत सामान्यता दृश्य परिवर्तन के लिए उपयोग में आता है। यह संवाद के बीच के अंतराल को भरने के लिए भी होता है। और नाटक की विषय वस्तु और कथ्य के अनुरूप वातावरण के निर्माण के लिए भी। यह वातावरण अदृश्य होता है इसलिए संगीत की आवश्यकता और भूमिका और बढ़ जाती है। शब्दों के माध्यम से तो वातावरण का सृजन होता ही है संगीत का योगदान भी विशिष्ट होता है। चिड़ियों का चहचहाना, सुबह का संकेतक होता है विविध प्रकार की सिगनेचर ट्यून से भी सुबह का आभास कराया जाता है । प्लेटफार्म का शोर गाड़ियों के हॉर्न की आवाज, कांच का टूटना या तेज हवाओं का प्रभाव ध्वनि की विशेषताओं के माध्यम से उत्पन्न किया जाता है। भाषा संगीत और ध्वनि तीनों के समन्वित और कलात्मक प्रयोग से श्रोता की कल्पना शक्ति को जागृत करते हुए उसके मानस में दृश्य रचा जाता है। इस प्रकार के दृश्य की रचना श्रोता की कल्पनाशील ग्रहण क्षमता पर भी निर्भर है।

रेडियो नाटक के लेखन क्रम में रचनाकार अत्याधिक कल्पनाशील हो सकता है। उसके लिए कोई सीमा नहीं है, ना दृश्य की, ना समय की और ना स्थान की। इस प्रकार किसे नाटक के अनिवार्य पक्ष के रूप में देखा जाता है वह संकलनत्रय रेडियो नाटक के लिए महत्वपूर्ण नहीं रह जाता।

ऊपर कहा गया है कि रेडियो नाटक के लिए समय की कोई सीमा नहीं है। रचना के संदर्भ में यह बात सही है लेकिन प्रसारण अवधि के संदर्भ में सही नहीं है। यह माना जाता है कि श्रोताओं के ध्यान केंद्र की सीमा होती है। इसलिए सामान्यतः नाटक 15 से 30 मिनट की अवधि का हो बहुत लंबा ना हो।

कल्पना का तत्व महत्वपूर्ण है। कल्पना का महत्व तीन स्तरों पर आवश्यक उपयोगी और कलासृजन में सहायक है। ये तीन मुख्य स्तर है

१. नाटककार का रचनाकर्म

२. प्रस्तुतकर्ता की सृजनात्मकता

३. श्रोता की कल्पनाशीलता

श्रव्य नाटक सबसे पहले नाटक करके मानस के दृश्य रूप में घटित होता है। इसके बिना संवाद क्रम में दृश्य रचना नहीं की जा सकती दूसरा पक्ष प्रस्तुतकर्ता का है संगीत और ध्वनि प्रभाव का पक्ष इसमें शामिल है। प्रस्तुति क्रम में कैसे संगीत और कैसा ध्वनि प्रभाव अपेक्षित है। इसका चयन निर्धारण प्रस्तुतकर्ता के माध्यम से होता है। तीसरा पक्ष अनिवार्यतः श्रोता का है। उसकी कल्पनाशीलता के बिना वंचित प्रभाव का ग्रहण करना संभव नहीं।

ध्वन्यांकन के क्रम में कई तरह के व्यक्तियों का सहारा लिया जाता है। प्रकारान्तर से यह माइक्रोफोन आवाज ध्वनि और संगीत का रचनात्मक उपयोग है जैसे पात्र का बोलते हुए माइक्रोफोन से दूर हट जाना ऐसा प्रभाव उत्पन्न करता है कि जैसे पात्र दूर या बाहर या कहीं और जा रहा हो। इसे फेड आउट कहा जाता है। इसके विपरीत हैं फेड इन। इसमें पात्र दूर से बोलते हुए माइक्रोफोन के निकट आता है।

रेडियो नाटक के माध्यम से अनंत की यात्रा संभव है। जैसे देश या स्थान की कोई सीमा नहीं वैसे ही काल की भी सीमा नहीं। 30 मिनट के नाटक में शताब्दियों का अंकन हो सकता है। 1 ईसवी शताब्दी से अकबर के युग तक का सफर संवादों ध्वनि प्रभाव और संगीत के माध्यम से सहज संभव है। कम साधनों से अत्याधिक प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता रेडियो नाटक में है। यह अन्य नाटकों की अपेक्षा गतिशील नाटक है जैसे ऊपर कहा गया है शताब्दियों का सफर संवाद के कुछ टुकड़ों के माध्यम से किया जा सकता है। दूर तक फैली धरती शब्दों के दायरे में है। श्रव्य माध्यम का यह नाटक नाटक के कार्य व्यापार को मानस के धरातल पर बड़ी सहजता से उतार सकता है।

भाषा के माध्यम से शब्दों के धरातल से बाह्य दृश्य विधान तो होता ही है। आंतरिक मानसिक द्वंद के अंकन में भी उतना ही सफल होता है। यही कारण है कि इसे अंतर्मन का नाटक भी कहा जाता है।

व्यक्ति मन के अंकन के लिए मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में चेतना प्रवाह शैली अपनाई जाती है। रेडियो नाटक इस शैली का प्रभावशाली उपयोग करता है। इस शैली के अंतर्गत अतीत वर्तमान भविष्य किसी भी दिशा में यात्रा संभव है।

जिन रचनाकारों ने रेडियो नाटक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उनमें से कुछ ये है- सिद्धनाथ कुमार, उदय शंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा, गिरिजाकुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल और धर्मवीर भारती। धर्मवीर भारती का गीतिनाट्य अंधा युग पहली बार रेडियो से ही प्रसारित किया गया।

रेडियो नाटक के आंतरिक अन्विति का पक्ष महत्वपूर्ण है। इस अंतरिक्ष संगठन के बिना वंचित प्रभाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता। दृश्य विधान, पात्र परिचय, वातावरण का निर्धारण, कार्य व्यापार की सूचना पात्रों की भावी व्यक्ति यह सारी दिशाएं रेडियो नाटक की वाचिक भाषा के माध्यम से स्पष्ट होती है। शब्दों के माध्यम से सारा प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। इसके साथ ही ध्वनि और संगीत अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं।

रेडियो नाटक में **नरेटर या सूत्रधार** हो सकता है। ऐसा होता रहा है संवाद से जो नहीं हो सकता वह नरेशन से पूरा होता है वैसे इसे अच्छा तरीका नहीं माना जाता। जो काम नरेटर या सूत्रधार करने वाला है। वह पात्रों के संवादों के माध्यम से संपन्न हो जाए तो स्थिति अच्छी मानी जाती हैं। श्रव्य माध्यम से भाषित शब्द की महत्ता की ओर संकेत ऊपर किया जा चुका है।

इस प्रकार रेडियो नाटक श्रव्य नाटक है। यह गतिशील है। अतीत वर्तमान भविष्य तीनों देशों में इसके माध्यम से गमन किया जा सकता है। यह वाचिक भाषा की शक्ति क्षमता का भरपूर उपयोग करता है। कल्पना तत्व से इसका गहरा संबंध है। यह शब्दों के माध्यम से एक पूरा संसार और दृश्य को दृश्य बनाता है। यह अंतर्मन का नाटक है मितव्ययी भी है। न्यूनतम साधनों से अधिकतम प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता,ध्वनि और संगीत की रचनात्मक उपयोगिता इसके प्रभाव में वृद्धि करता है।

प्रश्न 1. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं?

उत्तर-सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ हैं जो इस प्रकार है-

सिनेमा और रंगमंच

1. सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है।
2. इनमें कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता
3. इनमें चरित्र होते हैं।
4. इनमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
5. इनमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान।
6. इनमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

रेडियो नाटक

1. रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है।
2. इसमें भी कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।
3. इसमें भी चरित्र होते हैं।
4. इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
5. इसमें भी पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
6. इनमें भी पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

प्रश्न 2. सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं?

उत्तर-सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ होते हुए भी कुछ असमानताएँ अवश्य होती हैं जो इस प्रकार है-

सिनेमा और रंगमंच

1. सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम है।
2. इनमें दृश्य होते हैं।
3. इनमें मंच सज्जा और वस्त्र सज्जा का बहुत महत्त्व होता है।
4. इनमें पात्रों की भावभंगिमाएँ विशेष महत्त्व रखती हैं।
5. इनमें कहानी को पात्रों की भावनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

रेडियो नाटक

1. रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है।
2. इसमें दृश्य नहीं होते।
3. इसमें इनका कोई महत्त्व नहीं होता।
4. इसमें भावभंगिमाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती।
5. इसमें कहानी को ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।

प्रश्न 3. रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

उत्तर-रेडियो नाटक में कहानी संवादों तथा ध्वनि प्रभावों पर ही आधारित होती है। इसमें कहानी का चयन करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं

1. कहानी एक घटना प्रधान न हो-रेडियो नाटक की कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि ऐसी कहानी श्रोताओं को थोड़ी देर में ही ऊबाऊ बना देती है जिसे श्रोता कुछ देर पश्चात् सुनना पसंद नहीं करते इसलिए रेडियो नाटक की कहानी में अनेक घटनाएँ होनी चाहिए।
2. अवधि सीमा-सामान्य रूप से रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक हो सकती है। रेडियो नाटक की अवधि इससे अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि रेडियो नाटक को सुनने के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट तक की होती है, इससे ज्यादा नहीं। दूसरे रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसे मनुष्य अपने घर में अपनी इच्छा अनुसार सुनता है। इसलिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित होनी चाहिए।
3. पात्रों की सीमित संख्या-रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। इसमें पात्रों की संख्या 5- 6 से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें याद नहीं रख सकेंगे। इसलिए रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए।

प्रश्न 4. रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का क्या महत्त्व है?

अथवा

रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं-

1. रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।
2. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं।
3. नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
4. इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।

5. संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है।

6. संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

प्रश्न 5. रेडियो पर रेडियो नाटक का आरंभ किस प्रकार हुआ?

उत्तर-आज से कुछ दशक पहले रेडियो ही मनोरंजन का प्रमुख साधन था। उस समय टेलीविज़न, सिनेमा, कम्प्यूटर आदि मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं थे। ऐसे समय में घर बैठे ही रेडियो ही मनोरंजन का सबसे सस्ता और सुलभ साधन था। रेडियो पर खबरें आती थीं इसके साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते थे। रेडियो पर संगीत और खेलों का आँखों देखा हाल प्रसारित किया जाता था। एफ० एम० चैनलों की तरह गीत-संगीत की अधिकता होती थी। धीरे-धीरे रेडियो पर नाटक भी प्रस्तुत किये जाने लगे तब रेडियो नाटक टी० वी० धारावाहिकों तथा टेली फिल्मों की कमी को पूरा करने के लिए शुरू हुए थे। ये नाटक लघु भी होते थे और धारावाहिक के रूप में भी प्रस्तुत किए जाते थे।

हिन्दी साहित्य के सभी बड़े-बड़े लेखक साहित्य रचना के साथ-साथ रेडियो स्टेशनों के लिए नाटक भी लिखते थे। उस समय रेडियो के लिए नाटक लिखना एक सम्मानजनक बात मानी जाती थी। इस प्रकार रेडियो नाटक का प्रचलन बढ़ने लगा। रेडियो नाटकों ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्य आंदोलन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। हिंदी के अनेक नाटक जो बाद में मंच पर बहुत प्रसिद्ध रहे वे मूलतः रेडियो के लिए ही लिखे गए थे। धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'अंधा युग' और मोहन राकेश द्वारा रचित 'आषाढ़ का एक दिन' इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

प्रश्न 6. रेडियो नाटक के तत्वों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

उत्तर-रेडियो नाटक का मूल आधार ध्वनि मानी जाती है। यह मानवीय भावों को सरलता-सहजता से व्यक्त कर देने की क्षमता रखती है। रेडियो तत्वों के तीन तत्व माने जाते हैं।

उनके तत्व हैं-(1) भाषा (2) ध्वनि प्रभाव (3) संगीत।

1. **भाषा**-भाषा ही रेडियो नाटक की मूल आधार होती है। यही सुनने और बोलने का कार्य करती है। इसी से कठिन एवं जटिल रेडियो नाटक और संवाद जटिल हो जाते हैं। इसे जिन तीन भागों में स्वीकार किया जाता है, वे हैं-

(क) कथोपकथन (ख) नरेशन (वक्ता का कथन) (ग) कथन।

(क) कथोपकथन-रेडियो से दो प्रमुख संबंधित तत्व होते हैं-कथोपकथन और प्रवक्ता का कथन । कथोपकथन रेडियो को पात्रों की मानसिक स्थितियों को प्रकट कराते हैं और कथानक उसे गति प्रदान करता है। यही रेडियो के नाटक के पात्रों और उन की मानसिक स्थितियों का परिचय कराते हैं। इन्हीं से कथानक को गति प्राप्त होती है और श्रोता को अपनी ओर आकृष्ट करती है। नरेशन ही पाठकों के क्रिया-कलापों का निर्माण प्रदान करता है और विभिन्न घटनाओं/ विवशताओं की श्रृंखला में बांधने का कार्य करता है।

(ख) ध्वनि प्रभाव-ध्वनि तरह-तरह की वातावरणों को बनाने में सहायक बनाती है। तूफान, बादल, बाज़ार आदि इन्हीं से प्रसारण के माध्यम से इधर-उधर प्रसारित करती है। इनकी सहायता से रेडियो नाटकों की वातावरण की सृष्टि होती है।

(ग) संगीत-यह रेडियो-नाटक को संजीवता प्रदान करने का कार्य करता है जिससे प्रभाविता की सृष्टि होती है। संगीत से प्रभाविता की क्षमता बढ़ती है।

प्रश्न 7. कहानी का नाट्य- रूपांतरण करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- कहानी का नाट्य रूपांतर करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिये-

- कहानी एक ही जगह पर स्थित होनी चाहिये।
- कहानी में संवाद नहीं होते और नाट्य संवाद के आधार पर आगे बढता है। इसलिये कहानी मे संवाद का समावेश करना जरूरी है।
- कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है।
- नाट्य मे हर एक पात्र का विकास, कहानी जैसे आगे बढती है, वैसे होता है इसलिये कहानी का नाट्य रूपांतर करते वक्त पात्र का विवरण करना बहुत जरूरी होता है।
- एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है, पर जब नाट्य रूपांतर की बात आती है, तो एक समूह या टीम की जरूरत होती है।

प्रश्न 8. रेडियो नाटक में पात्र संबंधी किन महत्वपूर्ण बातों की जानकारी मिलती है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- रेडियो नाटक में पात्रों संबधी तमाम जानकारी हमें संवादों के माध्यम से ही मिलती हैं। उनके नाम, आपसी संबंध, चारित्रिक विशेषताएँ, ये सभी हमें संवादों द्वारा ही उजागर करना होता है। भाषा पर भी आपको विशेष ध्यान रखना होगा। वो पढ़ा-लिखा है कि अनपढ़, शहर का है कि गाँव का, क्या वो किसी विशेष प्रांत का है, उसकी उम्र क्या है, वो क्या रोजगार-धंधा करता है। इस तरह की तमाम जानकारियाँ उस चरित्र की भाषा को निर्धारित करेंगी। फिर पात्रों का आपसी संबंध भी संवाद की बनावट पर असर डालता है। एक ही उदाहरण व्यक्ति अपनी पत्नी से अलग ढंग से बात करेगा, अपने नौकर से अलग ढंग से, आपने बास के प्रति सम्मानपूर्वक रवैया अपनाएगा, तो अपने मित्र के प्रति उसका बराबरी और गरम-जोशी का व्यवहार होगा। ये सब प्रकट होगा उसके संवादों से।

पाठ सं-13

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

वैचारिक और भावनात्मक रूप से रचना करना एवं अपने मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति करना सृजनात्मक लेखन के अंतर्गत आता है , प्रश्नपत्र के खंड-ब में दिए गए अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक पर सृजनात्मक लेखन संबंधी प्रश्न पूछे जाएंगे | इसका उत्तर लिखते समय निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक होगा -

- सृजनात्मक लेखन में विद्यार्थियों को अपने विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति करनी है|
- विचारों में क्रमबद्धता आवश्यक है |
- लेखन से पूर्व अपने विचारों को संक्षिप्त बिन्दुओं या शीर्षकों में बांट लें ताकि लेखन आसान हो सके |
- विषयानुकूलता व रोचकता का ध्यान रखा जाना चाहिए ।
- लेखन से पूर्व सभी विकल्पों पर विचार कर उपयुक्त विकल्प का चुनाव करें ।
- लेखन के विषय को तीन भाग में विभाजित कर लें| (क) विषय का परिचय (ख) विषय का विस्तार (ग) निष्कर्ष
- रूपरेखा-लेखन के समय पूर्वापर संबंध के नियम का निर्वाह किया जाए, पूर्वापर संबंध के निर्वाह का अर्थ है कि ऊपर की बात उसके ठीक नीचे की बात से जुड़ी होनी चाहिए, जिससे विषय का क्रम बना रहे |
- भाषा सरल, सहज और बोधगम्य हो|
- पुनरावृत्ति दोष से बचा जाए|

- शब्द सीमा 120 शब्द सी.बी.एस.सी.द्वारा निर्धारित की गई है| अत: शब्द सीमा का ध्यान रखें एवं अनावश्यक बातें लिखने से बचें|

सृजनात्मक लेखन में निम्न प्रश्नों के उत्तर तलाश करें -

- समस्या क्या है?
- समस्या क्यो है?
- समस्या का प्रभाव – लाभ / हानि
- उपाय /सुझाब /प्रयास
- उपसंहार

सृजनात्मक लेखन के प्रारूप का निर्वहन निम्न प्रकार होना चाहिए-

1. आरम्भ (विषय का परिचय) -अंक-1
2. विषय का महत्व (महत्व,प्रासंगिकता) -अंक-3
3. निष्कर्ष -अंक 1

सृजनात्मक लेखन - उदाहरण

भाग्यवादी दृष्टिकोंण

इस संसार में कुछ व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं और कुछ केवल अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखते हैं | प्राय: ऐसा देखा जाता है कि भाग्यवादी व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा को सर्वोपरि मानता हैं और अपने प्रयत्नों को गौण मान बैठते हैं | वे विधाता का ही दूसरा नाम भाग्य को मान लेते है| भाग्यवादी कभी-कभी अकर्मण्यता की स्थिति में भी आ जाते हैं| उनका कथन होता है कि कुछ नहीं कर सकते सब कुछ ईश्वर के अधीन है| हमें उसी प्रकार परिणाम भुगतना पड़ेगा जैसा भगवान चाहेगा| भाग्योदय शब्द में भाग्य प्रधान है | एक अन्य शब्द है -सूर्योदय| हम जानते हैं कि उदय सूरज का नहीं होता सूरज तो अपनी जगह पर रहता है, चलती घूमती तो धरती ही है| फिर भी सूर्योदय हमें बहुत शुभ और सार्थक मालूम होता है| भाग्य भी इसी प्रकार है | हमारा मुख सही भाग्य की तरफ हो जाए तो इसे भाग्योदय ही मानना चाहिए| पुरुषार्थी व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर कार्य सिद्ध कर लेना चाहता है| पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे| पुरुष का अर्थ पशु से भिन्न है| बल-विक्रम तो पशु में अधिक होता है, लेकिन पुरुषार्थ पशु चेष्टा के अर्थ से अधिक भिन्न और श्रेष्ठ है |

इसी प्रकार "पर्यावरण प्रदूषण" पर सृजनात्मक लेख लिखना हो तो संभावित बिंदु निम्न हो सकते हैं |

- भूमिका
- पर्यावरण प्रदूषण से हानि
- बचाव / उपाय /सुझाव
- उपसंहार

सृजनात्मक लेखन के कुछ अन्य उदाहरण /संभावित बिन्दु तथा उद्धरण:--

(अ) सामाजिक रचनात्मक लेखन - ये लेख सामाजिक समस्याओं पर आधारित होते हें अत: इनको लिखते समय समाचार –पत्रों की खबरों, विद्यालय के कार्यक्रमों का जिक्र करें ।

शीर्षक: -

- भूमिका --- (इसमे विषय का सामान्य परिचय दें)
- क्या है? (इसमें विषय को स्पष्ट करे)
- लाभ /हानि/ उपलब्धि/योजनाएं (इसका चयन विषय के अनुरूप करें)
- उपाय /सुझाव
- उपसंहार (इसमे सार लिखें)

उद्धरण – प्रारंभ-"यह भारत मानव लोक नहीं रे,
यह है नरक अपरिचित ।
यहाँ भारत की ग्राम्य – सभ्यता
संस्कृति से निर्वासित ।।

अंत ---- "असफल हुये अनेक बार पर, मन में कोई मलाल नहीं है ।
युवा शक्ति उत्सुक उत्साहित, अभी समर है हार नहीं है ।

(ब) देश व संस्कृति सम्बन्धी सृजनात्मक लेखन -

भारत की राष्ट्रीय एकता / उपभोक्ता वाद की संस्कृति /धर्म निरपेक्षता / मेरा भारत महान / आतंकवाद / आरक्षण की समस्या

शीर्षक --

- भूमिका
- लक्ष्य
- महत्त्वपूर्ण बिन्दु / समाचार – पत्रों में चर्चित
- वर्तमान संदर्भ में सुझाव
- उपसंहार

उद्धरण –

प्रारम्भ --- "यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहां से ।
बाकी बचा है केवल नामो निशां हमारा"

अंत ----- "लोहे के पेड़ हरे होंगे, तू गान प्रेम के गाता चल ।
नम होगी यह मिट्टी जरूर, आंसू के कण बरसाता चल ।।

(स) विज्ञान व संस्कृति -

संचार क्रान्ति / मोबाईल का प्रभाव / टेलीविज़न का दुष्प्रभाव / इंटरनेट के लाभ –हानि /डिजिटल इंडिया

प्रारंभ – "यह पशुत्व हैं मनुज कि, आप ही आप चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे "

अंत – "मनुष्य वही जो सबके सुख का ज्ञान करे
करे विकास, राष्ट्र उन्नत हो, मानवता का ध्यान रहे" |

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन / रचनात्मक लेखन पर आधारित कुछ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 रटंत ज्ञान क्या है?

उत्तर- रटंत ज्ञान एक बुरी आदत के समान है जो किसी भी विषय के बारे में रट कर पढ़ी गई बातों को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करती है। इसमें मानसिक अभ्यास के लिए कोई अवसर नहीं होता।

प्रश्न 2. रटंत अथवा कुटेव को बुरी लत क्यों कहा जाता है?

उत्तर- रटेत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है। वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है।

प्रश्न 3. नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
2. विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।
3. विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए।
4. विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए।.
5. अप्रत्याशित विषयों के लेखन में मैं शैली का प्रयोग करना चाहिए।
6. अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक को विषय से हटकर अपनी विद्वता को प्रकट नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 4- रचनात्मक लेख को चुनौती क्यों कहा जा सकता है?

उत्तर- अपने मन में उठते अनगिनत विचारों को लेख का रूप देना, आसानी से बोल कर कही जा सकने वाली बातों को सुसंबद्ध ढंग से लिपिबद्ध करना आसान नहीं है, अतः आत्मविश्वास के साथ लेख लिखना किसी चुनौती से कम नहीं है।

प्रश्न 5- इस विषय के सन्दर्भ में लेखन का आशय क्या है?

उत्तर- यहां लेखन का आशय यांत्रिक हस्तकौशल मात्र न होकर भाषा के सहारे किसी चीज पर विचार करने और उसे व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रूप से प्रस्तुत करने का साधन भी है।

प्रश्न 6.नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में क्या-क्या बाधाएँ आती हैं?

उत्तर- नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार है-

1. सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।
2. लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।
3. लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।
4. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।
5. लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है।
6. लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।

प्रश्न 7- तैयारशुदा सामग्री हमसे क्या छीन लेती है?

उत्तर- तैयारशुदा सामग्री की प्रचुरता और उपलब्धता, हमारी आत्मनिर्भरता, मौलिकता और लेखन की क्षमता के साथ-साथ हमारी रचनात्मकता भी छीन लेती है?

प्रश्न 8- रचनात्मक लेखन के लिए कैसे विषय दिए जाने चाहिए?

उत्तर - ऐसे विषयों की संख्या अपरिमित है कुछ विषय खुले होते हैं, कुछ तार्किक कुछ स्मृतियों पर आधारित कोई-कोई अनुभव और सिद्धांतों पर आधारित होते हैं। इसमें लेखक की भावाभिव्यक्ति और विचार विषय से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।

प्रश्न 9-नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को कैसे सरल बनाया जा सकता है?

उत्तर - नए तथा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को सरल बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान करना चाहिए

1. किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रुककर एक रूपरेखा प्रदान करें। उसके पश्चात् ही शानदार ढंग से अपने विषय की शुरुआत करें।

2. विषय को आरंभ करने के साथ ही उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाए, यह भी मस्तिष्क में पहले से होना आवश्यक है।

3. जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है।

4. सुसंबद्धता के साथ-साथ विषय से जुड़ी बातों का सुसंगत होना भी जरूरी होता है। अत: किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ-साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक होता है।

5. नए तथा अप्रत्याशित विषयों के लेखन में आत्मपरक 'मैं शैली का प्रयोग किया जा सकता है। यद्यपि निबंधों और अन्य आलेखों में 'मैं' शैली का प्रयोग लगभग वर्जित होता है किंतु नए विषय पर लेखन में मैं शैली के प्रयोग से लेखक के विचारों और उसके व्यक्तित्व की झलक प्राप्त होती है।

प्रश्न 10- रचनात्मक लेखन का फॉर्मूला (सूत्र) क्या है?

उत्तर- सच्चाई यही है कि ऐसे लेखन का कोई फार्मूला नहीं होता, यदि होता तो कंप्यूटर हमसे ज्यादा श्रेष्ठ लेखक होता। इस प्रकार का लेखन बंधी-बंधी लीक से हटकर खुले मैदान में विचरण करने जैसा होता है जहाँ प्रत्येक लेखक का अपने विचारानुसार विषय का सार्थक और सुसंगत रूप प्रकट होता है।

प्रश्न 11. क्या रचनात्मक लेख लिखते समय भी विचारों का नियंत्रण आवश्यक है?

उत्तर- यद्यपि दिए गए विषय के आलोक में जो भी सार्थक और सुसंगत विचार मन में आते हैं, उन्हें व्यक्त किया जा सकता है। परन्तु कुछ विषयों पर अपने विचार प्रवाह और शब्दों के चयन पर नियंत्रण आवश्यक है विशेषकर जब उससे किसी की व्यक्तिगत भावना या आत्मसम्मान पर चोट पड़ती हो।

प्रश्न 12-लेखन का अक्षम्य दोष क्या है?

उत्तर- अच्छे लेखन की विशेषता सुसंबद्ध होने के साथ-साथ उसका सुसंगत होना भी है बातों में जुड़ाव और तालमेल होने की जगह यदि वे परस्पर विरोधी हो तो यह लेखन के साथ-साथ अभिव्यक्ति का भी अक्षम्य दोष है।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन /रचनात्मक लेखन के कुछ उदाहरण

कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ

20वीं सदी के प्रारंभ में विश्व में महिलाओं का स्थान घर-परिवार की जिम्मेदारियों तक ही सीमित था। किंतु आधुनिकीकरण के साथ-साथ समाज के संरचनात्मक स्तर में भी परिवर्तन आया। महिलाओं के लिए शिक्षा के द्वार खुले और

महिलाओं ने आजादी के संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यही नहीं आजादी के बाद बदलते सामाजिक परिदृष्य की उपज अभाव और महँगाई से दो-चार होने के लिए महिलाओं को घर की जिम्मेदारियाँ निभाने के अलावा नौकरी व अन्य व्यवसाय भी करने पड़े,जो तत्कालीन समय के अनुसार सही भी है और आवश्यक भी। इन सबके बावजूद, उन्हें हीन दृष्टि से देखा जाता है। दूसरे, यदि महिला कर्मी कुंवारी है तब सहकर्मी पुरुषों की ही नहीं, राह चलतों की गिद्ध दृष्टि भी उसे निगलने को तत्पर रहती है। उसे अनुचित संवाद सुनने पड़ते हैं तथा अनचाहे स्पर्श व संकेत झेलने पड़ते हैं।

अधिकारी भी उन्हें अधिक समय तक रुकने के लिए मजबूर करते हैं। इसका कारण भारतीय पुरुष की गुलाम मानसिकता है। विवाहित कामकाजी महिलाओं की समस्या भी कम नहीं होती। उन्हें नौकरी करने के साथ-साथ घर के पूर्व निर्धारित सभी कार्य करने पड़ते हैं। पुरुष-प्रधान समाज में उसके कार्यों को दूसरा कोई नहीं करता। उसका व्यक्तित्व घर-बाहर में बँटा रहता है। अधिक कमाने वाला पति स्वयं को महत्वपूर्ण समझता है तथा कम कमाने वाला हीनग्रंथि का शिकार हो जाता है। ऐसी स्थिति में पति-पत्नी के संबंध तनावपूर्ण हो जाते हैं।आज हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा, तभी हम अपने देश के आगे बढ़ने में सहायक हो सकते हैं।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

किसी भी राष्ट्र के निर्माण और उसके विकास में सबसे बड़ी भूमिका युवाओं की होती है। इस बात का इतिहास साक्षी है कि आज तक समाज में जो भी परिवर्तन या सुधार हुआ है, वह युवाओं के बल पर ही हुआ है। राम ने जब रावण का संहार किया, तब वे युवा थे। कंस का वध करने वाले कृष्ण भी युवक थे। शंकराचार्य, चंद्रगुप्त, महाराणा प्रताप, शिवाजी, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय, भगतसिंह, सुभाष, नेहरू, गाँधी आदि सभी युवावस्था में ही सामाजिक परिवर्तन के पुण्य कार्य में लग गए थे।

युवा वही होता है, जिसके मन में परिवर्तन कर सकने की इच्छाशक्ति एवं बल हो, जो अन्याय देख कर दुःखी हो सकता है, अपनी एवं दूसरे की प्रसन्नता में नाच और झूम सकता है, और जो दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझे, और जो अपनी कल्पनाओं को साकार करने के लिए सर्वस्व दाँव पर लगा सकता है। वर्तमान में हमारे राष्ट्र के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। अशिक्षा, गरीबी, असमानता, शोषण, सांप्रदायिकता और वर्गभेद ऐसी चुनौतियाँ हैं, जिनका मुकाबला किए बिना समाज का नवनिर्माण संभव नहीं है।

प्रायः युवा उत्साही होते हैं इसलिए वे शीघ्र ही आंदोलन का रास्ता अपना लेते हैं। युवाओं को इंजीनियर बनना है, बुल्डोजर नहीं। यद्यपि परिस्थिति के अनुसार कभी-कभी विध्वंस का रास्ता भी अपनाना पड़ता है, लेकिन वह भी सृजन के लिए।

युवा वर्ग को देश निर्माण की ओर मोड़ने का एक उपाय है-युवाओं को समय-समय पर कल्याणकारी, रचनात्मक कार्यक्रमों में लगाना। यद्यपि इसके लिए एन. एस. एस., एन. सी. सी. और स्काउट जैसी संस्थाएँ विद्यमान हैं, लेकिन सच्ची भावना के अभाव में ये संस्थाएँ अनुपयोगी सिद्ध हो गई हैं।

किसी देश की उन्नति उसके परिश्रमी, लगनशील, पुरुषार्थी तथा चरित्रवान नागरिकों से ही संभव है। भारत के युवा भी चरित्रवान बनकर देश में व्याप्त बुराइयों को समाप्त कर देश की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।अंततः हम ये कह सकते हैं कि युवाओं के योगदान के बिना देश के प्रगति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

चुनाव और लोकतंत्र

'लोकतंत्र' दो शब्दों 'लोक' और 'तंत्र' के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-लोगों का तंत्र अर्थात जनता का शासन।ऐसा शासन जो जनता के द्वारा ही निर्धारित किया जाता है। शासन की इस प्रणाली में लोग अपनी शासन-प्रणाली खुद बनाते हैं। विश्व की सभी प्रणालियों में लोकतंत्र सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। लोकतंत्र को पारिभाषित करते हुए अब्राहम लिंकन ने कहा था, "लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है।" मनुष्य ने घुमंतू जीवन छोड़कर जब से समाज में रहना शुरू किया, उसी समय से उसे शासन की आवश्यकता महसूस हुई ताकि समाज में शांति बनी रहे।

हमारे देश ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद आज तक इसी व्यवस्था को अपनाया हुआ है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ लोकतंत्र को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए हर पाँच वर्ष बाद चुनाव कराने का प्रावधान है ताकि जनता अपनी इच्छानुसार नेताओं का चयन कर सके। चुनाव ही लोकतंत्र को सबल और सार्थक बनाते हैं। विगत कुछ वर्षों में भारतीय राजनीति में गिरावट आई है।अब हमारे नेतागण अशिक्षित समाज को अपना निशाना बनाते हैं, और उनके वोटों को पैसों से अथवा अन्य लालच देकर अपने पक्ष में कर लेते हैं।

नेताओं का चरित्र इतना गिर गया है कि वे स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण एक से दिखते हैं। चुनावों में जीत हासिल करने के लिए वे धनबल, बाहुबल के अलावा सभी तरह के हथकंडे अपनाते हैं और अपने कार्यकाल में घोटाले तथा अन्य अनैतिक कार्यों में संलिप्त रहते हैं। ऐसे नेता लोकतंत्र और राजनीति दोनों के लिए काले धब्बे के समान हैं। इसके बाद भी यहाँ समय-समय पर चुनाव होना और सरकार बनना लोकतंत्र की मजबूती और उसके उज्ज्वल भविष्य का प्रमाण है। लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए मतदाताओं को लालच और स्वार्थ त्यागकर निष्पक्ष होकर मतदान करना चाहिए।

काश! मेरे पंख होते

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसके पास कल्पना करने की शक्ति है। कोई भी इंसान उस वस्तु अथवा कार्य की भी कल्पना कर सकता है, जो वास्तव में कभी संभव नहीं हो। हर किसी इंसान की तरह मेरी भी एक सोच है कि काश मेरे पंख होते, तो मैं भी आसमान में पक्षियों की तरह उड़ पाता और आसमान की सैर करता। यदि मेरे पंख होते तो मैं किसी की पकड़ में नहीं आता और तेजी से कहीं भी उड़ जाता। अक्सर हम इंसानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए वाहनों की जरूरत पड़ती है, लेकिन अगर मेरे पंख होते तो मुझे किसी भी वाहन की जरूरत ना होती क्योंकि मेरे पंख ही मुझे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते। मेरे पंख होते तो कितना अच्छा होता।

हम सभी को जब भी अपने किसी नजदीकी रिश्तेदार या किसी दोस्त की याद आती है, तो हम उससे फोन पर बातचीत करते हैं। और इससे हमारा मनोरंजन भी होता है, लेकिन मेरे पंख होते तो मुझे फोन पर बात करने की जरूरत नहीं पड़ती। मैं पक्षियों की तरह आसमान में उड़ता हुआ उस जगह पर पहुंचकर अपने दोस्तों रिश्तेदारों से बातचीत करता, तो मुझे बेहद खुशी होती। मैं पक्षियों की तरह, एक पतंग की तरह आसमान की सैर कर रहा होता। काश! मेरे पंख होते।

मैं उड़ना चाहता हूँ, आसमान की सैर करना चाहता हूँ। लोग वायुयानों के द्वारा आसमान की सैर करते हैं, लेकिन इनके द्वारा आसमान में सैर करने की बात अलग है और अपने खुद के पंखों से आसमान में उड़ना एक बात अलग है। काश मेरे पंख होते तो मैं आसमान की ऊंचाइयों में उड़ता और ऐसा करने में मुझे खुशी का अनुभव होता। काश! मेरे पंख होते।

धूम्रपान कितना घातक

'धूम्रपान' शब्द दो शब्दों 'धूम्र' और 'पान' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है-धूम्र अर्थात धुएँ का पान करना। अर्थात नशीले पदार्थों के धुएँ का विभिन्न प्रकार से सेवन करना, जो नशे की स्थिति उत्पन्न करते हैं और यह नशा व्यक्ति के मनोमस्तिष्क

पर हावी हो जाता है। इससे धूम्रपान करने वाले व्यक्ति का मस्तिष्क शिथिल हो जाता है और वह अपने आस-पास की वास्तविक स्थिति में अलग-सा महसूस करने लगता है। यही स्थिति उसे एक काल्पनिक आनंद की दुनिया में ले जाती है। समाज में धूम्रपान की प्रवृत्ति बहुत पुरानी है। धूम्रपान रोकने के लिए सरकार के साथ-साथ लोगों को अपनी सोच में बदलाव लाना होगा और इसके खतरों से सावधान होकर इसे त्यागने का दृढ़ निश्चय करना होगा। यदि एक बार ठान लिया जाए तो कोई भी काम असंभव नहीं है। बस आवश्यकता है तो दृढ़ इच्छा-शक्ति की। इसके अलावा सरकार को धूम्रपान कानून के अनुपालन के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए और अगर हमारा समाज शिक्षित होगा ,तो धूम्रपान से बचना अधिक आसान होगा।

धूम्रपान का प्रचार करने वाले विज्ञापनों पर अविलंब रोक लगाना चाहिए तथा इसका उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए। विद्यालय पाठ्यक्रम का विषय बनाकर बच्चों को शुरू से ही इसके दुष्परिणाम से अवगत कराना चाहिए ताकि युवावर्ग इससे दूरी बनाने के लिए स्वयं सचेत हो सके। हमें धूम्रपान रोकने में सरकार और लोगों को हर संभव मदद करनी चाहिए।इसके अतिरिक्त धूम्रपान के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए, ताकि लोगों को इस दलदल से निकाला जा सके।

महानगरों में आवास-समस्या

मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं-रोटी, कपड़ा और आवास। जिन देशों में इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति सहज तरीके से हो जाती है, वे देश संपन्न हैं। अतः आवास मानव की प्रमुख जरूरतों में से एक है। यह मनुष्य को स्थायित्व प्रदान करता है। आज के जीवन में चाहे वह नगर हो, ग्राम हो या कस्बा हो, आवास की समस्या गंभीर होती जा रही है।गाँवों में आवास की समस्या उतनी भीषण नहीं है, जितनी महानगरों में है।

महानगरों में रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, सत्ता आदि का केंद्रीयकरण हो गया है, अत: वहाँ चारों दिशाओं से लोग बसने के लिए आ रहे हैं। इस कारण वहाँ आवास की समस्या विकट होती जा रही है। इस समस्या का मुख्य कारण सरकार की अदूरदर्शिता है। सरकार ने देश के समग्र विकास की नीति नहीं बनाई। सरकार ने देश के चंद क्षेत्रों में बड़े उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन दिया। इन उद्योग-धंधों के साथ बड़ी संख्या में सहायक इकाइयाँ लगीं। सरकार ने इन सहायक इकाइयों को अन्य क्षेत्रों में स्थापित करने में कोई सहयोग नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बड़ी संख्या में लोगों का केंद्रण एक जगह ही हो गया। इस कारण बने महानगरों में आवास की समस्या उत्पन्न हो गई। दूसरे, सरकार ने ऐसे क्षेत्रों में आवास संबंधी कोई स्पष्ट नीति भी नहीं बनाई।इसके समाधान के लिए सभी जगहों पर रोजगार और अन्य दैनिक आवश्यकताओं की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि महानगरों में इन सब के लिए मारामारी ना हो।

भारतीय समाज में अंधविश्वास

जीवन को व्यवस्थित करने के लिए मानव ने नियमों की संकल्पना की जिन्हें 'धर्म' की संज्ञा दी गई। इन नियमों का उद्देश्य मानवजीवन को सुखी, संपन्न व व्यवस्थित बनाना था। समय बदलने के साथ-साथ कुछ नियम अप्रासंगिक हो गए और वे अंधविश्वास का रूप धारण करने लगे। आधुनिक युग में ये अंधविश्वास प्रगति में बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

भारतीय समाज के अनेक विश्वास जीवन की गतिशीलता के साथ न चलने के कारण पंगु हो गए हैं। इन अंधविश्वासों में धर्म की रूढिबद्धता, आभूषण-प्रेम, जादू-टोने में विश्वास, देवी-देवताओं के प्रति अबौद्धिक श्रद्धा आदि सामाजिक कुरीतियाँ हैं। ये कुरीतियाँ आज देश की प्रगति में बाधक सिद्ध हो रही हैं। उदाहरणस्वरूप हमारे धर्म में कर्म के अनुसार जाति-प्रथा का

विधान किया गया, परंतु बाद में उसे जन्म के आधार पर मान लिया गया। आज उसकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है, परंतु आरक्षण, जातिगत श्रेष्ठता के भाव संघर्ष का कारण बने हुए हैं।

इसी प्रकार भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग जादू-टोने में विश्वास रखता है। हालाँकि मीडिया के प्रसार व बौद्धिकता बढ़ने से जादू-टोने का जाल कम होने लगा है। फिर भी यदा-कदा नरबलि, सती–प्रथा आदि की घटनाएँ प्रकाश में आती ही रहती हैं। इसके अतिरिक्त समाज में अनेक तरह के अपशकुन अब भी प्रचलित हैं, जैसे बिल्ली द्वारा रास्ता काटा जाना, कोई काम शुरू करते समय किसी को छींक आना, पीछे से आवाज देना, चलते हुए अँधेरा होना आदि।

कई लोग इनके कारण अपने महत्वपूर्ण काम तक रोक देते हैं। हमारे समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास समग्र रूप में परंपराओं के प्रति अंधभक्ति है। आज भी हम अनेक अव्यावहारिक बातों से जुड़े हुए हैं। फलित ज्योतिष विद्या के नकली धनी इस प्रकार के विश्वास की आड़ में अपना पेट भरते हैं। लड़की के जन्म को अशुभ मानना, विवाह में सामर्थ्य से अधिक व्यय आदि भी इन्हीं अंधविश्वासों की उपज है। अब तो धर्मगुरुओं की एक ऐसी जमात' तैयार हो चुकी है जो आस्था के नाम पर जनता को भ्रमित कर रहे हैं। मीडिया भी इसमें पूरे मनोयोग से सहयोग कर रही है।जब अंधविश्वासों के माध्यम से भ्रमित होने से बचाने वाले ही जनता को भ्रमित करने में सहायक हों तब किया भी क्या जा सकता है?

आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक रूप को समझकर आचरण करें और अपनी प्रगति करें और जो भी धर्म आपके प्रगति में रुकावट लाए, वो कोई धर्म नहीं हो सकता। समाज को चाहिए कि नए जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चले और अंध परंपराओं को सदा के लिए दफ़न कर दे।

आधुनिक फैशन

एक फ्रांसीसी विचारक का कहना है-आदमी स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन पैदा होते ही तरह-तरह की जंज़ीरों में जकड़ जाता है। वह परंपराओं, रीति-रिवाजों, शिष्टाचारों, औपचारिकताओं का गुलाम हो जाता है। इसी क्रम में वह फ़ैशन से भी प्रभावित होता है। समय के साथ समाज की व्यवस्था में बदलाव आते रहते हैं। इन्हीं बदलावों के तहत रहन-सहन में भी परिवर्तन होता है। किसी भी समाज में फ़ैशन वहाँ की जलवायु परिवेश तथा विकास की अवस्था पर निर्भर करता है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ वहाँ के निवासियों के जीवन-स्तर में परिवर्तन आता जाता है।

20वीं सदी के अंतिम दौर से फ़ैशन ने उन्माद का रूप ले लिया। फ़ैशन को ही आधुनिकता का पर्याय मान लिया गया है। इस फ़ैशन की अधिकांश बातें आम जीवन से दूर होती हैं। फ़ैशन से संबंधित अनेक कार्यक्रमों का रसास्वादन अधिकांश लोग नहीं ले सकते, परंतु आधुनिकता और फ़ैशन की परंपरा का निर्वाह करते हैं। फ़ैशन का सर्वाधिक असर कपड़ों पर होता है। समाज का हर वर्ग इससे प्रभावित होता है।और आज के दौर में हमारी नई पीढ़ी ने फ़ैशन का पर्याय ही बदल दिया है, अथवा अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि आज समाज में फ़ैशन के नाम पर अंधविश्वास फैला हुआ है।

आधुनिकता और फैशन वर्तमान समाज में अब स्वीकार्य तथ्य हैं। फैशन के अनुसार अपने में परिवर्तन करना भी स्वाभाविक प्रवृन्ति है, लेकिन इसके अनुकरण से पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि इससे व्यक्तित्व में वृद्धि होती है या नहीं। सिर्फ फ़ैशन के प्रति दीवाना होना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं।

युवा असंतोष

आज चारों तरफ असंतोष का माहौल है। बच्चे-बूढ़े, युवक-प्रौढ़, स्त्री-पुरुष, नेता-जनता सभी असंतुष्ट हैं। युवा वर्ग विशेष रूप से असंतुष्ट दिखता है। घर-बाहर सभी जगह उसे किसी-न-किसी को कोसते हुए देखा-सुना जा सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? इसका एक ही कारण नजर आता है नेताओं के खोखले आश्वासन नेता अपने खोखले वादों से युवाओं को भरमाकर उन्हें बेरोजगारी की ओर धकेल देते हैं। युवा वर्ग को शिक्षा ग्रहण करते समय बड़े-बड़े सब्ज़बाग दिखाए जाते हैं, और जब उनकी शिक्षा पूर्ण होती है, तो वे बेरोजगारी की भीड़ में पिस जाते हैं।

वह मेहनत से डिग्रियाँ हासिल करता है, परंतु जब वह व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है तो खुद को पराजित पाता है। उसे अपनी डिग्रियों की निरर्थकता का अहसास हो जाता है। इनके बल पर रोजगार नहीं मिलता। इसके अलावा, हर क्षेत्र में शिक्षितों की भीड़ दिखाई देती है। वह यह भी देखता है कि जो सिफ़ारिशी है, वह योग्यता न होने पर भी मौज कर रहा है वह सब कुछ प्राप्त कर रहा है जिसका वह वास्तविक अधिकारी नहीं है।इस कारण से युवाओं में एक अलग प्रकार का आक्रोश रहता है।

इनकी शान-शौकत भरी बनावटी जिंदगी आम युवा में हीनता का भाव जगाकर उन्हें असंतुष्ट बना देती है। ऐसे में जब असंतोष, अतृप्ति, लूट-खसोट, आपाधापी आज के व्यावहारिक जीवन का स्थायी अंग बन चुके हैं तो युवा से संतुष्टि की उम्मीद कैसे की जा सकती है? समाज के मूल्य भरभराकर गिर रहे हैं, अनैतिकता सम्मान पा रही है, तो युवा मूल्यों पर आधारित जीवन जीकर आगे नहीं बढ़ सकते।

आदर्श प्रश्न-पत्र

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा – 12वीं (2022-23) परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खंड 'अ' और 'ब' का होगा।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होगें।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक 100 **निर्धारित समय 3 घंटे**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1	**अपठित गद्यांश**		**15**
	अ	एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का) (1 अंक x 5 प्रश्न)	05
2	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित**		**05**
	बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)		05
3	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
4	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित पाठों पर दस बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**		**20**
	1	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (6 अंक x 1 प्रश्न)	06
	2	कहानी का नाट्यरूपांतरण / रेडियो नाटक / अप्रत्याशित विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में)	06
	3	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (4 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 80 शब्दों में)	08
6	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2**		**20**

	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	2	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	3	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	4	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
7	**(अ) श्रवण तथा वाचन**		**10**
	(ब) परियोजना कार्य		**10**
कुल अंक			**100**

प्रस्तावित पुस्तकें :

1. **आरोह, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम',** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	काव्य खंड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी – गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे – चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		• एन फ्रैंक - डायरी के पन्ने

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिये कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2022- 23

विषय हिंदी (आधार)

विषय कोड-(302)

कक्षा बारहवीं

निर्धारित समय -3 घंटे **अधिकतम अंक– 80**

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्न पत्र में 2 खंड है - खंड 'अ' और खंड 'ब'। कुल प्रश्न 13 है।
- खंड-'अ' में 45 वस्तु परक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड-'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए|

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिएः– **(1X10=10)**

विज्ञान प्रकृति को जानने का महत्वपूर्ण साधन है। भौतिकता आज आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का स्तर निर्धारित करती है। विज्ञान केवल सत्य, अर्थ और प्रकृति के बारे में उपयोग ही नहीं बल्कि प्रकृति की खोज का एक क्रम है। विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह प्रकृति को जानने के विषय में हमें महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान देता है। व्यक्ति जिस बात पर विश्वास करता है वही उसका ज्ञान बन जाता है। कुछ लोगों के पास अनुचित ज्ञान होता है और वह उसी ज्ञान को सत्य मानकर उसके अनुसार काम करते हैं। वैज्ञानिकता और आलोचनात्मक विचार उस समय जरूरी होते हैं जब वह विश्वसनीय ज्ञान पर आधारित हों। वैज्ञानिक और आलोचक अक्सर तर्कसंगत विचारों का प्रयोग करते हैं। तर्क हमें उचित सोचने पर प्रेरित करते हैं। कुछ लोग तर्क संगत विचारधारा नहीं रखते क्योंकि उन्होंने कभी तर्क करना जीवन में सीखा ही नहीं होता।

प्रकृति वैज्ञानिक और कवि दोनों की ही उपास्या है। दोनों ही उससे निकटतम संबंध स्थापित करने की चेष्टा करते है, किंतु दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। वैज्ञानिक प्रकृति के बाल्य रूप का अवलोकन करता है और सत्य की खोज करता है, परंतु कवि बाह्य रूप पर मुग्ध होकर उससे भावों का तादात्म्य स्थापित करता है। वैज्ञानिक प्रकृति की जिस वस्तु का अवलोकन करता है, उसका सूक्ष्म निरीक्षण भी करता है। चंद्र को देखकर उसके मस्तिष्क में अनेक विचार उठते हैं उसका तापक्रम क्या है, कितने वर्षों में वह पूर्णतः शीतल हो जाएगा,ज्वार- भाटे पर उसका क्या प्रभाव होता है, किस प्रकार और किस गति से वह सौर मंडल में परिक्रमा करता है और किन तत्वों से उसका निर्माण हुआ है? वह अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से उसको एक लोक ठहराता है और उस लोक में स्थित ज्वालामुखी पर्वतों तथा जीवनधारियों की खोज करता है। इसी प्रकार वह एक प्रफुल्लित पुष्प को देखकर उसके प्रत्येक अंग का विश्लेषण करने को तैयार हो जाता है। उसका प्रकृति- विषयक अध्ययन वस्तुगत होता है। उसकी दृष्टि में विश्लेषण और वर्ग विभाजन की प्रधानता रहती है। वह सत्य और वास्तविकता का पुजारी होता है। कवि की कविता भी प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है वह प्रकृति के साथ अपने भावों का संबंध स्थापित करता है। वह उसमें मानव चेतना का अनुभव करके उसके साथ अपनी आंतरिक भावनाओं का समन्वय करता है। वह तथ्य और भावना के संबंध

पर बल देता है। उसका वस्तुवर्णन हृदय की प्रेरणा का परिणाम होता है, वैज्ञानिक की भाँति मस्तिष्क की यांत्रिक प्रक्रिया नहीं। कवियों द्वारा प्रकृति-चित्रण का एक प्रकार ऐसा भी है जिसमें प्रकृति का मानवीकरण कर लिया जाता है अर्थात प्रकृति के तत्त्वों को मानव ही मान लिया जाता है।

प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का आरोपण किया जाता है। हिंदी में इस प्रकार का प्रकृति-चित्रण छायावादी कवियों में पाया जाता है। इस प्रकार के प्रकृति-चित्रण में प्रकृति सर्वथा गौण हो जाती है। इसमें प्राकृतिक वस्तुओं के नाम तो रहते हैं परंतु झंकृत चित्रण मानवीय भावनाओं का ही होता है। कवि लहलहाते पौधे का चित्रण न कर खुशी से झूमते हुए बच्चे का चित्रण करने लगता है।

(i) विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि यह-

(क) समग्र ज्ञान के साथ तादात्म्य स्थापित करता है
(ख) प्रकृति आधुनिक विज्ञान की उपास्या है
(ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है
(घ) आधुनिक वैज्ञानिक का स्तर निर्धारित करता है

(ii) सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से तात्पर्य है-

(क) सौर मंडल को एक लोक और परलोक ठहराना
(ख) छोटी-छोटी सी बातों पर चिंता करना
(ग) बारीकी से सोचना व निरंतर देखना
(घ) बारीकी से देखना और निरंतर सोचना

(iii) कौन अनवरत चिंतन करता है?

(क) सूक्ष्माचारी
(ख) विज्ञानोपासक
(ग) ध्यानविलीन योगी
(घ) अवसादग्रस्त व्यक्ति

(iv) कौन वास्तविकता का पुजारी होता है?

(क) यथार्थवादी
(ख) काव्यवादी
(ग) प्रकृतिवादी
(घ) विज्ञानोपासक

(v) कवि की कविता किससे प्रस्फुटित होती है?

(क) विचारों के मंथन से
(ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से
(ग) भावनाओं की उहापोह से
(घ) प्रेम की तीव्र इच्छा से

(vi) कवि के संबंध में इनमें से सही तथ्य है-

(क) ज्वालामुखी के रहस्य जानता है
(ख) जीवधारियों की खोज करता है
(ग) सत्य का उपासक नहीं होता
(घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययनकर्ता

(vii) वैज्ञानिक प्रकृति के बाह्य रूप का अवलोकन करते हैं:-

निम्नलिखित कथनों पर विचार करके, सही विकल्प का चयन कीजिए।

(i) कवियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं

(ii) ज्वारभाटे के परिणाम से बचना चाहते हैं

(iii) वर्ग विभाजन के पक्षधर बने रहना चाहते हैं

(iv) प्रकृति के साथ रहने का प्रयास करते हैं

ऊपर लिखित कथनों में से कौन- सा /कौन -से सही है/ है?

(क) केवल (i)

(ख) (ii) और(iii) सही है

(ग) केवल (iv) सही है

(घ) उपरोक्त सभी

(viii) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

(क) कवि की सोच और वैज्ञानिकता

(ख) प्रकृति के उपासक-कवि और वैज्ञानिक

(ग) वैज्ञानिक उन्नति और काव्य जगत

(घ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण-अतुलनीय

(ix) प्रकृति का मानवीकरण दर्शाता है कि-

(क) कल्पना प्रधान व भावोन्मेशयुक्त कविता रची जा रही है

(ख) मानवीकरणअलंकार का दुरुपयोग हो रहा है

(ग) प्रकृति व मानव के सामंजस्य से उदित दीप्ति फैल रही है

(घ) मानव द्वारा प्रकृति का संरक्षण हो रहा है

(x) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन(A)वैज्ञानिक प्रकृति के बाल्य रूप का अवलोकन करता है और सत्य की खोज करता है।

कारण(R)विज्ञान केवल सत्य, अर्थ और प्रकृति के बारे में उपयोग ही नहीं बल्कि प्रकृति की खोज का एक क्रम है ।

(क) कथन(A) तथा कारण(R) और दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R)सही है।

(ग) कथन (A)और कारण (R) दोनों सही है।

(घ) कथन(A) और कारण (R) दोनों ही गलत है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित पद्यांश में से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के सही विकल्प -चयन द्वारा कीजिए- **(1X5=5)**

फिर से नहीं आता समय, जो एक बार चला गया।
जग में कहो बाधा रहित कब कौन काम हुआ भला।
बहती नदी सूखे अगर उस पार मैं इसके चलूं।
इस सोच में बैठा पुलिन पर, पार जा सकता भला?
किस रीति से काम, कब करना बनाकर योजना,

मन में लिए आशा प्रबल दृढ़ जो वही बढ़ जाएगा।
उसको मिलेगा तेज बल अनुकूलता सब ओर से
कब कर्मयोगी, वीर, अनुपम साहसी सुख पायेगा।
यह वीर भोग्या, जो हृदय तल में बनी वसुधा सदा,
करती रही आह्वान है, युग वीर का पुरुषत्व का।
कठिनाइयों में खोज का पथ, ज्योति पूरित जो करें,
विजय वही होता धरणि-सुत वरण अमरत्व का।

(i) एक बार जाने के बाद क्या वापस लौटकर नहीं आता है?

(क) धन
(ख) राज्य
(ग) समय
(घ) स्वास्थ्य

(ii) बहती नदी के माध्यम से कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

(क) जल का महत्व
(ख) नदी का महत्व
(ग) बाधाओं से युक्त जीवन
(घ) समय का अभाव

(iii) कविता में धरणी-सूत किसे कहा गया है

(क) वीर व्यक्ति को
(ख) किसान को
(ग) उपरोक्त दोनों को
(घ) दोनों में से कोई नहीं

(iv) 'पुलिन' शब्द का क्या अर्थ है?

(क) पानी
(ख) नदी
(ग) किनारा
(घ) वृक्ष

(v) अनुकूलता शब्द में प्रत्यय है

(क) कुलता
(ख) **ता**
(ग) लता
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

अथवा

ऋतु वसन्त तुम आओ ना,
वासन्ती रंग बिखराओ ना।
उजड़ रही आमों की बगिया,
बौर नये महकाओ ना।

सूनी वन-उपवन की डालें,
कोयल को बुलवाओ ना।
नूतन गीत सुनाओ ना,
ओ वसन्त तुम आओ ना।
ऊँचे-ऊँचे महलों में,
देखो जाम छलकते हैं...।
कहीं अँधेरी झोपड़ियों में,
दुधमुँहे रोज बिलखते हैं।
कुटिया के बुझते दीपक को, बनकर तेल जलाओ ना...
भूखी माँ के आँचल में तुम, दूध की धार बहाओ ना...
प्रिय वसन्त तुम आओ ना...
कोई धोता जूठे बर्तन,
कोई कूड़ा बीन रहा।
पेट की आग मिटाने को,
रोटी कोई छीन रहा।
काम पे जाते बच्चे के, हाथों में किताब थमाओ ना...
घना अँधेरा छाया है, तुम ज्ञान के दीप जलाओ ना...
ऋतु वसंत तुम आओ ना।

(i) उजड़ रही आमों की बगिया में वसन्त को क्या करने के लिए कहा है?

(क) गीत गाने के लिए
(ख) नए बौर महकाने के लिए और कोयल को बुलवाने के लिए
(ग) देखभाल करने के लिए
(घ) कोयल को गाने के लिए

(ii). अँधेरी झोपड़ियों की हालत क्या है?

(क) वहाँ दुधमुंहे बच्चे हँस रहे हैं
(ख) वहाँ उजाला होने वाला है
(ग) वहाँ दुधमुंहे बच्चे भूख के कारण बिलख रहे हैं
(घ) अँधेरी झोपड़ियों की हालत ठीक है

(iii) वसन्त से कुटिया में ..... कहा है। (वाक्य पूरा कीजिए।)

(क) तेल बनकर बुझते दीपक को जलाने और दूध की धार बहाने के लिए
(ख) बौर खिलाने के लिए
(ग) कोयल को बुलाने के लिए
(घ) गीत गाने के लिए

(iv) छोटे बच्चे मजबूरी में क्या- क्या-क्या करते हैं

नीचे दिए गए कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए-

कथन-

(i) कोई धोता जूठे बर्तन

(ii) कोई कूड़ा बीन रहा है

(iii) कोई पेट की आग मिटाने को, रोटी छीन रहा है

(iv) उपर्युक्त सभी

विकल्प

(क) कथन (i) सही है

(ख) कथन (ii) सही है

(ग) कथन (ii) और (iii) सही है

(घ) कथन (iv) सही है

(v)काम पर जाते बच्चे के लिए वसन्त को क्या करने के लिए कहा है और क्यों ?

(क) काम दिलाने के लिए

(ख) बच्चे के हाथों में किताब थमाने के लिए कहा है ताकि वह भी ज्ञान का उजाला पा सके

(ग) केवल खेलने के लिए

(घ) परिवार की सहायता करने के लिए

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- (1X5=5)

(i) मीडिया की भाषा में बीट का अर्थ है-

(क) क्षेत्र

(ख) समाचार

(ग) खबर

(घ) नाटक

(ii) दृश्यों का किस माध्यम में अधिक महत्व होता है?

(क) समाचार पत्र

(ख) रेडियो

(ग) टेलीविजन

(घ) इंटरनेट

(iii) समाचार लेखन के लिए कितने ककार आवश्यक है?

(क) चार

(ख) तीन

(ग) पाच

(घ) छः

(iv) पेंज थ्री पत्रकारीता है।

(क) जानवरो के बारे मे ।

(ख) अमीरो के बारे में ।

(ग) गरीबों के बारे में ।

(घ) छात्रो को बारे में ।

(v) तथ्यों सूचना तथा आंकड़ों की गहरी छानबीन करने वाले रिपोर्ट को क्या कहते हैं?

(क) विवेचनात्मक रिपोर्ट

(ख) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

(ग) खोजी रिपोर्ट

(घ) इन डेप्थ रिपोर्ट

प्रश्न 4 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए।

(1X5=5)

बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्धा धीर।
हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार—
शस्य अपार,
हिल-हिल
खिल-खिल
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

(i) बादलों की गर्जना को किसके समान बताया गया है?

(क) वज्र के समान

(ख) दुख के समान

(ग) योद्धा के समान

(घ) प्रलय के समान

(ii) बादल किस प्रकार धरती पर बरस रहे हैं?

(क) बार-बार गर्जन करके

(ख) मूसलाधार रूप में

(ग) क और ख दोनों

(घ) क्षत-विक्षत रूप में

(iii) बादलों की गर्जना का संसार पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) संसार में प्रसन्नता छा जाती है

(ख) संसार भयभीत होकर हृदय थाम लेता है

(ग) संसार दुखों से मुक्त हो जाता है

(घ) संसार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

(iv) बादलों का शरीर किससे आहात हो रहा है

(क) बिजली रूपी तलवारों से

(ख) वायुयानो के आवागमन से

(ग) उच्च वर्ग की महत्वाकांक्षाओं से

(घ) निम्न वर्ग के संताप से

(v) काव्यांश में बादल की किस विशेषता की ओर संकेत किया गया है?

(क) बादल आकाश को छूने वाले हैं

(ख) आकाश से प्रतियोगिता करने वाले हैं

(ग) धीर -वीर अपराजित है

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए- (1X5=5)

रात्रि अपनी भीषणताओं के साथ चलती रहती और उसकी सारी भीषणता को ताल ठोककर ललकारती रहती थी सिर्फ पहलवान की ढोलक संध्या से लेकर प्रातः काल तक एक ही गति से बजती रहती-चट्-धा, गिड़-था, ' चट्-धा, धा' यानी 'आ जा | भिड़ जा, आ जा, भिड़ जा'' बीच-बीच में चटाक् - चट-धा, 'चटाक्-चट्-धा!' यानी 'उठाकर पटक दे! उठाकर पटक दे।' यही आवाज मृत गाँव में संजीवनी भरती रहती थी।

लुटुन के माता पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चल बसे थे। सौभाग्यवश शादी हो चुकी थीं, वरना वह भी माँ बाप का अनुसरण करता। विधवा सास ने पाल-पोसकर बड़ा किया। बचपन में वह गाय चराता, धारोष्ण दूध पीता और कसरत किया करता था। गाँव के लोग उसकी सास को तरह-तरह की तकलीफ़ दिया करते थे, लुट्न के सिर पर कसरत की धुन लोगों से बदला लेने के लिए ही सवार हुई।

(i) लुट्टन कौन था?

(क) लुट्टन एक चालाक लड़का था

(ख) वह चोरी करने वाला एक चोर था

(ग)वह बालक था जिसके मां-बाप उस समय मर गए थे जब वह 9 वर्ष का था

(घ) उपरोक्त में से कोई नही

(ii) पहलवान की ढोलक किसको ललकारती थी?

(क) पहलवान की ढोलक की ताल गांव वालों को ललकारती थी

(ख) पहलवान की ढोलक रात्रि की भीषणता को ताल ठोककर ललकारती थी

(ग) (क) और (ख) दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

(iii) धारोष्ण दूध से क्या तात्पर्य है?

(क)धार का गर्म दूध

(ख) भट्टी में किया गया गर्म दूध

(ग) ताजा दूध

(घ) इनमें से कोई नही

(iv) प्रस्तुत गद्यांश के लेखक का नाम बताइए

(क) प्रेमचंद

(ख) कृष्णा सोबती

(ग) फणीश्वर नाथ रेणु

(घ) रामधारी सिंह दिनकर

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए, और सही विकल्प का चयन कीजिए-

कथन-

(i) पहलवान की ढोलक बजने का समय संध्या से प्रातःकाल तक का था।

(ii) लेखक ने रात्रि की भीषणताओं के बारे में बताते हुए कहता है कि जाड़े की अमावस्या की रात थी। मलेरिया का प्रकोप था। चारों तरफ निस्तब्धता थी।

(iii) लुट्टन का विवाह नौ वर्ष की आयु में हो गया था

विकल्प

(क) कथन(i) सही है

(ख) कथन(ii) सही है

(ग) उपरोक्त सभी

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए (1X10=10)

(i) लेखक ने पढने के लिए मॉ को किससे बात करने के लिए कहा?

(क) दादा से

(ख) चाचा से

(ग) मास्टर से

(घ) दत्ता जी राव से

(ii) दादा कोल्हू जल्दी क्यों लगाना चाहते थे?

(क) दूसरी फसल के लिए

(ख) गुड की ज्यादा कीमत के लिए

(ग) काम जल्दी समाप्त करने के लिए

(घ) इनमे से कोई नहीं

(iii) कोठारी किसके काम आता होगा?

(क) सुरक्षा के लिए

(ख) धन जमा करने के लिए

(ग) अनाज जमा करने के लिए

(घ) पानी जमा करने के लिए

(iv) अतीत मे दबे पॉव नामक पाठ के रचयिता का नाम क्या है?

(क) ओम धानवी

(ख) मनोहर श्याम जोशी

(ग) श्याम मनोहर जोशी

(घ) फणीश्वर नाथ रेणु

(v) मुअनजो-दड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा?

(क) सभ्यता का

(ख) रादनीति का

(ग) धर्म का

(घ) व्यापार का

(vi) लेखक को मराठी कौन पढाते थे?

(क) सौंदलगेलर

(ख) रणनवरे

(ग) दादा

(घ) इनमे से कोई नहीं

(vii) यशोधरा बाबू के विवाह की कौन-सी वर्षगाँठ मनाई गई हें?

(क) बीसवी

(ख) तीसवी

(ग) पच्चीसवी

(घ) चालीसवी

(viii) 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के लेखक का नाम क्या हैं?

(क) ओम धानवी

(ख) मनोहर श्याम जोशी

(ग) श्याम मनोहर जोशी

(घ) फणीश्वर नाथ रेणु

(ix) राखलदास बैनर्जी कौन थे?

(क) शिक्षक

(ख) भिक्षु

(ग) पुरातत्त्ववेता

(घ) व्यापारी

(x) सिल्वर वैडिंग कहानी के नायक का नाम क्या हैं?

(क) यशोधर बाबू

(ख) भूषण

(ग) किशनदा

(घ) चद्दा

<u>खंड ब – (वर्णनात्मक प्रश्न)</u>

प्रश्न 7. दिए गए अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- (6X1=6)

(क) स्वास्थ्य का महत्व

(ख) आजादी का अमृत महोत्सव

(ग) राष्टीय एकता और अखंडता में हिन्दी भाषा की भूमिका

(घ) वायु प्रदूषण से जीवन पर प्रभाव

प्रश्न 8. किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभा 60 शब्दों में दीजिए- (3X2=6)

(क) नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार की मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है ?

(ख). रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(ग) कविता लिखने के क्या क्या उद्घेश्य होते हैं ?

प्रश्न 9. निंम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभा 80 शब्दों में लिखिए- (4X2=8)

(क) संपादकीय क्या है ?

(ख) पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार लिखिए।

(ग) इंटरनेट क्या है इसके गुण-दोषों पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न 10. काव्य खंड पर आधारित निंम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभा 60 शब्दों में लिखिए- (3X2=6)

(क) "आत्म परिचय" कविता में कवि सुख और दुख – दोनों स्थितियों में मग्न कैसे रह पाता है?

(ख) "बादल राग" कविता में, बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता मे रेखांकित करती हैं?

(ग) "छोटा मेरा खेत" कविता में कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत क्यों पड़ी?

प्रश्न 11. काव्य खंड पर आधारित निंम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभा 40 शब्दों में लिखिए- (2X2=4)

(क) "पतंग" कविता में खरगोश की आँखों जेसा लाल सवेरा 'कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

(ख) कवितावली' के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी।

(ग) कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है?

प्रश्न 12. गद्य खंड पर आधारित निंम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभा 40 शब्दों में लिखिए- (3X2=6)

(क) बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

(ख) शिरीष को 'अद्‌भुत अवधूत' क्यों कहा गया है?

(ग) जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

प्रश्न 13. गद्य खंड पर आधारित निंम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभा 40 शब्दों में लिखिए- (2X2=4)

(क) लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

(ख) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

(ग) बाजार को सार्थकता देने का क्या आशय है?

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2022-23

विषय – हिन्दी (आधार)
कक्षा-12
अंक योजना

निर्धारित समय—3 घंटे **अधिकतम अंक- 80**

सामान्य निर्देशः-

- **अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।**
- **खंड – अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।**
- **खंड –ब में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।**
- **यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ।**
- **मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नही, बल्कि अंक –योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।**

खंड – अ वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर			
प्रश्न क्रम संख्या		**उत्तर**	**अंक विभाजन**
प्रश्न 1.	(i)	(ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है	1
	(ii)	(ग) बारीकी से सोचना व निरंतर देखना	1
	(iii)	(ख) विज्ञानोपासक	1
	(iv)	(घ) विज्ञानोपासक	1
	(v)	(ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से	1
	(vi)	(घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययनकर्ता	1
	(vii)	(ग) केवल (iv) सही है	1
	(viii)	(क) कवि की सोच और वैज्ञानिकता	1
	(ix)	(ख) मानवीकरणअलंकार का दुरुपयोग हो रहा है	1
	(x)	(ग) कथन (A)और कारण (R) दोनों सही है।	1
प्रश्न 2.	(i)	(ग) समय	1
	(ii)	(ग) बाधाओं से युक्त जीवन	1
	(iii)	(क) वीर व्यक्ति को	1
	(iv)	(ग) किनारा	1
	(v)	(ख) ता	1
		अथवा	
	(i)	(ख) नए बौर महकाने के लिए और कोयल को बुलवाने के लिए	1
	(ii)	(ग) वहाँ दुधमुंहे बच्चे भूख के कारण बिलख रहे हैं	1

	(iii)	(क) तेल बनकर बुझते दीपक को जलाने और दूध की धार बहाने के लिए	1
	(iv)	(घ) कथन (iv) सही है	1
	(v)	(ख) वच्चे के हाथों में किताब थमाने के लिए कहा है ताकि वह भी ज्ञान का उजाला पा सके	1
प्रश्न 3.	(i)	(क) क्षेत्र	1
	(ii)	(ग) टेलीविजन	1
	(iii)	(घ) छः	1
	(iv)	(ख) अमीरो के बारे में ।	1
	(v)	(ख) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट	1
प्रश्न 4.	(i)	(क) वज्र के समान	1
	(ii)	(ग) क और ख दोनों	1
	(iii)	(ख) संसार भयभीत होकर ह्रदय थाम लेता है	1
	(iv)	(क) बिजली रूपी तलवारों से	1
	(v)	(घ) उपरोक्त सभी	1
प्रश्न 5.	(i)	(ग)वह बालक था जिसके मां-बाप उस समय मर गए थे जब वह 9 वर्ष का था	1
	(ii)	(ख) पहलवान की ढोलक रात्रि की भीषणता को ताल ठोककर ललकारती थी	1
	(iii)	(क)धार का गर्म दूध	1
	(iv)	(ग) फणीश्वर नाथ रेणु	1
	(v)	(ग) उपरोक्त सभी	1
प्रश्न 6	(i)	(घ) दत्ता जी राव से	1
	(ii)	(ख) गुड की ज्यादा कीमत के लिए	1
	(iii)	(ग)अनाज जमा करने के लिए	1
	(iv)	(क) ओम थानवी	1
	(v)	(क) सभ्यता का	1
	(vi)	(क) सौंदलगेलर	1
	(vii)	(ग) पच्चीसवी	1
	(viii)	(ख) मनोहर श्याम जोशी	1
	(ix)	(ग) पुरातत्त्ववेता	1
	(x)	(क) यशोधर बाबू	1
खंड ब – (वर्णनात्मक प्रश्न)			
प्रश्न 7.		किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिएः- आरंभ- 1 अंक विषयवस्तु- 3 अंक	6x1=6

		प्रस्तुति- -1 अंक भाषा-1 अंक	
प्रश्न 8	(क)	नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं ? उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है 1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है। 2. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है। 3. संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने समस्या आती है। • 4. संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।	3X2=6
	(ख)	रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं- 1. रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं। 2. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं। 3. नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है। • 4. इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।	
	(ग)	• कविता मनुष्य के मंवेदनाओं के निकट होती है इसलिए कविता पाठक या श्रोता के मन को छीकर उसे ऐसा आनंद की अनुभूति कराती है जिसे वह शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त नही कर सकता। • कविता का उद्धेश्य होता है दैनिक जीवन के अनुभवों को शब्दों की सहायता से कलात्मक अभिव्यक्ति देना। • यह पाठक या श्रोता की भावनाओं का उदारीकरण करती हैं। • रचनाकाक अपनी इच्छानिसार मन में उठने वाली भावनाओं को शब्दों से जुटाता है और उसे लय में पिरोकर कविता की रचना करता है। यही काव्य रचना पाठक या श्रोता ती संवेदनशीलता जैसे सद्वृत्तियों को जगाती है।	
प्रश्न 9	(क)	संपादकीय : संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारत्मक लेख को जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं । संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र -	4X2=8

		समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता ।	
	(ख)	**खोजी पत्रकारिता** जिसमें आम तौर पर सार्वजनिक महत्व के मामलों जैसे भ्रष्टाचार ,अनियमितताओं और गड़बड़ियों की गहराई से छानबीन कर सामने लाने की कोशिश की जाती है। **वाचडाग पत्रकारिता** इसका मुख्य कार्य सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है और कहीं भी कोई गड़बड़ी हो तो उसका पर्दाफाश करना है। **एडवोकेसी पत्रकारिता** इसे पक्षधर पत्रकारिता भी कहते हैं। किसी खास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार अभियान चलाने वाली पत्रकारिता को एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं। **पीत पत्रकारिता** पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफवाहों, आरोपों प्रत्यारोपों प्रेम संबंधों आदि से संबंधित सनसनीखेज समाचारों से संबंधित पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहा जाता है। **पेज थ्री पत्रकारिता** पजे थ्री पत्रकारिता उसे कहते हैं जिसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों महिलाओं और जानेमाने लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। **खेल पत्रकारिता** खेल से जुड़ी पत्रकारिता को खेल पत्रकारिता कहा जाता है।	
	(ग)	इंटरनेट विश्वव्यापी अंतरजाल है,यह जनसंचार का सबसे नवीन व लोकप्रिय माध्यम है। इसमें जनसंचार के सभी माध्यमों के गुण समाहित हैं। यह जहां सूचना मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए श्रेष्ठ माध्यम है, वही अश्लीलता दुष्प्रचारव गंदगी फैलाने का भी जरिया है।	
प्रश्न 10	(क)	कवि कहता है कि मैं दुख में ज्यादा दुखी नहीं हुआ और सुख में ज्यादा खुश नहीं हुआ। मैंने हमेशा दोनों स्थितियों में सामंजस्य बनाए रखा। दुख और सुख दोनों को एक जैसा माना क्योंकि ये दोनों स्थितियों तो मानव जीवन में आती है। इसलिए कवि सुख और दुख दोनों स्थितियों में मग्न रहता है।	3X2=6

	(ख)	बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले निम्नलिखित परिवर्तनों को यह कविता रेखांकित करती है- - बादलों की गर्जना होने लगती है। - पृथ्वी में से पौधों का अंकुरण होने लगता है। - मूसलाधार वर्षा होने लगती है। - बिजली चमकती है तथा गिर भी जाती है। - छोटे-छोटे पौधे हवा चलने के कारण हाथ हिलाते जान पड़ते हैं। - कमल का फूल खिलता है तथा उससे जल की बूँदें	
	(ग)	कवि उमाशंकर जोशी जी हमें ये बताना चाहते हैं कि कविता लिखना एक मुश्किल कार्य है। काफ़ी मेहनत और कल्पना करने के बाद ही कवि कुछ शब्दों को कागज़ पर लिख पाते हैं। ठीक इसी तरह खेती का हाल भी है। खेत में बीज बोने से लेकर कटाई करने तक की पूरी प्रक्रिया में बहुत अधिक मेहनत लगती है।	
प्रश्न 11	(ख)	खरगोश की आंखें जैसा लाल सवेरा, तेज बौछारें, घंटी बजाते हुए जोर-जोर से, आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए, पतंग ऊपर उठ सके। इन सभी बातों में जो बिंब प्रयोग हुआ है वह सभी गतिशील, स्थिर, दृश्य, श्रव्य बिंब है।	2X2=4
	(ख)	कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वगों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।	
	(ग)	कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता	

		है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनमें गतिशीलता है।	
प्रश्न 12	(क)	जब बाज़ार का जादू चढ़ता है तो व्यक्ति फिजूल की खरीददारी करता है। वह उस सामान को खरीद लेता है जिसकी उसे ज़रूरत नहीं होती। वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है। लेकिन जब यह जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि बाज़ार की चकाचौंध ने उन्हें मूर्ख बनाया है। जादू के उतरने पर वह केवल आवश्यकता का ही सामान खरीदता है ताकि उसका पालन-पोषण हो सके।	3X2=6
	(ख)	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' शिरीष को अद्‌भुत अवधूत मानते हैं, क्योंकि संन्यासी की भाँति वह सुख-दुख की चिंता नहीं करता। शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है। जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है।	
	(ग)	जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे डॉ. अंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं: - जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है। इसे नहीं माना जा सकता। - जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। जाति प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाए। - जाति प्रथा मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ सकती है। इस प्रकार डॉ. अंबेडकर के तर्क यह बताते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से जाति प्रथा गंभीर दोषों से मुका है।	
प्रश्न 13	(क)	उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकिलुट्टन पहलवान जब पहली बार पहलवानी करने दंगल में जाता है, तो एकमात्र ढोल की आवाज़ होती है, जो उसे अपना साहस बढ़ाती नज़र आती	2X2=4

		है। ढोल की हर थाप में वह एक निर्देश सुनता है, जो उसे अगला दाँव खेलने के लिए प्रेरित करती है। यही कारण है कि लुट्टन पहलवान ढोल को अपना गुरु मानता है।	
	(ख)	यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है।	
	(ग)	जिन लोगों में बाजारूपन होता है, वे बाजार को निरर्थक बना देते हैं; परंतु जो लोग आवश्यकता के अनुसार बाजार से वस्तु खरीदते है, वही बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही केवल वही वस्तुएँ बेची जाती हैं जिनकी लोगों को आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में बाजार हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बनता है।	